सम्पादकीय

नसों में घुलता नशा

ड्रग्स तस्करी पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी चुनौती है। नशे का फैलता जाल बहुत बड़ी समस्या बन चुका है। दुनिया का कोई भी ऐसा देश नहीं है जहां के लोगों को नशे की लत नहीं लगी हो। भारत भी इस समस्या से अछूता नहीं है। दिल्ली में पांच हजार करोड़ की कोकीन और थाइलैंड की मारिजुआना ड्रग्स की बरामदगी इस बात का संकेत दे रही है कि देश में या तो इसकी खपत कई गुणा बढ़ चुकी है या फिर भारत नशीले पदार्थों की आपूर्ति के किसी बड़े नेटवर्क का केन्द्र बन गया है। दिल्ली पुलिस ने अन्तर्राष्ट्रीय ड्रग रैकेट का भंडाफोड़ करते हुए चार लोगों को गिरफ्तार किया है। नशे की इस खेप को दिवाली, दशहरे से पहले सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जाना था। इसके लिए पूरी सप्लाई चेन तैयार रखी गई थी। नशीले पदार्थों की इतनी बड़ी खेप अलग-अलग देशों से होती हुई भारत पहुंची थी। कोकीन की यह खरीद-फरोख्त पैसे से नहीं बल्कि क्रिप्टो करंसी के साथ की जाती थी। त्यौहारों के दिनों में दिल्ली, मुम्बई, गुजरात और देशभर में बड़े कॉर्स्ट होते हैं। इन कार्यक्रमों में नशे की खेप पहुंचाई जानी थी। किसी समाज और देश को भीतर से खोखला करना हो तो उसकी युवा शक्ति को नशे की गर्त में धकेलना काफी है। पंजाब, हिमाचल, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे कई राज्यों में नशे की लत के कारण युवाओं का भविष्य बर्बाद हो चुका है। आज देश में कहीं से कोई भी व्यक्ति नशे का सामान खरीद सकता है। उसे ना कोई रोकने वाला है ना कोई टोकने वाला है। नशे का सामान बेचने वाले सौदागर दिनों दिन धनवान होते जा रहे हैं। जिस कारण से उनका पुलिस व प्रशासन पर पूरा प्रभाव रहता है। जिसकी बदौलत वह शासन, प्रशासन से मिलकर सरेआम धड़ल्ले से अपना धंधा करते रहते हैं। नशे की प्रवृत्ति के खिलाफ हमारा समाज भी जागरुक नहीं है। नशे की लत के चलते पंजाब जैसा संपन्न प्रांत नशेड़ियों का प्रदेश कहलाने लगा था। वैसी ही स्थिति आज देश के अधिकांश प्रदेशों की हो रही है। नशे को लेकर पंजाब जब सुर्खियों में आया तो पूरे देश का ध्यान उस तरफ गया।

पुलिस, भारतीय नौसेना, एनसीबी, डीआरआई समेत कई एजेंसियां एक साथ मिलकर ड्रग्स के खिलाफ सख्त मुहिम चला रही हैं। इसके बावजूद गुजरात और मुम्बई के बंदरगाहों पर करोड़ों रुपए की ड्रग्स पकड़ी जा रही है। भारत में सबसे अधिक ड्रग्स की खेप अफगानिस्तान से आती है। यानी भारत का मुख्य स्त्रोत अफगानिस्तान है। इसके पीछे भी कारण है, अफगानिस्तान में काफी समय से वहां पर अफीम की खेती और तमाम नशीली दवाईयों का व्यापार होता आ रहा है। अब तो तालिबान के सत्ता में आने के बाद इस तरह के व्यापारों में काफी तेजी देखी जा रही है। भारत समेत दुनिया भर में 80 से 85 प्रतिशत ड्रग्स की सप्लाई अफगानिस्तान से होती है। तालिबान इन्हीं पैसों की बदौलत अपने आप को मजबूत कर रहा है। दुनिया भर की सुरक्षा एजेंसियों में तालिबान ने नाक में दम कर रखा है। वहीं इसमें पाकिस्तान की भी अहम भूमिका होती है। भारत के पंजाब, श्रीनगर और राजस्थान में सीमा के पास कई बार ड्रग्स और अफीम की खेप को पकड़ा जाता है। कई बार तो इसके लिए तस्कर सुरंग तक खोद डालते हैं।

मोदी का बार-बार महाराष्ट्र दौरा, क्या विधान सभा चुनावों की तैयारी है?

महाराष्ट्र के इस दौरे में प्रधानमंत्री ठाणे में 32,800 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास कर रहे है । प्रधानमंत्री कार्यालय ने कहा कि इन परियोजनाओं का मुख्य फोकस क्षेत्र में शहरी गतिशीलता को बढ़ावा देना शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी मुंबई मेट्रो लाइन 3 चरण-1 के आरे जेवीएलआर से बीकेसी को जोड़ने वाले खंड का भी उद्घाटन करेंगे। वह शाम करीब 6 बजे बीकेसी मेट्रो स्टेशन से बीकेसी से आरे जेवीएलआर तक चलने वाली मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। वह बीकेसी और सांताक्रूज स्टेशनों के बीच मेट्रो में यात्रा भी करेंगे। बता दें कि मुंबई की यह अंडरग्राउंड मेट्रो एक्वा लाइन-3 देश की पहली संपूर्ण भूमिगत मेट्रो है।

अशोक भाटिया

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का औपचारिक ऐलान अभी नहीं हुआ है लेकिन चुनावी हलचल तेज हो गई है। प्रधानमंत्री मोदी महाराष्ट्र का बार-बार दौरा करके सियासी माहौल बनाना शुरू कर चुके हैं। महाराष्ट्र के बदले हुए सियासी माहौल में प्रधानमंत्री मोदी का हाल ही में यह तीसरा दौरा है। प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज शनिवार को महाराष्ट्र का दौरा कर रहे है । इस दौरान वह वाशिम, ठाणे और मुंबई में विकास की विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। यह जानकारी प्रधानमंत्री कार्यालय ने शुक्रवार को एक विज्ञप्ति के माध्यम से दी थी । इसके अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी वाशिम में लगभग 23,300 करोड़ रुपये की कृषि और पशुपालन क्षेत्र से संबंधित विभिन्न पहलों का शुभारंभ करेंगे। प्रधानमंत्री वहां बंजारा समुदाय की समृद्ध विरासत की झांकी प्रस्तुत करने के लिए प्रधानमंत्री बंजारा विरासत संग्रहालय का उद्घाटन करेंगे। बताया जा रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी कुल 56,000 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट्स लॉन्च करने वाले हैं। मुंबई मेट्रो-3 प्रोजक्ट का पहला चरण 12 किलोमीटर से अधिक लंबा है जो 10 स्टेशनों को कवर करेगा। इससे यात्रा में सुविधा होगी और मुंबई के ट्रैफिक को कम करने में मदद मिलेगी।प्रधानमंत्री मोदी ठाणे इंटीग्रल रिंग मेट्रो रेल परियोजना और एलिवेटेड ईस्टर्न फ्रीवे एक्सटेंशन की आधारशिला रखेंगे। प्रधानमंत्री नवी मुंबई हवाईअड्डा प्रभाव अधिसूचित क्षेत्र प्रोजेक्ट की आधारशिला भी रख रहे है । इसके पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दक्षिणी महाराष्ट्र के सोलापुर में करीब 2000 करोड़ रुपए की आठ अमृत (कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन) परियोजनाओं की आधारशिला रख चुके है ।इसके अलावा मोदी प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बनाए गए 90000 से अधिक घरों को भी हितग्राहियों को समर्पित किया और साथ ही सोलापुर में रायनगर हाउसिंग सोसाइटी के 15000 घरों को भी लाभार्थियों को सौंपा । इन लाभार्थियों में हजारों हथकरघा श्रमिक, विक्रेता, पावरलूम श्रमिक, कूड़ा बीनने वाले, बीड़ी श्रमिक और चालक शामिल हैं।महाराष्ट्र के नासिक में देश के सबसे लंबे पुल अटल सेतु का अनावरण किया था और लगभग 15,000 करोड़ रुपए की अन्य परियोजनाओं की सौगात दी थी। अब एक बार फिर से महाराष्ट्र के दौरे पर हैं और हजारों करोड़ के विकास योजनाओं को राज्य को समर्पित कर रहे है । प्रधानमंत्री की राज्य की लगातार यात्राएं उनकी लोकप्रियता और उनकी सरकार के विकास संदेश का लाभ उठाकर अपनी स्थिति मजबूत करने व महाराष्ट्र में होने वाले विधानसभा चुनाव में अधिकतम सीटें जीतने की भाजपा की कोशिशों को दर्शाती है। विधानसभा चुनाव से पहले मोदी के ये दौरे कई लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहे है, पिछले 15 महीनों में महाराष्ट्र में प्रधानमंत्री मोदी ने कई बार महाराष्ट्र का दौरा किया है। प्रोजेक्ट छोटा हो या बड़ा, अगर प्रधानमंत्री उद्घाटन करें तो उसका असर बड़ा होता है और गारंटी वाला होता है ।भाजपा इसी सोच के साथ आगे बढ़ रही है। शिंदे सरकार बनने के बाद प्रधानमंत्री मोदी जून 2022 में नागपुर गए थे। उसके बाद के 13 महीनों में प्रधानमंत्री मोदी दिसंबर 2022 में प्रधानमंत्री मोदी ने नागपुर समृद्धि महामार्ग का उद्घाटन किया। वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई। नागपुर मेट्रो के फेज-1 को देश को समर्पित किया और फेज-2 की नींव रखी।जनवरी 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई में कई प्रोजेक्ट्स की नींव रखी और कुछ का उद्घाटन किया। मुंबई मेट्रो से सफर भी किया। फरवरी 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई को शिरडी और सोलापुर से जोडने वाली दो वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई थी। सांताक्रूज-चेंबूर लिंक रोड और कुरार अंडरपास का भी उद्घाटन किया।अगस्त 2023 में प्रधानमंत्री ने पुणे के एक कार्यक्रम में शिरकत की। तब उनके साथ हृष्टक्कचीफ शरद पवार भी स्टेज पर मौजूद थे। प्रधानमंत्री ने मेट्रो रेल को हरी झंडी दिखाई और पिंपरी-चिंचवाड़ में एक एनर्जी प्लांट का शिलान्यास किया। 14 अक्टूबर 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई में इंटरनेशनल ओलंपिक कमेटी के 141वें सत्र में हिस्सा लिया।26 अक्टूबर 2023 में प्रधानमंत्री ने अहमदनगर का दौरा किया। तीन दशक से अटके निलवंडे डैम को जनता को समर्पित किया। उसी दिन प्रधानमंत्री शिरडी मंदिर गए और श्रद्धालुओं के लिए बने शानदार एसी वेटिंग रूम का उद्घाटन किया।12 जनवरी 2024 को प्रधानमंत्री मोदी ने करोड़ो रुपयों से नवी मुंबई में 'अटल सेतु का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री मोदी के बार-बार महाराष्ट्र जाने पर कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों ने कई बार निशाना साधा है । महाराष्ट्र कांग्रेस के प्रमुख नाना पटोले का कहना था कि अगर प्रधानमंत्री को हर महीने राज्य में आना पड़ रहा है तो यह दिखाता है कि महाराष्ट्र में भाजपा कितनी कमजोर हो गई है। हालांकि, भाजपा को प्रधानमंत्री मोदी के जादू पर पूरा भरोसा है। राज्य भाजपा के प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा कि हम हमारे प्रधानमंत्री विकास के एजेंडा को आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसा नेता मिला है जो जनता और उनके उत्थान को लेकर चिंतित है। प्रधानमंत्री और भाजपा जो भी वादे करते हैं, उन्हें रिकॉर्ड टाइम में पूरा किया जा रहा है। पार्टी के रूप में हम अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन तो करेंगे। इसमें क्या गलत है? प्रधानमंत्री मोदी ने जब दिसंबर 2022 में नागपुर का दौरा किया था, जहां उन्होंने समृद्धि महामार्ग को समर्पित किया था। इस योजना का लाभ विदर्भ, मराठवाड़ा और उत्तरी महाराष्ट्र में मिलने की उम्मीद है। उद्धव ठाकरे के सत्ता से बेदखल होने और शिंदे के अगुवाई में भाजपा गठबंधन की सरकार बनने के बाद प्रधानमंत्री मोदी का यह पहला महाराष्ट्र दौरा था। इसके बाद से प्रधानमंत्री मोदी सात बार महाराष्ट्र का दौरा कर चुके हैं और शुक्रवार को सोलापुर का 8वां दौरा है। सोलापुर का इलाका कांग्रेस के दिग्गज नेता सुशील कुमार शिंदे का गढ़ माना जाता है जिन्हें भाजपा अपने साथ मिलाने की कवायद में है। इस बात को सुशील कुमार शिंदे ने खुद कहा है और अब प्रधानमंत्री मोदी के सोलापुर से विकास की सौगात से नवाज कर विधानसभा चुनाव से पहले सियासी समीकरण साधने का दांव चला है। फरवरी 2023 में मुंबई को शिरडी और सोलापुर के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों से जोडने वाली दो वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने सांताक्रूझ-चेंबूर लिंक रोड और कुरार अंडरपास का उद्घाटन किया था, जिसका उद्देश्य शहर में यातायात को कम करना था। सात महीने बाद अगस्त 2023 में, एक कार्यक्रम के लिए पुणे की यात्रा के दौरान पीए मोदी ने एनसीपी प्रमुख शरद पवार के साथ मंच साझा किया। मोदी ने एक मेट्रो ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाई और पिंपरी-चिंचवड़ नगर निगम के लिए एक ऊर्जा संयंत्र की नींव रखी थी। सितंबर में मोदी ने अहमदनगर जिले का दौरा किया और निलवंडे बांध के बाएं किनारे के नहर नेटवर्क को लोगों को समर्पित किया था, जो 5,177 करोड़ रुपए की सिंचाई परियोजना थी और ये तीन दशकों से लंबित थी। उसी दिन, प्रधानमंत्री ने शिरडी मंदिर का दौरा किया और तीर्थयात्रियों के लिए अत्याधुनिक वातानुकूलित प्रतीक्षा कक्ष सुविधा का उद्घाटन किया था। बताया जाता है कि हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र में बीजेपी तगड़ा झटका खा चुकी है. इसको देखते हुए बीजेपी इस बार विधानसभा चुनावों में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखना चाहती है. 403 सीटों वाले उत्तरप्रदेश विधानसभा के बाद महाराष्ट्र 288 सीटों वाली विधान सभा है . महाराष्ट्र में 2024 के लोकसभा चुनाव में , जो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और शिवसेना के विभाजन के बाद पहला बड़ा चुनाव था, महा विकास अघाड़ी ने 48 में से 30 सीटें जीतीं जबकि महा युति को केवल 17 सीटें ही मिल सकीं।

शख्सियत

बढ़ता राजस्थान

'काम करो तो ऐसे करो कि नाम हो जाए या फिर नाम करो तो ऐसा करो कि नाम लेते ही काम हो जाए'

नमस्कार मित्रों हमारी आज शख्सियत कॉलम के सुपर डुपर स्टार हैं बाबा कलाकंद के निदेशक युवा समाजसेवी और उद्योगपति अभिषेक तनेजा। कुछ लोग ऐसे हैं जिनका जीक्र करते या याद करते ही मुँह में मिठास घुल जाती है,मन स्वत: ही मुस्कान से भर जाता है। ऐसे ही शख्स है हमारे शेखू भैया, इनका जन्म 4 नवंबर सन 1982 को अलवर में हुआ। शिक्षा में इन्होंने बीकॉम कंप्लीट कर सन 2002 में अपना पृतक व्यवसाय में कदम रखा। बाबा कलाकंद जिसे अलवर की सौगात के रूप में जाना जाता था। उसमें पूरी शिद्दत के साथ जुट गए और लोगों के प्यार,बाबा साहेब के विश्वास व आर्शिवाद और खुद पर भरोसे के साथ शुरू किया ब्रांड बाबा कलाकंद का सफर। घंटाघर कलाकंद शॉप से अपने करियर की शुरुआत की पिताजी और ताऊजी के आशीर्वाद से लोगों के प्यार से आगे बढ़ते गए और बाबा कलाकंद का विश्वास जनता के बीच और बढ़ गया। ऐसे में सन 2016 में नया प्रतिष्ठान नंगली सर्किल पर खोला उसके बाद अंबेडकर नगर में एक नया प्रतिष्ठान खोला उसके बाद जैन मंदिर के पास में एक प्रतिष्ठान खोला उसके बाद अपना घर शालीमार में एक प्रतिष्ठान खोला उसके बाद अब भिवाड़ी में भी अलवर की सौगात भिवाड़ी के लोगों के लिए कलाकंद के रूप में पहुंचा रहे हैं। 2015 में रोटरी क्लब की शपथ ली और इंटर हुए सामाजिक कार्यों के लिए 2020 में रोटरी के अध्यक्ष बने। विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में बेहद मुख्य किरदार निभाकर समाज को एक संदेश दिया। कोरोना काल में नेक कमाई टीम की शुरुआत की ताकि गरीब बच्चियों की शादी निरंतर चलती रहे। असहाय और गरीब बच्चियां भी अपने ससुराल में स्वाभिमान के साथ जा सके ऐसे में ने कमाई टीम के कोऑर्डिनेटर के रूप में बड़ी अहम भूमिका निभाते हुए हर उम्र के लोगों को जोड़ा और आज ने कमाई फाउंडेशन किसी परिचय का मोहताज नहीं है। नेक कमाई फाउंडेशन के दो सिलाई केंद्र भी चल रहे हैं जिनमें महिलाओं को रोजगार मिल रहा है। आगामी समय में नेक कमाई चिकित्सा के क्षेत्र में भी नया मुकाम हासिल करेगा यह उनकी दिली इच्छा है। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम ऐसे युवा नौजवान,हंसमुख,हमदर्द और मिलनसार व्यक्तित्व को सलाम करती है और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

रूपक शर्मा

अभिषेक तनेजा
(युवा समाजसेवी व निदेशक बाबा कलाकंद)

आज का इतिहास

6 अक्टूबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- ग्रेगरी के पंचांग के लागू होने के कारण 1582 में पोलैंड, स्पेन, इटली तथा पुर्तगाल में यह दिन रद्द किया गया। यानि इस साल ऐसा कोई दिन नहीं आया।
- 13 जर्मन परिवार 1683 में जर्मनी के क्रेफेल्ड से फिलाडेल्फिया आए थे। इस दिन हर साल जर्मन अमेरिकी दिवस मनाया जाता है।
- बेंजामिन फ्रेंकलिन 17 साल की उम, में 1723 को फिलाडेल्फिया पहुंचे।
- ब्रिटिश सैनिकों ने 1762 में फिलीपींस के मनीला पर कब्जा किया।
- भारतीय दंड संहिता कानून 1862 में पारित हुआ और एक जनवरी से लागू हुआ।
- तांबुलीस्की बुल्गारिया के प्रधानमंत्री 1919 में बने।
- डॉयलॉग और बैकग्राउंड संगीत से सजी पहली फीचर फिल्म 'द जैज सिंगर' 1927 को रिलीज हुई।
- पोलैंड की 1939 को निर्णायक हार।
- सोवियत संघ ने1957 को नोवाया त्रेमल्या में परमाणु परीक्षण किया।
- मेक्सिको में 1972 को ट्रेन पटरी से उतरने से 208 लोगों की मौत।
- इसी दिन इसरायल के ऊपर मिस्र और सीरिया के फौजों ने 1973 में दो तरफा हमला शुरू कर दिया था।
- गुयाना ने 1980 में संविधान को अंगीकार किया।
- मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादत की 1981 में इस्लामिक कट्टरपंथियों ने हत्या कर दी।
- पंजाब में 1983 को राष्ट्रपति शासन लगाया गया।
- फिजी 1987 में एक गणराज्य घोषित हुआ।
- यूनेस्को ने वर्ष 1995 को संयुक्त राष्ट्र सहिष्णुता वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा 1994 में की।
- दो स्विस वैज्ञानिकों ने 1995 में पृथ्वी के सौर व्यवस्था के बाहर गृह की पहली बार पहचान की।
- संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण सम्मेलन 1999 को ऑस्ट्रेलिया की राजधानी वियना में प्रारम्भ।
- इस्रायली पुलिस द्वारा अलअक्सा मस्जिद में 2000 को जबरन प्रवेश के बाद हिंसा शुरू, यूगोस्लाविया में रक्तहीन जनक्रान्ति के बीच राष्ट्रपति मिलोसेविच देश छोड़कर भागे, विपक्षी नेता कोस्तुनिका ने स्वयं को राष्ट्रपति घोषित किया।
- नेपाल के नरेश ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह देव ने 2002 में सत्ता नहीं संभालने की घोषणा की।
- इस्रायली सैन्य अभियान को रोकने का प्रस्ताव 2004 में अमेरिका ने वीटो किया। अल्खानोव चेचेन्या के राष्ट्रपति बने।
- संयुक्त राष्ट्र ने लेबनान में शांति रक्षकों को 2006 में बल प्रयोग का अधिकार दिया।
- परवेज मुशर्रफ़ एकतरफ़ा 2007 को जीत के साथ पाकिस्तान के राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित घोषित हुए। कोरू में एरियन-5 रॉकेट के सहारे आस्ट्रेलियाई-अमेरिकी टेलीविजन उपग्रह का परीक्षण किया गया।
- वैश्विक मंदी के मद्देनज़र भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों के नक़द सुरक्षित अनुपात (सीआरआर) में आधा प्रतिशत की कटौती का फैसला 2008 में किया।

विशेष आलेख

मिलावटी आहार से बढ़ती बीमारियां

विजय गर्ग

पिछले कुछ समय में छोटे बच्चों और युवाओं में हृदय रोग, मधुमेह और कैंसर से मौत के मामले तेजी से बढ़े हैं। कवक यानी 'फंगस' और विषाणु से होने वाली खतरनाक बीमारियों का प्रकोप बढ़ा है। विश्व नाक स्वास्थ्य संगठन की रपट के मुताबिक 2022 में देश में कैंसर के 14.1 लाख नए मामले सामने आए, जिसमें नौ लाख से अधिक लोगों की मौत हो गई। रपट के मुताबिक वर्ष 2050 तक दुनिया भर में कैंसर की बीमारी और बढ़ेगी। कैंसर पर शोध की अंतरराष्ट्रीय संस्था आइएआरएसी के अनुसार पिछले वर्षों में मुंह, गला और स्तन कैंसर में बढ़ोतरी के अलावा पैंतीस प्रकार के कैंसर में वृद्धि हुई है। पेट, मलाशय, प्रोस्टेट, त्वचा और रक्त कैंसर एकाएक वृद्धि हैरान करने वाली है। देश में जहां लोगों में मोटापा बढ़ रहा है, वहीं यह कैंसर के मामलों में बढ़ोतरी का कारण भी बन रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक 2035 तक भारत में कैंसर से मरने वालों की संख्या पैंतीस लाख प्रति वर्ष तक पहुंच जाएगी। कैंसर का कारण मानव शरीर कोशिकाओं में असामान्य वृद्धि और उनका विभाजन है। रसायन युक्त भोजन सामग्री और खराब जीवन शैली भी इसकी वजह है 'सेंटर फार साइंस एंड एनवायरमेंट' (सीएसई) की रपट के मुताबिक शहरों में रह रहे 93 फीसद बच्चे सप्ताह में एक दिन डिब्बाबंद खाद्य सामग्री खाते हैं, जबकि 53 फीसद बच्चे प्रतिदिन तुरंता आहार यानी 'जंक फूड' खा हैं। शहरों से लेकर गांवों के गरीब बच्चों तक की दिनचर्या 'जंक फूड' से शुरू हो रही है। वर्ष 2011 से 2021 की अवधि में देश में 'जंक फूड' का कारोबार 13.37 फीसद की दर से लगातार बढ़ रहा है। इससे देश के ग्यारह फीसद बच्चे मोटापे का शिकार हो चुके हैं। लांसेट पत्रिका की शोध रपट 2022 के मुताबिक 1.25 करोड़ बच्चे अपेक्षित वजन से अधिक मोटे थे। यह संख्या आंकड़ों की तुलना में 25 गुना अधिक बढ़ रही है। इसकी वजह देश में बहुराष्ट्रीय कंपन मिलना है। विदेश व्यापार को अनुमति मिलने के बाद कंपनियों को खानपान की सामग्री सहित सभी तरह के व्यापार की खुली अनुमति । से देश में में प्रसंस्कृत डिब्बाबंद सामग्री का चलन बहुत तेजी से बढ़ा है।

वर्ष 1990 के दशक देश में गरीब से लेकर अमीर और छोटी से लेकर बड़ी उम्र तक के लोग डिब्बाबंद चीजों को तुरंत भूख मिटाने की खाद्य सामग्री मान चुके हैं। बड़ी संख्या में आम जन अब काम के दौरान घर से बना नाश्ता ले जाने के बजाय, बजार की खाद्य सामग्री पर आश्रित हो हो चुके हैं। देश में बीस वर्ष से अधिक उम्र के सात से अधिक वयस्क, जिनकी दैनिक भोजन सामग्री में अति प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ शामिल हैं, स्वयं को तंदुरुस्त नहीं मानते हैं डिब्बाबंद भोजन में अधिक नमक, शीतल पेय में कृत्रिम मिठास के साथ %प्रिजर्वेटिव% की अत्यधिक मात्रा यकृत, गुर्दे की बीमारी, ब्रेन टयूमर आदि सहित कैंसर रोग के लिए जिम्मेदार हैं। कृत्रिम पेय पदार्थ, चाकलेट और डिब्बाबंद फलों के रस से मूत्र में संक्रमण की शिकायतें देश में तेजी से बढ़ी हैं। सीएसई के आंकड़े बताते हैं कि देश में 71 फीसद आबादी स्वस्थ आहार नहीं ले रही है। जिसकी वजह से देश में प्रतिवर्ष 17 लाख लोग मधुमेह, कैंसर, तपेदिक और हृदय संबंधी बीमारियों से मौत का शिकार हो रहे हैं। अमेरिका के 'इंस्टीट्यूट फार हेल्थ मैटिक्स एंड पोल्यूशन' की रपट के अनुसार सिगरेट और शराब के बाद विश्व में अधिक मौत तय मात्रा से अधिक नमक खाने से होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रति वयस्क प्रतिदिन 02 ग्राम से अधिक मात्रा की अनुमति नहीं देता है 'टाक्सिक्स लिंक' नामक गैरसरकारी संगठन के एक शोध में दावा किया गया है कि देश में बढ़ते कैंसर और दिल के रोग की एक वजह नमक और चीनी में मौजूद प्लास्टिक के सूक्ष्म कण हैं। डिब्बाबंद सामग्री में चिंता का विषय नमक या शक्कर ही है। अमेरिका की एक सौंदर्य प्रसाधन कंपनी के विरुद्ध वहां की हजारों महिलाओं ने इस आरोप के साथ मामला दायर कराया है कि उसके उत्पाद से 'मेसोथेलियोमा कैंसर फैल रहा है। जबकि भारत में इन उत्पादों को उच्च गुणवत्ता का बता कर धड़ल्ले से बेचा रहा है शारीरिक सौंदर्य की उक्त को शरीर पर अधिक समय तक प्रसाधन टिकाऊ बनाने के लिए एस्बेस्टस उपयोग होता है। ब्रिटिश मेडिकल टेसबर्ड की रपट के मुताबिक सौंदर्य सामग्री में एस्बेस्टस उपलब्ध तकनीक से पकड़ना आसान नहीं है। इसलिए सौंदर्य प्रसाध कंपनियां अपने उत्पादों । उत्पादों को विषाणुमुक्त होने का दावा जरूर करती हैं, लेकिन सौंदर्य टेल्कम और बेंजीन की मात्रा होती है, जो कैंसरकारक है। है देश में खाद्य सामग्री, दवाइयों सहित दैनिक उपयोग की सामग्री की निगरानी और जांच के लिए संबंधित विभागों के पास न तो पर्याप्त कर्मचारी हैं, न ही जांच प्रयोगशालाएं। राज्य सरकारों के पास ऐसे विभाग चलाने के लिए वित्तीय बजट की कमी है। प्रसाधन फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड अथारिटी आफ इंडिया (एफएसएसआइ) के नियम अनुसार एक खाद्य निरीक्षक के पास अधिकतम दो हजार दुकानों की निगरानी का जिम्मा होना चहिए, लेकिन राज्यों में एक-एक खाद्य निरीक्षक पर पंद्रह हजार दुकानों तक की निगरानी का दायित्व है। वर्ष 2022 2 तक देश देश में मात्र 224 खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाएं थीं। जिसमें सरकारी प्रयोगशालाओं की संख्या सौ से ज्यादा नहीं हैं। प्रयोगशालाओं कमी के कारण समय पर जांच न होने से मिलावट करने वाले दंड क्रिया से बाहर हो जाते हैं।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताए और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष

विरोधियों से विजय प्राप्त करेंगे। दिन के दौरान आकस्मिक घटनाओं में व्यस्त रहेंगे। आज आप शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता अनुभव करेंगे। नौकरी-धंधे में उच्च अधिकारी या भागीदार के क्रोध का शिकार बनना पड़ेगा।

वृष

शारीरिक स्वास्थ्य बना रहेगा। मित्रों, स्नेहीजनों से लाभ होगा। शरीर में थकान और बेचैनी रहेगी। स्वास्थ्य नरम-गरम रहेगा। मन चिंता से व्याकुल रहेगा। आज यात्रा स्थगित रखने की सलाह दी जाती है। संतान के विषय में चिंता रहेगी।

मिथुन

आप पूरे दिन शारीरिक और मानसिक थकान महसूस करेंगे। परिश्रम की अपेक्षा कम सफलता मिलने से निराशा रह सकती है। नौकरी और व्यापार के संबंध में थोड़ा चिंतित रहेंगे। काम की भागदौड़ में परिवार की तरफ ध्यान नहीं दे पाएंगे।

कर्क

व्यवसाय करने वालों को सरकार की तरफ से लाभ मिलने और नौकरीपेशा को उच्च अधिकारियों की कृपादृष्टि मिलेगी। भाई-बंधुओं और पड़ोसियों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा। लंबे प्रवास का आयोजन संभव होगा।

सिंह

विद्यार्थी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। संतान के अध्ययन या अन्य मामलों के पीछे धन खर्च या पूंजी निवेश होगी। कलाकारों तथा खिलाड़ियों को प्रतिभा दिखाने का उत्तम समय है। सरकार से लाभ होने की संभावना है।

कन्या

किसी के साथ गलतफहमी होने के कारण मनमुटाव हो सकता है। पारिवारिक वातावरण खराब हो सकता है। भरपूर आत्मविश्वास और दृढ़ निर्णय के कारण आज आप कोई भी काम त्वरित निर्णय लेकर पूरा करेंगे। परिणामस्वरूप मन में नकारात्मक विचार पैदा होंगे।

तुला

गृहस्थ जीवन में सुख- शांति का अनुभव होगा। मित्रों से मुलाकात होगी। आय में वृद्धि होगी। उत्तम वैवाहिक सुख की प्राप्ति होगी। अविवाहितों का रिश्ता पक्का होने की संभावना बनी रहेगी। आज आपके हरेक कार्य निर्विघ्न पूरे होंगे।

वृश्चिक

कोर्ट-कचहरी का कामों को आज टाल देना हितकर है। आज विविध क्षेत्र में लाभ मिलने से आप शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और प्रफुल्लित रहेंगे। मित्रों के साथ मुलाकात, रमणीय स्थानों पर प्रवास पर्यटन का आयोजन होगा।

धनु

शारीरिक अस्वस्थता के साथ-साथ मानसिक चिंता में वृद्धि होगी। पारिवारिक सदस्यों के साथ मनमुटाव होगा। उग्र वाणी और अहं के टकराव से किसी के साथ झगड़े या विवाद की स्थिति बन सकती है।

मकर

पिता तथा अभिभावकों का सहयोग प्राप्त होगा। मन आनंदित रहेगा। फिर भी स्वभाव में उग्रता का असर आपकी वाणी पर न पड़े, इसका ध्यान रखें। वैवाहिक जीवन में प्रेम बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधी मामूली शिकायत रहेगी।

कुंभ

गृहस्थ जीवन में आनंद छाया रहेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नौकरी-व्यवसाय में प्रगति होगी। अधिकारी और घर में बड़ों से लाभ मिलेगा। धन लाभ होगा। व्यापारियों को उधार दिया पैसा मिलेगा। संतान की प्रगति से मन खुश रहेगा।

मीन

आज यात्रा को टालना हित में होगा। पाचन तंत्र संबंधी कोई तकलीफ हो सकती है। आपके व्यवहार से किसी को हानि न पहुंचे, इसका ध्यान रखें। आज आप सभी काम दृढ़ आत्मविश्वास और मनोबल से पूरा करेंगे। आंख संबंधी शिकायत पैदा होगी।

https://t.me/AIRNewsArchive

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीदपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतीक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान*। प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

शिक्षक दुनिया को बेहतर बनाने में सहायता करें

-ललित गर्ग

विश्व शिक्षक दिवस 5 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में मनाया जाता है। इस दिन आध्यापकों को सामान्य रूप से और कतिपय कार्यरत एवं सेवानिवृत्त शिक्षकों को उनके विशेष योगदान के लिये सम्मानित किया जाता है। इसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा साल 1966 में यूनेस्को और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की, उस संयुक्त बैठक को याद करने के लिये मनाया जाता है, जिसमें अध्यापकों की स्थिति पर चर्चा हुई थी और इसके लिये सुझाव प्रस्तुत किये गये थे। अतः इसे 1994 के बाद से प्रतिवर्ष लगभग 100 से अधिक देशों में मनाया जा रहा है और इस प्रकार वर्ष 2024 में यह 30वाँ विश्व शिक्षक दिवस होगा। 2024 में इस दिवस की थीम है ह्यशिक्षकों को सशक्त बनाना, लचीलापन मजबूत करना, स्थिरता का निर्माण करना। यह थीम इस बात पर जोर देती है कि शिक्षकों को सामाजिक जिम्मेदारी और पर्यावरण जागरूकता विकसित करने में छात्रों का समर्थन करने के लिए आवश्यक संसाधन और जानकारी देना कितना महत्वपूर्ण है।

शिक्षक उस माली के समान है, जो एक बगीचे को अलग अलग रूप-रंग के फूलों से सजाता है। जो छात्रों को कांटों पर भी मुस्कुराकर चलने के लिए प्रेरित करता है। आज शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण एवं शिक्षा को हर घर तक पहुंचाने के लिए तमाम सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं। इसकी सफलता के सशक्त माध्यम शिक्षक ही है और शिक्षकों को वह सम्मान मिलना चाहिए जिसके वे हकदार हैं। विभिन्न देशों में शिक्षक दिवस अलग-अलग तारीखों को मनाया जाता है। भारत के राष्ट्रपति, महान दार्शनिक, चिन्तक, शिक्षाशास्त्री डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस को 5 सितम्बर को पूरे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत में प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य ह्यसा विद्या या विमुक्तयेह्ल रहा अर्थात विद्या वही है, जो मुक्ति दिलाए। आज शिक्षा का उद्देश्य ह्यसा विद्या या नियुक्तयेह्ल हो गया है अर्थात विद्या वही जो नियुक्ति दिलाए। इस दृष्टि से शिक्षा के बदलते अर्थ ने समाज की मानसिकता को बदल दिया है। यही कारण है कि आज समाज में लोग केवल शिक्षित होना चाहते हैं, सुशिक्षित नहीं बनना चाहते। वे चाहते हैं कि ज्ञान का सीधा संबंध उनके अर्थोपार्जन से ही है। जिस ज्ञान से अधिक से अधिक धन और उच्च पद को ग्रहण किया जाए वही शिक्षा कारगर है। पर चिंता का विषय है कि भारत के शिक्षक ही आज इसकी उपेक्षा कर रहे हैं। ऐसा लगता है, मानो उनका लक्ष्य केवल बौद्धिक विकास ही है। अब शिक्षक के लिये शिक्षा एक मिशन न होकर व्यवसाय हो गयी है। इन स्थितियों से शिक्षकों को बाहर निकलने में नई शिक्षा नीति से बहुत अपेक्षाएं है।

विश्व शिक्षक दिवस उन समर्पित शिक्षकों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है जो अगली पीढ़ी के दिमाग को आकार देते हैं और ज्ञान देते हैं। यह विश्वव्यापी उत्सव शिक्षकों को उनके अमूल्य प्रयासों और भावी पीढ़ियों को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका के लिए सम्मानित करता है। इस दिन, हम रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और आजीवन सीखने को प्रोत्साहित करके बच्चों के दिमाग और भविष्य को विकसित करने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को याद करते हैं। यह उन कठिनाइयों की ओर ध्यान आकर्षित करता है जिनका वे सामना करते हैं और अपनी विशेषज्ञता को साझा करने और खुद को विकसित करने के लिए जो प्रतिबद्धता दिखाते हैं। अपनी प्रतिबद्धता और जुनून के माध्यम से, शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं बल्कि मूल्यों को भी स्थापित करते हैं, जिससे पूरे समाज पर एक स्थायी प्रभाव पड़ता है।

आज की शिक्षा मिशन न होकर, व्यवसाय बन गयी है। तमाम शिक्षक एवं शिक्षालय अपने ज्ञान की बोली लगाने लगे हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो गुरु-शिष्य की परंपरा कहीं न कहीं कलंकित हो रही है। आए दिन शिक्षकों द्वारा छात्रों एवं छात्रों द्वारा शिक्षकों के साथ दुर्व्यवहार, मारपीट एवं अनुशासनहीनता की खबरें सुनने को मिलती हैं। इसे देखकर हमारी संस्कृति की इस अमूल्य गुरु-शिष्य परंपरा पर प्रश्नचिह्न लगने लगे है। विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों का ही दायित्व है कि वे इस महान परंपरा को बेहतर ढंग से समझें और एक अच्छे समाज के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करें। विश्व शिक्षक दिवस एक अवसर है जब हम धुंधली होती शिक्षक की आदर्श परम्परा एवं शिक्षा को परिष्कृत करने और जिम्मेदार व्यक्तियों का निर्माण करने की दिशा में नयी शिक्षा नीति के अन्तर्गत ठोस कार्य करें। ह्यगुरुह्ल का हर किसी के जीवन में बहुत महत्व होता है। समाज में भी उनका अपना एक विशिष्ट स्थान होता है।

वर्तमान समय में शिक्षक की भूमिका भले ही बदली हो, लेकिन उनका महत्व एवं व्यक्तित्व-निर्माण की जिम्मेदारी अधिक प्रासंगिक हुई है। क्योंकि सर्वतोमुखी योग्यता की अभिवृद्धि के बिना युग के साथ चलना और अपने आपको टिकाए रखना अत्यंत कठिन होता है। फौलाद-सा संकल्प और सब कुछ करने का सामर्थ्य ही व्यक्तित्व में निखार ला सकता है। शिक्षक ही ऐसे व्यक्तित्वों का निर्माण करते हैं। महात्मा गांधी के अनुसार सर्वांगीण विकास का तात्पर्य है- आत्मा, मस्तिष्क, वाणी और कर्म-इन सबके विकास में संतुलन बना रहे। स्वामी विवेकानंद के अनुसार सर्वांगीण विकास का अर्थ है- हृदय से विशाल, मन से उच्च और कर्म से महान। सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास हेतु शिक्षक आचार, संस्कार, व्यवहार और विचार- इन सबका परिमार्जन करने का प्रयत्न करते रहते थे। शिक्षकों पर इस दुनिया में सबसे प्रेरक काम और एक बड़ी जिम्मेदारी है। शिक्षक ज्ञान का भंडार हैं जो अपने शिष्यों को अपना ज्ञान देने में विश्वास करते हैं जिससे उनके शिष्य भविष्य में दुनिया को बेहतर बनाने में सहायता कर सकेंगे। इससे ऐसी पीढ़ी निर्मित होगी जो उज्ज्वल और बुद्धिमान हो तथा वह जो दुनिया को उसी तरीके से समझे जैसी वह है और जो भावनाओं से नहीं बल्कि तर्क और तथ्यों से प्रेरित हो।

आदर्श अध्यापक के कर्तव्य है कि उनके व्यवहार में नम्रता एवं विनम्रता का भाव हो, उनमें सहजता गंभीरता एवं विद्वता झलकता हो, उनकी वाणी ऐसी हो कि बच्चे के मन को जीत ले। वैसे तो शिक्षक का पद अत्यंत गरिमा पूर्ण होता है, क्योंकि ह्यद्विजह्ल प्रकार खेती के लिए बीज, खाद एवं उपकरण के रहते हुए, अगर किसान नहीं हैं, तो सब बेकार है। उसी प्रकार विद्यालय के भवन, शिक्षण सामग्री एवं छात्रों के होते हुए, शिक्षक नहीं हैं तो सब बेकार है। ह्यद्वा एवं ह्यक शिल्पकार प्रतिमा बनाने के लिए जैसे पत्थर को कहीं काटता है, कहीं छांटता है, कहीं उस को चिकना करता है, कहीं तराशता है तथा कहीं आवृत को अनावृत करता है, वैसे ही हर शिक्षक अपने विद्यार्थी के व्यक्तित्व को तराशकर उसे महनीय और सुघड़ रूप प्रदान करते हैं। हर पल उनकी शिक्षाएं प्रेरणा के रूप में, शक्ति के रूप में, संस्कार के रूप में जीवंत रहती हैं। महा- दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में -ह्यव्यक्तित्व-निर्माण का कार्य अत्यन्त कठिन है। निःस्वार्थी और जागरूक शिक्षक ही किसी दूसरे व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है। हमने सुपर-30 फिल्म में एक शिक्षक के जुनून को देखा। इस फिल्म में प्रो. आनन्द के शिक्षा-आन्दोलन को प्रभावी ढंग से प्रस्तुति दी गयी है, जो विश्व परिप्रेक्ष्य में उपयोगी है। विश्व शिक्षक दिवस का उद्देश्य मानवता को बढ़ावा देने, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा देने और भविष्य के नेताओं को तैयार करने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानना है। यह शिक्षकों के सामने आने वाली कठिनाइयों पर विचार करने और दुनिया भर में शिक्षकों के लिए अधिक धन, तैयारी और सम्मान के लिए दबाव बनाने का अवसर है। आज शिक्षक एवं शिक्षा का महत्व ज्यादा है। जैसाकि महात्मा गांधी ने कहा था-एक स्कूल खुलेगी तो सौ जेलें बंद होंगी। पर आज उल्टा हो रहा है। स्कूलों की संख्या बढ़ने के साथ जेलें के स्थान छोटे पड़ रहे हैं। जेलों की संख्या भी उसी अनुपात में बढ़ रही है। स्पष्ट है- हिंसा और अपराधों की वृद्धि में वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षक भी एक सीमा तक जिम्मेदार है। अशिक्षित और मूर्ख की अपेक्षा शिक्षित और बुद्धिमान अधिक अपराध कर रहे हैं। वह अपने पापों और दोषों पर आवरण डालने हेतु अधिक युक्तियां सोच सकते हैं। इस स्थिति के लिये शिक्षा ही जिम्मेदार है।

मोदी का बार-बार महाराष्ट्र दौरा, क्या विधान सभा चुनावों की तैयारी है ?

अशोक भाटिया

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का औपचारिक ऐलान अभी नहीं हुआ है लेकिन चुनावी हलचल तेज हो गई है। प्रधानमंत्री मोदी महाराष्ट्र का बार ह्र बार दौरा करके सियासी माहौल बनाना शुरू कर चुके हैं। महाराष्ट्र के बदले हुए सियासी माहौल में प्रधानमंत्री मोदी का हाल ही में यह तीसरा दौरा है। प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज शनिवार को महाराष्ट्र का दौरा कर रहे है । इस दौरान वह वाशिम, ठाणे और मुंबई में विकास की विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। यह जानकारी प्रधानमंत्री कार्यालय ने शुक्रवार को एक विज्ञप्ति के माध्यम से दी थी । इसके अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी वाशिम में लगभग 23,300 करोड़ रुपये की कृषि और पशुपालन क्षेत्र से संबंधित विभिन्न पहलों का शुभारंभ करेंगे। प्रधानमंत्री वहां बंजारा समुदाय की समृद्ध विरासत की झांकी प्रस्तुत करने के लिए प्रधानमंत्री बंजारा विरासत संग्रहालय का उद्घाटन करेंगे। बताया जा रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी कुल 56,000 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट्स लॉन्च करने वाले हैं। महाराष्ट्र के इस दौरे में प्रधानमंत्री ठाणे में 32,800 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास कर रहे है । प्रधानमंत्री कार्यालय ने कहा कि इन परियोजनाओं का मुख्य फोकस क्षेत्र में शहरी गतिशीलता को बढ़ावा देना शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी मुंबई मेट्रो लाइन 3 चरण-1 के आरे जेवीएलआर से बीकेसी को जोड़ने वाले खंड का भी उद्घाटन करेंगे। वह शाम करीब 6 बजे बीकेसी मेट्रो स्टेशन से बीकेसी से आरे जेवीएलआर तक चलने वाली मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। वह बीकेसी और सांताक्रूज स्टेशनों के बीच मेट्रो में यात्रा भी करेंगे। बता दें कि मुंबई की यह अंडरग्राउंड मेट्रो एक्वा लाइन-3 देश की पहली संपूर्ण भूमिगत मेट्रो है। मुंबई मेट्रो-3 प्रोजक्ट का पहला चरण 12 किलोमीटर से अधिक लंबा है जो 10 स्टेशनों को कवर करेगा। इससे यात्रा में सुविधा होगी और मुंबई के ट्रैफिक को कम करने में मदद मिलेगी।प्रधानमंत्री मोदी ठाणे इंटीग्रल रिंग मेट्रो रेल परियोजना और एलिवेटेड ईस्टर्न फ्रीवे एक्सटेंशन की आधारशिला रखेंगे। प्रधानमंत्री नवी मुंबई हवाईअड्डा प्रभाव अधिसूचित क्षेत्र (ठअ क्ठअ) प्रोजेक्ट की आधारशिला भी रख रहे है।

इसके पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दक्षिणी महाराष्ट्र के सोलापुर में करीब 2000 करोड़ रुपए की आठ अमृत (कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन) परियोजनाओं की आधारशिला रख चुके है ।इसके अलावा मोदी प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बनाए गए 90000 से अधिक घरों को भी हितग्राहियों को समर्पित किया और साथ ही सोलापुर में रायनगर हाउसिंग सोसाइटी के 15000 घरों को भी लाभार्थियों को सौंपा । इन लाभार्थियों में हजारों हथकरघा श्रमिक, विक्रेता, पावरलूम श्रमिक, कूड़ा बीनने वाले, बीड़ी श्रमिक और चालक शामिल हैं।महाराष्ट्र के नासिक में देश के सबसे लंबे पुल अटल सेतु का अनावरण किया था और लगभग 15,000 करोड़ रुपए की अन्य परियोजनाओं की सौगात दी थी। अब एक बार फिर से महाराष्ट्र के दौरे पर हैं और हजारों करोड़ के विकास योजनाओं को राज्य को समर्पित कर रहे है । प्रधानमंत्री की राज्य की लगातार यात्राएं उनकी लोकप्रियता और उनकी सरकार के विकास संदेश का लाभ उठाकर अपनी स्थिति मजबूत करने व महाराष्ट्र में होने वाले विधानसभा चुनाव में अधिकतम सीटें जीतने की भाजपा की कोशिशों को दशार्ती है। विधानसभा चुनाव से पहले मोदी के ये दौरे कई लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहे है, पिछले 15 महीनों में महाराष्ट्र में प्रधानमंत्री मोदी ने कई बार महाराष्ट्र का दौरा किया है।

प्रोजेक्ट छोटा हो या बड़ा, अगर प्रधानमंत्री उद्घाटन करें तो उसका असर बड़ा होता है और गारंटी वाला होता है ।भाजपा इसी सोच के साथ आगे बढ़ रही है। शिंदे सरकार बनने के बाद प्रधानमंत्री मोदी जून 2022 में नागपुर गए थे। उसके बाद के 13 महीनों में प्रधानमंत्री मोदी दिसंबर 2022 में प्रधानमंत्री मोदी ने नागपुर समृद्धि महामार्ग का उद्घाटन किया। वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई। नागपुर मेट्रो के फेज-1 को देश को समर्पित किया और फेज-2 की नींव रखी।जनवरी 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई में कई प्रोजेक्ट्स की नींव रखी और कुछ का उद्घाटन किया। मुंबई मेट्रो से सफर भी किया। फरवरी 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई को शिरडी और सोलापुर से जोड ? वाली दो वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई थी । सांताक्रूज-चेंबूर लिंक रोड और कुरार अंडरपास का भी उद्घाटन किया।अगस्त 2023 में प्रधानमंत्री ने पुणे के एक कार्यक्रम में शिरकत की।

तब उनके साथ ठउढ चीफ शरद पवार भी स्टेज पर मौजूद थे। प्रधानमंत्री ने मेट्रो रेल को हरी झंडी दिखाई और पिंपरी-चिंचवाड़ में एक एनर्जी प्लांट का शिलान्यास किया। 14 अक्टूबर 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई में इंटरनेशनल ओलंपिक कमेटी के 141वें सत्र में हिस्सा लिया।26 अक्टूबर 2023 में प्रधानमंत्री ने अहमदनगर का दौरा किया। तीन दशक से अटके निलवंडे डैम को जनता को समर्पित किया। उसी दिन प्रधानमंत्री शिरडी मंदिर गए और श्रद्धालुओं के लिए बने शानदार एसी वेटिंग रूम का उद्घाटन किया।12 जनवरी 2024 को प्रधानमंत्री मोदी ने करोड़ो रुपयों से नवी मुंबई में ह्यअटल सेतु का उद्घाटन किया।

प्रधानमंत्री मोदी के बार-बार महाराष्ट्र जाने पर कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों ने कई बार निशाना साधा है । महाराष्ट्र कांग्रेस के प्रमुख नाना पटोले का कहना था कि अगर प्रधानमंत्री को हर महीने राज्य में आना पड़ रहा है तो यह दिखाता है कि महाराष्ट्र में भाजपा कितनी कमजोर हो गई है। हालांकि, भाजपा को प्रधानमंत्री मोदी के जादू पर पूरा भरोसा है। राज्य भाजपा के प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा कि हम हमारे प्रधानमंत्री विकास के एजेंडा को आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसा नेता मिला है जो जनता और उनके उत्थान को लेकर चिंतित है। प्रधानमंत्री और भाजपा जो भी वादे करते हैं, उन्हें रिकॉर्ड टाइम में पूरा किया जा रहा है। पार्टी के रूप में हम अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन तो करेंगे। इसमें क्या गलत है? प्रधानमंत्री मोदी ने जब दिसंबर 2022 में नागपुर का दौरा किया था, जहां उन्होंने समृद्धि महामार्ग को समर्पित किया था। इस योजना का लाभ विदर्भ, मराठवाड़ा और उत्तरी महाराष्ट्र में मिलने की उम्मीद है। उद्धव ठाकरे के सत्ता से बेदखल होने और शिंदे के अगुवाई में भाजपा गठबंधन की सरकार बनने के बाद प्रधानमंत्री मोदी का यह पहला महाराष्ट्र दौरा था। इसके बाद से प्रधानमंत्री मोदी सात बार महाराष्ट्र का दौरा कर चुके हैं और शुक्रवार को सोलापुर का 8वां दौरा है। सोलापुर का इलाका कांग्रेस के दिग्गज नेता सुशील कुमार शिंदे का गढ़ माना जाता है जिन्हें भाजपा अपने साथ मिलाने की कवायद में है। इस बात को सुशील कुमार शिंदे ने खुद कहा है और अब प्रधानमंत्री मोदी के सोलापुर से विकास की सौगात से नवाज कर विधानसभा चुनाव से पहले सियासी समीकरण साधने का दांव चला है।

फरवरी 2023 में मुंबई को शिरडी और सोलापुर के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों से जोड ? वाली दो वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने सांताक्रूझ-चेंबूर लिंक रोड और कुरार अंडरपास का उद्घाटन किया था, जिसका उद्देश्य शहर में यातायात को कम करना था। सात महीने बाद अगस्त 2023 में, एक कार्यक्रम के लिए पुणे की यात्रा के दौरान पीए मोदी ने एनसीपी प्रमुख शरद पवार के साथ मंच साझा किया। मोदी ने एक मेट्रो ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाई और पिंपरी-चिंचवड़ नगर निगम के लिए एक ऊर्जा संयंत्र की नींव रखी थी। सितंबर में मोदी ने अहमदनगर जिले का दौरा किया और निलवंडे बांध के बाएं किनारे के नहर नेटवर्क को लोगों को समर्पित किया था, जो 5,177 करोड़ रुपए की सिंचाई परियोजना थी और ये तीन दशकों से लंबित थी। उसी दिन, प्रधानमंत्री ने शिरडी मंदिर का दौरा किया और तीर्थयात्रियों के लिए अत्याधुनिक वातानुकूलित प्रतीक्षा कक्ष सुविधा का उद्घाटन किया था।

बताया जाता है कि हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र में बीजेपी तगड़ा झटका खा चुकी है. इसको देखते हुए बीजेपी इस बार विधानसभा चुनावों में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखना चाहती है. 403 सीटों वाले उत्तरप्रदेश विधानसभा के बाद महाराष्ट्र 288 सीटों वाली विधान सभा है . महाराष्ट्र में 2024 के लोकसभा चुनाव में , जो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और शिवसेना के विभाजन के बाद पहला बड़ा चुनाव था, महा विकास अघाड़ी ने 48 में से 30 सीटें जीतीं जबकि महा युति को केवल 17 सीटें ही मिल सकीं। महाराष्ट्र में शिंदे और अजित पवार के साथ होने के बाद भी भाजपा 2024 के विधान सभा चुनाव में किसी तरह का कोई जोखिम नहीं उठाना चाहती है। इसलिए भाजपा ने विधानसभा की लड़ाई शुरू करने से पहले विपक्ष पर अजेय बढ़त हासिल करने के मद्देनजर अपनी सक्रियता को बढ़ा दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने खुद मोर्चा संभाल लिया है। महाराष्ट्र में छोटी-बड़ी सभी परियोजना का उद्घाटन प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा किया जाता है ताकि इसका सियासी प्रभाव पड़ सके। यह सिलसिला महाराष्ट्र में 2022 से जारी है, जब से राज्य में भाजपा के समर्थन से एकनाथ शिंदे के अगुवाई में सरकार बनी है।

हवा में है मां वैष्णों की पिण्डियां

-सुरेश गांधी

चमत्कार के एक-दो नहीं ढेरों कहानियां अपने अंदर समेटे हसीन वादियों में त्रिकूट पर्वत पर गुफा में विराजमान है आदि शक्ति जगत जननी माता वैष्णो देवी। मां वैष्णव धाम के गुफा में विराजमान तीनों पीडिंया ब्रह्मा के अंश से उत्पंन महासरस्वती, विष्णु के अंश से उत्पंन महालक्ष्मी और शिव के अंश से उत्पंन महाकाली की प्रतीक है। इन तीनों देवियों का सामूहिक स्वरुप ही आदि शक्ति जगत जननी मां वैष्णवी हैं। तभी तो अन्य देवी मंदिरों की भांति देवी की साकार और श्रृंगारित प्रतिमा न होकर यहां मां वैष्णवी तीन पिण्डियों के सामूहिक स्वरुप में है। मां काली (दाएं), मां सरस्वती (बाएं) और मां लक्ष्मी (मध्य) के रूप में भक्तों को दर्शन देती है। खास यह है कि तीनों दिव्य पिण्डियां बिना किसी आधार हवा में खड़ी है, जो अपनेआप में अद्भुत है।

वैज्ञानिकों ने भी इन पिण्डियों के रहस्य में पाया कि गुफा में यह तीन पिण्डियां बिना आधार के स्थित है यानि दिव्य पिण्डियां बिना किसी सहारे के हवा में खड़ी है, जो अद्भुत आध्यात्मिक दृष्टि से भी अलौकिक शक्ति का यह तीन रुप इच्छाशक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रियाशक्ति की प्रतीक है। कहते है जो श्रद्धालु मां का पूजा विधि-विधान व तौर-तरीकों से कर लिया उसकी हर प्रकार की मुरादें पूरी होने के साथ ही उसके सारे कष्ट व पाप कट जाते है। मां का ये धाम अनोखा व अद्भूत इसलिए भी है कि माता वैष्णवी अधर्म और दुष्टों का नाश कर जगत कल्याण के लिए आज भी वैष्णव धाम में वास करती है। महाकाली और लक्ष्मी के बीच में छतरी हैं। बाएं पार्श्व में महाकाली के पास ज्योति जलती रहती हैं। तीनों माताओं के सामने पिंडियां हैं। दर्शन के दौरान मूर्तियों के सामने नीचे बहुत ध्यान से देखना पड़ता हैं इन पिंडियों को। वास्तव में इन पिंडियों के ही दर्शन किए जाने हैं। माना जाता हैं कि ये पिंडियां प्राकृतिक रूप से उभर आई हैं।

पौराणिक मान्यता है कि राक्षस महिषासुर के दुष्टता और आंतक से पीडित इन्द्र सहित सभी देवता ब्रह्मा और शिव के साथ वैकुण्ठ में विष्णु भगवान से मिले। देवताओं ने विष्णु भगवान से राक्षस महिषासुर के संकट से छुटकारा दिलाने की प्रार्थना की। तब भगवान विष्णु ने दिव्य-दृष्टि से जानकर बताया कि महिषासुर की मृत्यु केवल एक नारी के द्वारा ही संभव है, देवताओं द्वारा नहीं। इसके बाद देवताओं द्वारा स्तुति करने पर ब्रह्मा, विष्णु और शिव के सामुहिक तेज से एक नारी स्वरुप शक्ति की उत्पत्ति हुई। इस शक्ति में ब्रह्मा के अंश से महासरस्वती, विष्णु के अंश से महालक्ष्मी और शिव के अंश से महाकाली पैदा हुई। गुफा में तीन पिण्डियां इन तीन देवी रुपों की प्रतीक है। इनका सामूहिक स्वरुप ही मां वैष्णवी है। बाहरी रुप से अलग-अलग दिखाई देने पर भी इन तीन रुपों में कोई भेद नहीं है। माना जाता है कि वैज्ञानिकों ने भी इन पिण्डियों के रहस्य को जानना चाहा। उनके द्वारा वैज्ञानिक निष्कर्षों में भी यह पाया कि गुफा में यह तीन पिण्डियां बिना आधार के स्थित है यानि दिव्य पिण्डियां बिना किसी सहारे के हवा में खड़ी है, जो अद्भुत है। आध्यात्मिक दृष्टि से अलौकिक शक्ति का रुप यह तीन पिण्डियां इच्छाशक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रियाशक्ति की प्रतीक है। इस तथ्य को व्यावहारिक जीवन से जोड़े तो पाते है कि जीवन में इच्छा, विद्या और कर्म के अभाव में किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती है।

शक्ति ग्रंथों में भी आदिशक्ति वैष्णवी ने शक्ति के इन अवतारों का मुख्य उद्देश्य देवताओं की रक्षा, मानव-कल्याण, दानवों का नाश, भक्तों को निर्भय करना और धर्म की रक्षा बताया है। माता वैष्णवी की चमत्कारिक पिण्डियों की भांति ही वैष्णव मां की पवित्र गुफा में बहने वाला जल भी रहस्य का विषय है। इस जल का स्त्रोत वैज्ञानिकों को भी नहीं मिला। यही कारण है कि माता के दरबार से धर्मावलंबी भक्तों का अटूट आस्था और विश्वास है। इस बहते जल को भी वह मां का आशीर्वाद और उसका सेवन समस्त पापों को नष्ट करने वाला मानते हैं। माना जाता हैं कि यहीं पर मां ने भैरवनाथ का वध किया था और उसका सिर 3 किमी की दूरी पर जाकर गिरा था।

कहा जाता है कि अपने वध के बाद भैरवनाथ को अपनी भूल का पश्चाताप हुआ और उसने मां से क्षमादान की भीख मांगी. माता वैष्णो देवी जानती थीं कि उन पर हमला करने के पीछे भैरव की प्रमुख मंशा मोक्ष प्राप्त करने की थी. उन्होंने न केवल भैरव को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति प्रदान की, बल्कि उसे वरदान देते हुए कहा कि मेरे दर्शन तब तक पूरे नहीं माने जाएंगे, जब तक कोई भक्त, मेरे बाद तुम्हारे दर्शन नहीं करेगा. उसी मान्यता के अनुसार आज भी भक्त माता वैष्णो देवी के दर्शन.करने के बाद करीब पौने तीन किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई करके भैरवनाथ के दर्शन करने जाते हैं. शारदीय नवरात्रों के आगमन के साथ ही मां वैष्णो देवी के पवित्र दरबार को दुल्हन की तरह सजाया गया है, जिसकी भव्यता हर भक्त के दिल में आस्था की ज्योति प्रज्वलित कर रही है। देश-विदेश से आए फूलों की सजावट ने भवन को अद्वितीय सौंदर्य प्रदान किया है। हर कोना रंग-बिरंगे फूलों, आकर्षक लाइटों और धार्मिक प्रतीकों से सजा हुआ है, मानो स्वर्ग धरती पर उतर आया हो। ताज्जुब इस बात का है कि देश के कोने-कोने से तो श्रद्धालुओं का मां के दर्शन को आना होता ही है, यहां वही भक्त पहुंच पाता है, जिसे मां का बुलावा होता है और जो एकबार मां के द्वार पहुंच गया, वो फिर कहीं और नहीं जाता। कहते है दरबार में नित्य होने वाली मां के चारों रुपों की आरती का दर्शन कर लेने मात्र से हजार अश्वमेघ यज्ञ के फलों की प्राप्ति होती है। चैत यानी वासंतिक व शारदीय नवरात्र के नौ दिनों तक विशाल मेला लगता है। इस मेले में लाख-दो लाख नहीं बल्कि 25-30 लाख से भी अधिक श्रद्धालु पहुंचते है। कहते है मां वैष्णवी एक मात्र ऐसी जागृत शक्तिपीठ है जिसका अस्तित्व सृष्टि आरंभ होने से पूर्व और प्रलय के बाद भी रहेगा। शक्ति को समर्पित यह मनोरम व दिव्य स्थल जम्मू-कश्मीर के कटरा स्थित मां वैष्णवी या त्रिकूट पर्वत पर है। यह उत्तरी भारत में सबसे पूजनीय पवित्र स्थलों में से एक है। मंदिर, 5,200 फीट की ऊंचाई और कटरा से लगभग 12 किलोमीटर (7.45 मील) की दूरी पर है। यह भारत में तिरूमला वेंकटेश्वर मंदिर के बाद दूसरा सर्वाधिक देखा जाने वाला धार्मिक तीर्थ-स्थल है, जो वैष्णो देवी या माता रानी और वैष्णवी के रूप में भी जानी जाती हैं।

जहां तक मातारानी के पहाड़ों पर विराजमान होने का सवाल है तो मां वैष्णव देवी ही नहीं बल्कि गुवाहाटी में कामख्या, हरिद्वार में मनसा देवी सहित लगभग सभी माताओं के मंदिर पहाड़ों पर होते हैं। यहां तक की मां दुर्गा का एक नाम पहाड़ोंवाली भी है। दरअसल, हमारे वेद-पुराणों में पंच-तत्व के महत्व को बताया गया है। सृष्टि की रचना पंचतत्वों से हुई है तो इंसान के शरीर भी इन्हीं पंचतत्वों से बने हुए हैं। ये पंच तत्व हैं जल, वायु, अग्नि, भूमि और व्योम अर्थात आकाश। इन पांचों तत्वों के अधिपति एक-एक देवता भी हैं। जल के अधिपति गणेश हैं तो वायु के विष्णु. भूमि के शंकर हैं तो अग्नि के अग्निदेवता वहीं व्योम के देवता हैं सूर्य। शक्ति यानी दुर्गा को संपूर्ण धरती की अधिष्ठात्री माना गया है। साथ ही वे शक्ति का प्रतीक हैं। जानकारों की मानें तो पहाड़ों को धरती का मुकुट और सिंहासन माना जाता है। मां इस संपूर्ण सृष्टि की अधिष्ठात्री हैं, इसलिए वे सिंहासन पर विराजती हैं। यही वजह है कि लगभग सभी महत्वपूर्ण और प्राचीन देवी मंदिर पहाड़ों पर ही स्थित है।

गरुड़ वाहिनी वैष्णवी, त्रिकुटा पर्वत धाम। काली, लक्ष्मी, सरस्वती, शक्ति तुम्हें प्रणाम। जी हां, जिस स्थान पर मां वैष्णो देवी ने हठी भैरवनाथ का वध किया, वह स्थान पवित्र गुफा अथवा भवन के नाम से प्रसिद्ध है. इसी स्थान पर मां महाकाली (दाएं), मां महासरस्वती (मध्य) और मां महालक्ष्मी (बाएं) पिंडी के रूप में गुफा में विराजमान हैं. इन तीनों के सम्मिलत रूप को ही मां वैष्णो देवी कहा जाता है. कहते है मां वैष्णो देवी ने तीन पिंड (सिर) सहित एक चट्टान का आकार ग्रहण किया और सदा के लिए ध्यानमग्न हो गईं. इस बीच पंडित श्रीधर अधीर हो गए. वे त्रिकुटा पर्वत की ओर उसी रास्ते आगे बढ़े, जो उन्होंने सपने में देखा था, अंततः वे गुफा के द्वार पर पहुंचे. उन्होंने कई विधियों से पिंडों की पूजा को अपनी दिनचर्या बना ली. देवी उनकी पूजा से प्रसन्न हुईं. वे उनके सामने प्रकट हुईं और उन्हें आशीर्वाद दिया. खास यह है कि तीनों पिंडियां देखने में भले अलग हो, लेकिन इन तीन रुपों में कोई फर्क नहीं है। तीनों दिव्य पिण्डियां बिना किसी सहारे के हवा में है, जो एकबारगी अद्भुत, अकल्पनीय व अविश्वसनीय भले लगे, लेकिन हकीकत है। आध्यात्मिक दृष्टि से अलौकिक शक्ति का रुप यह तीनों पिण्डियां इच्छाशक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रियाशक्ति की प्रतीक है। पुजारी का दावा है मां की तीनों पिंडिया हवा में है और तभी से श्रीधर और उनके वंशज देवी मां वैष्णो देवी की पूजा करते आ रहे हैं. आज भी बारहों मास वैष्णो देवी के दरबार में भक्तों का तांता लगा रहता है. सच्चे मन से याद करने पर माता सबका बेड़ा पार लगाती हैं

कर्म का संबल ही जीवन की उपादेयता

हर व्यक्ति के जीवन में संघर्ष की प्रधानता होती ही है बड़े लक्ष्य की साधना और सफलता के लिए मनुष्य को निरंतर कर्म की प्रधानता रखकर संयम तथा मनोबल भी रखना होगा। इसके अलावा मनुष्य अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रख उसका सदुपयोग करने का प्रयास करना होगा तब पूर्व निर्धारित सफलता आपके सामने होगी।

कठिन तथा विषम परिस्थितियों सदैव आपकी अग्निपरीक्षा लेती रहेंगी ऐसे समय मे मनुष्य को अपने मनोबल को सदैव विनम्रता,संयम और साहस के साथ ऊंचा रखना होगा और की गई मेहनत पर विश्वास

संजीव ठाकुर

एवं निरंतरता रखनी होगी तब जाकर ही जीवन में सफलता के पल आपके सामने आएंगे ' निराशा, हताशा और हीन भावना पर कठोर श्रम के बलबूते पर ही विजय प्राप्त की जा सकती है। जीवन में उतार-चढ़ाव, कठिन समय और विषम परिस्थितियां आती ही रहती हैं' संकट का समय विषम परिस्थितियां जीवन के अलग-अलग पहलू हैं ।इनसे जूझ कर जो मानव आगे बढ़ता है। वह उच्च मनोबल वाला साहसी व्यक्ति होता है। व्यक्ति के जीवन में साहस, उच्च मनोबल ही सफलता की कुंजी है। जिस भी व्यक्ति ने विषमताओं में रास्ता निकलने का साहस करके आगे बढ़ने का प्रयास किया है वही सफल हुआ है। हमेशा सफलता का मूल आत्मविश्वास, कठिन श्रम और उच्च आदर्श वाले व्यक्ति की प्रेरणा ही सफलता दिलाने वाली होती है।

मनुष्य को कभी भी किसी भी परिस्थिति में मन से हार नहीं माननी चाहिए। उसे सदैव प्रयासरत रहकर परिश्रम तथा जुझारू पन से हर परिस्थिति का सामना कर सदैव अपने लक्ष्य के प्रति अग्रसर होते रहना चाहिए। मनुष्य को अपनी हर हार, हर पराजय से कुछ ना कुछ सीख लेनी चाहिए एवं इससे अनुभव प्राप्त कर फिर से खड़ा होने एवं उस पराजित मनोदशा से छुटकारा पाकर फिर से लड़ने की ऊर्जा एवं शक्ति प्राप्त करनी चाहिए। यह सफलता का बड़ा मंत्र है। सर्वप्रथम मनुष्य अपने मनोबल से किन्हीं भी परिस्थितियों को जीतने का साहस रखता है। इसीलिए मनोबल मनुष्य की पहली आवश्यकता है। मनोबल ही साहस को जन्म देता है और साहस, आत्मबल को और आत्मबल से ही मनुष्य किन्हीं भी परिस्थितियों से जूझना एवं टकराने की क्षमता पैदा करता है। जब मनुष्य के पास खोने के लिए कुछ ना हो तो वह निश्चिंत होकर साहस, क्षमता एवं संयम से आगे बढ़ने का प्रयास करता है। क्योंकि वह जानता है की पीछे पलट कर उसके पास खोने के लिए कुछ भी नहीं है, शिवाय आगे बढ़ने एवं सफलता के लिए अग्रसर होने के। मनुष्य का मनोबल एवं दृढ़ प्रतिज्ञा ही मनुष्य को सदैव आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देते रहते हैं। मनुष्य के जीवन का एक तथ्य और भी अत्यंत महत्वपूर्ण है वह है सकारात्मक सोच, जो उसे हमेशा आगे बढ़ने की ओर उत्साहित करती रहती है। सकारात्मक सोच एवं किसी भी परिस्थिति को अपने नियंत्रण में लाने की सुनियोजित योजना मनुष्य में आशाओं को भर देती है एवं परिस्थितियों को चुनौती देने की क्षमता का विकास करती है। यह मनुष्य ही है जो हर परिस्थिति में साहस और मनोबल के दम पर उससे विजय प्राप्त करता है। मनुष्य के जीवन और पशु के जीवन में यही फर्क है कि मनुष्य के पास सोचने के लिए मस्तिष्क होता है और वह उसके सकारात्मक उपयोग के साथ आगे बढ़ने की क्षमता रखता है। मनुष्य मुस्कुराता, हंसता और खिलखिलाता है। जबकि पशु में मुस्कुराने हंसने की क्षमता नहीं होती, और यही कारण है कि मनुष्य ने विषम परिस्थितियों पर सदैव विजय प्राप्त करने का प्रयास किया है, वह काफी हद तक सफलता पाने में सफल भी हुआ है। मनुष्य यदि परिस्थितियों में अन्य प्रतियोगिताओं में, खेल में, या युद्ध में पराजित होकर भी प्रेरणा लेकर पुनः साहस के साथ पुनःतैयार होता है तो वह आने वाले समय में सफलता का सही हकदार भी होता है, क्योंकि उसने पूरी क्षमता, साहस ,मनोबल के साथ पराजय को स्वीकार कर के उससे कुछ सीखने का प्रयास किया है। अपनी कमियों को दूर करने की हर संभव कोशिश भी की है ।इस तरह वह अगली परीक्षा में जरूर सफल होता है और यही मानव जीवन का सफल अध्याय भी होता है। कुल मिलाकर परिस्थितियां तथा घटनाएं ,दुर्घटनाएं मनुष्य को परिस्थितियों के सामने पराजित करने, झुकाने की कोशिश करती हैं किंतु मानव अपने शारीरिक, मानसिक, नैतिक, चारित्रिक एवं मानसिक आत्मबल से उसे सफलता में बदल देता है। अनवरत प्रयासरत व्यक्ति अपने साहस परिश्रम से हर चुनौतियों का सामना कर परिस्थितियों में विजय प्राप्त कर अपने जीवन को सफलता के शिखर पर पहुंचाता है। जीवन में कठिन परिस्थितियों से जूझ कर जो मानव सदैव सफल होता है वह पूरे समुदाय और समाज के लिए एक प्रेरणादाई व्यक्तित्व बन कर पूरे समाज एवं देश को मार्गदर्शन भी प्रदान करता है।

इसीलिए मनुष्य को किन्हीं भी परिस्थितियों में, खासकर विषम परिस्थितियों में अपने मनोबल और साहस को त्यागना नहीं चाहिए। उच्च मनोबल और साहस की ऊर्जा ही मनुष्य को नई दिशा, नए प्रकाश पुंज की ओर अग्रसर करती है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

सम्पादकीय

नई योजनाएं, पुराने सवाल क्या खेती का घाटा भर पाएगी सरकार की प्रोत्साहन योजना?

> केंद्रीय मंत्रिमंडल की कृषि क्षेत्र के लिए एक लाख करोड़ रुपए से अधिक की दो नई परियोजनाओं को मंजूरी मिलने से स्वाभाविक ही इस क्षेत्र में कुछ बेहतरी की उम्मीद जगी है। टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने के मकसद से सरकार ने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना और कृषोन्नति योजना नामक दो नई योजनाएं शुरू की हैं।

सरकारी दावों के बरक्स जमीनी हकीकत कुछ अलग है। स्थिति यह है कि खेती लंबे समय से घाटे का उद्यम बन चुकी है। बहुत सारे क्षेत्रों में सिंचाई की उचित सुविधा उपलब्ध नहीं है। बढ़ती आबादी के मद्देनजर खाद्य सुरक्षा सरकार के सामने एक बड़ी चुनौती है। जलवायु परिवर्तन का प्रतिकूल प्रभाव सबसे अधिक खेती-किसानी पर देखा जा रहा है। हर वर्ष अन्न उत्पादन बढ़ाने की राह में मुश्किलें बढ़ रही हैं। ऐसे में कृषि क्षेत्र को प्रोत्साहन की दरकार महसूस की जाती रही है। केंद्रीय मंत्रिमंडल की कृषि क्षेत्र के लिए एक लाख करोड़ रुपए से अधिक की दो नई परियोजनाओं को मंजूरी मिलने से स्वाभाविक ही इस क्षेत्र में कुछ बेहतरी की उम्मीद जगी है। टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने के मकसद से सरकार ने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना और कृषोन्नति योजना नामक दो नई योजनाएं शुरू की हैं। हालांकि इस क्षेत्र के लिए पहले से कई योजनाएं चल रही हैं। कृषि कर्ज और फसल बीमा को सुविधाजनक बनाया गया है। किसानों की प्रोत्साहन राशि बढ़ा कर छह हजार से दस हजार रुपए प्रति वर्ष कर दी गई है। इनके बीच दो नई योजनाएं शुरू होने से खेती-किसानी में कुछ बेहतरी की संभावना बन सकती है। सरकार ने इस वर्ष तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने का वादा किया था। वह वादा पूरा तो नहीं हो पाया, पर कुछ तरक्की के संकेत जरूर मिले हैं। देखना है, नई योजनाएं इस वादे को पूरा कर पाने में कितनी और कहां तक मददगार साबित होती हैं। सरकारी दावों के बरक्स जमीनी हकीकत कुछ अलग है। स्थिति यह है कि खेती लंबे समय से घाटे का उद्यम बन चुकी है। बहुत सारे क्षेत्रों में सिंचाई की उचित सुविधा उपलब्ध नहीं है। वहां किसानों की मानसून पर निर्भरता है। फिर, खेती में लागत काफी बढ़ गई है। बीज, उर्वरक और कीटनाशकों आदि की कीमतें बहुत सारे किसानों की पहुंच से बाहर हो चुकी हैं। फसलों के उचित दाम नहीं मिल पाते। लागत और लाभ में काफी अंतर है। कुछ फसलें लागत से भी कम कीमत पर बेचनी पड़ती हैं।

सरकार हर वर्ष न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा तो करती है, मगर उस कीमत पर भी अनाज बाजार में नहीं बिक पाता। बिचौलिए उससे काफी कम कीमत पर फसल खरीदते हैं। नगदी फसल उगाने वाले किसानों को अक्सर अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कभी मौसम की मार से फसलें चौपट हो जाती हैं, तो कभी बाजार में उतार और मांग कम होने के कारण उन्हें औने-पौने दाम पर फसल बेचनी पड़ती है। हर वर्ष किसानों को प्रतिरोध में फसलें सड़कों पर फेंकते देखा जाता है। इस स्थिति से पार पाने में ये योजनाएं कितनी सफल होंगी, यही उनकी कसौटी होगी।

आधुनिक जीवन की बड़ी चुनौती रिश्तों में उपेक्षा और विश्वास की कमी

संवाद और संचार किसी भी रिश्ते का बुनियादी आधार होता है। अगर रिश्ते में उपेक्षा बढ़ रही हो और विश्वास की कमी हो रही हो, तो सबसे पहले दोनों पक्षों को खुलकर बातचीत करनी चाहिए। अपनी भावनाओं, चिंताओं और समस्याओं को एक-दूसरे के सामने रखना चाहिए, ताकि गलतफहमियां दूर हों। हर अगले रोज थोड़ा ज्यादा मशीनी होती जिंदगी में यह एक सामान्य अनुभव है कि रिश्ते हमारे जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। चाहे वह दोस्ती हो, परिवार हो या फिर एक प्रेम संबंध, सभी रिश्तों की नींव विश्वास और आपसी समझ पर टिकी होती है, लेकिन कई बार इन्हीं रिश्तों में उपेक्षा का दंश और विश्वास की कमी जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं, जो संबंधों को कमजोर कर देती हैं। आजकल जिंदगी की भाग-दौड़ में लोगों के बीच दूरियां बढ़ती ही जा रही हैं। किसी से उपेक्षित होना किसी भी रिश्ते में सबसे खतरनाक स्थिति होती है। यह वह स्थिति है जब किसी एक व्यक्ति को यह महसूस होने लगता है कि उसका साथी उसकी भावनाओं, आवश्यकताओं और इच्छाओं को महत्त्व नहीं दे रहा है। उपेक्षा धीरे-धीरे रिश्ते को अंदर से कमजोर कर देती है। कामकाजी जीवन, सामाजिक दायित्वों और व्यक्तिगत लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है। इससे संबंधों में समय की कमी होने लगती है, जो आखिर उपेक्षा का कारण बनता है। कई बार व्यक्ति अपने जीवन में इतना आत्म-केंद्रित हो जाता है कि वह अपने साथी की भावनाओं और आवश्यकताओं को नजरअंदाज करता जाता है। वह अपने सपनों, इच्छाओं और लक्ष्यों को पूरा करने में इतना व्यस्त हो जाता है कि उसके साथी को महसूस होने लगता है कि उनकी उपेक्षा हो रही है। एक बात यह भी है कि समय के साथ लोगों की प्राथमिकताएं बदलती हैं, जिसका असर कई बार स्पष्ट दिखने लगता है। मसलन, शादी के शुरुआती वर्षों में जो व्यक्ति अपने साथी के साथ अधिक समय बिताता था, वह बाद में अपने करियर या अन्य गतिविधियों में इतना खो जाता है कि उसका साथी उपेक्षित महसूस करने लगता है। अपने कामकाज के लिए हम किसी अपने की उपेक्षा करके उसका दिल तो दुखा देते हैं, पर उसका प्रभाव गहरा होता जाता है। यह व्यक्ति के आत्मसम्मान को चोट पहुंचा सकता है और उसे अपने आप में संदेह करने पर मजबूर कर सकता है। उपेक्षा से व्यक्ति के भीतर अकेलेपन की भावना पनप सकती है, जिससे वह मानसिक और भावनात्मक रूप से अस्थिर हो सकता है। लंबे समय तक उपेक्षा सहने से व्यक्ति रिश्ते में रुचि खोने लगता है और रिश्ते में दरार पड़ने लगती है। इस तरह के दरार को पाटने के लिए एक दूसरे पर विश्वास होना आवश्यक है। विश्वास किसी भी रिश्ते की नींव होता है। यह वह धागा है जो दो लोगों को आपस में जोड़ता है, लेकिन जब इस धागे में दरार आ जाती है, तो रिश्ते का टूटना तय होता है। अक्सर देखा गया है कि कई बार व्यक्ति के अतीत में हुए धोखे और धोखाधड़ी के अनुभव उसे नए रिश्ते में विश्वास करने से रोकते हैं। उसे डर रहता है कि वही इतिहास दोहराया न जाए। और इस डर के कारण वह अपने साथी पर पूरी तरह से विश्वास नहीं कर पाता। असुरक्षा की भावना भी विश्वास की कमी का एक प्रमुख कारण है। व्यक्ति को लगता है कि उसका साथी उसे छोड़ सकता है या धोखा दे सकता है। यह भावना उसे अपने साथी पर विश्वास करने से रोकती है और वह संदेह की दृष्टि से अपने साथी को देखने लगता है। कई बार छोटी-छोटी गलतफहमियां भी बड़े विवाद का रूप ले लेती हैं। जब दो लोगों के बीच संवाद की कमी होती है, तो वे एक-दूसरे के बारे में गलत धारणाएं बना लेते हैं। ये गलतफहमियां विश्वास की कमी का कारण बनती हैं। जब रिश्ते में विश्वास की कमी होती है, तो व्यक्ति को अपने साथी के हर कार्य पर संदेह होने लगता है।

वह साथी के फोन, संदेश, ईमेल आदि की जांच करने लगता है। यह संदेह और असुरक्षा की भावना धीरे-धीरे रिश्ते को अंदर से कमजोर कर देती है। विश्वास की कमी से रिश्तों में कड़वाहट पैदा हो जाती है, जो धीरे-धीरे रिश्ते के टूटने का कारण बनती है। संवाद और संचार किसी भी रिश्ते का बुनियादी आधार होता है। अगर रिश्ते में उपेक्षा बढ़ रही हो और विश्वास की कमी हो रही हो, तो सबसे पहले दोनों पक्षों को खुलकर बातचीत करनी चाहिए। अपनी भावनाओं, चिंताओं और समस्याओं को एक-दूसरे के सामने रखना चाहिए, ताकि गलतफहमियां दूर हों और रिश्ते में मजबूती आए।

उपेक्षा से बचने के लिए दोनों पक्षों को एक-दूसरे के लिए समय निकालना चाहिए, चाहे वह कुछ मिनट के लिए फोन पर बातचीत हो या संवेदना के खोए सूत्रों को फिर से जोड़ना। यह महत्त्वपूर्ण है कि एक-दूसरे के साथ समय बिताया जाए। आत्म-जागरूकता रिश्ते में सुधार लाने का एक महत्त्वपूर्ण जरिया है। अगर किसी को लगता है कि वह अपने साथी की उपेक्षा कर रहा है या उस पर विश्वास नहीं कर रहा है, तो उसे अपने व्यवहार का विश्लेषण करना चाहिए। कारणों की खोज के बाद उसे सुधारने के लिए कदम उठाने चाहिए। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि दो लोगों के बीच कुछ गलतियां होना स्वाभाविक है, लेकिन माफी मांगने और माफ करने से रिश्ते में विश्वास की भावना फिर से स्थापित होती है। एक-दूसरे की सराहना करना भी रिश्ते को मजबूत करने का एक कारण बनता है। जब कोई अपने साथी के प्रयासों और योगदान को सराहता है, तब उसे यह महसूस होगा कि उसकी उपेक्षा नहीं हो रही है। यह रिश्ते में सकारात्मकता और प्रेम की भावना को बनाए रखता है। दरअसल, रिश्ते को निभाने में समझ, धैर्य और विश्वास की आवश्यकता होती है। विश्वास की कमी रिश्तों को बर्बाद कर सकती है, लेकिन अगर दोनों पक्ष समय पर इन समस्याओं को पहचानकर उनका समाधान करें, तो रिश्ते को मजबूत किया जा सकता है।

> हर अगले रोज थोड़ा ज्यादा मशीनी होती जिंदगी में यह एक सामान्य अनुभव है कि रिश्ते हमारे जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। चाहे वह दोस्ती हो, परिवार हो या फिर एक प्रेम संबंध, सभी रिश्तों की नींव विश्वास और आपसी समझ पर टिकी होती है, लेकिन कई बार इन्हीं रिश्तों में उपेक्षा का दंश और विश्वास की कमी जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं, जो संबंधों को कमजोर कर देती हैं। आजकल जिंदगी की भाग-दौड़ में लोगों के बीच दूरियां बढ़ती ही जा रही हैं। किसी से उपेक्षित होना किसी भी रिश्ते में सबसे खतरनाक स्थिति होती है। यह वह स्थिति है जब किसी एक व्यक्ति को यह महसूस होने लगता है कि उसका साथी उसकी भावनाओं, आवश्यकताओं और इच्छाओं को महत्त्व नहीं दे रहा है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

लोक से संवाद का अनूठा प्रयोग, शासक का संवाद लोकतंत्र की कामयाबी के लिए जरूरी

आधुनिक लोकतंत्र की पहली शर्त है लोक का चुने हुए शासक से सीधा संवाद। इस संवाद के माध्यम और तरीके पर हमेशा से चिंतन होता रहा है। इन अर्थों में आकाशवाणी पर प्रसारित हो रहे 'मन की बात' कार्यक्रम को लोक संवाद की आधुनिक व्यवस्था कहा जा सकता है। रेडियो के इतिहास में 'मन की बात' संभवत पहला कार्यक्रम है जो इतना नियमित है। महाकवि कालिदास के प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् का एक दृश्य है, जहां एक व्यक्ति न्याय की अपेक्षा में राजा दुष्यंत के महल में तीन बजे भोर में पहुंचता है। वह द्वारपाल से राजा से मिलने की अनुमति मांगता है। वह कुछ संकोच भी कर रहा है कि राजा कहीं विश्राम कर रहे होंगे। तब द्वारपाल उस व्यक्ति को समझाता है कि यह आपका लोकतांत्रिक अधिकार है कि अपने राजा से कभी भी मिल सकते हैं। ऐसा अधिकार उस राजतंत्रिक व्यवस्था में था, जिसे हम पुरातनपंथी मानते हैं। आधुनिक लोकतंत्र की जटिलताओं के चलते आज के शासक से मिलना आमजन के लिए संभव ही नहीं है। कहीं-कहीं जनता दरबार जैसी संकल्पनाएं हैं भी तो उनमें भी दुष्यंत जैसा लोकतांत्रिक सोच नहीं है। आधुनिक लोकतंत्र की पहली शर्त है, लोक का चुने हुए शासक से सीधा संवाद। इस संवाद के माध्यम और तरीके पर हमेशा से चिंतन होता रहा है। इन अर्थों में आकाशवाणी पर प्रसारित हो रहे 'मन की बात' कार्यक्रम को लोक संवाद की आधुनिक व्यवस्था कहा जा सकता है। रेडियो के इतिहास में 'मन की बात' संभवत- पहला कार्यक्रम है, जो इतना नियमित है। हाल में इसने एक दशक का सफर पूरा कर लिया। सबसे अहम बात यह है कि यह कार्यक्रम तब रेडियो पर आया, जब संचार माध्यमों की क्रांति अपने उफान पर थी। इंटरनेट के विस्तार और विकास ने दो मोर्चों पर संचार माध्यमों को प्रभावित किया है। उसने खुद में सारे माध्यमों मसलन प्रिंट, रेडियो और टीवी को तो आत्मसात किया ही, खुद को सभी रूपों में एक साथ विस्तारित भी किया। ऐसे माहौल में प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' के जरिये देश को संबोधित करना शुरू किया, जिसकी वजह से दूसरी पीढ़ी के माध्यम यानी पारंपरिक रेडियो की लोकप्रियता को नई गति मिली। हालांकि इसकी वजह से मोदी अपने राजनीतिक विरोधियों के निशाने पर भी रहे। उन्हें अक्सर यह उलाहना भी सुनना पड़ा कि उन्हें 'जन की बात' करनी चाहिए। सार्वजनिक माध्यम के जरिये जनता को संबोधित करने की पहली कोशिश पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने की थी। दूसरे विश्व युद्ध की आहट की वजह से जहां अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था चरमराने लगी थी, वहीं जर्मनी के हिटलर प्रशासन की ओर से खूब प्रोपेगंडा फैलाया जा रहा था। ऐसे माहौल में रूजवेल्ट को लगा कि अमेरिकी लोगों को सांत्वना देने और दुनिया को अफवाहों से बचाने के लिए उनके सामने सही बात रखी जानी चाहिए। इसके लिए रेडियो उन्हें ज्यादा प्रभावी माध्यम लगा, जिसके जरिये अपनी बात तुरंत लोगों तक पहुंचाई जा सकती थी। रूजवेल्ट ने इस कार्यक्रम का नाम फायरसाइड चैट दिया, जिसके जरिये उन्होंने अमेरिका और दुनिया को अमेरिका के रुख से न सिर्फ परिचित कराया, बल्कि ध्वस्त होने के कगार पर पहुंची अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था को बचाने के लिए की जा रही अपनी सरकार की कोशिशों की जानकारी भी दी। फायरसाइड चैट के जरिये उन्होंने लोगों की राय बदल दी। 1933 में शुरू हुआ उनका यह रेडियो संवाद 1944 तक जारी रहा। हालांकि उसमें रुकावट भी आ जाती थी। इसकी तुलना में 'मन की बात' नियमित है। 'मन की बात' के पहले एपिसोड का प्रसारण तीन अक्टूबर, 2014 को हुआ, जिसका विषय एक दिन पहले ही शुरू हुआ 'स्वच्छता अभियान' था। उस दिन शुक्रवार था और दशहरा का पावन त्योहार भी। तब से लेकर मार्च 2015 तक महीने के आखिरी शुक्रवार को ही इसका प्रसारण होता रहा, लेकिन बाद में महीने के आखिरी रविवार का दिन तय हुआ। तब से प्रसारण का यही दिन नियत है। इस कार्यक्रम में सामाजिक बदलाव ला रहे स्थानीय नायकों का खूब उल्लेख होता है। बिहार की किसान चाची हों या कश्मीर का शिकारा चलाकर परिवार पालता बच्चा या फिर वाराणसी के गंगा घाट की सफाई का अभियान शुरू करने वाली छात्राएं हों,

ऐसे तमाम लोगों की इस कार्यक्रम में चर्चा हुई है। इनके जरिये सामाजिक बदलाव लाने वाले लोगों को समाज के सामने प्रेरक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस कार्यक्रम में उस महीने विशेष के त्योहारों के जरिये भी सांस्कृतिक और आर्थिक आयामों को प्रस्तुत किया जाता है। मेक इन इंडिया, लोकल के प्रति वोकल, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, खेती-किसानी में नवाचार, खिलौना उद्योग का विस्तार, स्टार्टअप, अंगदान की महत्ता जैसे तमाम विषय हैं, जिन पर प्रधानमंत्री ने खुलकर चर्चा की और उन पर लोगों का ध्यान भी गया है। जल संरक्षण, त्योहारों पर भारतीय वस्तुओं की खरीद, खादी का कम से कम एक वस्त्र जरूर खरीदने की अपील हो या फिर नवीकरणीय ऊर्जा की बात,

सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव लाने वाले ऐसे कई मुद्दों पर प्रधानमंत्री मोदी ने इस एक दशक में खुलकर चर्चा की है। गत दिनों 'मन की बात' की एक सौ चौदहवीं कड़ी में प्रधानमंत्री ने 'नारी शक्ति', अमेरिका से वापस आ रही सैकड़ों कलाकृतियों की चर्चा के साथ ही मातृभाषा में शिक्षा की चर्चा की। इसके ठीक पहले के एपिसोड में उन्होंने प्रतिभाओं की राह में आने वाली बाधाओं में परिवारवाद को भी जिम्मेदार बताया था। प्रधानमंत्री इस कार्यक्रम में शामिल किए जाने के लिए विषयों के लिए आम लोगों से सुझाव भी मांगते रहे हैं। लोक से शासक का संवाद लोकतंत्र की कामयाबी के लिए जरूरी है। इस लिहाज से देखें तो 'मन की बात' इसी संवाद प्रक्रिया का तरीका है, जो रूजवेल्ट के संवाद से कुछ अलग है। रूजवेल्ट ने राजनीति को जवाब के तौर पर फायरसाइड चैट का इस्तेमाल किया, जबकि मोदी इसके जरिये समाज को ही सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बदलाव को लेकर हस्तक्षेप करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश कर रहे हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं।)

विश्व शांति के लिए खतरा बना ईरान, पश्चिमी एशिया में तनाव की आग और भड़की

> इससे पहले इजरायल ने ईरान में हमास चीफ इस्माइल हानिया को भी ढेर किया था, लेकिन तब ईरान ने इजरायल पर कोई सीधी सैन्य कार्रवाई नहीं की थी। इस बार लेबनान में विभिन्न इलेक्ट्रानिक उपकरणों में विस्फोटों के जरिये हजारों हिजबुल्ला आतंकियों के घायल होने और कई के मारे जाने और फिर नसरुल्ला की मौत के बाद ईरान अत्यंत मजबूर दिखने लगा

खोमैनी ने इस्लामिक शासन का जो कट्टरवादी माडल मुस्लिम जगत के सामने पेश किया उससे दुनिया भर के इस्लामिक कट्टरपंथी प्रभावित हुए। इसका एक परिणाम यह हुआ कि अरब जगत की तमाम सेक्युलर सरकारें और तानाशाह धीरे-धीरे अपनी लोकप्रियता खोते गए और इस्लामिक कट्टरपंथी मजबूत होते गए। जो सुन्नी राजशाहियां इस लहर में बच भी पाई। दबाव हटाने के लिए दूसरे देशों में सुन्नी जिहादी संगठनों का समर्थन किया। हिजबुल्ला के मुखिया हसन नसरुल्ला की इजरायली हमले में मौत के बाद पश्चिमी एशिया में तनाव की आग और भड़क गई है। नसरुल्ला की मौत के जवाब में ईरान ने इजरायल पर मिसाइलों से हमला बोला। इजरायल ने इन मिसाइल हमलों का बदला लेने की कसम खाई है। इससे पहले इजरायल ने ईरान में हमास चीफ इस्माइल हानिया को भी ढेर किया था, लेकिन तब ईरान ने इजरायल पर कोई सीधी सैन्य कार्रवाई नहीं की थी। इस बार लेबनान में विभिन्न इलेक्ट्रानिक उपकरणों में विस्फोटों के जरिये हजारों हिजबुल्ला आतंकियों के घायल होने और कई के मारे जाने और फिर नसरुल्ला की मौत के बाद ईरान अत्यंत मजबूर दिखने लगा और उसके द्वारा समर्थित विभिन्न आतंकी गुटों के भीतर ही ईरान की इजरायल नीति को लेकर आवाजें उठने लगी थीं। ईरान में 1979 की इस्लामिक क्रांति के चलते आयतुल्ला खोमैनी के नेतृत्व में बनी कट्टरपंथी इस्लामिक सरकार ने पूरे पश्चिमी एशिया में आतंकी संगठनों का जाल बिछाया। इस्लामिक जगत का नेतृत्व शिया वर्ग के हाथ में लेने के लिए खोमैनी के नेतृत्व वाले ईरानी शासनतंत्र ने पूरे विश्व के मुस्लिम मानस को प्रभावित करने वाले फलस्तीन के मुद्दे को चुना और इजरायल के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष छेड़ने के लिए हिजबुल्ला जैसे आतंकी संगठनों को समर्थन देना शुरू किया। शिया और सुन्नी इस्लाम के समीकरणों की एक खास बात यह है कि कोई सुन्नी मुसलमान शिया भी बन सकता है, क्योंकि मुस्लिम जगत में शिया अल्पसंख्यक हैं। इसलिए खोमैनी के कठमुल्ला तंत्र के लिए यह आवश्यक था कि वह सुन्नी अतिवादियों के भी एक तबके को अपने साथ ले। चूंकि अधिकांश सुन्नी अतिवादी शिया इस्लाम के कट्टर विरोधी हैं और आर्थिक रूप से सुन्नी अरब देशों पर निर्भर रहे हैं, इसलिए ईरान के लिए यह चुनाव आसान नहीं था। ऐसे में सुन्नी मुस्लिम ब्रदरहुड की फलस्तीन इकाई यानी हमास ईरान का औजार बनी। खोमैनी ने इस्लामिक शासन का जो कट्टरवादी माडल मुस्लिम जगत के सामने पेश किया, उससे दुनिया भर के इस्लामिक कट्टरपंथी प्रभावित हुए। इसका एक परिणाम यह हुआ कि अरब जगत की तमाम सेक्युलर सरकारें और तानाशाह धीरे-धीरे अपनी लोकप्रियता खोते गए और इस्लामिक कट्टरपंथी मजबूत होते गए। जो सुन्नी राजशाहियां इस लहर में बच भी पाई, उन्होंने अपने ऊपर से दबाव हटाने के लिए दूसरे देशों में सुन्नी जिहादी संगठनों का समर्थन करना शुरू किया, जिसकी परिणति अलकायदा से लेकर तालिबान जैसे तमाम सुन्नी आतंकी संगठनों के उदय के रूप में हुई। अफगानिस्तान की तालिबान सरकार तो खोमैनी के कठमुल्ला शासन का सुन्नी संस्करण ही थी। तालिबान सरकार के 1996 में सत्ता में आने पर उसे तीन देशों से ही मान्यता मिली थी-सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और पाकिस्तान। इनमें से पहले दो देशों का उद्देश्य ईरान से सटे अफगानिस्तान में खोमैनी के शिया इस्लामिक राष्ट्र जैसा ही एक प्रतियोगी सुन्नी शासनतंत्र खड़ा करना था, जिसका प्रमुख भी एक कट्टरपंथी मौलाना हो और जहां सुन्नी कट्टरपंथियों को इकट्ठा रखकर उनकी शक्ति को दूसरे देशों की ओर निर्देशित रखा जा सके। खोमैनी की इस्लामिक क्रांति का एक और प्रभाव यह भी हुआ कि दुनिया भर के अशांत मुस्लिम क्षेत्रों के लोगों को लगा कि हिंसा के माध्यम से सत्ता को पलटा जा सकता है। खोमैनी ने मुस्लिम जगत में अपनी स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए इस भावना को खूब हवा भी दी और फलस्तीन से लेकर कश्मीर तक के मुसलमानों को अपने भाषणों के जरिये उकसाया। ईरान के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए सुन्नी देशों ने और बढ़-चढ़कर आतंकी संगठनों की सहायता की। इस प्रकार यह एक दुष्चक्र बन चुका है, जिसके चलते लाखों लोग जान गंवा चुके हैं।

अमेठी में अपराधियों की हिम्मत के आगे फीकी यूपी पुलिस की सख्ती, योगी सरकार के दावों पर सवाल

> मगर हकीकत यह है कि कुछ प्रचारित मामलों को छोड़ दिया जाए तो राज्य में अपराधियों का मनोबल बढ़ गया लगता है। वे अब सामूहिक कत्लेआम करने से भी बाज नहीं आ रहे। अमेठी जिले में एक शिक्षक, उसकी पत्नी और दो बच्चों की हत्या से जाहिर है कि राज्य में संगठित अपराधी हों या आपराधिक मानसिकता वाले लोग, उनके भीतर पुलिस या कानून का कोई खौफ नहीं है।

अमेठी जिले में एक शिक्षक, उसकी पत्नी और दो बच्चों की हत्या से जाहिर है कि राज्य में संगठित अपराधी हों या आपराधिक मानसिकता वाले लोग, उनके भीतर पुलिस या कानून का कोई खौफ नहीं है। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से अपने कामयाब शासनकाल के प्रचार में सबसे ज्यादा जोर इस पर दिया जाता है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान राज्य में अपराध पर काबू पाने के लिए जो अभियान चलाए गए, उससे वहां आपराधिक मानसिकता वाले खौफ से भरे हुए हैं और अपराध रुक गए हैं। मगर हकीकत यह है कि कुछ प्रचारित मामलों को छोड़ दिया जाए तो राज्य में अपराधियों का मनोबल बढ़ गया लगता है। वे अब सामूहिक कत्लेआम करने से भी बाज नहीं आ रहे। अमेठी जिले में एक शिक्षक, उसकी पत्नी और दो बच्चों की हत्या से जाहिर है कि राज्य में संगठित अपराधी हों या आपराधिक मानसिकता वाले लोग, उनके भीतर पुलिस या कानून का कोई खौफ नहीं है। खबर के मुताबिक, हत्या के आरोपी ने रायबरेली से अपनी मोटरसाइकिल से अमेठी पहुंच कर इस हत्याकांड को अंजाम दिया, जिसमें उसने न केवल दंपति, बल्कि उनके दो छोटे बच्चों को भी लाइसेंसी पिस्तौल से गोली मार दी और फरार हो गया। हालांकि इस मामले में एक से अधिक अपराधियों के शामिल होने की आशंका जताई जा रही है। सच्चाई तो जांच के बाद सामने आएगी, मगर अपराधियों और अपराध का खात्मा करने के सरकारी दावे के बरक्स यह हत्याकांड क्या दर्शाता है? सवाल है कि सरकार और पुलिस अब जिस सख्ती का दावा कर रही हैं, उसमें ऐसी निरंतरता क्यों नहीं होती, जिससे अपराधियों के भीतर कानून का खौफ पैदा हो! गौरतलब है कि करीब डेढ़ महीने पहले महिला ने छेड़छाड़, विरोध करने पर पति से मारपीट, जान से मारने की धमकी और जातिसूचक टिप्पणियां करने को लेकर एक व्यक्ति के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इस हत्याकांड में मुख्य रूप से उसी व्यक्ति के शामिल होने की आशंका जताई जा रही है। अब स्वाभाविक ही ये सवाल उठ रहे हैं कि उसके खिलाफ दर्ज मामले में समय रहते ठोस कार्रवाई की गई होती तो क्या चार लोगों की जान बचाई जा सकती थी? किसी अपराध के आरोपी को मुठभेड़ में मारे जाने की सुर्खियां इस हकीकत का जवाब नहीं हो सकतीं कि राज्य में आए दिन होने वाली आपराधिक घटनाओं को अंजाम देने वाले अपराधी बेखौफ दिखने लगे हैं।

संपादकीय

सिद्धारमैया : इस्तीफे पर दोहरे मापदंड

मुडा जमीन घोटाले में भ्रष्टाचार के आरोपो में घिरे कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया द्वारा पद से इस्तीफा न देने का खुला ऐलान और दूसरे राज्यों में आरोपों में घिरे मुख्यसमंत्रियों से त्यागपत् मांगने वाली कर्नाटक में सत्तारूढ़ कांग्रेस का सिद्धारमैया के बचाव से जाहिर है कि नैतिकता के संदर्भ में सभी राजनीतिक दलों के दोहरे मानदंड हैं। मसलन अगर विपक्षी पार्टी के सीएम पर आरोप लगे तो तुरंत इस्तीफे की मांग कर दी जाती है, लेकिन अपनी ही पार्टी के मुख्यामंत्री पर ऐसे आरोप लगे तो उसे बचाने की हरसंभव कोशिश की जाती है। सिद्धा के पक्ष में तर्क दिया जा रहा है कि जब 'आप' और 'बीजेपी' के मुख्यशमंत्रियों ने भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते पद नहीं छोड़ा तो सिद्धा को क्यों इस्तीफा देना चाहिए? कांग्रेस इसे भाजपा की चाल बता रही है। उधर अपने बचाव में सिद्धारमैया ने कहा कि मुझ पर मुडा लैंड स्कैम में मुझ पर धन शोधन (मनी लाड्रिंग) का आरोप लगाया गया है। यह मामला धन शोधन का किस आधार पर बनता है, यह मुझे नहीं पता। उन्होंने इस मामले में ईडी की कार्रवाई पर भी सवाल उठाया। दरअसल ईडी ने सिद्धारमैया के खिलाफ धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत केस दर्ज किया है। इसे लेकर सिद्धारमैया ने कहा कि मैसुरु शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) मामले में पीएमएलए के प्रावधान लागू नहीं होते हैं। क्योंकि मुडा द्वारा जो जमीन जो ली गई है, उसके बदले मेरी पत्नी को भूखंड दिया गया। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के खिलाफ एमयूडीए द्वारा उनकी पत्नी को 14 भूखंडों को आवंटन करने की प्रक्रिया में कथित तौर पर अनियमितताओं को लेकर केस तथा सीएम और अन्य के खिलाफ पीएमएलए के तहत मामला दर्ज किया है। इस बीच सिद्धारमैया की पत्नी ने एमयूडीए को पत्र लिखकर 14 भूखंडों पर स्वामित्व पर कब्जा छोड़ने की पेशकश की। उन्होंने अपने पत्र में कहा कि उनके पति के सम्मान, प्रतिष्ठा, गरिमा और मानसिकता से बढ़कर कुछ नहीं है। उन्होंने कहा कि विपक्षी पार्टी के नेता झूठ बोलने में विश्वगुरु हैं। इसी संदर्भ में सिद्धारमैया ने सवाल किया कि क्या मेरे इस्तीफा देने के बाद यह मामला बंद हो जाएगा ? केंद्र की भाजपा सरकार की चाल है, लिहाजा इसका राजनीतिक स्तर पर ही जवाब दिया जाएगा। दिलचस्प यह है कि कांग्रेस हाई कमान ने इस निर्णय पर पहुंचने के लिए अपने विरोधियों द्वारा अपनाए जा रहे मॉडलों का ही सहारा लिया है। कांग्रेस हाई कमान को लगता है कि यदि सिद्धारमैया के खिलाफ कोई एक्शन लिया गया तो इसे भाजपा अपनी जीत के तौर पर पेश करेगी। वैसे सिद्धारमैया प्रकरण के पीछे कांग्रेस की अंदरूनी खींचतान भी एक कारण है। पिछले साल कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद उप मुख्य मंत्री डी. के. शिवकुमार सीएम पद के प्रबल दावेदार थे। कांग्रेस को वोक्कलिगा वोट दिलवाने में उनकी अहम भूमिका थी। लेकिन कांग्रेस ने उन्हें यह कहकर सीएम नहीं बनाया कि उन पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं। ऐसे ओबीसी कुरूबा समुदाय से आने वाले सिद्धारमैया की दूसरी बार लॉटरी लगी। कांग्रेस का एक खेमा राज्य में एससी/एसटी समुदाय से मुख्यरमंत्री बनाने की मांग कर रहा है। जिस पर पार्टी ने ध्यान नहीं दिया है। अगर सिद्धा को पार्टी ऐसे ही बचाती रही तो कांग्रेस भी भीतरी असंतोष बढ़ेगा। सवाल उठने लगा है कि जब डीके शिवकुमार पर जो नियम लागू हुआ, वो सिद्धारमैया पर लागू क्यों नहीं। उसी तरह जो भाजपा आज सिद्धा से इस्तीफा मांग रही है, वह अपने ही पूर्व सांसद ब्रजभूषण शरण सिंह पर नामी पहलवानों के यौन शोषण के मामले में चुप्पी साधे रही। अब वो सिद्धा से किस मुंह से इस्तीफा मांग रही है।

पहल एक पेड़ मां के नाम का असर

10 पेड़ मां के नाम जिसमें पांच पेड़ आयुर्वेदिक पेड़ सम्मिलित किये गए, ऐसा सबकी अन्तश्चेतना का विषय बन गया तो यह देश जो वन क्षेत्र खो चुका है, उसकी भरपाई कर लेगा। यह देश हरित देश बन जाएगा। यह देश शुद्ध आक्सीजन और शुद्ध हवा से हमारे देश की बीमारियों को दूर करेगा। सबके लिए स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण से भर देगा। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहज ही यह सब करते हैं। उनके स्वाभाव से ऐसी बातें निकल जाती हैं। जब व्यक्ति समष्टि का हो जाता है तो ऐसा होता है। 5 जून, 2024 वैसा ही विश्व पर्यावरण दिवस था जैसा हर वर्ष आता है और इसे मना लिया जाता है। लेकिन इस साल दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में पीपल का पौधा लगाया तो उन्होंने कहा 'एक पेड़ मां के नाम'। प्रधानमंत्री ने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व पर ज़ोर दिया वह एक अभियान की शुरुआत का स्वरूप ले लिया।

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

भारत बदल रहा है। सोच से बदल रहा है। संवेदना से बदल रहा है। विचार से बदल रहा है और प्रकृति से बदलाव के लिए प्रयत्नशील है भारत, ऐसा अब देखने को मिल रहा है। 80 करोड़ पौधे रोपे गए हैं देश में। एक पेड़ मां के नाम, इसे प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतःकरण से निकले अपनी भावना के रूप में प्रकट किया था। उन्होंने तो केवल 'एक पेड़ मां के नाम' कहा था। वह एक-एक कि भवना बन गया अब इस 140 करोड़ से अधिक आबादी वाले देश में यह नारा अभियान बन गया। सबने पेड़ लगाये। सबने प्रकृति में पानी सींचा। सबने प्रकृति के लिए अपना अवदान दिया।

यदि आने वाले समय में यह विषय 10 पेड़ मां के नाम जिसमें पांच पेड़ आयुर्वेदिक पेड़ सम्मिलित किये गए, ऐसा सबकी अन्तश्चेतना का विषय बन गया तो यह देश जो वन क्षेत्र खो चुका है, उसकी भरपाई कर लेगा। यह देश हरित देश बन जाएगा। यह देश शुद्ध आक्सीजन और शुद्ध हवा से हमारे देश की बीमारियों को दूर करेगा। सबके लिए स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण से भर देगा। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहज ही यह सब करते हैं। उनके स्वाभाव से ऐसी बातें निकल जाती हैं। जब व्यक्ति समष्टि का हो जाता है तो ऐसा होता है। 5 जून, 2024 वैसा ही विश्व पर्यावरण दिवस था जैसा हर वर्ष आता है और इसे मना लिया जाता है। लेकिन इस साल दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में पीपल का पौधा लगाया तो उन्होंने कहा 'एक पेड़ मां के नाम'। प्रधानमंत्री ने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व पर ज़ोर दिया वह एक अभियान की शुरुआत का स्वरूप ले लिया। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि यह अभियान देश के सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है! यह अभियान पर्यावरण के प्रति अपना दायित्व निभाने के साथ-साथ माताओं के प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव दर्शाने की एक अनूठी पहल है।

सतत विकास का इससे अच्छी पहल हो ही नहीं सकती थी। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान भारत की स्थायी और पर्यावरण के प्रति जागरूक भविष्य के लिए प्रतिबद्धता है। पर्यावरण संरक्षण के आह्वान और माताओं के प्रति सम्मान की भावना के साथ यह पहल नागरिकों को एक हरित पृथ्वी बनाने में अपना योगदान देने का सुअवसर है। इस अभियान की सफलता पूरे देश में लोगों को अपनी माताओं के सम्मान में एक पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करने की भावना है। यह अभियान न सिर्फ प्रकृति, जीव-जंतु एवं मातृत्व की पोषण शक्ति के सम्मान का प्रतीक बन गया है, अपितु भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और स्थायी दुनिया का आश्वासन भी देता है।

80 करोड़ पौधा रोप दिए गए। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की मानें तो सितंबर 2024 तक 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत 80 करोड़ पौधे लगा गए। निःसंदेह यह उपलब्धि सरकारी एजेंसियों, स्थानीय समुदायों और विभिन्न हितधारकों के सहयोग और प्रयासों का परिणाम है, लेकिन पहल तो प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की है। एक महत्वपूर्ण बात सामने आई है कि हितधारकों ने इसे केवल अपनी औचारिकता पूर्ति के लिए यह 80 करोड़ पौधे लगा दिया है, ऐसा नहीं है अपितु इसे व्यापक मिशन बना दिया और इसके विश्व रिकॉर्ड भी बन गए। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत प्रादेशिक सेना की 128 इन्फेंट्री बटालियन और पारिस्थितिकी कार्य बल इकाई ने सिर्फ़ एक घंटे में 5 लाख से ज़्यादा पौधे लगाकर एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की तो वहीं एक घंटे में एक टीम द्वारा लगाए गए सबसे ज़्यादा पौधे रोपड़ लोगों के बीच चर्चा के विषय बने हुए हैं। महिलाओं की एक टीम द्वारा एक घंटे में लगाए गए सबसे ज़्यादा पौधे, एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक संख्या में लोगों द्वारा पौधारोपण, जैसलमेर में प्रधानमंत्री के 'एक पेड़ मां के नाम' और प्रादेशिक सेना की पहल, 'भागीदारी और ज़िम्मेदारी' के तहत विशेष पौधारोपण अभियान संचालित किया गया। इससे पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखना भी अब संभव हो रहा है साथ ही स्थानीय समुदायों के बीच पर्यावरण के प्रति जागरूकता का स्तर अच्छा देखने को मिल रहा है। वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स, लंदन द्वारा जो पौध रोपड़ को स्थान दिया गया उसकी अपनी अहमियत है। दूसरों में भी अब यह भावना बलवती होगी कि हमें ऐसे रिकॉर्ड बनाने चाहिए। हमें अच्छे कार्य करने चाहिए। हमें देश के लिए अपना समर्पण करना चाहिए।विश्व में जलवायु परिवर्तन के मुद्दे काफी गहरा रहे हैं। सभी देशों में प्रतिस्पर्धा की विभिन्न होड़ दिख रही है। जलवायु के नाम पर सबको सांप सूँघ जाते हैं। अभी एसडीजी के मुद्दे को लेकर जो कोशिश है वह केवल मजाक बनकर रह गयी है। 80 करोड़ पौधे एसडीजी के लक्ष्य को हासिल करने में हमारे साथ खड़े होंगे। एसडीजी के लक्ष्य को लेकर हमारी दूसरी कोशिशें भले बहुत पीछे छुट गयी हों लेकिन प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की एक पेड़ मां के नाम वाली पहल से एसडीजी के लक्ष्य को भी हासिल किया जा सकेगा और इसको देश रेखांकित कर सकेगा। इस मायने में भी प्रधान मंत्री का एक वाक्य देश हित में हमारा मां बढ़ाने वाला बन गया है।

यह एक हरित भविष्य के लिए एक दृष्टिकोण वाला नारा बन गया एक पेड़ मां के नाम। यह एक सबके मन में सम्मान बढाने वाला विषय बन गया एक पेड़ मां के नाम। भारत में पेड़ों को लेकर किये गए आंदोलनों का अपना इतिहास है। उसकी अपनी पृष्ठभूमि है। महाराष्ट्र के मोहन धरिया को प्रकृति पुत्र कहा जाता था। सुन्दरलाल बहुगुणा को भी पेड़ों के लिए जाना जाता है। गौर देवी और चंडी भट्ट को भी पेड़ के रखवाले के रूप में जाना जाता है. ऐसे लोग पृथ्वी के लिए वरदान होते हैं। आज अब एक पेड़ मां के नाम से निकली एक लहर जब देश में 80 करोड़ पेड़ों को रोपकर जनमुहिम में बदल चुकी है तो नरेंद्र मोदी का नाम भी आदर्श अध्यायों में अंकित हो रहा है। पर्यावरण सुरक्षा के लिए ऐतिहासिक लड़ाई लड़ी जा रही है। सम्पूर्ण विश्व में लड़ी जा रही है। भारत भी लड़ रहा है। लेकिन केवल यह लड़ाई हमारे भाषणों में हो और जमीनी स्तर पर न हो तो हमारे लिए यह एक भरम की स्थिति होती है कि हम मानें तो क्या मानें। लेकिन एक पेड़ मां के नाम तो जमीनी कार्य है। इस कार्य को अब सभी जानते हैं। देश में सबने पेड़ लगाया। देश में सबने पेड़ से अपनी पीढ़ी को बचाने में अपना योगदान दिया। इस मुहिम से 80 करोड़ लगे पेड़ इसके गवाह हैं। अब आवश्यकता इस बात की है कि पेड़ जो लगे हैं, वे जी जाएँ। वे बचे रहें। वह प्रकृति में अपने हिस्से का आक्सीजन दें और इस पर्यावर्णीय संतुलन को हासिल करने में मदद करें। यदि पेड़ न जिए तो इसमें उनकी गलती नहीं इसलिए पेड़ के लिए इंसानों को अपना कर्त्तव्य निरावाहन करना है और बाद में जो पेड़ पूरी पृथ्वी को देंगे उसका आज भले अंदाजा न हो लेकिन आने वाले 50 से 500 साल तक उनसे जो मिलेगा उसे पीढियां महसूस करेंगी। भारत में इस मुहिम की निरंतरता भी इसलिए आवश्यक है, इससे फायदा देश को ही होगा चाहे आज की पीढ़ी माने या न माने। सम्पूर्णता में देखें तो एक पेड़ मां के नाम की मुहिम से नरेंद्र मोदी ने निःसंदेह भारत का भला किया है, यह एक सम्पूर्ण सत्य है।

अध्यात्म

राजा का मूर्ति प्रेम

एक राजा था जिसे शिल्प कला अत्यंत प्रिय थी। वह मूर्तियों की खोज में देस-परदेस जाया करता थे। इस प्रकार राजा ने कई मूर्तियाँ अपने राज महल में लाकर रखी हुई थी और स्वयं उनकी देख रेख करवाते। सभी मूर्तियों में उन्हें तीन मूर्तियाँ जान से भी ज्यादा प्यारी थी। सभी को पता था कि राजा को उनसे अत्यंत लगाव हैं। एक दिन जब एक सेवक इन मूर्तियों की सफाई कर रहा था तब गलती से उसके हाथों से उनमें से एक मूर्ति टूट गई। जब राजा को यह बात पता चली तो उन्हें बहुत क्रोध आया और उन्होंने उस सेवक को तुरन्त मृत्युदण्ड दे दिया। सजा सुनने के बाद सेवक ने तुरन्त अन्य दो मूर्तियों को भी तोड़ दिया। यह देख कर सभी को आश्चर्य हुआ। राजा ने उस सेवक से इसका कारण पूछा, तब उस सेवक ने कहा – महाराज !! क्षमा कीजियेगा, यह मूर्तियाँ मिट्टी की बनी हैं, अत्यंत नाजुक हैं। अमरता का वरदान लेकर तो आई नहीं हैं। आज नहीं तो कल टूट ही जाती अगर मेरे जैसे किसी प्राणी से टूट जाती तो उसे अकारण ही मृत्युदंड का भागी बनना पड़ता। मुझे तो मृत्यु दंड मिल ही चुका हैं इसलिए मैंने ही अन्य दो मूर्तियों को तोड़कर उन दो व्यक्तियों की जान बचा ली यह सुनकर राजा की आँखे खुली की खुली रह गई उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने सेवक को सजा से मुक्त कर दिया। सेवक ने उन्हें साँसों का मूल्य सिखाया, साथ ही सिखाया की न्यायाधीश के आसन पर बैठकर अपने निजी प्रेम के चलते छोटे से अपराध के लिए मृत्युदंड देना उस आसन का अपमान हैं। एक उच्च आसन पर बैठकर हमेशा उसका आदर करना चाहिये। राजा हो या कोई भी अगर उसे न्याय करने के लिए चुना गया हैं तो उसे न्याय के महत्व को समझना चाहिये। मूर्ति से राजा को प्रेम था लेकिन उसके लिए सेवक को मृत्युदंड देना न्याय के विरुद्ध था। न्याय की कुर्सी पर बैठकर किसी को भी अपनी भावनाओं से दूर हट कर फैसला देना चाहिये। राजा को समझ आ गया कि मुझसे कई गुना अच्छा तो वो यह सेवक था जिसने मृत्यु के इतना समीप होते हुए भी परहित का सोचा। राजा ने सेवक से पूछा कि अकारण मृत्यु को सामने पाकर भी तुमने ईश्वर को नही कोसा, तुम निडर रहे, इस संयम, समस्वस्भाव तथा दूरदृष्टि के गुणों के वहन की युक्ति क्या है। सेवक ने बताया कि आपके यहाँ काम करने से पहले मैं एक अमीर सेठ के यहां नौकर था। मेरा सेठ मुझसे तो बहुत खुश था लेकिन जब भी कोई कटु अनुभव होता तो वह ईश्वर को बहुत गालियाँ देता था। एक दिन सेठ ककड़ी खा रहा था। संयोग से वह ककड़ी कड़वी थी। सेठ ने वह ककड़ी मुझे दे दी। मैंने उसे बड़े चाव से खाया जैसे वह बहुत स्वादिष्ट हो। सेठ ने पूछा– ककड़ी तो बहुत कड़वी थी। भला तुम ऐसे कैसे खा गये? तो मैने कहा– सेठ जी आप मेरे मालिक है। रोज ही स्वादिष्ट भोजन देते है। अगर एक दिन कुछ कड़वा भी दे दिए तो उसे स्वीकार करने में क्या हर्ज है। राजा जी इसी प्रकार अगर ईश्वर ने इतनी सुख–सम्पदाएँ दी है, और कभी कोई कटु अनुदान दे भी दे तो उसकी सद्भावना पर संदेह करना ठीक नहीं।जन्म,जीवनयापन तथा मृत्यु सब उसी की देन है। असल में यदि हम समझ सके तो जीवन में जो कुछ भी होता है, सब ईश्वर की दया ही है। ईश्वर जो करता है अच्छे के लिए ही करता है।

दीर्घ जीवन एक दीर्घ अभिशाप न बन जाए

हम पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में वृद्धों को सम्मान दें, इसके लिये सही दिशा में चले, सही सोचें, सही करें। इसके लिये आज विचारक्रांति ही नहीं, बल्कि व्यक्तिक्रांति की जरूरत है और इसी के लिये एक अक्टूबर को सम्पूर्ण विश्व में अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाया गया। समाज और नई पीढ़ी को सही दिशा दिखाने और मार्गदर्शन के लिए वरिष्ठ नागरिकों के योगदान को सम्मान देने के लिए इस आयोजन का फैसला संयुक्त राष्ट्र ने 1990 में लिया था। इस दिन पर वरिष्ठ नागरिकों और बुजुर्गों का सम्मान किया जाता है। वरिष्ठों के हित के लिए चिन्तन भी होता है। प्रश्न है कि दुनिया में वृद्ध दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों हुई? क्यों वृद्धों की उपेक्षा एवं प्रताड़ना की स्थितियां बनी हुई है? चिन्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है कि हम पतन के इस गलत प्रवाह को रोके। क्योंकि सोच के गलत प्रवाह ने न केवल वृद्धों का जीवन दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है।

ललित गर्ग

वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, उसकी आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहशत है, दिल में अन्तहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलानी होगी। सुधार की संभावना हर समय है।

वृद्ध व्यक्तियों को सुखद एवं खुशहाल जीवन प्रदत्त करने के लिये हमें सर्वप्रथम तो उन्हें आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने पर ध्यान देना होगा। बेसहारा वृद्ध व्यक्तियों के लिए सरकार की ओर से आवश्यक रूप से और सहज रूप मे मिल सकने वाली पर्याप्त पेंशन की व्यवस्था की जानी चाहिए। ऐसे वृद्ध व्यक्ति जो शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ हैं, उनके लिए समाज को कम परिश्रम वाले हल्के-फुल्के रोजगार की व्यवस्था करनी चाहिए। वृद्धों के कल्याण के कार्यक्रमों को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए, जो उनमें जीवन के प्रति उत्साह उत्पन्न करे। अधिकांश युवाओं की सोच इस रूप में पुख्ता हो जाती है कि संयुक्त परिवार व्यक्तिगत उन्नति में बाधक होते हैं। चीजों की ललक में स्वहित इतने हावी हो जाते हैं कि संवेदनहीनता मानवीय रिश्तों की महक को क्षण में काफूर कर देती है और तन्हा बुढ़ापा घुटनभरी सांसों के साथ जीने को बाध्य हो जाता है। हमें समझना होगा कि अगर समाज के इस अनुभवी स्तंभ को यूं ही नजरअंदाज किया जाता रहा तो हम उस अनुभव से भी दूर हो जाएंगे, जो इन लोगों के पास है। वृद्ध दिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब हम उन्हें परिवार में सम्मानजनक जीवन देंगे, उनके शुभ एवं मंगल की कामना करेंगे।

आज का वृद्ध समाज-परिवार से कटा रहता है और सामान्यतः इस बात से सर्वाधिक दुःखी है कि जीवन का विशद अनुभव होने के बावजूद कोई उनकी राय न तो लेना चाहता है और न ही उनकी राय को महत्व देता है। समाज में अपनी एक तरह से अहमितय न समझे जाने के कारण हमारा वृद्ध समाज दुःखी, उपेक्षित एवं त्रासद जीवन जीने को विवश है। वृद्ध समाज को इस दुःख और कष्ट से छुटकारा दिलाना आज की सबसे बड़ी जरुरत है। आज हम बुजुर्गों एवं वृद्धों के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने के साथ-साथ समाज में उनको उचित स्थान देने की कोशिश करें ताकि उम्र के उस पड़ाव पर जब उन्हे प्यार और देखभाल की सबसे ज्यादा जरूरत होती है तो वो जिंदगी का पूरा आनंद ले सके। वृद्धों को भी अपने स्वयं के प्रति जागरूक होना होगा, जैसाकि जेम्स गारफील्ड ने कहा भी है कि यदि वृद्धावस्था की झूर्रियां पड़ती है तो उन्हें हृदय पर मत पड़ने दो। कभी भी आत्मा को वृद्ध मत होने दो।'

प्रश्न है कि आज हमारा वृद्ध समाज इतना कुंठित एवं उपेक्षित क्यों है? अपने को समाज में एक तरह से निष्प्रयोज्य समझे जाने के कारण वह सर्वाधिक दुःखी रहता है। वृद्ध समाज को इस दुःख और संत्रास से छुटकारा दिलाने के लिये ठोस प्रयास किये जाने की बहुत आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट ने विश्व में बुजुर्गों के प्रति हो रहे दुर्व्यवहार और अन्याय को समाप्त करने के लिए और लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए अंतरराष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस मनाने का निर्णय लिया। वृद्धों की समस्या पर संयुक्त राष्ट महासभा में सर्वप्रथम अर्जेंटीना ने विश्व का ध्यान आकर्षित किया था। तब से लेकर अब तक वृद्धों के संबंध में अनेक गोष्ठियां और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो चुके हैं। वर्ष 1999 को अंतर्राष्ट्रीय बुजुर्ग-वर्ष के रूप में भी मनाया गया। इससे पूर्व 1982 में 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने 'वृद्धावस्था को सुखी बनाइए' जैसा नारा दिया और 'सबके लिए स्वास्थ्य' का अभियान प्रारम्भ किया गया।

एक पेड़ जितना ज्यादा बड़ा होता है, वह उतना ही अधिक झुका हुआ होता हैय यानि वह उतना ही विनम्र और दूसरों को फल देने वाला होता है, यही बात समाज के उस वर्ग के साथ भी लागू होती है, जिसे आज की तथाकथित युवा तथा उच्च शिक्षा प्राप्त पीढ़ी बूढ़ा कहकर वृद्धाश्रम में छोड़ देती है। आदमी जीवनमूल्यों को खोकर आखिर कब तक धैर्य रखेगा और क्यों रखेगा जब जीवन के आसपास सबकुछ बिखरता हो, खोता हो, मिटता हो और संवेदनाशून्य होता हो। आज के समाज में मध्यम वर्ग में भी वृद्धों के प्रति स्नेह की भावना कम हो गई है। डिजरायली का मार्मिक कथन है कि यौवन एक भूल है, पूर्ण मनुष्यत्व एक संघर्ष और वार्धक्य एक पश्चाताप।' वृद्ध जीवन को पश्चाताप का पर्याय न बनने दे।

वृद्धावस्था जीवन का अनिवार्य सत्य है। जो आज युवा है, वह कल बूढ़ा भी होगा ही, लेकिन समस्या की शुरुआत तब होती है, जब युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों को उपेक्षा की निगाह से देखने लगती है और उन्हें अपने बुढ़ापे और अकेलेपन से लड़ने के लिए असहाय छोड़ देती है। आज वृद्धों को अकेलापन, परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा, तिरस्कार, कटुक्तियां, घर से निकाले जाने का भय या एक छत की तलाश में इधर-उधर भटकने का गम हरदम सालता रहता।

वृद्धों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। इसीलिये सिसरो ने कामना करते हुए कहा था कि जैसे मैं वृद्धावस्था के कुछ गुणों को अपने अन्दर समाविष्ट रखने वाला युवक को चाहता हूं, उतनी ही प्रसन्नता मुझे युवाकाल के गुणों से युक्त वृद्ध को देखकर भी होती है, जो इस नियम का पालन करता है, शरीर से भले वृद्ध हो जाए, किन्तु दिमाग से कभी वृद्ध नहीं हो सकता।' वृद्ध लोगों के लिये यह जरूरी है कि वे वार्धक्य को ओढ़े नहीं, बल्कि जीएं।

बड़े शहरों में परिवार से उपेक्षित होने पर बूढ़े-बुजुर्गों को 'ओल्ड होम्स' में शरण मिल भी जाती है, पर छोटे कस्बों और गांवों में तो ठुकराने, तरसाने, सताए जाने पर भी आजीवन घुट-घुट कर जीने की मजबूरी होती है। यद्यपि 'ओल्ड होम्स' की स्थिति भी ठीक नहीं है। पहले जहां वृद्धाश्रम में सेवा-भाव प्रधान था, पर आज व्यावसायिकता की चोट में यहां अमीरों को ही प्रवेश मिल पा रहा है।

ऐसे में मध्यमवर्गीय परिवार के वृद्धों के लिए जीवन का उत्तरार्द्ध पहाड़ बन जाता है। वर्किंग बहुओं के ताने, बच्चों को टहलाने-घुमाने की जिम्मेदारी की फिक्र में प्रायः जहां पुरुष वृद्धों की सुबह-शाम खप जाती है, वहीं महिला वृद्ध एक नौकरानी से अधिक हैसियत नहीं रखती। यदि परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रुग्णावस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण-पोषण को तरस रहे हैं तो यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं शर्म का विषय है। पर कौन सोचता है, किसे फर्सत है, वृद्धों की फिक्र किसे हैं? भौतिक जिंदगी की भागदौड़ में नई पीढ़ी नए-नए मुकाम ढूंढने में लगी है, आज वृद्धजन अपनो से दूर जिंदगी के अंतिम पड़ाव पर कवीन्द्र-रवीन्द्र की पंक्तियां गुनगुनाने को क्यों विवश है-'दीर्घ जीवन एकटा दीर्घ अभिशाप', दीर्घ जीवन एक दीर्घ अभिशाप है।

आज का कार्टून

राशिफल

मेष
जीवनसाथी को आप उपहार दे सकते हैं। सन्तान के व्यवहार से आपका मन गदगद हो जायेगा। घर का वातावरण काफी सुखद रहने वाला है।

वृषभ
दूसरों की नकारात्मक बातों पर ज्यादा ध्यान न दें। आपका मन अशान्त हो सकता है। सिरदर्द और माइग्रेन के रोगियों के लिये दिन शुभ नहीं है।

मिथुन
कार्यक्षेत्र में आप किसी महत्वपूर्ण कार्य में फँसे रहेंगे। जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। विद्यार्थी अपने करियर को लेकर एकाग्र रहेंगे।

कर्क
कार्यक्षेत्र में दुविधापूर्ण स्थितियाँ निर्मित हो सकती हैं। पारिवारिक जीवन बहुत ही सुखदायक रहने वाला है। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

सिंह
सम्पत्ति के क्रय–विक्रय से धन लाभ होगा। बड़े प्रोजेक्ट्स में आप निवेश कर सकते हैं। विपरीत लिंग के लोगों के प्रति आकर्षित रहेंगे। मन में कामुक विचार पनपते रहेंगे।

कन्या
आपका मनोबल थोड़ा कमजोर हो सकता है। असंयमित भोजन के कारण आपका स्वास्थ्य खराब रहेगा। शत्रु आपको नुकसान पहुँचाना चाहेंगे।

तुला
व्यापार में नये अनुबन्ध होने के योग बन रहे हैं। परिवार का वातावरण सुखद रहेगा। आपके जनसम्पर्क में वृद्धि होगी। आपकी कार्यप्रणाली में सुधार होगा।

वृश्चिक
कार्यक्षेत्र में बड़ी जिम्मेदारी मिलने की सम्भावना बन रही है। लोग स्वार्थवश आपसे सम्पर्क में रहना चाहेंगे। नया रोजगार शुरू कर सकते हैं।

धनु
आपके कार्य अपेक्षाकृत देरी से पूरे होंगे। आप की उपलब्धियों से आपके सीनियर्स काफी प्रसन्न रहेंगे। बच्चों की शिक्षा को लेकर आप काफी ध्यान देंगे। दाम्पत्य सम्बन्ध काफी प्रगाढ़ रहने वाले हैं।

मकर
आज आपको काफी व्यस्त रहना पड़ेगा। किसी भी काम में ज्यादा मन नहीं लगा पायेंगे। अनजान लोगों पर ज्यादा विश्वास न करें। वर्तमान वातावरण को लेकर आपको अपना ध्यान रखना चाहिये।

कुंभ
अपनी बौद्धिक क्षमता का कुशल प्रयोग कर पायेंगे। आलस्य से आपको बचना चाहिये। मन में परोपकार की भावना रहेगी। यात्रा करने के योग बन रहे हैं।

मीन
सरकारी कार्यों के लिये दिन बहुत शुभ है। अति महत्वपूर्ण कार्यों को आप समय पर पूरा करेंगे। परिवार में किसी कारण अशान्ति हो सकती है।

सन्मार्ग
पटना, रविवार 06 अक्टूबर 2024
www.live7tv.com

चाणक्य

पैसों के निवेश को लेकर भी आचार्य चाणक्य कई सारी बातें बता चुके हैं। कभी भी किसी इंसान को निवेश करने से पहले बार-बार सोचना चाहिए और ऐसी जगहों पर ही निवेश करना चाहिए जहां रिस्क कम हो। अन्यथा समस्या का सामना करना पड़ सकता है। चाणक्य नीति में साफ कहा गया है कि अगर इंसान खुद की किस्मत पलटना चाहता है तो उसे अपने खर्चों को नियंत्रित करना होगा जिससे बचत के रास्ते खुलेंगे।

राजनीति से मुक्त हों विज्ञान पुरस्कार

दिनेश सी. शर्मा

एक साहसिक और विरला कदम उठाते हुए, 175 वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों ने देश में विज्ञान के क्षेत्र में दिए जाने वाले सम्मान झ राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार झ के राजनीतिकरण पर निराशा व्यक्त की है। इस पुरस्कार की स्थापना पिछले साल केंद्र सरकार ने की थी। कुछ सप्ताह पहले, प्रथम पारितोषिक समारोह में राष्ट्रपति द्वारा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए जाने के तुरंत बाद चयन प्रक्रिया में राजनीतिक हस्तक्षेप की सुगबुगाहट शुरू हो गई थी। हुआ यह कि चयन समिति द्वारा भेजे गए तीन वैज्ञानिकों के नाम पुरस्कार विजेताओं की अंतिम सूची से गायब थे। जबकि समिति के कुछ सदस्यों ने अनौपचारिक रूप से उन्हें यह खबर बता दी थी। लेकिन बाद में उनको करारा झटका लगा। आशंका जताई गई कि उक्त विचाराधीन वैज्ञानिकों को उनके राजनीतिक विचारों और महत्वपूर्ण मुद्दों पर उनके रुख के कारण राष्ट्रीय सम्मान से वंचित किया गया।

एतराज का पहला संकेत शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार प्राप्त 26 विजेताओं ने जताया था, जब उन्होंने प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार (पीएसए) और राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार समिति के प्रमुख अजय सूद को पत्र लिखकर जानना चाहा कि क्या पैनल की सिफारिशें ज्यों की त्यों स्वीकार की गई या फिर सरकार ने संशोधन किया है और उन्होंने पीएसए से अंतिम निर्णय पर पहुंचने में अपनाए गए मानदंडों का खुलासा करने का अनुरोध किया। यह मामला सार्वजनिक होने के बाद, सरकार ने चयन प्रक्रिया में ही बदलाव कर दिया, जिसके चलते 175 वैज्ञानिकों ने विरोध पत्र जारी किया। वैज्ञानिकों ने 24 सितंबर को पीएसए को लिखे पत्र में कहा : सरकार ने चयन मानदंडों में किया गया बदलाव अपने पोर्टल पर दर्शाया है और पुरस्कार समारोह से महज चंद दिन पहले अपलोड किए गए नए प्रारूप में एक नई लाइन जोड़ी गई है कि अब आपकी अध्यक्षता वाली चयन समिति अपनी सिफारिशें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री को सौंपेगी।

चयन प्रक्रिया में किया गया यह बदलाव राजनेताओं द्वारा चयन समिति का निर्णय खारिज करने या बदलने का मार्ग प्रशस्त करता है झजबकि यह समिति व्यावहारिक रूप से भारतीय वैज्ञानिक समुदाय का प्रतिनिधित्व करती है। समिति में वैज्ञानिक अकादमियों के अध्यक्षों के अलावा वैज्ञानिक विभागों के सचिव भी सदस्य हैं। वैज्ञानिक समुदाय को इसका आभास पहले ही हो गया था। सर्वप्रथम तो गृह मंत्रालय द्वारा समूचे वैज्ञानिक विभागों की बागडोर अपने हाथ में लेना और दर्जनों पुरस्कारों को समाप्त करना बेतुका था, जिसमें 1950 के दशक में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा स्थापित प्रतिष्ठित शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार और अन्य स्वायत्त विज्ञान अकादमियों द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार शामिल थे। श्रेष्ठ वैज्ञानिक कार्य को मान्यता देने को स्थापित किए गए पुरस्कारों और निष्पक्ष तरीकों को समाप्त करना तथा उनकी जगह एक नया सरकारी पुरस्कार शुरू करना,

जिसमें कोई नकद राशि नहीं है, एक कठोर झटका है। तिस पर, नई पुरस्कार प्रक्रिया विश्वसनीयता के संकट का सामना कर रही है। अंतिम निर्णय एक राजनीतिक पदाधिकारी पर छोड़ने का मतलब है कि पुरस्कार विजेताओं के चयन में गैर-शैक्षणिक विचारों की भूमिका रहेगी।

पुरस्कारों से इतर, यह प्रसंग भारत में अकादमिक स्वतंत्रता और विज्ञान क्षेत्र के परिचालन के बारे में अहम सवाल उठाता है। प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने पत्र लिखकर पुरस्कार प्रकरण को भारतीय विज्ञान के लिए एक अस्वस्थ घटना ठहराकर सही किया है। वैज्ञानिकों को चिंता है कि यह होने पर मंत्रियों द्वारा अबाध वीटो का उपयोग करते हुए विशेषज्ञ समितियों की सिफारिशों को दरकिनार करने वाला चलन कायम हो जाएगा। पत्र में यह आशंका भी जताई गई है कि सरकार को न सुहाने वाले शिक्षाविदों को न केवल पुरस्कारों से बल्कि वैज्ञानिक अनुदान, भर्ती, पदोन्नति आदि से भी महरूम रखा जा सकता है। यह वैज्ञानिक कार्य पद्धति के बुनियादी सिद्धांतों के विरुद्ध है और वैज्ञानिक अनुसंधान के विकास के लिए अच्छा संकेत नहीं है।

सामान्यतः अपेक्षा की जाती है कि विज्ञान की किसी शाखा विशेष में एक वैज्ञानिक द्वारा प्राप्त विशिष्ट उपलब्धि को मान्यता देने में निष्पक्षता बनी रहेगी। आमतौर पर यह काम समकक्षों द्वारा की गई समीक्षा के माध्यम से किया जाता है। शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कारझ जिसे अब बंद किया जा चुका है झ वह सर्वोच्च सम्मान था जोकि भारतीय विज्ञान जगत की विविध धाराओं में सबसे बढ़िया कर दिखाने वाले को पारितोषिक मान्यता प्रदान करता था। पुरस्कार विजेताओं की इस सूची का मतलब है- पिछले कई दशकों में भारत के चोटी के साईंसदान। जिन्हें यह पुरस्कार मिला, उन्होंने आगे चलकर अपने-अपने संस्थान का नेतृत्व किया, नए संस्थान स्थापित किए, फंड देने वाली एजेंसियों और विज्ञान विभागों की अगुवाई भी की। यदि अपनी स्थापना के पहले ही साल में राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार की चयन प्रक्रिया पर इस प्रकार सवाल खड़े हो गये तो क्या यह लंबे तक कायम रही भटनागर पुरस्कार की विरासत को आगे बढ़ा पाएगा।

यह प्रकरण पिछले कुछ वर्षों में पीएसए की भूमिका में निरंतर क्षरण को भी उजागर करता है। भले ही इस पद का सृजन 1999 में हुआ हो, लेकिन आजादी के बाद से ही भारत में विज्ञान संबंधी नीतियों पर परामर्श देने के लिए एक तंत्र रहा है, जिसकी शुरूआत 1950 के दशक में वैज्ञानिक कार्यों के समन्वय के लिए राष्ट्रीय समिति बनाने से हुई थी। आगे चलकर, सरकार, मंत्रिमंडल और प्रधान मंत्री के लिए वैज्ञानिक सलाहकार समितियां बनीं। इस परामर्श तंत्र के परिणामस्वरूप वैज्ञानिक विभागों की स्थापना और पुनर्गठन, नए विज्ञान मंत्रालयों का निर्माण, अनुसंधान संस्थान और शैक्षणिक निकायों के साथ-साथ कई राष्ट्रीय नीतियों और कार्यक्रमों का विकास हुआ। एक स्वतंत्र विज्ञान परामर्श प्रणाली ने विज्ञान और नीति के बीच समन्वय और नए विचारों के समाशोधन गृह के रूप में कार्य किया है।

पीएसए की भूमिका में विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित नीतिगत मामलों के साथ-साथ सामान्य रूप से विज्ञान-आधारित नीति समाधानों पर सलाह देना शामिल है। दोनों ही मामलों में, नीति निर्माण में विज्ञान समुदाय का मार्गदर्शन साथ रखना चाहिए। नीति निमार्ताओं का काम विज्ञान अनुदान और पुरस्कार से संबंधित मामलों को देखना नहीं है। यह पीएसए पर निर्भर है कि वह किस हद तक यह संतुलन साध सकता है। लेकिन, हाल के वर्षों में,पीएसए के कामकाज की भूमिका को वैज्ञानिक विभागों के बीच समन्वय बनाने तक सीमित कर दिया गया है और किसी अन्य सरकारी एजेंसी की भांति काम सौंपा गया है। मसलन, हवाई अड्डों पर विविध डैशबोर्ड तैयार करना या प्रचार कियोस्क की व्यवस्था करना क्या पीएसए का काम है? उसे प्रौद्योगिकी और तकनीकी उत्पादों की क्रय-निविदाओं की जांच करने जैसे प्रशासनिक कार्य भी सौंप रखे हैं, यह 1960 और 1970 के दशक के लाइसेंस राज की याद दिलाता है, जब इसके चरम पर प्रौद्योगिकी विकास के महानिदेशक का काम कुछ ऐसा ही था। पीएसए पर जो एक अन्य जिम्मेदारी लाद रखी है वह है सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों की डिजिटल सूची बनाना और ऐसी प्रौद्योगिकियों के लिए एक ई-मार्केट प्लेस बनाना ताकि सरकारी संगठन और निजी क्षेत्र को उनकी खरीद की सहूलियत हो। इस किस्म के रूटीन के काम अन्य एजेंसियों और विभागों द्वारा भी बखूबी संभाले जा सकते हैं। पीएसए कार्यालय को ऐसे कार्य सौंपने से सरकार को विज्ञान पर स्वतंत्र और स्वायत्त सलाह प्रदान करने के उसके प्राथमिक कार्य का क्षरण होता है।

जेल में जातीय जहर

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक फैसले में जेलों में जातिगत भेदभाव के साथ श्रम विभाजन पर रोक लगाने के लिये सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को तुरंत प्रभाव से जेल मैन्युअल में बदलाव करने के निर्देश दिए हैं। कोर्ट ने इसे संविधान के आर्टिकल 15 का सरासर उल्लंघन बतलाया है। कोर्ट ने कहा कि रसोई व सफाई का काम जाति के आधार पर बांटा जाना अनुचित है। दरअसल, एक महिला पत्रकार द्वारा दायर जनहित याचिका पर ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए शीर्ष अदालत की तीन सदस्यीय पीठ ने कहा कि जेल नियमावली जाति के आधार पर कामों के बंटवारे में भेदभाव करती है। खाना बनाने का काम ऊंची जाति के लोगों को देना व सफाई का काम निचली जातियों के कैदियों को देना संवैधानिक प्रावधानों का उल्लंघन है। जो जेलों में जातिगत भेदभाव को बढ़ाता है। कोर्ट का कहना था कि जाति के आधार पर कामों का बंटवारा औपनिवेशक सोच का पर्याय है, जिसे स्वतंत्र भारत में जारी नहीं रखा जा सकता है। कोर्ट ने कहा कि स्पष्ट है जेल नियमावली साफ तौर पर भेदभाव करती है। साथ ही कहा कि नियमावली में जाति से जुड़ी डिटेल्स का उल्लेख असंवैधानिक है। कोर्ट ने खरी-खरी सुनाते हुए सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के जेल मैन्युअल में तुरंत बदलाव करने को कहा है। साथ ही राज्यों को इस फैसले के अनुपालन की रिपोर्ट कोर्ट में पेश करने को कहा है। उल्लेखनीय है कि चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली इस बेंच में जस्टिस जेबी पारदीवाला व जस्टिस मनोज मिश्रा शामिल थे। दरअसल एक पत्रकार सुकन्या शांता ने सबसे पहले यह मामला उठाया था। उनका कहना था कि देश के 17 राज्यों की जेलों में कैदियों के साथ यह भेदभाव हो रहा है। उन्होंने दिसंबर 2023 में सुप्रीम कोर्ट में यह जनहित याचिका दायर की थी। इस याचिका पर फैसला सुनाते हुए कोर्ट ने तीन महीनों में नियमों में बदलाव करने को कहा है। उल्लेखनीय है कि इस मामले में पहली सुनवाई जनवरी 2024 में हुई थी। सुप्रीम कोर्ट ने 17 राज्यों को नोटिस भेजकर जवाब मांगा था। छह महीने के भीतर केवल उत्तर प्रदेश, झारखंड, ओडिशा, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल ने ही अपना जवाब कोर्ट में दाखिल किया। उल्लेखनीय है कि पत्रकार सुकन्या ने वर्ष 2020 में एक शोध रिपोर्ट तैयार की थी। जिसमें तीन मुख्य राज्यों का उदाहरण दिया गया था। जिसमें राजस्थान का उल्लेख किया गया था कि यदि कैदी नाई है तो उसे बाल व दाढ़ी बनाने का काम मिलेगा, ब्राह्मण कैदी को खाना बनाने का काम मिलेगा और वाल्मीकि कैदी को सफाई का काम दिया जाता था।

जीवन की सुरक्षा और स्वतंत्रता का अतिक्रमण

डॉ. रिपुदमन गुलाटी

डिजिटल युग के आगमन ने अभूतपूर्व तकनीकी प्रगति का युग शुरू किया है, जिससे हमारे रहने, काम करने और बातचीत करने के तरीके बदल गए हैं। जबकि ये नवाचार कई लाभ लाए हैं, इन्होंने गोपनीयता, नागरिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं के क्षरण के बारे में भी गंभीर चिंताएं उठाई हैं। लेकिन निगरानी का बढ़ता सिलसिला हमारी आधुनिक दुनिया का एक अभिन्न अंग बन गया है।

निगरानी, जो कभी केवल कानून प्रवर्तन और राष्ट्रीय सुरक्षा तक सीमित थी, ने अब ऑनलाइन व्यवहार की ट्रैकिंग करने से लेकर भौतिक आंदोलनों की निगरानी तक कई प्रकार की गतिविधियों को शामिल करने के लिए विस्तार किया है। सरकारें, कार्पोरेट और यहां तक कि व्यक्ति अब हमारे जीवन के बारे में बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र कर सकता है, जिससे हमारे गोपनीयता के अधिकार की सीमा और दुर्व्यवहार की संभावना के बारे में प्रश्न उठते हैं।

निगरानी कैमरे अब सार्वजनिक स्थानों, सड़कों और स्टोरों से लेकर सरकारी भवनों तक में आम हो गए हैं। निःसंदेह, ये कैमरे अपराध को रोक सकते हैं और जांच में सहायता कर सकते हैं, लेकिन सार्वजनिक रूप से व्यक्तियों की निगरानी किस हद तक की जानी चाहिए, इसके बारे में भी प्रश्न उठाते हैं। चेहरे की पहचान प्रौद्योगिकी हाल के वर्षों में तेजी से विकसित हुई है, जिससे अधिकारियों को वास्तविक समय में व्यक्तियों की पहचान करने में सक्षम बनाया गया है। जबकि यह तकनीक कानून प्रवर्तन उद्देश्यों के लिए उपयोगी हो सकती है, इसने इसके दुरुपयोग की आशंका को भी बढ़ाया है। अध्ययन से पता चला है कि चेहरे की पहचान के एल्गोरिदम कुछ जनसांख्यिकी के खिलाफ पक्षपाती हो

सकते हैं, विशेष रूप से रंग के लोगों के खिलाफ। यह पूर्वाग्रह भेदभावपूर्ण परिणामों में ले जा सकता है, जैसे गलत गिरफ्तारी या निरोध। सार्वजनिक स्थानों में चेहरे की पहचान प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग बड़े पैमाने पर निगरानी और गोपनीयता के क्षरण के बारे में चिंताएं उठाता है। कुछ आलोचकों का तर्क है कि निगरानी कैमरों का प्रसार एक पैनोप्टिकन प्रभाव पैदा करता है, जहां व्यक्ति लगातार देखा जाना और निगरानी महसूस करते हैं, जिससे अभिव्यक्ति और व्यक्ति की स्वतंत्रता पर एक गहरा प्रभाव पड़ता है। निगरानी फुटेज का भंडारण और प्रतिधारण डेटा गोपनीयता और व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग की संभावना के बारे में चिंताएं उठाता है।

पैनोप्टिकन प्रभाव एक सामाजिक सिद्धांत है जो यह बताता है कि जब लोग लगातार निगरानी में महसूस करते हैं, तो वे अपने व्यवहार को बदलने और अधिक अनुपालन करने की अधिक संभावना रखते हैं। यह शब्द जेरमी बेंथम द्वारा डिजाइन किए गए एक काल्पनिक जेल से लिया गया है, जहां एक केंद्रीय गार्ड टॉवर से सभी कैदियों को देख सकता था, जबकि कैदियों को यह नहीं पता था कि वे देखे जा रहे हैं या नहीं। इस सिद्धांत के अनुसार, जब लोग सोचते हैं कि वे निगरानी में हैं, तो वे अपने व्यवहार को समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने के लिए दबाव महसूस करते हैं। यह प्रभाव सत्ता के एक नये रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि यह लोगों को नियंत्रित करने और उनके व्यवहार को बदलने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

निगरानी के लाभ निर्विवाद हैं। इसने अपराध, आतंकवाद और सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरों का मुकाबला करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निगरानी प्रणालियों ने अपराधियों की पहचान करने, हमलों को रोकने और बीमारियों के प्रसार को ट्रैक करने में मदद की है। इसके अलावा, उन्होंने ट्रैफिक प्रवाह में सुधार, संसाधन आवंटन का अनुकूलन और सार्वजनिक सुरक्षा बढ़ाने में योगदान दिया है। हालांकि, निगरानी के संभावित नुकसान भी उतने ही घातक हैं। व्यक्तिगत डेटा का बड़े पैमाने पर संग्रह रखना, मुक्त भाषण, संगति और असंतोष पर एक गहरा प्रभाव डाल सकता है। यह एक निगरानी समाज भी बना सकता है जहां व्यक्ति लगातार निगरानी महसूस करते हैं और अपनी अभिव्यक्ति की क्षमता में प्रतिबंधित महसूस करते हैं। इसके अलावा, निगरानी का उपयोग भेदभावपूर्ण या दमनकारी उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, विशेष रूप से हाशिए के समूहों के खिलाफ। हाल के वर्षों में निगरानी के सबसे विवादास्पद पहलुओं में से एक सरकारों द्वारा बड़े पैमाने पर निगरानी कार्यक्रमों का कार्यान्वयन रहा है। इन कार्यक्रमों में फोन कॉल, ईमेल और इंटरनेट खोज जैसे व्यक्तिगत डेटा का व्यापक संग्रह और विश्लेषण शामिल है। जबकि समर्थक तर्क देते हैं कि ऐसे कार्यक्रम राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं, लेकिन यह नागरिक स्वतंत्रताओं के लिए खतरा भी है।

निगरानी के लाभों और हानियों के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए, स्पष्ट और लागू होने योग्य गोपनीयता कानून स्थापित करना आवश्यक है। इन कानूनों को निगरानी की सीमाओं को परिभाषित करना चाहिए, व्यक्तियों के गोपनीयता के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि डेटा का संग्रह और उपयोग नैतिक रूप से किया जाता है। सरकारों को भी अपनी निगरानी गतिविधियों के बारे में पारदर्शी होना चाहिए। सत्ता के दुरुपयोग और निरंकुशता को रोकने के लिए निरीक्षण के अधीन होना चाहिए। कानूनी ढांचे के अलावा, गोपनीयता जागरूकता और शिक्षा की संस्कृति को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। व्यक्तियों को अपने अधिकारों को समझने और अपनी गोपनीयता की रक्षा के लिए कदम उठाने के लिए सशक्त होना चाहिए। इसमें अपनी ऑनलाइन गतिविधियों के प्रति सचेत रहना, मजबूत पासवर्ड का उपयोग करना और व्यक्तिगत जानकारी साझा करने के बारे में सावधान रहना शामिल है। निःसंदेह, निगरानी के युग में जीवन और स्वतंत्रता को संतुलित करना एक जटिल चुनौती है।

ईरान-इजरायल के बीच ऐलान-ए-जंग के अंतर्राष्ट्रीय प्रभावों को ऐसे समझिए

कमलेश पांडे

दुनिया का थानेदार अमेरिका और उसका प्रबल प्रतिद्वंद्वी रूस (पूर्व सोवियत संघ का काबिल वारिस) के बीच अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो कुछ भी हुआ, हो रहा है अथवा होगा, वह कोई नई बात नहीं है। क्योंकि अमेरिका-इंग्लैंड की युगलबंदी को संतुलित करने के लिए रूस-चीन का गठजोड़ रणनीतिक पूर्वक आगे बढ़ रहा है। इसलिए हाल में ईरान-इजरायल के बीच शुरू हुए ऐलान-ए-जंग के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव को इसी परिप्रेक्ष्य में जानने-समझने की जरूरत है। समझा जाता है कि जिस तरह से अमेरिका, यूक्रेन की पीठ थपथपा रहा है; ठीक उसी तरह से रूस, अब फिलिस्तीन, लेबनान और ईरान को शह दे रहा है। क्योंकि उसकी स्पष्ट सोच है कि यूक्रेन में अमेरिकी नेतृत्व वाले नाटो की मदद तभी थमेगी, जब वह इजरायल के बचाव में मध्यपूर्व के देशों के साथ सीधे तौर पर उलझेगा।

यही वजह है कि जब हमास और हिजबुल्लाह जैसे आतंकी संगठन अपने प्रभाव वाले इलाके में इजरायल के सामने कमजोर पड़ने लगे तो हौसलाअफजाई के लिए उनके आका ईरान को इजरायल के खिलाफ सामने आना पड़ा। उधर जब अमेरिका भी इजरायल के साथ खुले मैदान में उतर गया, तो अब ईरान के तरफदारी में रूस की घोषणा की ओर सबकी निगाहें जमीं हुई हैं।

वैसे भी इजरायल पर एकाएक बरसीं 200 ईरानी मिसाइलों के बाद अब इजरायली प्रतिक्रिया कितनी भयानक होगी, इस ओर भी पूरी दुनिया की नजर टिकी हुई है। ऐसा इसलिए कि ईरान के हमले के बाद भी इजरायल का हिजबुल्लाह पर एक्शन थमा नहीं है। उसने लेबनान के बेरूत के दक्षिणी इलाकों में भीषण हवाई हमले किए। मतलब लेबनान में फिर बमबारी की। ये हमले हिजबुल्लाह के अहम ठिकानों पर किए गए।

ईरान के हमले के बाद इजरायल ने दो टूक कहा कि हमारा जवाबी ऑपरेशन प्लान तैयार है। हम तय करेंगे कि जवाब कब देना है। जहां भी और जब भी होगा, हम ईरान पर हमला करेंगे। वहीं, ईरान के सेना प्रमुख ने धमकी दी कि अगर उनके देश पर हमला हुआ, तो वो इजराइल के सारे इंफ्रास्ट्रक्चर को तबाह कर देंगे। इससे तय है कि बात अभी और बढ़ेगी।

इसलिए पुनः यह सवाल मौजूं है कि आखिर में प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध की भयावह त्रासदी को झेलने के बावजूद समकालीन दुनिया स्थाई शांति की परिकल्पना करने के बजाय तीसरे विश्वयुद्ध की परिस्थितियों को बढ़ावा देने पर क्यों तुली हुई हैं? क्या उनका यह कदम उस लोकतंत्र के मुंह पर करारा तमाचा नहीं है, जो स्वतंत्रता-समानता-बंधुत्व की बात करते हुए नहीं अघाता है। सही मायने में तो अब संयुक्त राष्ट्र संघ भी दुनियावी विरोधाभाषों को खत्म करने या उन्हें सुलझाने की दृष्टि से पूरी तरह से विफल साबित हो चुका है। विशेषज्ञों के मुताबिक, शीत युद्ध कालीन करतूतों की बात यदि छोड़ भी दी जाए, तो समकालीन वैश्विक करतूतें यही इशारे कर रही हैं कि हथियारों के सौदागरों को जिंदा रखने के लिए दुनियाभर में जारी छद्मयुद्धों की बजाए रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराइल-फिलिस्तीन युद्ध जैसे अन्य युद्ध भी बेहद जरूरी हैं। इसलिए हर ओर विरोधाभासों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

सच कहूं तो ये वही ताकतें हैं जो भारत-पाक युद्ध, भारत-चीन युद्ध, चीन-ताइवान युद्ध को लंबा चलने देने की परिस्थिति पैदा करने में जब विफल हुई तो उन्हें अपने ही पड़ोस में नए-नए मोर्चे खोलने पड़े। क्योंकि दुनिया की फैक्टरियों में जब हथियार बनेंगे तो उनके खपत के लायक नित्य नया क्षेत्र चुनने की पहल तो सत्ताधीशों को करनी ही होगी। बहरहाल, अमेरिकन और रूसी नेतृत्व यही कर रहा है। चीनी और भारतीय नेतृत्व भी इसी उधेड़बुन में पड़ा है।

आप मानें या न मानें, लेकिन अमेरिका-रूस गुट को आपस में भिड़ाकर और लंबे युद्ध में उलझाकर उन्हें कमजोर होने देने और खुद को दुनिया का नया थानेदार बनाने की जो चीनी चाल है, और उसके दृष्टिगत भारत की जो चुप्पी है, उससे अमेरिका-रूस दोनों की घिग्गी बंधी हुई है। शायद भारत भी चीन को पछाड़कर यही मंसूबा पाले हुए है।

सच कहूं तो भले ही मुस्लिम आतंकवाद कभी अमेरिकी-ब्रिटिश एजेंडा रहा हो, लेकिन अब रूस-चीन गठबंधन भी इसी एजेंडे को आगे बढ़ाकर तेल के खेल में अमेरिकी नेतृत्व वाले नाटो को पटखनी देने की रणनीति अख्तियार कर चुका है। जिसका साइड इफेक्ट्स आज इजरायल झेल रहा है और कल भारत के समक्ष भी इजरायल वाली परिस्थिति को पैदा किया जा सकता है, यदि उसका ज्यादा झुकाव अमेरिकी गुट की तरफ हुआ तो। मसलन, पश्चिमी एशिया व मध्यपूर्व एशिया समेत दुनिया के इस्लामिक देशों और इसके कतिपय आतंकी शासकों का दुर्भाग्य यह है कि तेल से अर्जित समृद्धि का सदुपयोग वह अपने मुल्क के नागरिकों को ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के बजाए उन्मुक्त उपभोग, धार्मिक कट्टरता और आतंकवाद की भावना को पैदा करके उसको निर्यात करने में लगा दिया। क्योंकि उनके अंतर्राष्ट्रीय पॉलिटिकल बॉस को यही पसंद है। इससे इजरायल और भारत जैसे देशों की परेशानी बढ़ी, लेकिन वो यह भूल गए कि प्रकृति वही लौटाती है, जो हमलोग बांटते हैं।

यही वजह है कि चाहे अमेरिका हो, रूस हो, चीन हो, या बड़े इस्लामिक मुल्क, जब प्रकृति उन्हें छद्मयुद्ध, युद्ध और आतंकवाद की सौगात वापस करने लगी है तो अब ये देश उसे संभालने-झेलने में असमर्थ ही नहीं हैं, बल्कि भौचक्के भी रह जा रहे हैं। आपको ईरान-इराक युद्ध याद होगा। ईरान-अमेरिकी जंग भी याद होगी। तालिबान (अफगानिस्तान)-अमेरिका युद्ध ज्यादा पुरानी बात नहीं हुई है। अमेरिका और सीरिया के बीच जो कुछ हुआ, या हो रहा है, वह सभी जानते हैं।

जानकारों के मुताबिक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक या मध्यपूर्व के देशों में अमेरिकी रणनीति यदि विफल हो रही है, तो उसके पीछे रूस की बहुत बड़ी भूमिका है। आज यदि अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस जैसे बड़े मुल्क इस्लामिक आतंकवाद व कट्टरता की चपेट में हैं, तो इसके पीछे भी रूसी-चीनी अंतर्राष्ट्रीय शह ही है।

दिलचस्प बात तो यह है कि पिछले 10 वर्षों में भारत ने अपनी रणनीति बदली है और खुद को उम्मीद से ज्यादा मजबूत बनाया है, इसलिए वह अब अंतर्राष्ट्रीय सत्ता संतुलन का केंद्र बन चुका है। भारत भी अब हथियारों के सौदागरों की टीम में शामिल होने को बेताब है।

अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में चीनी चाल के दृष्टिगत ही भारत सरकार सोच-समझकर कोई कदम उठाती है। इसलिए अब दुनिया की धड़कन इस बात को सोचकर बढ़ रही है कि यदि तीसरा विश्वयुद्ध शुरू हुआ तो भारत किधर होगा? क्या वह तीसरी दुनिया के देशों के साथ तटस्थ रहेगा, या फिर रूस से अपनी पुरानी यारी और अमेरिका से अपनी नई यारी निभाएगा!

यही नहीं, जब दुनिया में महंगाई बम फूटेगा, तो उस स्थिति को भारत कैसे संभालेगा। वैसे तो ईरान और इजरायल दोनों भारत के करीब हैं, लेकिन इजरायल और भारत का उद्देश्य एक है-आतंकवाद का समूल सफाया। शायद यह होने का असली वक्त भी अब आ रहा है। भारत की रणनीति साफ होनी चाहिए कि राज्य प्रायोजित आतंकवाद को खत्म किया जाए। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान आदि द्वारा प्रोत्साहित आतंकवाद जितनी जल्दी कुचला जाएगा, दुनिया उतनी जल्दी ही चैन की सांस ले सकेगी।

इधर ईरान-इजरायल के बीच जंग के आसार के चलते कच्चे तेल में भी तेजी देखने को मिल रही है। इससे दुनियाभर में महंगाई बढ़ने के आसार प्रबल हैं। इस हमले के बाद से कच्चे तेल के दामों में 4 फीसदी की तेजी आ गई है। ऐसे में दुनियाभर में महंगाई फिर से बढ़ने के आसार प्रबल हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस मिसाइल हमले से जुड़ी बातों के बीच गत 1 अक्टूबर मंगलवार को ही क्रूड ऑयल का भाव बढ़ गया। ब्रेंट वायदा 3.5% बढ़कर 74.2 डॉलर प्रति बैरल हो गया, जबकि यूएस वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट क्रूड 2.54 डॉलर या 3.7% बढ़कर 70.7 डॉलर हो गया।

कहना न होगा कि दुनियाभर में कच्चे तेल में होने वाले उतार-चढ़ाव से वैश्विक अर्थव्यवस्था सीधे तौर पर प्रभावित होती है। जबकि युद्ध से ग्लोबल सप्लाई चैन भी टूट जाती है। ऐसे में आयात और निर्यात की गतिविधियां भी प्रभावित होती हैं, जिससे महंगाई बढ़ने लगती है। पिछले साल रूस और यूक्रेन युद्ध के दौरान भी ऐसा ही हुआ था, जब रूस के यूक्रेन पर अटैक के बाद ग्लोबल सप्लाई चैन बुरी तरह से प्रभावित हुई थी। वहीं, कच्चे तेल के दामों में भी जबरदस्त तेजी आई थी।

वहीं, इस जियोपॉलिटिकल टेंशन का असर शेयर बाजार पर भी देखने को मिल रहा है। निफ्टी और डाओ फ्यूचर्स समेत कुछ देशों के मार्केट लाल निशान के साथ कारोबार कर रहे हैं। ऐसे में यदि यह जंग और बढ़ी तो कच्चे तेल में बढ़ोतरी से कई चीजें महंगी हो सकती हैं, जबकि शेयर बाजार में ऑयल स्पेसिफिक स्टॉक पर तगड़ा असर देखने को मिल सकता है। कच्चे तेल में तेजी से ऑयल एक्सप्लोरेशन कंपनी जैसे- ओएनजीसी और ऑयल इंडिया के शेयरों में तेजी आने की संभावना है। वहीं, पेंट और टायर शेयरों में गिरावट देखने को मिल सकती है। क्योंकि, इन कंपनियों की निर्भरता क्रूड पर होती है। ऐसे में क्रूड महंगा हुआ तो इन कंपनियों की इनपुट कॉस्ट बढ़ सकती है।

उधर, युद्ध और जियो पॉलिटिकल टेंशन के बढ़ने से सोने के भाव में तेजी देखने को मिलती है। ऐसे में ईरान के इजरायल पर हमले के बाद गोल्ड में खरीदारी देखने को मिल सकती है। दरअसल, युद्ध जैसे हालात में गोल्ड में निवेश को सुरक्षित माना जाता है।

https://t.me/AllNewsPaperPdf

सुभाषित

मित्र-अमित्र, ज्ञात-अज्ञातसे हम अभय हों। रात्रिके समय हम सब निर्भय हों और सब दिशाओंमें रहनेवाले हमारे मित्र बनकर रहें। ❑ **अथर्ववेद**

नक्सलियोंपर कहर

छत्तीसगढ़में नक्सलियोंके खिलाफ अभियानमें तेजी आयी है, उससे यही पता चलता है कि उनके खात्मेके लिए आवश्यक राजनीतिक इच्छाशक्तिका परिचय दिया जा रहा है। नक्सलियोंके गढ़ बस्तर सम्भागको नक्सलवादसे मुक्त करानेके लिए छत्तीसगढ़में जवानोंने अभियान चला रखा है। लगातार नक्सलियोंका एनकाउण्टर हो रहा है। सुरक्षाबलके जवान बस्तर सम्भागमें डेरा जमाये हुए हैं। उन्हें नक्सल मोरचेपर एकके बाद एक बड़ी कामयाबी मिल रही है। जवान नक्सलियोंके ठिकानोंमें घुसकर उनसे टक्कर ले रहे हैं। शुक्रवारको छत्तीसगढ़के नारायणपुर-दंतेवाड़ा सीमापर माड़ इलाकेमें पुलिससे हुई मुठभेड़में ४० नक्सलियोंका मारा जाना यही बता रहा है कि उनका सफाया पूरी ताकतसे जारी है। यह नि:सन्देह सुरक्षाबलोंकी बड़ी कामयाबी कही जा सकती है, क्योंकि योजनाओंको अंजाम देनेसे पहले ही नक्सलियोंको मार गिराया गया। छत्तीसगढ़के गठनके बादसे सुरक्षाबलोंका अबतकका यह सबसे बड़ा अभियान है, जब एक ही मुठभेड़में ४० नक्सली मारे गये हैं। इससे पहले १६ अप्रैलको कांकेर जिलेमें सुरक्षाबलोंसे मुठभेड़में २९ नक्सली मारे गये थे। इस वर्ष अबतक बस्तर क्षेत्रमें अलग-अलग मुठभेड़ोंमें सुरक्षाबलोंने १९७ माओवादियोंको ढेर किया है। बेहतर होगा कि नक्सलियोंके खिलाफ जैसा अभियान छत्तीसगढ़कमें जारी है, वैसा ही पड़ोसी राज्योंमें भी चलाया जाय। ऐसा इसलिए किया जाना आवश्यक है, क्योंकि नक्सली एक राज्यसे दूसरे राज्यमें खिसक जाते हैं। नक्सलियोंको जड़-मूलसे खत्म करनेके लिए सभी नक्सल प्रभावित राज्योंको आपसी समन्वयके साथ एक साथ अभियान चलाना सही रणनीति साबित होगी। हालमें ही एनआईएने जांचमें इस बातका भी खुलासा किया था कि बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगालमें नक्सली एक बार फिरसे अपना संघटन बनानेका कार्य कर रहे हैं। शुक्रवारको ही बिहारके औरंगाबाद जिलेमें नक्सलियोंके ठिकानोंसे भारी मात्रामें इलेक्ट्रिक डेटोनेटर एवं कोडेक्स वायर बरामद किया गया है। यह विस्फोटक नक्सलियोंने सीआरपीएफ जवानोंके गश्ती मार्गपर लगाये थे। बस्तर मुठभेड़में भी एके-४७ एसएलआर समेत कई अत्याधुनिक हथियार बरामद किये गये हैं। ऐसेमें नक्सलियोंके खात्मेका अभियान जारी रखते हुए इसकी तहतक भी पहुंचा जाना चाहिए कि उन्हें आधुनिक हथियार और विस्फोटक कहांसे मिल रहे हैं। नक्सलियों और उनके समर्थकोंके प्रति किसी भी तरहकी नरमी नहीं बरती जानी चाहिए।

चिन्तनीय सड़क हादसे

उत्तर प्रदेशके मीरजापुर जिलेमें गुरुवारको रात हुए भीषण सड़क हादसेमें दस लोगोंकी मौत अत्यन्त दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। प्रयागराज-वाराणसी हाईवेपर कछवां थाना क्षेत्रके कटका गांवके समीप गुरुवार रात करीब एक बजे एक तेज रफ्तार अनियंत्रित ट्रकने बाइक सवार तीन लोगोंको रौंदते हुए ट्रैक्टरमें जोरदार टक्कर मार दी जिससे दस लोगोंकी मौकेपर ही मौत हो गयी और तीन लोग गम्भीर रूपसे घायल हो गये, जिन्हें बीएचयूके ट्रामा सेण्टरमें भर्ती कराया गया है। यह हृदयविदारक हादसा उस समय हुआ जब ठेकेदार और १२ श्रमिक औराई (भदोही) के तिवारी गांवमें छतकी ढलाई करके रात्रि लगभग १२ बजे घर लौट रहे थे। ठेकेदार और दो श्रमिक बाइकपर बैठे थे जबकि ११ श्रमिक ट्रैक्टर और मिक्सर मशीनपर बैठे थे। ठेकेदार दो श्रमिकोंके साथ बाइकसे ट्रैक्टरके पीछे चल रहे थे। इस बीच जैसे ही वाराणसी हाइवेपर कटका गांवके पास पहुंचे कि पीछेसे आ रही एक तेज रफ्तार ट्रकने बाइक सवार तीनोंको कुचलते हुए मिक्सर बंधे ट्रैक्टरको टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी ट्रैक्टर उछलकर हाइवेके बगलमें बने नालेमें चला गया और मिक्सर मशीनपर बैठे श्रमिक काफी दूर जा गिरे। इस भीषण हादसेमें बाइक सवार तीन और ट्रैक्टर तथा मिक्सर मशीनपर बैठे सात लोगोंकी घटनास्थलपर ही मौत हो गयी। इस तरहकी सड़क दुर्घटनाएं आये दिन होती हैं और लोगोंकी अकाल मृत्यु भी होती है, जो गम्भीर चिन्ताका विषय है। उत्तर प्रदेशमें प्रति वर्ष २०-२२ हजार लोगोंकी मौत सड़क हादसोंमें होती है, जिसे रोकना बड़ी चुनौती है। सर्वाधिक दुर्घटनाएं ओवर स्पीडिंगके कारण होती हैं। उत्तर प्रदेश देशका पहला राज्य है जहां सड़क दुर्घटना जांच योजना अधिसूचित की गयी है। इसका कड़ाईसे पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए तभी दुर्घटनामें मौतका आंकड़ा कम किया जा सकता है। दुर्घटनाके बाद प्रधान मंत्री और मुख्य मंत्रीने संवेदनाके साथ मुआवजेकी घोषणा की है, लेकिन सड़क दुर्घटनाओंपर अंकुश लगानेके लिए यातायात नियमोंको और कड़ा करना होगा। रात्रिमें परिचालन करनेवाले भारी वाहनोंपर विशेष निगाह रखनेकी जरूरत है।

लोक संवाद

ऑक्सफोर्डकी छठी रोड्स छात्रवृत्तिकी घोषणा

महोदय,-भारतीय पुलिस सेवाके १९५३ बैचको यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि जिस अधिकारीने ज्वाइनिंगके समय बैचमें शीर्ष स्थान प्राप्त किया उसका नाम भारतके पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णनके साथ ही ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयके रोड्स छात्रवृत्ति ट्रस्टके रिकॉर्डमें दर्ज किया जायगा। हमारे पूर्व राष्ट्रपतिकी पोती सौम्या गोविंदराजनके बेटे मुकंदने मिलकर भारतीय छात्रोंके लिए छठी रोड्स छात्रवृत्तिकी स्थापनाके लिए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयको एक अच्छीखासी रकमका योगदान दिया है। भारतीय छात्रोंके लिए हर साल पांच रोड्स छात्रवृत्तियां उपलब्ध थीं। मुकंद और उनकी पत्नी सौम्या द्वारा प्रदान की जानेवाली छात्रवृत्ति छठी होगी। स्कॉलरका चयन २०२५ में किसी समय किया जायगा और वह २०२६ में ऑक्सफोर्डमें शामिल हो जायगा। सुप्रीम कोर्टमें वरिष्ठ अधिवक्ता डा. मेनका गुरुस्वामी, जो लोगोंके मुद्दोंके लिए लड़नेके लिए जानी जाती हैं, ऑक्सफोर्डके रोड्स स्कॉलरशिप ट्रस्टके भारतीय चैप्टरकी अध्यक्ष हैं। मुकंद खुद भी रोड्स स्कॉलर थे। वह उसी समय ऑक्सफोर्डमें नामांकित हुए थे, जब सौम्या एक अन्य छात्रवृत्तिपर वहां पढ़ रही थीं। उनकी मुलाकात ऑक्सफोर्डके कैंपसमें हुई और बादमें उन्होंने शादी कर ली। मुकंद टाटा प्रशासनिक सेवामें शामिल हो गये और जल्दी ही अपनी पहचान बना ली। रतन टाटाने उन्हें चेयरमैनके कार्यालयमें अपने प्रमुख सहयोगीके रूपमें चुना। रतनके सेवानिवृत्त होनेके कुछ साल बाद मुकंदने टाटा ग्रुप छोड़ दिया और अपनी खुदकी कंसल्टैंसी फर्म ई-क्यूब इन्वैस्टमैंट एडवाइजर्स शुरू की। जब मुकंद रतन टाटाके प्रमुख सहयोगी थे, तब मैंने उनसे संपर्क किया। बादमें हम अकसर मिलते रहे। जब मैं सौम्यासे मिला तो वह एक विदेशी बैंकमें कार्यरत थीं। बादमें उन्होंने अपनी खुदकी कंसल्टैंसी फर्म वेकफील्ड एडवाइजर्सकी स्थापना की, जो न केवल एक बड़ी सफलता है, बल्कि सामाजिक और धर्मार्थ कार्योंमें भी मदद करती है। २०२१ में फोर्ब्स इंडियाकी सबसे शक्तिशाली महिलाओंकी सूचीमें उनका नाम शामिल है। मुकंदके पिता गोविंदराजन आईपीएसके मेरे बैचमें टापर थे। यदि उन्होंने १९५३ में आईपीएसमें शामिल होनेसे परहेज किया होता तो मुझे लगता है कि वे अगले सालकी आईएएस परीक्षामें टापर होते और १९५३ के आईएएस बैचके टापरके रूपमें शामिल होते। गोविंदराजन संयुक्त खुफिया समितिके अध्यक्षके रूपमें सेवानिवृत्त हुए, एक पद जिसे एनएसए (राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार) के कार्यालयमें शामिल कर लिया गया है। उन्होंने अपनी सेवाके केवल पहले दो वर्षोंके लिए ही पुलिसकी वर्दी पहनी थी, जिसमेंसे एक वर्ष उन्होंने ३६ अन्य प्रोबेशनर्सके साथ माऊंट आबूमें प्रशिक्षणके तहत बिताया था। उनके बड़े बेटे रघुराम भारतीय रिजर्व बैंकके गवर्नर बने। भारतीय छात्रोंके लिए छठी रोड्स छात्रवृत्ति राधाकृष्णन और राजन परिवारों द्वारा प्रायोजित है। इसे रोड्स ट्रस्टके भारतीय अध्याय द्वारा प्रशासित किया जायगा। स्थायीता सुनिश्चित करनेके लिए आवश्यक कुछ अतिरिक्त धनराशि एक अमेरिकी रोड्स विद्वान और उनकी पत्नीके साथ-साथ ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा भी प्रदान की गयी थी। बिल क्लिंटन संयुक्त राज्य अमेरिकाके राष्ट्रपति चुने जानेसे पहले रोड्स विद्वान थे। हालमें दिल्लीकी मुख्य मंत्री बनी आतिशी रोड्स विद्वान थीं। मेरे अपने गोवा ईसाई समुदायसे संबंधित पीटर लिन सिनाई रोड्स विद्वान थे। माऊंट आबूके केन्द्रीय पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालयमें प्रोबेशनरके रूपमें, अंग्रेजी भाषामें एक भावी राष्ट्रीय स्तरपर मान्यता प्राप्त कवि ११वें नियमित भर्ती बैचमें शामिल हुए। वह केकी दारूवाला थे, जो छोटे, लेकिन उल्लेखनीय, पारसी समुदायसे आते थे। केकीका परिवार लाहौरसे भारत आया था। उन्हें उत्तर प्रदेश कैडर आबंटित किया गया था, लेकिन गोविंदराजनकी तरह, उन्हें ईयरमार्किंग स्कीमके तहत देशके इंटैलीजैंस ब्यूरो (आईबी) में भेज दिया गया था। १९६२ में खुफिया एजैंसीके रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) को आईबीसे अलग कर दिया गया और केवल बाहरी खुफिया जानकारीका काम सौंपा गया। गोविंदराजन और केकी दारूवाला दोनोंको रॉमें ड्यूटी दी गयी थी, जब इसका गठन हुआ था। मेरे ३७ अधिकारियोंके बैचमेंसे चारका चयन ईयरमार्किंग स्कीममें हुआ। बैचके दो टापर गोविंदराजन और आनंद वर्माको पहले आईबी और बादमें रॉमें भेजा गया। केकी दारूवालाका पिछले हफ्ते दिल्लीमें निधन हो गया। प्रिंट मीडियामें प्रकाशित दो श्रद्धांजलियोंने मुझे सचमुच भावुक कर दिया। वे रचनाएं आईपीएसमें उनके सहयोगियों द्वारा नहीं, बल्कि संस्कृति और साहित्यके क्षेत्रमें सेवारत जाने-माने व्यक्तियों द्वारा लिखी गयी थीं। आईपीएस बिरादरी भी उनके निधनपर शोक व्यक्त करती है। उन्होंने अपनी कविताओंसे सेवाको गौरवान्वित किया। मुझे इस बातने बहुत प्रभावित किया कि एक आईपीएस अधिकारी, जो गुमनाम हैसियतसे देशकी सेवा कर रहा था, दूसरे क्षेत्रमें उत्कृष्टताके कारण लोगोंकी नजरोंमें आया। **-जूलियो रिबैरो (पूर्व डीजीपी, पंजाब), वाया ईमेल।**

इसरायलके विवादमें ईरान

इसरायलको लेकर फिलिस्तीन, लेबनान और बेरूतमें विवाद चलता रहता है। एशियामें यहूदियोंकी भूमिपर जब ईसाई मजहब और इस्लाम मजहबने आकार लेना शुरू किया तो हालात ऐसे बने कि यहूदियोंको अपने देशसे भागना पड़ा जिसको जहां भी आश्रय मिला, वह उसी देशमें जाकर बस गया।

❑ **कुलदीप चंद अग्निहोत्री**

बहुतसे यहूदी हिन्दुस्तानमें आकर भी बस गये। लेकिन देखते-देखते पूरा यूरोप अपने पूर्वजोंके रास्तेको छोड़कर ईसाई मजहबके नये रास्तेपर चल पड़ा। बादमें एशियामें उसी क्षेत्रमें जहां ईसाई मत पैदा हुआ था, इस्लाम पंथका उदय हुआ। इस नये मतमें दीक्षित हुए अरबों और तुर्कोंने एशिया/जम्बू द्वीपके देशोंको तो पकड़ा ही, लेकिन इसके साथ ही उसने अफ्रीका और यूरोपके देशोंमें भी ईसाई मजहबको अपदस्थ करनेके लिए युद्ध छेड़ दिया। इन संघर्षोंका सबसे ज्यादा नुकसान यहूदियोंको ही भुगतना पड़ा। उनका देश खत्म हो गया, लेकिन इसके साथ ही यहूदियोंको यूरोपमें भी ईसाइयोंके प्रहारोंका सामना करना पड़ रहा था। लेकिन विश्व युद्धोंने एक बार फिर दुनियाका राजनीतिक नक्शा बदल दिया। नये नक्शेमें यहूदियोंको एक बार फिरसे उनका परम्परागत देश वापस मिल गया। दुनियाके नक्शेपर फिरसे इसरायल दिखाई देने लगा। दुनियाभरमें बिखरे यहूदी अलग-अलग देशों आकर इसरायलमें बसने लगे। जाहिर है अब यहूदियोंके लिए पवित्र इस क्षेत्रका कुछ हिस्सा उन फिलिस्तीनी, लेबनानी या दूसरे लोगोंको छोड़ना पड़ा जो इस लम्बे कालखंडमें यहां बस गये थे। इतना ही नहीं, इस कालखंडमें यहां बस गये लोगोंने इस्लाम या ईसाईयत नामके अलग मजहबोंको भी अपना लिया था।

ईरान परमाणु शक्ति बननेकी ओर अग्रसर है। अरब देशोंका इसरायलसे बैर है। लेकिन वे इसरायलको चुनौती देनेकी स्थितिमें नहीं हैं। ऐसेमें यदि इसरायलको चुनौती देता है तो जाहिर है अरब देश इतना तो मान ही लेंगे कि यदि भविष्यमें इसरायल अरब देशोंको तंग करता है तो वे ईरानकी शरणमें जा ही सकते हैं। यह युद्ध भयंकर स्थितिकी ओर बढ़ रहा है। युद्ध यदि नहीं रोका गया तो इसके अंतरराष्ट्रीय स्तरपर बुरे प्रभाव पड़ेंगे। दोनोंको बातचीतकी मेजपर इकट्ठे होना होगा, तभी यह समस्या सुलझ सकती है। लेकिन यथार्थ यह है कि दोनों ही पक्ष युद्धोन्मादमें रत हैं।

वैसे तो यहूदी, ईसाई और मुसलमान तीनों ही पीपल्स ऑफ दि बुक माने जाते हैं, लेकिन कालके अंतरालने अब इनको एक-दूसरेका शत्रु ही बना दिया था। वैसे भी इसराइल चारों ओरसे अपने विरोधी मजहबोंको माननेवाले देशोंसे ही घिरा हुआ है। इन देशोंको यह भी लगता है कि इसराइल उनको अपदस्थ करके स्थापित हुआ है। अपने निर्माण कालसे ही इसराइलको निरन्तर अपने अस्तित्वकी लड़ाई लड़नी पड़ रही है। लेकिन प्रश्न है कि इस सारे खेलमें ईरान क्या कर रहा है। ईरान इसराइलसे शत्रुता धर्म किस आधारपर निभा रहा है, क्योंकि सभी जानते हैं कि लेबनान और दूसरे स्थानोंपर ईरान, इसराइलके खिलाफ एक आतंकवादी संघटन हिज्बुल्लाहको शह देता रहता है। केवल शह ही नहीं, कुछ विद्वान तो यह कहते हैं कि हिज्बुल्लाह ईरानकी ही अवैध संतान है। लेकिन प्रश्न फिर वही है कि ईरानका उस पचड़ेसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे क्या लेना-देना है। इसके लिए सबसे पहले ईरानकी अपनी स्थिति या इतिहासको समझ लेना होगा। दरअसल जिस वक्त अरबोंने हजरत मोहम्मदके रास्तेपर चलनेका निर्णय किया, उसी समय अरबके अनेक कबीलोंमें एकता भी दिखाई देने लगी। जाहिर है एकताके इस प्रदर्शनके साथ ही अरबोंने उस एकताका लाभ लेनेके लिए अपने परम्परागत शत्रुओंपर सैनिक हमले शुरू कर दिये। ईरान उसका पहला शिकार हुआ। वह अरबोंसे पराजित ही नहीं हुआ, बल्कि उसको सजा देनेके लिए हमलावरोंने यह शर्त भी लगा दी कि पराजित ईरानियोंको अपना मजहब छोड़कर अरबोंका नया मजहब ही अपनाना होगा। विवशतामें ईरानियोंको अपना परम्परागत मजहब छोड़ना पड़ा। उन्होंने अरबोंका मजहब स्वीकार तो कर लिया, लेकिन अपने इस अपमानको भुला नहीं पाये। लेकिन उनको अपना अवसर इस्लाम मजहबके संस्थापक हजरत मोहम्मदके ६३२ में हुए देहावसानके लगभग पांच दशक बाद ६८० में मिला। अरबोंमें हजरत मोहम्मदके उत्तराधिकारीको लेकर विवाद तो उनके देहावसानके तुरन्त बाद ही शुरू हो गया था। अरबोंके बड़े एवं ताकतवर कबीलोंने हजरत मोहम्मद (उनका कोई बेटा नहीं था) के दामाद हजरत अलीको उत्तराधिकारी, जिसे खलीफा कहा गया, माननेसे इनकार कर दिया। यह स्थान अबू बकरको दिया गया। इसके बाद भी बारी हजरत उमर और उस्मानकी ही आयी। हजरत अलीको दूर ही रखा गया। तीसरे खलीफाके देहांतके बाद अली खलीफा तो बना दिये गये, लेकिन विरोधी पक्षके अरबोंने जल्दी ही उनकी नमाज अता करते समय हत्या कर दी। लेकिन अबतक अरबोंने कई देशोंपर कब्जा भी कर लिया था और वहीं बलपूर्वक अरबोंका यह नया मजहब भी लागू कर दिया था। लेकिन स्वयं अरब देशोंमें और अरबों द्वारा कब्जा किये गये देशोंमें प्रशासन अच्छा और न्यायपूर्ण नहीं था। लोग मुसलमानोंके इस अत्याचारी शासनसे बहुत त्रस्त थे। हजरत अलीके सुपुत्र हजरत हुसैनने इसे चुनौती दी, लेकिन मुसलमानोंने उनको पूरे परिवार समेत कर्बलाके मैदानमें धोखेसे अमानवीय तरीकेसे मार दिया। इस युद्धमें हजरत हुसैनकी सहायता करते हुए मोहियाल ब्राह्मण भी मुसलमानोंके खिलाफ लड़े थे। ब्राह्मण सेनापति राहिब दत्तके सातों बेटे इस लड़ाईमें शहीद हो गये थे। मोहियाल ब्राह्मणोंका उद्गम पेशावरके आसपास माना जाता है और ब्राह्मणोंमें मोहियाल मार्शल रेस माने जाते हैं। जम्मू-कश्मीरके पुंछमें आज भी मोहियाल ब्राह्मणोंके घर हैं। इमाम हुसैनके पक्षमें लड़नेके कारण मोहियाल ब्राह्मणोंको हुसैनी ब्राह्मण भी कहा जाता है। हजरत हुसैनकी शहादतके बाद उसके अनुयायियोंने शिया मजहबके नामसे नया पंथ चलाया। ईरानके लोगोंने तुरन्त इस नये पंथको अपना लिया। ईरान और अरबोंका झगड़ा तो इस्लाम मजहबके उदय होनेसे भी पहलेका है, लेकिन बीचके एक छोटेसे कालखंडमें उन्हें अरबोंका मजहब ही मानना पड़ा। परन्तु जल्दी ही वे शिया पंथके विस्तारक हो गये। लेकिन कालका चक्र यहीं नहीं रुका। धीरे-धीरे विश्व राजनीतिमें अरब हाशियेपर आ गये। ओटोमन साम्राज्यके ध्वस्त होनेके बाद तुर्क भी हाशियेपर पहुंच गये। ईरानकी शक्ति बढ़ने लगी। कालका एक चक्र पूरा हो गया लगता है। अब ईरान चाहता है कि अरब देश उसका नेतृत्व स्वीकार करें। ईरान न्यूक्लिअर शक्ति बननेकी ओर अग्रसर है। अरब देशोंका इसराइलसे वैर है। लेकिन वे इसराइलको चुनौती देनेकी स्थितिमें नहीं हैं। ऐसेमें यदि इसराइलको चुनौती देता है तो जाहिर है अरब देश इतना तो मान ही लेंगे कि यदि भविष्यमें इसरायल अरब देशोंको तंग करता है तो वे कमसे कम ईरानकी शरणमें तो जा ही सकते हैं। यह युद्ध भयंकर स्थितिकी ओर बढ़ रहा है। युद्ध यदि नहीं रोका गया तो इसके अंतरराष्ट्रीय स्तरपर बुरे प्रभाव पड़ेंगे। दोनोंको बातचीतकी मेजपर इकट्ठे होना होगा, तभी यह समस्या सुलझ सकती है। लेकिन यथार्थ यह है कि दोनों ही पक्ष युद्धोन्मादमें रत हैं और युद्धविरामके लिए कोई भी पक्ष तैयार नहीं है। दोनों पक्षोंको भारी नुकसान झेलना पड़ रहा है। ऐसी भी आशंका है कि इस मसलेपर तीसरा विश्व युद्ध भी छिड़ सकता है। इसलिए मध्यस्थताके कौशलमें प्रवीण शक्तियोंको आगे आकर युद्ध रुकवाना होगा।

ब्रह्माण्डकी सम्पूर्ण ऊर्जा हैं देवी

मां प्रत्येक जीवकी आदि अनादि अनुभूति है। हम सबका अस्तित्व मांके कारण ही है। मां न होती तो हम न होते। मां स्वाभाविक ही दिव्य हैं, देवी हैं, पूज्य है, वरेण्य हैं, नीराजन और आराधनके योग्य हैं।

❑ **हृदयनारायण दीक्षित**

मार्कण्डेय ऋषिने ठीक ही दुर्गा सप्तशती (अध्याय-५) में 'या देवी सर्वभूते मातृरूपेण संस्थिता बताकर नमस्तस्ये, नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमोनम:' कहकर अनेक बार नमस्कार किया है। मांका रस, रक्त और पोषण ही प्रत्येक जीवका मूलाधार है। ऋषियोंने इसीलिए मांको देवी जाना और देवीको माता कहा। मांके निकट होना आनन्ददायी है। हमारी भाषामें निकटताके लिए उप शब्दका प्रयोग हुआ है। 'उप' बड़ा प्यारा है। इसीसे 'उपनिषद' बना। उपसे उपासना भी बना है। उपनिषद्का अर्थ है-ठीकसे निकट बैठना। उत्तरवैदिक कालमें इसका प्रयोग आचार्य और शिष्यकी ज्ञान निकटता था। उपासनाका अर्थ भी निकट होना है। उपवासका भी अर्थ 'उप-वास' निकट रहना है। उपवासका अर्थ दिव्यताकी निकटता है। दिव्यताकी निकटतासे भोजन बेमतलब हो जाता है। उपासना और उपवास एक जैसे हैं। व्रतका अर्थ नियमपालन है। तैत्तिरीय उपनिषद्में 'नियमसे भोजन करनेको व्रत' कहा गया। व्रत उपवास दरअसल आन्तरिक अनुशासन है। ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण ऊर्जासे स्वयंको जोड़नेका अनुष्ठान ही देवी उपासना है। हम पृथ्वी पुत्र हैं। पृथ्वी भी मां है। वही मूल है, वही आधार है। इसपर रहना, कर्म करना, कर्मफल पाना और अंतत: इसीकी गोदमें जाना सतत् प्रवाही जीवनक्रम है। ऋग्वेदके ऋषियोंके लिए पृथ्वी माता है। माता पृथ्वी धारक है। पर्वतोंको धारण करती है, मेघोंको प्रेरित करती है। वनस्पतियां धारण करती हैं। ऋग्वेदमें रात्रि भी एक देवी हैं 'वे अविनाशी-अमर्त्या हैं, वे आकाश पुत्री हैं, पहले अंतरिक्षको और बादमें निचले-ऊंचे क्षेत्रोंको आच्छादित करती है। उनके आगमनपर हम सब गौ, अश्वादि और पशु पक्षी भी विश्राम करते हैं। प्रार्थना है कि मेरी स्तुतियां सुनो।' दुर्गा सप्तशतीमें निद्रा भी माता और देवी है। प्रकृतिकी शक्तियां स्त्रीलिंग या पुल्लिंग नहीं हो सकती। देवरूप मांकी उपासना अतिप्राचीन है। सृष्टिका विकास जलसे हुआ। यूनानी दार्शनिक थेल्स भी ऐसा ही मानते थे। ऋग्वेदमें भी यही धारणा है। अधिकांश विश्वदर्शनमें जल सृष्टिका आदि तत्व है। ऋग्वेदमें 'जल माताएं' आप: मातरम् हैं और देवियां हैं। ऋग्वेदके अपो देवी: और आपों मातर: गम्भीर अर्थवाले हैं। उन्हें बहुवचन रूपमें याद किया गया है। भारतमें सामाजिक विकासके आदिम कालमें ही जल माताओंकी उपासना जारी है। संसारके प्रत्येक जड़-चेतनको जन्म देनेवाली यही आप: माताएं हैं- विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्री: ऋग्वेदके बड़े प्रभावशाली देवता है अग्नि। इन्हें भी आप: माताओंने जन्म दिया है- तमापो अग्निं जनयन्त मातर:। ऋग्वेद अथर्ववेदमें अदिति भी देवी है। आदित्य-सूर्य उनके पुत्र हैं। अदिति माता-पिता हैं और अदिति ही पुत्र भी हैं। अदिति जैसा देव प्रतीक (या देवी) विश्वकी किसी भी संस्कृतिमें नहीं है 'जो कुछ हो चुका-भूत और जो आगे होगा वह सब अदिति हैं।' ऋग्वेदमें वाणीकी देवी वाग्देवी हैं। वे रूद्र और वसुओंके साथ चलती हैं। ऋग्वेदके वाक्सूक्तमें कहती हैं, 'मैं रूद्रगणों वसुगणोंके साथ भ्रमण करती हूं। मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि और अश्विनी कुमारोंको धारण करती हूं। मेरा स्वरूप विभिन्न रूपोंमें विद्यमान है। प्राणियोंकी श्रवण, मनन, दर्शन क्षमताका कारण मैं ही हूं। मेरा उद्गम आकाशमें अप् (सृष्टि निर्माणका आदि तत्वद्ध है। मैं समस्त लोकोंकी सर्जक हूं आदि। वे 'राष्ट्री संगमनी वसूनां-राष्ट्रवासियों और उनके सम्पूर्ण वैभवको संघटित करनेवाली शक्ति-राष्ट्री है'। सूर्योदयके पूर्वका सौन्दर्य हैं ऊषा। ऋग्वेदके एक सूक्तमें ऊषाकी स्तुतिमें कहते हैं 'ये ऊषा देवी नियम पालन करती हैं। नियमित रूपसे आती हैं और मनुष्योंकी आयुको लगातार कम करती हैं।' फिर कहते हैं, 'ऊषा स्वर्गकी कन्या जैसी प्रकाशके वस्त्र धारण करके प्रतिदिन पूरबसे वैसे ही आती हैं जैसे विदुषी नारी मर्यादा मार्गसे ही चलती है।' ऊषा देवी हैं, इसीलिए उनकी स्तुतियां हैं, 'वे सबको प्रकाश आनन्द देती हैं। अपने-परायेका भेद नहीं करतीं, छोटेसे दूर नहीं होती, बड़ेका त्याग नहीं करती।' यहां समत्व दृष्टिकी सीधी चर्चा है। ऋग्वेदमें 'सम्पूर्ण प्राणियोंमें सर्वप्रथम ऊषा ही जागती हैं।' प्रार्थना है कि 'हमारे मुख दिव्य स्तुति गान करे। बुद्धि सत्कर्मोंको प्रेरित करे।' ऊषा सतत् प्रवाह है। आती हैं, जाती हैं फिर-फिर आती हैं। जैसी आज आयी हैं, वैसे ही आगे भी आयंगी और सूर्य देवके पहले आयगी। भारतका लोकजीवन देवी उपासक है। वह सब तरफ माता ही देखता है। देवी उपासना वैदिक कालसे भी प्राचीन है। ऋग्वेदके ऋषि समाज व्यवस्थासे ही सामग्री लेते हैं, जो देखते हैं, वही गाते हैं। वे द्रष्टा ऋषि हैं। यहां पृथ्वी माता हैं ही। इडा, सरस्वती और मही भी माता हैं, ये ऋग्वेदमें तीन देवियां कही गयी हैं-इडा, सरस्वती, मही तिस्रो देवीर्मयो भुव। एक मंत्रमें 'भारतीको भारतीभि:' कहकर बुलाया गया है-आ भारती भारतीभि:। यहां भारतीभि: भरतजनोंकी इष्टदेवी हैं। फिर कहते हैं 'सजोषा इडा देवे मनुष्ये-इडा देवी मनुष्यों देवोंके साथ यज्ञ अग्निके समीप आयें और सरस्वती वाक्शक्तिके साथ पधारें।' सरस्वती पहले नदी हैं, माता हैं। बादमें वे ज्ञानकी देवी हैं, माता तब भी हैं। यज्ञमें मंत्र पाठके कारण ऋषियोंकी वाणीको भारती कहा गया।

यज्ञकी विभिन्न क्रियाओंको देवी रूप कल्पित करके उन्हें होत्रा, इडा आदि नाम दिये गये। इडा यज्ञ कर्मकी प्रतीक है, यज्ञकी अग्नि भारत है, यज्ञमें काव्य पाठ करनेवालोंकी वाणी भारती है। मनकी चंचलता कर्म साधनामें बाधक है। मनकी शासक देवीका नाम 'मनीषा' है। ऋषि उनका आह्वान करते हैं 'प्र शुकैतु देवी मनीषा'। प्रत्यक्ष देखे, सुने और अनुभवमें आये दिव्य तत्वोंके प्रति विश्वास बढ़ता है, पक्का विश्वास प्रगाढ़ भावदशामें श्रद्धा बनता है। ऋग्वेदमें श्रद्धा भी एक देवी हैं, 'श्रद्धा प्रातर्हवामहे, श्रद्धा मध्यंदिन परि, श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह न:'- हम प्रात: काल श्रद्धाका आह्वान करते हैं, मध्याह्नमें श्रद्धाका आह्वान करते हैं, सूर्यास्त कालमें श्रद्धाकी ही उपासना करते हैं। हे श्रद्धा हम सबको श्रद्धासे परिपूर्ण करें। यहां श्रद्धा जीवन और कर्मकी शक्ति हैं, श्रद्धासे ही श्रद्धाकी याचनामें गहन भावबोध है। श्रद्धाका मतलब अंधविश्वास नहीं है। श्रद्धा विशेष प्रकारकी दिव्य चित्त दशा है और प्रकृतिकी विभूतियोंमें शिखर है-श्रद्धां भगस्तय मूर्धनि। देवी उपासना प्रकृतिकी विराट शक्तिकी ही उपासना है। मूर्ति, बिम्ब और प्रतीक नाम ढेर सारे हैं-दुर्गा, महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी या सिद्धिदात्री आदि कोई नाम भी दीजिए। देवी दिव्यता हैं। मां हैं। सो पालक हैं। भारत स्वाभाविक ही नवरात्रि उत्सवोंके दौरान शक्ति उपासनामें तल्लीन है।

शक्ति और ऊर्जा

❑ **धर्मेश कुशवाहा**

शारदीय और चैत्र नवरात्रीके दिन सौरमंडलकी स्थिति एक जैसी हो जाती है, उसके बाद प्रकृति अपना स्वभाव बदलने लगती है। इन दोनों समयमें मां देवीकी उपासनाको वर्णित किया गया है। नव दिनोंकी यह समयावधि ऊर्जाको संकलित करनेका अनुपम समय होता है ऊर्जासे प्राणी शक्ति प्राप्त करता है। मां भगवतीकी पूजाकी विशेष महत्ता है। भगवतीमें ममतामयी मांकी ऊर्जा है। भगवती संस्कृत शब्द है। भगवतीमें भगका अर्थ है छह ऐश्वर्यसे परिपूर्ण होना जैसे ऐश्वर्य,धर्म, यश, श्री, ज्ञान तथा बैरागसे (वती) संपन्न। पुराणोंमें वर्णित है, मां भगवती ऊर्जाकी मुख्य स्रोत है। ऊर्जाके बिना सभीका जीवन अधूरा है भगवती अराधना करनेका तात्पर्य है ऊर्जाका संकलन करना। ऊर्जाके बिना शिवजी, विष्णुजी और ब्रह्माजी भी अधूरे है प्रकृति (भगवती) को स्त्रीलिंगकी संज्ञा दी जाती स्त्रीलिंगमें मां ही एक ऐसी शक्ति होती है जो बिना भेदभावके प्राणीके अन्दर ऊर्जाका संचार करती है। ऊर्जाका जब जहां प्रवेश होता है वहां उसको शक्तिमें परिवर्तित करता है उसका वही रूप धारण हो जाता है। इसी प्रकार मां भगवतीका आराधना करनेपर भगवतीके द्वारा ऊर्जासे संपन्न हो जानेसे अपने आन्तरिक गतिविधि सुचारू रूपसे चलने लगते है इसलिए ऊर्जाके संकलनके लिए शक्ति उपासना करना आवश्यक है। उपासनाका अर्थ है शक्तिसे सामंजस्य स्थापित कर अपने अन्दर समाहित करना और अपने उत्थानके बारेमें सोचना। प्राणी उत्थानके बारेमें तभी सोचता है जब शक्तिके प्रकारको अपने अन्दर पूरी तरीकेसे समाहित कर लेता है जो तीन प्रकारके होते हैं पहला क्रिया जिससे प्राणी कर्मके लिए विचार करता है, दूसरा ज्ञान जब प्राणी क्रियाके बारेमें सोचता है, तब उस विषयके बारेमें ज्ञानका होना अति आवश्यक होता है, तीसरा शक्ति इच्छा है प्राणी जब दोनोंसे परिपूर्ण हो तो इच्छाशक्ति होना आवश्यक है इन तीनोंको प्राणी जब मां भगवतीसे प्राप्त कर लेते हैं तो उसके जीवनके हर रास्ते आसान हो जाते हैं। पुराणमें उल्लिखित है कि जब शक्ति, मांके रूपमें प्रकट हुई तब वह ममतामयी मांके रूपमें थी जिसको देखकर तीनों देवोंने अभिनन्दन किया ब्रह्मा और विष्णुजी सकुचाते हुए नतमस्तक हो गये लेकिन शिवजीने उनकी स्तुतिकी जिसपर मां भगवती प्रसन्न होकर बरदान मांगनेको कहा, जिसमें शंकरजीने शक्ति स्वरूपा मांसे तीसरा नेत्र जो उनके पास था मांग लिया तबसे शिवजीके पास तीसरा नेत्र हो गया और कौतुहल बस सोचा मांको इससे देखते है और उनको देखनेसे जो मांका स्वरूप था वह भस्म हो गया और उस भस्मकी शक्तिसे तीन पिंड बनाये और पृथ्वीके संचालनके लिए तीनों देवोंको तीन शक्ति प्राप्त हुईं, बाकी भस्मके बचे अंशसे स्त्रीकी उत्पत्ति हुई, स्त्रीको पुराणोंमें महान बतलाया गया है। श्रीमद्देवीभागवत महापुराणमें भी शक्तिकी उपासनासे लाभ वर्णित है। इसीलिए नौ दिनोंमें उपासना शक्ति संचयके लिए उपयुक्त प्रकृतिक वातावरण होता है। उपासना नव दिनका इसलिए किया जाता है, क्योंकि अंकमें नौ सम्पूर्ण होती है इसलिए नौ दिनोंकी उपासना होती है।

तिरुपति लड्डूपर सुप्रीम कोर्टकी टिप्पणी

❑ **रोहित माहेश्वरी**

आंध्र प्रदेशके तिरुपति मंदिरमें प्रसादके लड्डूमें कथित तौरपर जानवरोंकी चर्बी होनेके मामलेमें ३० सितंबरको सुप्रीम कोर्टने सुनवाई की। सुप्रीम कोर्टने सुनवाईके दौरान आंध्र प्रदेशके सीएम चंद्रबाबू नायडूकी उस टिप्पणीपर नाराजगी जाहिर की, जिसके बादसे लड्डू विवाद शुरू हुआ। सुप्रीम कोर्टने कहा, राजनीति और धर्मको मिलानेकी अनुमति नहीं दी जा सकती। कोर्टने ये भी कहा कि यदि जांच चल रही थी तो मीडियामें जानेकी जरूरत क्या थी। सुप्रीम कोर्टने चंद्रबाबू नायडूके लिए कहा, आप संवैधानिक पदपर हैं। हम उम्मीद करते हैं कि भगवानको राजनीतिसे दूर रखा जाय। यदि आपने पहले ही जांचके आदेश दे दिये थे तो मीडियामें जानेकी क्या जरूरत थी। चंद्रबाबू नायडूने १९ सितंबरको दावा किया था, पिछली सरकारके दौरान तिरुमला लड्डूको बनानेमें शुद्ध घीकी बजाय जानवरोंकी चर्बीवाला घी इस्तेमाल किया जाता था।असलमें तिरुपति लड्डू विवाद प्रसंगमें सुप्रीम कोर्टकी वह टिप्पणी देशके सभी राजनेताओंके लिए एक नजीर बननी चाहिए, जिसमें कोर्टने कहा कि आस्थाको राजनीतिसे मुक्त रखना चाहिए। आंध्र प्रदेशके सेशाचेलम पर्वतपर स्थित तिरुमला तिरुपति देवस्थान दुनियाके सबसे अमीर तीर्थस्थलोंमेंसे एक है। यहां हर रोज हजारोंकी संख्यामें लोग दर्शन करने जाते हैं। तिरुमाला मंदिरको हर साल लगभग एक टन सोना दानमें मिलता है। मुख्य मंदिर परिसर मजबूत दीवारोंसे घिरा है और मंदिरके अन्दर किसी तरहकी फोटोग्राफीकी इजाजत नहीं है। अब जो लड्डू चर्चामें हैं, उसे मंदिरके गुप्त रसोई घरमें तैयार किया जाता है। ये रसोईघर पोटू कहलाता है। माना जाता है कि यहां हर रोज हजारों लड्डू तैयार किये जाते हैं। ये लड्डू दर्शन करनेवाले लोगोंको दिया जाता है। ऐसेमें इस लड्डूसे लाखों लोगोंकी आस्था जुड़ी हुई है। हालके वर्षोंमें विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा आस्थाको वोट जुटानेके सरल रास्तेके रूपमें इस्तेमाल करनेसे तमाम तरहकी विसंगतियां पैदा हुई हैं। दरअसल जनाधार बढ़ानेकी क्षमताओंसे चूकते राजनेता अपनी राजनीतिक जमीन तैयार करनेके लिए धार्मिक विश्वासोंके दोहनको सफलताका शॉर्टकट मानकर चल रहे हैं। तिरुपतिके प्रसादसे जुड़े इस विवादको आधार बनाते हुए जो पांच याचिकाएं दायर की गयी हैं, उनपर सुप्रीम कोर्टकी सुनवाई हालांकि जारी है। तिरुपति मंदिर देशका एक ऐसा प्रमुख श्रद्धा केन्द्र है, जहांसे करोड़ों श्रद्धालुओंकी आस्था जुड़ी है। मुख्य मंत्रीका बयान आनेके बाद इसपर स्वाभाविक ही प्रतिक्रियाएं आनी शुरू हो गयीं। जिस तरहसे आंध्र प्रदेशके सत्तारूढ़ दलोंकी ओरसे मंदिरके शुद्धीकरणकी कवायद की जाने लगी, उसे लोगोंकी धार्मिक भावनाओंके साथ खिलवाड़ ही कहा जा सकता है। हालांकि अपने देशमें इस तरहका खिलवाड़ कोई नयी बात नहीं है, लेकिन सुप्रीम कोर्टके सख्त रुखने इसे बंद करनेकी जरूरतको फिरसे रेखांकित जरूर किया है। एक याचिकामें यह मांग भी की गयी है कि हिन्दू मंदिरोंके प्रबंधनकी जिम्मेदारी सरकारके हाथोंमें नहीं रहने देनी चाहिए। वैसे यह कोई नयी मांग नहीं है। मंदिरोंके प्रबंधनका मुद्दा चूंकि समवर्ती सूचीमें आता है, इसलिए राज्योंमें इस मामलेमें एकरूपता नहीं है। यदि तिरुपति मंदिरके प्रसादसे जुड़े ताजा विवादसे इस मांगको मजबूती मिलनेकी कोई उम्मीद रही हो तो वह इस विवादकी असलियत सामने आनेके बाद टूट चुकी है। वहीं दूसरी ओर अभी स्पष्ट नहीं है कि राजनीतिक लाभके लिए जिस चर्बीवाले घीकी कथित जांच-परिणामोंका दावा किया जा रहा है, उसके बारेमें ठीक-ठीक कहना मुश्किल है कि वास्तवमें इस घीका ही प्रयोग लड्डू बनानेमें किया गया था। उल्लेखनीय है कि मुख्य मंत्री चंद्रबाबू नायडूने एक सार्वजनिक सभामें आरोप लगाया था कि पिछली सरकारके दौरान तिरुपति बालाजीके प्रसादमें पशु चर्बीका इस्तेमाल किया गया। जिसके बाद इसपर राजनीतिक क्षेत्रों एवं सार्वजनिक जीवनमें खासा विवाद पैदा हो गया।बताया जाता है कि इस विवादके जरिये घी आपूर्ति करनेवाली कम्पनी तथा ठेकेदार एवं मंदिर प्रबंधनमें पूर्व मुख्य मंत्रीके परिजनोंकी भागीदारीको विवादमें लानेकी कोशिश की गयी। जिसके जरिये आंध्र प्रदेशकी राजनीतिमें पूर्व मुख्य मंत्री जगनमोहन रेड्डीका कद छोटा करनेकी भी कोशिश हुई। रेड्डीने खुलेआम नायडूपर राजनीतिक लाभके लिए इस विवादको तूल देनेका आरोप लगाया। यहांतक कि मंदिरमें प्रवेशमें व्यवधान पैदा करनेके मकसदसे रेड्डीकी धार्मिक आस्थापर भी सवाल खड़े किये गये। उनसे कहा गया कि वे निर्धारित फॉर्ममें अपने धर्मका खुलासा करें। कहने को तो यह विवाद दो राजनीतिक दलोंकी लड़ाईका है परन्तु इस विवादने देश-विदेशमें करोड़ों भक्तोंकी आस्थापर गहरी चोट पहुंचायी है।निस्संदेहए बालाजी तिरुपति मंदिरपर करोड़ों लोगोंकी गहरी आस्था है, इस विवादको राजनीतिक लाभका माध्यम बनानेसे श्रद्धालुओंको खासा कष्ट हुआ। यह विडंबना ही है कि दुनियाके सबसे बड़े लोकतंत्रमें लोगोंकी धार्मिक आस्थाओंको राजनीतिक लाभके लिए इस्तेमाल करनेका सिलसिला बदस्तूर जारी है, जिसमें कमोबेश सभी राजनीतिक दलोंकी भूमिका रही है। यदि लोगोंकी दृष्टि तार्किक हो तो राजनेता उनकी भावनाओंसे खिलवाड़ नहीं कर पायंगे। सही मायनोंमें राजनेताओंकी धार्मिक मामलोंमें इस तरहकी दखलंदाजी हमारे धर्मनिरपेक्ष मूल्योंके भी खिलाफ है।तिरुपति मंदिरके प्रबंधनसे जुड़ा मसला चूंकि सुप्रीम कोर्टके सामने है, इसलिए देखना होगा कि उसपर कोर्टका क्या रुख रहता है लेकिन जहांतक आम तौरपर मंदिरोंमें निजी प्रबंधनका सवाल है तो उसके साथ दो बड़ी दिक्कतें जुड़ी हैं। एक तो यह कि मंदिरकी संपदा निजी हाथोंमें चली जाती है, जिसपर नागरिकोंका कोई अप्रत्यक्ष नियंत्रण भी नहीं रह जाता। दूसरी दिक्कत श्रद्धालुओंके साथ भेदभावसे जुड़ी है। आज भी कई मंदिरोंमें जाति और लिंगके आधारपर प्रवेशसे रोकनेके उदाहरण मिलते रहते हैं, जिन्हें सही नहीं कहा जा सकता।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

लंबे कार्य-घंटों में छिपी अमानवीयता

श्रम मंत्री ने कहा है कि अन्ना की मौत के मामले की जांच शुरू हो चुकी है और सात से 10 दिन में रिपोर्ट आ जाएगी। लेकिन रिपोर्ट क्या आएगी? क्या लंबे कार्य-घंटों के चलन में कोई गोपनीयता है? अर्न्स्ट एंड यंग (ईएंडवाई) की कर्मचारी अन्ना सिबैस्टियन पेरायिल की मौत के सोशल मीडिया पर बड़ा मुद्दा बनने के बाद लंबे कार्य-घंटों में छिपी अमानवीयता को लेकर भारतीय राजनेताओं की संवेदना में क्षणिक हलचल दिखी है। अन्ना के गृह राज्य यानी केरल के नेता ज्यादा आहत नजर आए हैं। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कार्य-घंटों को सीमित करने के लिए एक निजी मेंबर बिल पेश करने की घोषणा की है। थरूर ने कहा है कि किसी को भी एक दिन में आठ घंटों के ज्यादा काम नहीं करना चाहिए। मामला गरम होते देख सत्ताधारी नेता भी विवाद में कूदे। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन ने कॉलेजों एवं संस्थानों को सलाह दी कि वे अपने यहां छात्रों को काम के तनाव को संभालने के लिए प्रशिक्षण का इंतजाम करें। श्रम राज्य मंत्री शोभा करांडजले ने मामले की जांच की घोषणा की। अब श्रम मंत्री मनसुख मंडाविया ने कहा है कि जांच शुरू हो चुकी है और सात से 10 दिन में रिपोर्ट आ जाएगी। लेकिन रिपोर्ट क्या आएगी? क्या लंबे कार्य-घंटों के चलन में कोई गोपनीयता है? यह आज की कार्य संस्कृति का हिस्सा है, जिसे बढ़ावा देने में खुद सरकारों का योगदान है। इन्फोसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति खुलेआम कर्मचारियों से हफ्ते में 70 घंटे काम लेने की वकालत कर चुके हैं। अन्ना ने अपनी मां को लिखे पत्र में कहा था- काम का बोझ, नया माहौल, और लंबे कार्य-घंटों की कीमत उसे शारीरिक, भावनात्मक, और मानसिक रूप से चुकानी पड़ रही है। लेकिन क्या यह सिर्फ किसी एक कर्मचारी की व्यथा कथा है? ईएंडवाई बहुराष्ट्रीय कंपनी है। उसमें नौकरी हाई-प्रोफाइल मानी जाती है। उसके कर्मचारी उच्च मध्य वर्ग का हिस्सा होते हैं। संभवतः यह भी एक कारण है, जिसकी वजह से अन्ना की मौत मुद्दा बनी और राजनेताओं की संवेदना को भी छू सकी। वरना, इसी समय तमिलनाडु स्थित सैमसंग कंपनी में मजदूरों की हड़ताल चल रही है। कार्य-स्थियों में सुधार उनकी भी एक प्रमुख मांग है। लेकिन यह खबर कितने लोगों के पास है? तो कुल मिलाकर मामला सोशल मीडिया तूफान का है, जिसके थमते ही नेताओं की भावनाएं भी यथास्थिति में चली जाएंगी।

वीरांगना रानी दुर्गावती सुशासित व समृद्ध साम्राज्य की प्रेरणास्रोत

वीरांगना रानी दुर्गावती महिला शासकों के भारतीय स्वर्णिम इतिहास का एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। रानी दुर्गावती ने 16वीं शताब्दी में गोंडवाना राज्य की शासक के रूप में अपने साहस और नेतृत्व के लिए ख्याति प्राप्त की। उनकी जन-कल्याणकारी व्यवस्था को सुशासन का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। रानी ने एक संतुलित, न्यायपूर्ण और विकासात्मक प्रणाली के रूप में शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए गोंडवाना को एक मजबूत और समृद्ध साम्राज्य बनाया। वीरांगना रानी दुर्गावती के शासन में गोंड संस्कृति ने देश की सांस्कृतिक विरासत को और समृद्ध किया है। उन्होंने अपनी पारंपरिक प्रथाओं से पर्यावरण के संवर्धन और संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाई है। आज़ादी के प्रति असीम प्रेम और किसी की अधीनता स्वीकार न करने की जिद और जुनून गोंड समाज की पहचान रही है। रानी दुर्गावती गोंड समुदाय के पराक्रम, भारतीय वीरता और शूरता की साक्षात् प्रतिमूर्ति थीं। मुगल साम्राज्य की अधीनता स्वीकार न करने वाली रियासतों के लिए मुगल काल में सुरक्षित रहना बहुत कठिन माना जाता था, क्योंकि विशाल मुगल सेना के सामने युद्ध भूमि में सामना करना बहुत चुनौतीपूर्ण था। ऐसे समय में गोंडवाना साम्राज्य की संरक्षिका के रूप रानी दुर्गावती के कार्य एवं अपूर्व वीरता के साथ राज्य के विकास में किया गया अभूतपूर्व योगदान सुनहरे अक्षरों में दर्ज है। रानी दुर्गावती के कार्यों और वीरता का गुण-गान आज भी जनजातीय क्षेत्रों में विभिन्न बोलियों और कई भाषाओं में किया जाता है, जो भावी पीढ़ियों के लिये प्रेरणास्पद है। रानी दुर्गावती का संघर्ष मुगलों के खिलाफ था और वे जनजातीय संस्कृति और विरासत की सुरक्षा के प्रति कृत-संकल्पित थीं। उन्होंने मुगलों के खिलाफ एक सशक्त प्रतिरोध का आधार तैयार किया, जिसने देश के दूसरे क्षेत्रों में रहने वाले राजा-महाराजा और अधीनता स्वीकार न करने वाले अनेक समूहों को मुगल सत्ता के खिलाफ लगातार लडऩे के लिए प्रेरित किया। वर्तमान जबलपुर उनके साम्राज्य का केंद्र था। रानी ने करीब 16 वर्ष तक शासन किया। उन्होंने अपने कार्य-काल में अनेक मंदिर, मठ, कुएं, बावडिय़ां तथा धर्मशालाएं बनवाईं। लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए रानी की कीर्ति दूर-दूर तक फ़ैल गई। रानी दुर्गावती के गढ़ मंडला पर मुगल सूबेदार बाजबहादुर की बुरी नजर थी, लेकिन युद्ध में रानी दुर्गावती ने उसकी पूरी सेना का सफाया कर दिया और फिर वह कभी पलटकर नहीं आया। मुगल सेना के कई हमलों को नाकाम करने वाली रानी दुर्गावती का खौफ दिल्ली की मुगल सत्ता को भी प्रभावित करने लगा।

सेवा पखवाड़ा में सार्थक हो रहा प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान

भारत में 1 लाख 71 हजार से अधिक निक्षय मित्र 20 लाख से अधिक टीबी रोगियों के मददगार बने

आरती कुमारी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चल रहे सेवा पखवाड़ा के तहत स्वच्छता, सफाई, रक्तदान एवं निशुल्क स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से देश भर में सेवा कार्य में लोग तल्लीन है. सेवा पखवाड़ा में नगर, गांव, गली, मोहल्लों, मजरों, चौपालों समेत सार्वजनिक व धार्मिक स्थानों पर सेवा कार्य के साथ साथ "प्रधानमंत्री टी. बी. मुक्त भारत अभियान" के अंतर्गत निक्षय मित्र योजना को भी अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है. इन दिनों काफी संख्या में लोग निक्षय मित्र बनकर टी.बी. मरीजों की भौतिक रूप से मदद कर रहें हैं. हम यह जानते हैं कि दुनिया में सबसे ज़्यादा टीबी यानी तपेदिक के मरीज़ भारत में हैं. दुनिया भर में प्रति वर्ष एक करोड़ से ज्यादा लोग टीबी की चपेट में आते है इनमें से एक चौथाई से ज्यादा भारतीय है. अमूमन हर साल भारत में 26 लाख लोग इस बीमारी से पीड़ित होते हैं तथा लगभग 4 लाख लोग इस बीमारी से मरते हैं. टीबी के मरीजों के समक्ष उपचार के दौरान होने वाले खर्च के अलावा पौष्टिक आहार की भी आवश्यकता होती है. सबसे ज्यादा समस्या आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तिओं को होती है क्योंकि काम करने में सक्षम ना होने के कारण उन्हें दो जून की रोटी भी नसीब नहीं होती. ऐसे में उनके समक्ष उपचार और जीवन यापन एक चुनौती बन जाती है. टीबी को लेकर विश्व के तमाम देश चिंतित है, इसीलिये सन 2030 तक विश्व को टीबी मुक्त करने का लक्ष्य रखा गया है. इससे एक कदम आगे बढ़कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक लक्ष्य से 5 साल पहले यानी 2025 तक भारत को टीबी मुक्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है. इस कठिन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सरकार के साथ साथ समाज की भागीदारी आवश्यक है. प्रधानमंत्री ने जन जन को इस अभियान से जोड़ने के लिए सन 2022 में "निक्षय मित्र योजना" की शुरुवात की है. 'निक्षय मित्र योजना' के तहत कोई भी व्यक्ति, समूह या संस्थायें मरीजों को पोषण, उपचार व आजीविका में मददगार बनकर प्रधानमंत्री टी.बी. मुक्त भारत अभियान में अपना योगदान दे सकते हैं. यह पूर्णतः स्वेच्छिक योजना

है, जिसके तहत व्यक्ति या संस्था द्वारा एक मरीज के लिए प्रतिमाह 500 रुपये का योगदान देना होता है. इस राशि से विभाग द्वारा मरीजों के उपचार के दौरान अस्पताल अथवा घर पहुंचा कर पोषण आहार की टोकरियाँ प्रदान की जाती है. कोई भी व्यक्ति अथवा संस्था कम से कम 6 माह तथा अधिकतम 3 साल के लिए एक अथवा एक से अधिक मरीजों को सहयोग प्रदान कर सकते हैं. इसके लिए उन्हें स्वास्थ विभाग से पंजीयन कराना होता है, ऑनलाइन पंजीयन की भी व्यवस्था है. योजना प्रारंभ होने के बाद विगत दो वर्षो के भीतर भारत में अब तक 1 लाख 71 हजार से अधिक निक्षय मित्रों का पंजीयन हो चुका है. इनके योगदान से 20 लाख से अधिक टीबी रोगियों को 20 लाख से अधिक पोषण आहार की टोकरियाँ प्रदान की जा रही है. जहाँ तक छत्तीसगढ़ का सवाल है यहाँ लगभग 9000 लोगों ने निक्षय मित्र के रूप में पंजीयन करा लिया है इनमें मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय एवं छग के स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल भी शामिल हैं. छत्तीसगढ़ में एक अनुमान के अनुसार वर्तमान में लगभग 23000 टीबी रोगी हैं उनमें से 13646 रोगियों को पोषण आहार का पैकेट प्रति माह प्रदान किया जा रहा है. इसके अलावा राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन योजना के तहत सभी रोगियों को टीबी रोधी दवाओं के अलावा निःशुल्क उपचार की सुविधा भी प्रदान की जा रही है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश तथा स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री जयप्रकाश नड्डा के मार्गदर्शन में यह योजना अब व्यापक जन आंदोलन का रूप ले चुकी है. 'निक्षय मित्र योजना' का प्रतिफल यह हुआ कि जन स्वास्थ्य एवं जन सरोकार से जुड़े इस अभियान में लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहें हैं. आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति, कारोबारी, स्वयंसेवी संस्थाएं एवं अर्द्ध सरकारी संस्थाएं 'निक्षय मित्र' बनने के लिए आगे आ रहें है. टी.बी. उन्मूलन की दिशा में जन भागीदारी बढ़ने से इस योजना को अच्छा प्रतिसाद मिल रहा हैं. इस योजना से केवल रोगियों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं होती बल्कि निक्षय मित्र और इलाज करा रहे व्यक्ति के बीच एक आत्मीय संबंध भी स्थापित होता है. समाज में परस्पर सहयोग और सहानुभूति की भावना को विकसित कर टीबी के कलंक को जड़ से ख़त्म करने में यह योजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं. कुल मिलाकर सेवा पखवाड़ा में "प्रधानमंत्री टी. बी. मुक्त भारत अभियान" सार्थक सिद्ध हो रहा है।

नये सुनहरे युग में प्रवेश करता जम्मू-कश्मीर

आर.के. सिन्हा

बेखौफ होकर जम्मू और कश्मीर में जिस तरह से मतदाताओं ने राज्य विधानसभा के तीन चरणों में हुए चुनावों में अपने मताधिकार का प्रयोग किया उससे दूर तक संदेश चला गया है कि अब वहां हालात लगभग सामान्य हो चुके हैं। पूरे चुनाव प्रचार के दौरान किसी तरह की हिंसा भी नहीं हुई। चुनावों में राजनीतिक दलों ने भी निर्भीकतापूर्वक खुलकर प्रचार भी किया, रैलियां भी कीं और जमकर अपने - अपने मतों को खुलकर जनता के सामने रखा भी । यह सब पिछले कई दशकों से ठप्प पड़ा हुआ था । बेशक, निर्वाचन आयोग राज्य विधानसभा का चुनाव सफलतापूर्वक आयोजित करने का श्रेय ले सकता है। याद रहे कि जम्मू और कश्मीर में अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद यह पहला विधानसभा चुनाव था। यह किसी को बताने की जरूरत नहीं है कि 1980 के दशक में जम्मू और कश्मीर में उग्रवाद के बढ़ने का एक कारण 1987 का विधानसभा चुनाव था, जो कि पूरी तरह से फर्जी था और जिसने चुनावी लोकतंत्र के प्रति भारी निराशा पैदा की थी और उग्रवाद को बढ़ावा देने में भरपूर मदद की थी। देश को अब उम्मीद जगी है कि राज्य विधानसभा के आगामी 8 अक्टूबर को मतगणना भी इसी भावना से होगी और उसके बाद राज्य में नई सरकार का गठन बिना किसी पक्षपात या शिकायत के होगा। अब लगता तो यही है कि जम्मू-कश्मीर अपना अतीत भूलकर नया इतिहास रचने के लिए मन बना चुका है। गांधी जयंती के मौके पर राजभवन में आयोजित एक समारोह को संबोधित करते हुए राज्य के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा, "बापू हमेशा जम्मू-कश्मीर में शांति और प्रगति देखना चाहते थे। उन्होंने नयी पीढ़ी से बापू के आदर्शों से प्रेरणा लेने का आग्रह किया।" दरअसल राज्य के नौजवान भी समझ चुके हैं कि हिंसा और अशांति से उन्हें ही नुकसान होगा। इसलिए उनके हाथों में अब बंदूक और पत्थर नहीं हैं, बल्कि उनकी आंखों में शांति और आकांक्षाओं के सपने दिखाई देते हैं। आप कह सकते हैं कि जम्मू-कश्मीर में लोकतंत्र का महापर्व संपन्न हुआ है। सबसे पहले बीती मई में लोकसभा चुनाव हुए और फिर विधानसभा चुनाव के लिए मतदान शांतिपूर्ण, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष तरीके से संपन्न हुआ। यह भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया भर में चर्चा का केंद्र बिंदु बन गया है। केन्द्र शासित प्रदेश के 1.40 करोड़ नागरिकों ने संवैधानिक मूल्यों में अपनी आस्था दोहराई है और अपने मतदान के माध्यम से जम्मू-कश्मीर और देश के विकास में योगदान देने का संकल्प लिया है। यह प्रमाण है कि पिछले चार-पांच वर्षों में भयमुक्त जम्मू-कश्मीर बनाने में बड़ी सफलता मिली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले पांच वर्षों में किए गए कार्य, चाहे वह जमीनी स्तर पर लोकतंत्र का सशक्तीकरण हो या शांतिपूर्ण चुनाव कराना हो या विकास कार्य हो, इस बात का प्रमाण हैं कि जम्मू-कश्मीर अब विकास और खुशहाल के रास्ते पर चल पड़ा है।

मोदी का बार-बार महाराष्ट्र दौरा, क्या विधान सभा चुनावों की तैयारी है ?

अशोक भाटिया , मुंबई

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का औपचारिक ऐलान अभी नहीं हुआ है लेकिन चुनावी हलचल तेज हो गई है। प्रधानमंत्री मोदी महाराष्ट्र का बार – बार दौरा करके सियासी माहौल बनाना शुरू कर चुके हैं। महाराष्ट्र के बदले हुए सियासी माहौल में प्रधानमंत्री मोदी का हाल ही में यह तीसरा दौरा है। प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज शनिवार को महाराष्ट्र का दौरा कर रहे है । इस दौरान वह वाशिम, ठाणे और मुंबई में विकास की विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। यह जानकारी प्रधानमंत्री कार्यालय ने शुक्रवार को एक विज्ञप्ति के माध्यम से दी थी । इसके अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी वाशिम में लगभग 23,300 करोड़ रुपये की कृषि और पशुपालन क्षेत्र से संबंधित विभिन्न पहलों का शुभारंभ करेंगे। प्रधानमंत्री वहां बंजारा समुदाय की समृद्ध विरासत की झांकी प्रस्तुत करने के लिए प्रधानमंत्री बंजारा विरासत संग्रहालय का उद्घाटन करेंगे। बताया जा रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी कुल 56,000 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट्स लॉन्च करने वाले हैं। महाराष्ट्र के इस दौरे में प्रधानमंत्री ठाणे में 32,800 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास कर रहे है । प्रधानमंत्री कार्यालय ने कहा कि इन परियोजनाओं का मुख्य फोकस क्षेत्र में शहरी गतिशीलता को बढ़ावा देना शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी मुंबई मेट्रो लाइन 3 चरण-1 के आरे जेवीएलआर से बीकेसी को जोड़ने वाले खंड का भी उद्घाटन करेंगे। वह शाम करीब 6 बजे बीकेसी मेट्रो स्टेशन से बीकेसी से आरे जेवीएलआर तक चलने वाली मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। वह बीकेसी और सांताक्रूज स्टेशनों के बीच मेट्रो में यात्रा भी करेंगे। बता दें कि मुंबई की यह अंडरग्राउंड मेट्रो एक्वा लाइन-3 देश की पहली संपूर्ण भूमिगत मेट्रो है। मुंबई मेट्रो-3 प्रोजेक्ट का पहला चरण 12 किलोमीटर से अधिक लंबा है जो 10 स्टेशनों को कवर करेगा। इससे यात्रा में सुविधा होगी और मुंबई के ट्रैफिक को कम करने में मदद मिलेगी।प्रधानमंत्री मोदी ठाणे इंटीग्रल रिंग मेट्रो रेल परियोजना और एलिवेटेड ईस्टर्न फ्रीवे एक्सटेंशन की आधारशिला रखेंगे। प्रधानमंत्री नवी मुंबई हवाईअड्डा प्रभाव अधिसूचित क्षेत्र (NA INA) प्रोजेक्ट की आधारशिला भी रख रहे है । इसके पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दक्षिणी महाराष्ट्र के सोलापुर में करीब 2000 करोड़ रुपए की आठ अमृत (कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन) परियोजनाओं की आधारशिला रख चुके है ।इसके अलावा मोदी प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बनाए गए 90000 से अधिक घरों को भी हितग्राहियों को समर्पित किया और साथ ही सोलापुर में रायनगर हाउसिंग सोसाइटी के 15000 घरों को भी लाभार्थियों को सौंपा । इन लाभार्थियों में हजारों हथकरघा श्रमिक, विक्रेता, पावरलूम श्रमिक, कूड़ा बीनने वाले, बीड़ी श्रमिक और चालक शामिल हैं।महाराष्ट्र के नासिक में देश के सबसे लंबे पुल अटल सेतु का अनावरण किया था और लगभग 15,000 करोड़ रुपए की अन्य परियोजनाओं की सौगात दी थी। अब एक बार फिर से महाराष्ट्र के दौरे पर हैं और हजारों करोड़ के विकास योजनाओं को राज्य को समर्पित कर रहे है । प्रधानमंत्री की राज्य की लगातार यात्राएं उनकी लोकप्रियता और उनकी सरकार के विकास संदेश का लाभ उठाकर अपनी स्थिति मजबूत करने व महाराष्ट्र में होने वाले विधानसभा चुनाव में अधिकतम सीटें जीतने की भाजपा की कोशिशों को दर्शाती है। विधानसभा चुनाव से पहले मोदी के ये दौरे कई लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहे है, पिछले 15 महीनों में महाराष्ट्र में प्रधानमंत्री मोदी ने कई बार महाराष्ट्र का दौरा किया है। प्रोजेक्ट छोटा हो या बड़ा, अगर प्रधानमंत्री उद्घाटन करें तो उसका असर बड़ा होता है और गारंटी वाला होता है ।भाजपा इसी सोच के साथ आगे बढ़ रही है। शिंदे सरकार बनने के बाद प्रधानमंत्री मोदी जून 2022 में नागपुर गए थे। उसके बाद के 13 महीनों में प्रधानमंत्री मोदी दिसंबर 2022 में प्रधानमंत्री मोदी ने नागपुर समृद्धि महामार्ग का उद्घाटन किया। वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई। नागपुर मेट्रो के फेज-1 को देश को समर्पित किया और फेज-2 की नींव रखी।जनवरी 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई में कई प्रोजेक्ट्स की नींव रखी और कुछ का उद्घाटन किया। मुंबई मेट्रो से सफर भी किया। फरवरी 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई को शिरडी और सोलापुर से जोडऩे वाली दो वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई थी । सांताक्रूज-चेंबूर लिंक रोड और कुरार अंडरपास का भी उद्घाटन किया।अगस्त 2023 में प्रधानमंत्री ने पुणे के एक कार्यक्रम में शिरकत की। तब उनके साथ NCP चीफ शरद पवार भी स्टेज पर मौजूद थे। प्रधानमंत्री ने मेट्रो रेल को हरी झंडी दिखाई और पिंपरी-चिंचवाड़ में एक एनर्जी प्लांट का शिलान्यास किया। 14 अक्टूबर 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई में इंटरनेशनल ओलंपिक कमेटी के 141वें सत्र में हिस्सा लिया।26 अक्टूबर 2023 में प्रधानमंत्री ने अहमदनगर का दौरा किया। तीन दशक से अटके निलवंडे डैम को जनता को समर्पित किया। उसी दिन प्रधानमंत्री शिरडी मंदिर गए और श्रद्धालुओं के लिए बने शानदार एसी वेटिंग रूम का उद्घाटन किया।12 जनवरी 2024 को प्रधानमंत्री मोदी ने करोड़ो रुपयों से नवी मुंबई में 'अटल सेतु का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री मोदी के बार-बार महाराष्ट्र जाने पर कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों ने कई बार निशाना साधा है । महाराष्ट्र कांग्रेस के प्रमुख नाना पटोले का कहना था कि अगर प्रधानमंत्री को हर महीने राज्य में आना पड़ रहा है तो यह दिखाता है कि महाराष्ट्र में भाजपा कितनी कमजोर हो गई है। हालांकि, भाजपा को प्रधानमंत्री मोदी के जादू पर पूरा भरोसा है। राज्य भाजपा के प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा कि हम हमारे प्रधानमंत्री विकास के एजेंडा को आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसा नेता मिला है जो जनता और उनके उत्थान को लेकर चिंतित है। प्रधानमंत्री और भाजपा जो भी वादे करते हैं, उन्हें रिकॉर्ड टाइम में पूरा किया जा रहा है। पार्टी के रूप में हम अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन तो करेंगे। इसमें क्या गलत है? प्रधानमंत्री मोदी ने जब दसिंबर 2022 में नागपुर का दौरा किया था, जहां उन्होंने समृद्धि महामार्ग को समर्पित किया था। इस योजना का लाभ विदर्भ, मराठवाड़ा और उत्तरी महाराष्ट्र में मिलने की उम्मीद है। उद्धव ठाकरे के सत्ता से बेदखल होने और शिंदे के अगुवाई में भाजपा गठबंधन की सरकार बनने के बाद प्रधानमंत्री मोदी का यह पहला महाराष्ट्र दौरा था। इसके बाद से प्रधानमंत्री मोदी सात बार महाराष्ट्र का दौरा कर चुके हैं और शुक्रवार को सोलापुर का 8वां दौरा है। सोलापुर का इलाका कांग्रेस के दिग्गज नेता सुशील कुमार शिंदे का गढ़ माना जाता है जिन्हें भाजपा अपने साथ मिलाने की कवायद में है। इस बात को सुशील कुमार शिंदे ने खुद कहा है और अब प्रधानमंत्री मोदी के सोलापुर से विकास की सौगात से नवाज कर विधानसभा चुनाव से पहले सियासी समीकरण साधने का दांव चला है। फरवरी 2023 में मुंबई को शिरडी और सोलापुर के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों से जोडऩे वाली दो वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने सांताक्रूझ-चेंबूर लिंक रोड और कुरार अंडरपास का उद्घाटन किया था, जिसका उद्देश्य शहर में यातायात को कम करना था। सात महीने बाद अगस्त 2023 में, एक कार्यक्रम के लिए पुणे की यात्रा के दौरान पीए मोदी ने एनसीपी प्रमुख शरद पवार के साथ मंच साझा किया। मोदी ने एक मेट्रो ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाई और पिंपरी-चिंचवड़ नगर निगम के लिए एक ऊर्जा संयंत्र की नींव रखी थी। सितंबर में मोदी ने अहमदनगर जिले का दौरा किया और निलवंडे बांध के बाएं किनारे के नहर नेटवर्क को लोगों को समर्पित किया था, जो 5,177 करोड़ रुपए की सिंचाई परियोजना थी और ये तीन दशकों से लंबित थी। उसी दिन, प्रधानमंत्री ने शिरडी मंदिर का दौरा किया और तीर्थयात्रियों के लिए अत्याधुनिक वातानुकूलित प्रतीक्षा कक्ष सुविधा का उद्घाटन किया था। बताया जाता है कि हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र में बीजेपी तगड़ा झटका खा चुकी है. इसको देखते हुए बीजेपी इस बार विधानसभा चुनावों में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखना चाहती है. 403 सीटों वाले उत्तरप्रदेश विधानसभा के बाद महाराष्ट्र 288 सीटों वाली विधान सभा है . महाराष्ट्र में 2024 के लोकसभा चुनाव में , जो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और शिवसेना के विभाजन के बाद पहला बड़ा चुनाव था, महा विकास अघाड़ी ने 48 में से 30 सीटें जीतीं जबकि महा युति को केवल 17 सीटें ही मिल सकीं। महाराष्ट्र में शिंदे और अजित पवार के साथ होने के बाद भी भाजपा 2024 के विधान सभा चुनाव में किसी तरह का कोई जोखिम नहीं उठाना चाहती है। इसलिए भाजपा ने विधानसभा की लड़ाई शुरू करने से पहले विपक्ष पर अजेय बढ़त हासिल करने के मद्देनजर अपनी सक्रियता को बढ़ा दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने खुद मोर्चा संभाल लिया है। महाराष्ट्र में छोटी-बड़ी सभी परियोजना का उद्घाटन प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा किया जाता है ताकि इसका सियासी प्रभाव पड़ सके। यह सिलसिला महाराष्ट्र में 2022 से जारी है, जब से राज्य में भाजपा के समर्थन से एकनाथ शिंदे के अगुवाई में सरकार बनी है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

मेष राशि–आज पूरा दिन खुद को तरोताजा महसूस करेंगे। लोगों का भरोसा आप पर बना रहेगा। आपकी इमानदारी से लोग प्रेरणा लेंगें। महिलाएं घर के काम से जल्द ही राहत पा लेंगी। आज आप दोस्तो के साथ समय बितायेंगे। कई दिनों से कहीं रुका हुआ पैसा आज वापस मिलेगा। बच्चो को घर के बुजुर्ग लोगों का आशीर्वाद मिलेगा। मां ब्रह्मचारिणी के आगे हाथ जोड़े, आपके सभी काम समय पर पूरे होते रहेंगे।

वृष राशि–आज आपका दिन बेहतरीन रहने वाला है। आज आप सोशल मीडिया के जरिए सामाजिक कार्यों में सहयोग देंगें। शिक्षकों की मदद से विद्यार्थीयों का कोई प्रोजेक्ट पूरा होगा। किस्मत का साथ आपको आर्थिक लाभ दिलायेगा। पुरानी की गई मेहनत से दुगना लाभ मिलेगा। परिवार वालो के साथ किसी धार्मिक कार्यो में शामिल हो सकते हैं, जिससे आपको अच्छा फील होगा।

मिथुन राशि–आज आपका दिन आपके अनुकूल रहेगा। आपके कोर्ट-कचहरी के मामले थोड़े रुक सकते है, लेकिन समय रहते सब ठीक होगा। आज आप जो भी व्यापार शुरू करेंगें, उसमें सफलता हासिल होगी। आज आपको किसी दोस्त का भी सहयोग मिलेगा। आप नया करोबार करने की सोच रहे हैं तो किसी अनुभवी की सलाह जरूर लें, आपको कोई अच्छी राय मिलेगी। बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

कर्क राशि–आज आपका दिन ठीक रहेगा। आपको किसी के मामलों में दखल देने से बचना चाहिए। किसी बड़े प्रोजेक्ट में पैसा लगाने की सोच रहे हैं, तो पहले किसी समझदार व्यक्ति से सलाह जरूर ले, अन्यथा आपका पैसा फंस सकता है। छात्र आज अपने करियर को लेकर कोई योजना बनायेंगें, बच्चों को सही गाइडेंस की जरूरत है। मां दुर्गा की आरती करें, आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।

सिंह राशि–आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज जो भी काम शुरु करेंगे वो समय पर पूरा हो जायेगा। आपको करियर से संबंधित नए अवसर मिलेंगे। नया व्यापार शुरू करने में बड़े भाई का सहयोग मिलेगा। कॉमर्स के विद्यार्थी आज मार्केटिंग को समझने के लिए शिक्षको की साहयता लेंगें, जो आपके भविष्य में बेहद काम आयेंगी। आज आपका दांपत्य जीवन शानदार रहने वाला है। मां ब्रह्मचारिणी को मीठे का भोग लगायें, सेहत अच्छी रहेगी।

कन्या राशि–आज आपका मन नई उमंगों से भरा रहेगा। हर कोई आपसे राय लेना चाहेगा। ऑफिस के लोगों में आपका रुतबा बनेगा। किसी विशेष व्यक्ति से आज आपकी बात हो सकती है। आपको आर्थिक रूप से भी लाभ मिलेगा, धन के नये स्रोत प्राप्त होंगे। छोटे बच्चे आज बहुत खुश रहेंगे, वो अपने लिए कोई नया खेल तलाश करेंगें। मां दुर्गा को नारियल अर्पित करें, सेहत पहले से बेहतर बनी रहेगी।

तुला राशि–आज का दिन मिली-जुली प्रतीक्रिया वाला रहेगा। आज किसी दूर के रिश्तेदार से आपकी फोन पर बात होगी, जिससे आपको अच्छा फिल होगा। दांपत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी। महिलाएं आज ऑनलाइन कोई नई डिश सीखने की कोशिश करेंगी। पिता का सहयोग आपके साथ रहेगा। लेखकों के लिए आज का दिन बहुत अच्छा है, उनके लेखन कार्यो की सराहना बड़े पैमाने पर होगी। आपको ईमानदार लोगों के साथ मेल-जोल बढ़ाने की जरूरत है।

वृश्चिक राशि–आज अकारण शुरू हुई समस्याएं पूरी तरह से समाप्त हो जाएंगी। आज आपको ननिहाल पक्ष से कोई शुभ समाचार मिलेगा, जिससे आपका मन प्रसन्न रहेगा। आप विदेश में व्यापार करने की योजना बनायेंगे। आपकी सोशल मीडिया पर किसी से बात हो सकती है, जिससे आपको भविष्य में बहुत फायदा होगा। आज बच्चे घर के काम में माता की मदद करेंगें, जिससे माता उनसे प्रसन्न रहेगी।

धनु राशि–आज आपका दिन खुशियां लेकर आया है। काम के मामलों में आप बेहद व्यावहारिक रहेंगे। आपके मन में बहुत दिनों से कोरोबार को लेकर कोई योजना चल रही है, तो आज आप उस योजना पर काम शुरू करेंगे जिससे आपको कोई बड़ा लाभ मिलेगा। आज आपकी मीठी वाणी आपके काम को जल्दी पूरा करवाने में मदद करेगी। स्टूडेंट्स का आज पढ़ाई में मन लगेगा।

मकर राशि–आज आपका दिन पहले से ज्यादा फायदा दिलाने वाला रहेगा। आपको दूसरों से प्रेरणा लेकर काम करने की जरूरत है। आज बोलने से ज्यादा आपको काम पर ध्यान देना चाहिए। आज आपको अपने माता पिता के साथ समय बिताना चाहिये। संयम और धैर्य के साथ ही आपको अपने कदम आगे बढ़ाने चाहिए। किसी रिश्तेदार से चल रही अनबन आज खत्म हो जायेंगी।

कुंभ राशि–आज आर्थिक तौर पर आपकी स्थिति मजबूत रहेगी। अगर आप कोई बिजनेस करते हैं, तो आपको उसे बढ़ाने के लिए थोडी और मेहनत करने की जरूरत है। आज कोई पड़ोसी आपसे किसी प्रकार की साहयता मागेंगे, जिसे आप असानी से पूरा करेंगे। लोगों के बीच आपका सम्मान बढ़ेगा। किसी रिश्तेदार से आपकी फोन पर लम्बी बात होगी। पारिवारिक रिश्तों में मजबूती आएगी।

मीन राशि–आज आपका दिन उत्तम रहेगा। ऑफिस के किसी सहकर्मी के साथ आपको यात्रा पर जाना पड़ सकता है। आज आपको अपनी वाणी पर संयम रखने की जरूरत है। आज बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखने की जरूरत है। छात्रों के लिए दिन अच्छा रहेगा, आप अपनी पढ़ाई को लेकर पूरी तरह से अलर्ट रहेंगे आज की गई मेहनत का लाभ मिलेगा।

शब्द सामर्थ्य -199

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. कतार, क्रम, पांत 2. लज्जत, जायका 4. कारण, वजह 7. सुंदर प्रतीत होना, सुखद होना 8. घोड़े आदि का मल 9. अक्सर, ज्यादातर 10. चक्की में पीसना, मसलना, कुचलना 12. धनुष, फौजी टुकड़ी 13. आभूषण, जेवर 15. लहरों का चक्कर, जलावर्त, भ्रमर 17. बायां, विरुद्ध 18. गाना, नगमा 19. लाचार, विवश 22. नमन, प्रणाम 25. चौकी, थाना 26. इकरार, समझौता, ठेका 27. अधिकार होना, सामर्थ्य होना (मुहा.)।

ऊपर से नीचे

1. एक प्रदेश जिसकी राजधानी चंडीगढ़ है 2. हविर्दान के समय उच्चारित एक शब्द, भष्म 3. दन-दन करते हुए 5. बलशाली, बलवाला 6. परिवर्तित करना, पहले से भिन्न हो जाना 7. चांद, चंद्रमा, रजनीश 11. अप्रिय, अरुचिकर 14. मैं का बहुवचन 15. भंगेड़ी, भंग करने वाला, झाड़ू लगाने तथा मैला साफ करने वाला 16. मातृभूमि, स्वदेश 19. मक्खन, माखन 20. बुढ़ापा, धन, ज्वर 21. टालना, हटाना, बहाना करके हटाना 23. सीमा, हद 24. सौ का पाचंवा हिस्सा 25. घोड़े के पैरों में लगाने का लोहे का टुकड़ा, पौधे आदि का डंठल।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 198 का हल

वि	ज	य		ब	नि	या		दे
वा		ती	त	र		रा	जी	व
ह	मा	म		स	प	ना		ता
	न				टा			
दा	व	त		वि	ना	श		अ
य		ह	त्या			ह	र्जा	ना
रा	ह	त		न	ज	र		व
	वा				मी		ना	श्य
दु	ला	रा		जा	न	की		क

सूडोकु नवताल- 7210

★✩✩✩✩ सरल

7	8	6		1		5		2
	9			8				3
1			6	9		7		
	3	8	2		1			
2	7	5				6	3	1
			5		7	2	8	
		9		7	4			6
8				2			5	
4		2		5		9	1	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7209 का हल

2	9	5	3	1	4	6	8	7
3	6	1	2	8	7	4	9	5
8	4	7	5	9	6	3	2	1
5	7	4	1	6	2	8	3	9
1	3	6	9	4	8	5	7	2
9	8	2	7	3	5	1	4	6
6	2	8	4	7	1	9	5	3
4	5	3	6	2	9	7	1	8
7	1	9	8	5	3	2	6	4

राजनैतिक दल हर बूथ पर नियुक्त करें एक-एक बीएलए

● मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने की मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के साथ बैठक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने शुक्रवार को प्रदेश स्तरीय मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय एवं राज्यीय राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ एक अहम बैठक आयोजित की। इस बैठक में भारतीय जनता पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, बहुजन समाज पार्टी, आम आदमी पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी) और समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों का अनुपालन कराने, विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान के तहत मतदाता सूची की अपडेट करने में राजनैतिक दलों से सक्रिय सहयोग की अपेक्षा की गयी। साथ ही राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों से सुझाव भी लिये गये।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने सभी राजनैतिक दलों से आग्रह किया कि वे मतदाताओं को जागरूक करने के लिए अपने स्तर पर भी अभियान चलाएं। उन्होंने जोर देकर कहा कि राजनैतिक दल हर बूथ पर एक बीएलए (बूथ लेवल एजेंट) नियुक्त करें ताकि मतदाता सूची में किसी भी प्रकार की त्रुटि को दूर किया जा सके। उन्होंने बताया कि बूथ स्तर अधिकारियों (बीएलओ) के नाम और मोबाइल नंबर मतदान केंद्रों पर प्रदर्शित किए जाएंगे ताकि मतदाताओं को किसी भी जानकारी की जरूरत होने पर आसानी से संपर्क किया जा सके। विशेष अभियान तिथियों के दौरान सभी बूथ स्तर अधिकारी (बीएलओ) अपने मतदेय स्थलों पर उपस्थित रहेंगे। उनके पास मतदाता सूची और सभी आवश्यक फॉर्म (जैसे- फॉर्म 6, 7 और 8) उपलब्ध होंगे, ताकि मतदाता अपने नाम जोड़ने, हटाने या सुधारने संबंधी कार्यवाही कर सकें। इसके अलावा, निवास परिवर्तन के लिए अब फॉर्म-6 के बजाय फॉर्म-8 का उपयोग करने की प्रक्रिया भी स्पष्ट की गई।

बैठक में भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार अर्हता तिथि 01 जनवरी 2025 के आधार पर होने वाले विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम की जानकारी दी गयी। कार्यक्रम के अनुसार मतदाता सूची का आलेख्य प्रकाशन 29 अक्टूबर 2024 को किया जायेगा। 28 नवम्बर 2024 तक दावे और आपत्तियां प्राप्त की जायेंगी। 09, 10, 23 और 24 नवम्बर 2024 विशेष अभियान की तिथियां निर्धारित है। 24 दिसम्बर 2024 तक दावे और आपत्तियों का निस्तारण करते हुए मतदाता सूची का अन्तिम प्रकाशन 06 जनवरी 2025 को किया जाएगा। अर्हक तिथियों के बारे में भी चर्चा करते हुए बताया गया कि 1 अप्रैल, 1 जुलाई व 1 अक्टूबर 2025 को अर्ह होने वाले मतदाताओं के केवल फार्म-6 लिए जाएंगे, जिन पर अर्हता की निर्धारित तिथि के पश्चात् नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बैठक में यह भी बताया कि पुनरीक्षण पूर्व गतिविधियों के अन्तर्गत बूथ लेवल अधिकारियों के माध्यम से चलाये गये घर-घर सत्यापन के अन्तर्गत चिन्हित किए गए मृतक/ शिफ्टेड/ रिपीटेड मतदाताओं के संबंध में फार्म-7 के माध्यम से कार्यवाही की गयी। मतदाता सूची में संशोधन या नामांकन के लिए मतदाता अपने मोबाइल नंबर का उपयोग करके भारत निर्वाचन आयोग के ऑनलाइन वेब पोर्टल पर लॉगिन कर सकते हैं। बैठक में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि सहित मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के योगी के संकल्प को आईएफसी ने दिया समर्थन

● इंटरनेशनल फाइनेंस कॉर्पोरेशन के ग्लोबल एमडी मखतार डियोप ने मुख्यमंत्री से की शिष्टाचार भेंट

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य का समर्थन करने और प्रदेश के बुनियादी ढांचे एवं कृषि तकनीक (एग टेक) में सहयोग करने के लिए उत्सुक इंटरनेशनल फाइनेंस कॉर्पोरेशन (आईएफसी) के ग्लोबल एमडी मखतार डियोप ने शनिवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके सरकारी आवास पर शिष्टाचार भेंट की। इस मुलाकात के दौरान उत्तर प्रदेश में सहयोग को लेकर विभिन्न संभावनाओं पर चर्चा हुई। खासतौर पर आईएफसी की ओर से पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) के माध्यम से प्रदेश के बुनियादी ढांचे और कृषि तकनीक के क्षेत्र में सहयोग को लेकर उत्सुकता जाहिर की गई। बैठक में आईएफसी की ओर से प्रदेश में नमामि गंगे की तर्ज पर एक राज्यव्यापी जल कार्यक्रम विकसित किए जाने पर भी चर्चा की गई, जो वेस्ट वॉटर ट्रीटमेंट पर केंद्रित होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से आईएफसी को सहयोग के लिए हर संभव मदद का आश्वासन दिया गया।

मुलाकात के दौरान आईएफसी के ग्लोबल एमडी मखतार डियोप ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य का समर्थन करते हुए इसमें अपनी भागीदारी के प्रति उत्सुकता जाहिर की। इसके लिए विशेष रूप से बुनियादी ढांचे में निवेश और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) और कृषि तकनीक (एगटेक) के माध्यम से फोकस किए जाने की आवश्यकता जताई गई। आईएफसी विगत कई वर्षों से कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं में सहयोग कर रहा है। भारत के पहले और सबसे बड़े बिजली क्षेत्र इंफ्रास्ट्रक्चर इनवेस्टमेंट ट्रस्ट इंडीग्रिड में आईएफसी ने 200 मिलियन डॉलर का निवेश किया है, जिसकी मदद से भारत के ट्रांसमिशन सेक्टर का आधुनिकीकरण हो रहा है। वहीं, आईएफसी पीपीपी परियोजनाओं के सलाहकार के रूप में भी सक्रिय है।

उत्तर प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाने के लिए आईएफसी और वर्ल्ड बैंक ग्रुप, राज्य सरकार के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश में कम से कम 7 शहर (कानपुर, लखनऊ, गाजियाबाद, आगरा, वाराणसी, मेरठ और प्रयागराज) हैं जिनकी जनसंख्या 1 मिलियन से अधिक है, जो इस पहल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं। आईएफसी और वर्ल्ड बैंक ग्रुप संयुक्त रूप से राज्य के लिए पूल्ड फाइनेंसिंग संरचना स्थापित करने में मदद कर सकते हैं, जिससे शहरी बुनियादी ढांचे में निजी पूंजी को आकर्षित किया जा सके। एक पूल्ड कमर्शियल फाइनेंसिंग संरचना उत्तर प्रदेश राज्य की वित्तीय ताकत का उपयोग कर शहरी बुनियादी ढांचे की सामूहिक वित्तपोषण आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है। आईएफसी के सहयोग से वर्ल्ड बैंक ग्रुप 100 शहरों के कार्यक्रम के समर्थन से, एक राज्य मध्यस्थ सरकारी गारंटी या क्रेडिट वृद्धि के साथ एक पूल आधार पर ऋण/ बांड जुटा सकता है। आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के साथ डब्ल्यूबीजी-एडीजी 100 शहरों के कार्यक्रम का उद्देश्य 100 शहरों में जल आपूर्ति, स्वच्छता और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सेवा में बैंक योग्य परियोजनाओं को वितरित करना है। यह कार्यक्रम अभी प्रारंभिक चरणों में है। आईएफसी ने 2007 से अब तक रसायन और उर्वरक, आवास, नवीकरणीय ऊर्जा, दूरसंचार, स्वास्थ्य और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में 29 परियोजनाओं में लगभग 750 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश किया है। प्रदेश सरकार के पीपीपी मॉडल को बढ़ावा देने के प्रयासों में, आईएफसी ने जुलाई 2023 में उत्तर प्रदेश के अवसंरचना और औद्योगिक विकास विभाग के साथ एक एमओयू पर हस्ताक्षर किया है, जिसके तहत आईएफसी पीपीपी के रूप में ई-बसों की खरीदारी, संचालन और रखरखाव की सलाहकारी सेवाएं प्रदान कर रहा है। आईएफसी की उत्तर प्रदेश सरकार के साथ प्रत्यक्ष सहभागिता में पीपीपी और एगटेक पर सलाह शामिल है। आईएफसी को झांसी सोलर प्रोजेक्ट पर लेन-देन सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया था, ताकि ग्राहक को झांसी में 600 मेगावाट के सौर ऊर्जा पार्क परियोजना की संरचना और निविदा प्रक्रिया में सहायता की जा सके। इस परियोजना से सालाना कम से कम 1.1 मिलियन टन सीओ2 उत्सर्जन को कम करने, लगभग 330 मिलियन डॉलर वित्तपोषण की सुविधा, ऊर्जा अंतर को कम करने और नवीकरणीय ऊर्जा में वृद्धि की उम्मीद है।

प्रदेश के 25 जिलों में खुलेंगे नए राजकीय नर्सिंग कॉलेज, छोटे जिलों पर विशेष फोकस

● अयोध्या, बहराइच, कौशांबी, ललितपुर समेत 25 नर्सिंग कॉलेजों में अगले सत्र से शुरू हो जाएगी पढ़ाई

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिए आवश्यक वर्क फोर्स तैयार करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। इसके तहत योगी सरकार मेडिकल की यूजी और पीजी की सीटें बढ़ाने के बाद पैरामेडिकल (नर्सिंग) की सीटों में बड़े पैमाने में वृद्धि करने जा रही है।

इसी क्रम में, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के 25 जिलों में नये राजकीय नर्सिंग कॉलेज खोलने का निर्णय लिया है। इसके माध्यम से प्रदेश के कई छोटे शहरों में भी छात्र न सिर्फ सरकारी फीस पर नर्सिंग की पढ़ाई कर सकेंगे, बल्कि प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत करने में अपना योगदान दे सकेंगे। सीएम योगी की पहल पर 20 जिलों में नये राजकीय नर्सिंग कॉलेजों का निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है, जबकि 5 जिलों में निर्माण कार्य स्वीकृति प्रदान कर दी गयी है। वहीं, सीएम ने कार्यदायी संस्थाओं को कॉलेजों का निर्माण कार्य जल्द पूरा करने का निर्देश दिया है, ताकि अगले एकेडमिक सेशन से पढ़ाई शुरू हो सके।

डीजीएमई किंजल सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लगातार प्रदेश के स्वास्थ्य इंफ्रास्क्चर को मजबूत करने के लिए आवश्यक कदम उठा रहे हैं। इसके साथ ही प्रदेश के छात्रों को मेडिकल और पैरामेडिकल की पढ़ाई के लिए उचित संसाधन उपलब्ध कराने के लिए भी युद्धस्तर पर काम कर रहे हैं। इसी के तहत सीएम योगी ने प्रदेश के 25 जिलों में नये राजकीय नर्सिंग कॉलेज खोलने की स्वीकृति दी है, जहां अगले एकेडमिक सेशन में पढ़ाई शुरू हो जाएगी।

मुख्यमंत्री आज महाकुंभ-2025 का लोगो, वेबसाइट और ऐप लांच करेंगे

● प्रयागराज में महत्वपूर्ण स्थलों का निरीक्षण करने के साथ ही साधु संतों से भी करेंगे मुलाकात

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को प्रयागराज में महाकुंभ-25 के प्रतीक चिन्ह (लोगो) का अनावरण करने के साथ वेबसाइट और ऐप की लॉन्चिंग करेंगे। सीएम योगी ने महाकुंभ को दिव्य, भव्य और नव्य तरीके से आयोजित कराने के लिए खुद कमान संभाल ली है। ऐसे में वह रविवार को महाकुंभ की तैयारियों का जायजा लेने प्रयागराज पहुंचेंगे। इस दौरान अधिकारियों से कार्यों की प्रगति रिपोर्ट के साथ अन्य बिंदुओं की गहन चर्चा करेंगे। इसके साथ ही कई महत्वपूर्ण जगहों का स्थलीय निरीक्षण भी करेंगे। वहीं जन प्रतिनिधियों और साधु संतों के साथ मुलाकात करेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को प्रयागराज के परेड ग्राउंड पहुंचेंगे। इसके बाद वह महाकुंभ की तैयारियों का जायजा लेंगे। इस दौरान सीएम योगी महाकुंभ से जुड़े कई महत्वपूर्ण स्थानों का निरीक्षण करेंगे और कार्यों की प्रगति रिपोर्ट देखेंगे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ महाकुंभ की तैयारियों को लेकर एक समीक्षा बैठक भी करेंगे। इसमें वह अधिकारियों से कार्यों की बिंदुवार चर्चा करेंगे। साथ ही दिशा-निर्देश देंगे। इसके बाद सीएम योगी महाकुंभ -25 के प्रतीक चिन्ह (लोगो) का अनावरण करेंगे। साथ ही महाकुंभ-25 की वेबसाइट और ऐप की लॉन्चिंग करेंगे। इसके अलावा वह यहां पर जनप्रतिनिधियों प्रशासनिक अधिकारियों और साधु संतों के साथ मुलाकात भी करेंगे। महाकुंभ-25 के लोगो का उपयोग महाकुंभ की वेबसाइट और ऐप के साथ अन्य प्रचार माध्यमों में किया जाएगा। यह श्रद्धालुओं और पर्यटकों के वायु, रेल एवं सड़क मार्ग से महाकुंभ पहुंचने में मार्ग दर्शक का कार्य करेगा।

इसी के माध्यम से प्रयागराज में आवास, स्थानीय परिवहन, पार्किंग, घाटों तक पहुंचने के दिशा-निर्देश आदि की जानकारी मिल सकेगी। इसमें स्थानीय और आसपास के आकर्षणों और पर्यटन स्थलों का मार्ग दर्शन भी होगा। मेला स्थल में नेविगेट करने और धार्मिक गतिविधियों में प्रतिभागिता के संदर्भ में विस्तृत जानकारी होगी। श्रद्धालुओं को यादगार बनाने के लिए स्मृति चिन्ह और धार्मिक वस्तुएं उपलब्ध कराने की सुविधा, आपातकालीन स्थितियों के लिए एसओएस सुविधा, जिससे श्रद्धालु तुरंत सहायता प्राप्त कर सकें।

नवरात्र में 'धन-धान्य' से भरा उत्तर प्रदेश के 2.25 करोड़ से अधिक किसानों का घर

● प्रदेश के किसानों के खाते में पहुंच गए 4985.49 करोड़, सीएम योगी ने पीएम मोदी के प्रति जताया आभार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शारदीय नवरात्रि की तृतीया तिथि पर देश के साथ ही उत्तर प्रदेश के किसानों का घर भी 'धन-धान्य' से परिपूर्ण हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को महाराष्ट्र के वाशिम से पीएम किसान सम्मान निधि की 18वीं किस्त जारी की। इससे देश के 9.4 करोड़ किसानों के साथ ही उत्तर प्रदेश के 2.25 करोड़ किसानों को इसका लाभ मिला। प्रदेश के किसानों के खाते में 4985.49 करोड़ रुपये पहुंच गए। सीएम योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश के किसानों को शारदीय नवरात्रि में यह उपहार दिए जाने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार जताया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को महाराष्ट्र के वाशिम से देश के किसानों के खाते में पीएम सम्मान निधि की 18वीं किस्त स्थानांतरित की। इसमें उत्तर प्रदेश के दो करोड़ 25 लाख 91,884 किसानों के खाते में 4985.49 करोड़ रुपये भेजे गए। वहीं देश के 9.4 करोड़ किसानों को 20,000 करोड़ रुपये से अधिक भेजकर लाभान्वित किया गया। गौरतलब है कि इससे पहले लोकसभा चुनाव जीतने के उपरांत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी से 18 जून को 17वीं किस्त का वितरण किया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किसानों के खाते में पीएम सम्मान निधि की राशि हस्तांतरित होने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार जताया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर पोस्ट भी किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लिखा कि अन्नदाता किसानों के जीवन को सुगम, स्वावलंबी और समृद्ध बनाने हेतु सतत समर्पित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा महाराष्ट्र से 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि' की 18वीं किस्त जारी कर दी गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लिखा कि किसानों को आर्थिक संबल प्रदान करती इस कल्याणकारी योजना की 18वीं किस्त के अंतर्गत हस्तांतरित 20,000 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि से उत्तर प्रदेश के 2.25 करोड़ से अधिक किसानों समेत देश के 9.4 करोड़ से अधिक कृषक लाभान्वित हुए हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ ने लिखा कि पावन शारदीय नवरात्रि के अवसर पर वरदान समान यह उपहार प्रदान करने हेतु उत्तर प्रदेश के सभी कृषक भाई-बहनों की ओर से आपका हार्दिक आभार प्रधानमंत्री जी!

भाजपा सरकार महंगाई रोक पाने में पूरी तरह से विफलः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार महंगाई रोक पाने में पूरी तरह से विफल है। आज जनता खाने पीने की चीजों दाल, तेल, आटा से लेकर सब्जी, दूध सबके दाम आसमान छू रहे हैं।

भाजपा की डबल इंजन की सरकार ने महंगाई रोकने के लिए जनता से झूठे वादे किये। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा चुनाव के समय वोट लेने के लिए जो भी वादे करती है, सत्ता में आने के बाद ठीक उसके विपरीत आचरण करती है। आम जनता महंगाई से त्रस्त है। पिछले दिनों एक बार फिर व्यवसायिक गैस सिलेण्डर के दाम बढ़ गए। तेलों, दालों और अन्य खाद्य सामाग्री के दाम बढ़ने से सबसे ज्यादा असर गरीब, मध्यम वर्ग के परिवारों पर पड़ रहा है। उनके लिए घर चलाना मुश्किल हो रहा है। भाजपा सरकार में काला बाजारी और मुनाफा खोरी चरम पर है। किसान के खेत से पांच रुपये किलो बिकने वाला आलू आज 40 रुपये किलो मिल रहा है। इसी तरह से प्याज, लहसुन, टमाटर के दाम कम होने का नाम नहीं ले रहे हैं। यादव ने कहा कि भाजपा सरकार जानबूझकर मुनाफाखोरी को प्रश्रय दे रही है। किसान को सही दाम नहीं मिल रहा है लेकिन बिचौलिए मुनाफा कमाकर मालामाल होते जा रहे हैं। आम आदमी इस महंगाई और मुनाफाखोरी में लुट रहा है। सत्ता के संरक्षण में मुनाफाखोर जनता को लूट रहे हैं। सरकार सब कुछ जानते हुए भी चुपचाप तमाशा देख रही है और भ्रष्टाचार को संरक्षण दे रही है। आने वाले समय में प्रदेश की जनता भाजपा सरकार से मिल रहे हर जख्म का हिसाब लेगी।

सपा की सरकार बनाने में नौजवान निभाएंगे महत्वपूर्ण भूमिकाः श्याम लाल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● सपा लोहिया वाहिनी ने किया आगाज-ए-इंकलाब सम्मेलन का आयोजन

आगाज-ए-इंकलाब सम्मेलन शनिवार को गांधी भवन प्रेक्षाग्रह, कैसरबाग में सम्पन्न हुआ जिसमें संगठन के सभी जिलाध्यक्ष, प्रदेश कार्यकारिणी के पदाधिकारियों के अलावा सभी फ्रंटल संगठन के पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

सम्मेलन में 2027 के विधानसभा चुनाव में अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने का संकल्प लेने के साथ समाजवादी लोहिया वाहिनी द्वारा बूथ स्तर तक संगठन की मजबूती के लिए काम करने का निर्णय लिया गया। समाजवादी पार्टी की विचारधारा, नीतियों और उपलब्धियों से जनता को जोड़ने और पीडीए को और मजबूत करने के लिए जातीय जनगणना कराने के लिए समाजवादी लोहिया वाहिनी द्वारा संघर्ष का भी निश्चय किया गया है। सम्मेलन में समाजवादी लोहिया वाहिनी के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने कहा कि समाजवादी पार्टी विचारधारा की राजनीति करती है। छत्रपति शाहूजी महराज ने सर्वप्रथम आरक्षण की व्यवस्था की थी।

बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने इसे संवैधानिक आधार दिया। अखिलेश यादव ने पीडीए के माध्यम से वंचितों, शोषितों, दलितों और पिछड़ों को हक दिलाने की लड़ाई को विस्तार दिया है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार में लिप्त भाजपा सरकार को हटाने और समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए समाजवादी लोहिया वाहिनी के नौजवान महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

समाजवादी लोहिया वाहिनी ने आगाज-ए-इंकलाब को स्पष्ट संदेश दिया है कि 'लाल क्रांति से लोहिया वाहिनी बदलेगा परिवेश, यूपी में परिवर्तन खातिर पीडीए जननायक अखिलेश।' लोहिया वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राम करन निर्मल ने कहा कि भाजपा सरकार में भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी चरम पर हैं नौजवानों का भविष्य अंधकार में है। समाजवादी नौजवान समता, स्वतंत्रता और लोक कल्याण के लिए इंकलाब करेंगे। सम्मेलन में विधान परिषद में नेता विरोधी दल लाल बिहारी यादव, एमएलसी डॉ. मान सिंह यादव, पूर्व एमएलसी डॉ. राजपाल कश्यप, संतोष जाटव, अमरेन्द्र आर्य आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रहीं।

यूपी के सभी जिलों में नवम्बर माह में होगा कॅरियर मेले का आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार युवाओं के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक और बड़ा कदम उठाने जा रही है। राज्य के सभी जनपदों में नवंबर माह के दौरान कॅरियर मेलों का आयोजन किया जाएगा, जिसका उद्देश्य स्थानीय युवाओं को करियर के विभिन्न विकल्पों के प्रति जागरूक करना, शिक्षा एवं रोजगार के नए अवसरों की जानकारी प्रदान करना है।

कॅरियर मेले में छात्रों को उनकी रुचियों और क्षमताओं के अनुसार उचित कैरियर चुनने में मदद की जाएगी। मेले में विभिन्न शैक्षणिक संस्थान, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र, निजी और सरकारी क्षेत्र के प्रतिष्ठित नियोक्ता भी भाग लेंगे। यहां पर करियर विशेषज्ञ युवाओं को उनके शैक्षिक और व्यावसायिक विकल्पों पर मार्गदर्शन प्रदान करेंगे और उन्हें उच्च शिक्षा एवं रोजगार के विभिन्न अवसरों से अवगत कराएंगे।

प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गुलाब देवी ने इस कॅरियर मेले को युवाओं के लिए एक सुनहरा अवसर बताया है। उन्होंने कहा कि कॅरियर मेला युवाओं के लिए अपने भविष्य की योजनाओं को सशक्त बनाने और सही दिशा में कदम बढ़ाने का एक बेहतरीन मंच होगा। उन्होंने सभी युवाओं से अपील की है कि वे इन मेलों में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें और इसका लाभ उठाएं।

राज्य परियोजना निदेशक कंचन वर्मा ने सभी जिला विद्यालय निरीक्षकों को कॅरियर मेले के सफल आयोजन के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। निर्देशों के अनुसार, नवंबर माह में प्रत्येक जनपद में कैरियर मेले का आयोजन किया जाएगा, जहां विभिन्न कॅरियर संभावनाओं की तलाश एवं जागरूकता के लिए एक मंच उपलब्ध होगा।

अयोध्या के कुम्हारों के जीवन में 'दीप' जला रही प्रदेश सरकार

● कभी कमाते थे 20 से 25 हजार, अब दीपोत्सव में ही बन जाते हैं लखपति

● आठवें दीपोत्सव में 25 लाख दीयों के प्रज्वलन का है लक्ष्य

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

रामनगरी के दीपोत्सव ने अयोध्या के कुम्हारों का जीवन बदल दिया है। कभी रोजी-रोटी के लिए परेशान दिखने वाले कुम्हार अब दीपोत्सव के दौरान ही एक-एक लाख रुपये कमा लेते हैं। दीपोत्सव शुरू होने के बाद कुम्हार परिवार के युवा बाहर जाने के बजाय अब इलेक्ट्रिक चाक घुमाना ज्यादा पसंद कर रहे हैं। जयसिंहपुर गांव में दीपोत्सव को लेकर व्यापक तैयारियां शुरू हो गई हैं।

2017 में प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की सरकार बनते ही सर्वप्रथम अयोध्या को सजाने-संवारने का बीड़ा उठाया। इसके बाद भगवान राम के वनवास से लौटकर आने की खुशी में मनाई जाने वाली दीवाली ओर दीपोत्सव कराने का ऐलान कर दिया। हर वर्ष राम की पैड़ी पर इसका आयोजन होता है। इस दौरान लाखों की संख्या में दीप प्रज्ज्वलित होते हैं। दीयों की खरीदारी के लिए भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जिले के कुम्हारों को वरीयता दी। नतीजा यह है कि इन वर्ष दीपोत्सव का आठवां संस्करण होने जा रहा है। कुम्हारों ने बड़ी संख्या में दीयों को बनाने का काम शुरू कर दिया है। इस बार रामलला भव्य मंदिर में विराजमान हो गए हैं। इसलिए कहा जा रहा है कि आठवां दीपोत्सव और भी भव्य बनाने के लिए मुख्यमंत्री ने 25 लाख दीपों का जलाने का ऐलान किया है। अयोध्या के विद्याकुण्ड के निकट स्थित जयसिंहपुर गांव में बड़े स्तर पर कुम्हार दीयों को बनाने में जुटे हुए हैं। यहां का 40 परिवार दीपोत्सव के लिए दीप बना रहा है। उनका मानना है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उनका जीवन बदल दिया। दीपोत्सव में बिक्री होती ही है, लेकिन स्थानीय कुम्हारों के लिए की गई अपील के बाद लोग मिट्टी के दीयों को प्राथमिकता दे रहे हैं। जयसिंहपुर गांव की लक्ष्मी प्रजापति बताती हैं कि योगी सरकार की योजना ने हमारे घर को रोशन कर दिया है। दीपोत्सव में दीये बनाने का ऑर्डर मिलते ही पूरा परिवार जुट जाता है। 30 से 35 हजार दीये बनाकर बेचे जाते हैं। जयसिंहपुर गांव के राकेश प्रजापति बताते हैं कि अभी हमें ठेका नहीं मिला है, लेकिन विगत वर्षों में मिले आर्डर को देखते हुए हम लोगों ने दीये बनाने शुरू कर दिए हैं। सीएम के ऐलान के बाद हमारी आमदनी बढ़ी है। गांव की आशा बताती हैं कि हम लोग हर वर्ष 20 से 25 हजार दीये बनाकर दीपोत्सव के लिए देते हैं। दीपोत्सव शुरू होने के बाद शहर के लोग दीयो से अपना घर सजाते हैं।

नहीं तो लोग चाइना की झालरों का प्रयोग करते थे। गांव के राजेश प्रजापति ने बताया कि ये सीएम योगी की ही देन है कि दीपोत्सव के बाद से प्रजापति की भी पहचान हो गई है। नहीं तो हमें कोई पहचानता नहीं था। अभी टेंडर नहीं हुआ है, लेकिन हम लोगों ने अब तक 2 लाख से अधिक दीप तैयार कर लिए हैं। आठवें दीपोत्सव का काउंट डाउन शुरू हो चुका है। अब सिर्फ कुछ ही दिन बचे हैं। उसके बाद अयोध्या नगरी एक नया कीर्तिमान रच देगी। दीपोत्सव को लेकर प्रशासनिक तौयारियां शुरू हो गई हैं।

पूर्व प्रधानाचार्य समर्थकों सहित कांग्रेस में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधार से प्रेरित होकर जनपद मुजफ्फरनगर के सूर्य देव इण्टर कॉलेज के चेयरमैन एवं प्रिंसिपल एडवोकेट शिव कुमार पाल ने अपने समर्थकों के साथ उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष, प्रभारी प्रशासन दिनेश कुमार सिंह के समक्ष कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की। इस मौके पर दिनेश सिंह ने उनके गले में तिरंगा पट्टिका पहनाकर तथा कांग्रेस सदस्यता कार्ड देकर उन्हें विधिवत रूप से पार्टी में शामिल कराया। सदस्यता ग्रहण कार्यक्रम में आए हुए सभी लोगों का स्वागत करते हुए प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष दिनेश सिंह ने कहा कि हमारे नेता राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा के माध्यम से देश के आमजनमानस के दुख दर्द को समझा तथा भविष्य उसे दूर करने का आशवासन भी दिया। उनके इस सार्थक प्रयास का ही नतीजा है कि आए दिन प्रदेश के विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता तथा समाज में प्रतिष्ठित अधिवक्ता, शिक्षक, चिकित्सकों द्वारा कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की जा रही है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

हरियाणा में कांग्रेस और बीजेपी में ऐसे कई नेता हैं, जो खुल कर कहते हैं कि अगर उनकी पार्टी की सरकार बनी तो वे मुख्यमंत्री बनेंगे, लेकिन हाल का अनुभव बताता है कि मुख्यमंत्री वह नहीं बनता जो जोर-शोर से इसका डंका पीटता है।
अखिलेश शर्मा, पत्रकार @akhileshsharma1

धरती

भारत डोगरा

हम जीवन मूल्यों का यथासंभव करें प्रसार

बीसवीं शताब्दी में यह संभावना पहली बार सामने आने लगी कि तेजी से बदलती तकनीकी के दौर में मनुष्य निर्मित कारणों से वे हालात अस्त-व्यस्त हो सकते हैं जो धरती पर मनुष्य सहित लाखों जीवन रूपों के पनपने के अनुकूल अवसर उत्पन्न करते हैं। यह संभावना ग्रीनहाऊस गैसों के अति उत्सर्जन से जुड़े जलवायु बदलाव, अनेक पर्यावरणीय गंभीर क्षति और महाविनाक हथियारों के उत्पादन के संदर्भ से उत्पन्न हुई।

पर इन समस्याओं की समझ बनने के बाद भी बीसवीं शताब्दी के अंत तक इन्हें सुलझाने की दिशा में कोई संतोषजनक कार्यवाही नहीं हुई, बल्कि इस शताब्दी के अंतिम दो दशकों में ये समस्याएं और विकट हो गईं। अतः 21वीं शताब्दी के आरंभ में जो पीढ़ी जी रही है वह बहुत नाजुक और संवेदनशील दौर में जी रही है जब धरती की जीवनदायिनी क्षमता ही खतरे में है। जब यह पता चल गया कि ग्रीनहाऊस गैसों के उत्सर्जन में तेज वृद्धि के कितने गंभीर दुष्परिणाम हो सकते हैं, तब से अब तक के समय के दौरान भी इस गंभीर खतरे को रोकने के लिए कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं हुई। परमाणु हथियारों के खतरे के बारे में तो आंरभ से ही पता था, पर तो भी पिछले 79 वर्षों (1945-2024) के दौरान परमाणु हथियारों के खतरे को बुनियादी तौर पर समाप्त करने का कोई असरदार उपाय नहीं हुआ है। चूंकि इस तरह के गंभीर खतरे हमारे और भावी पीढ़ियों, के हमारे बच्चों के भविष्य को बेहद अंधकारमय बना रहे हैं, अतः जरूरी हो गया है कि दुनिया भर के लोग लोकतांत्रिक और अहिंसक राह पर चलते हुए इन खतरों के समाधान के लिए व्यापक एकता स्थापित करें। धरती पर लाखों अन्य तरह के जीव हैं। इन बेजुबान जीवों को उनकी किसी गलती के बिना ही गंभीर खतरे में डाल दिया गया है। इस विषय पर हॉरवर्ड के जाने-माने विशेषज्ञ प्रो. एडवर्ड ओ. विलसन ने कुछ समय पहले टाइम पत्रिका में लिखा था, जीव-विज्ञानी प्रायः स्वीकार करते हैं कि यदि हम मनुष्य के आगमन (होमो सेपियंस) के आरंभिक दिनों की तुलना आज की दुनिया से करें तो प्रजातियों के लुप्त होने की गति सौ गुणा बढ़ चुकी है।

वर्ष 1992 में विश्व के 1575 वैज्ञानिकों ने (जिनमें उस समय जीवित नोबल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिकों में से लगभग आधे वैज्ञानिक भी सम्मिलित थे) एक बयान जारी किया, जिसमें उन्होंने कहा, हम मानवता को इस बारे में चेतावनी देना चाहते हैं कि भविष्य में क्या हो सकता है? पृथ्वी और उसके जीवन की व्यवस्था जिस तरह हो रही है उसमें व्यापक बदलाव की जरूरत है अन्यथा बहुत दुख-दर्द बढ़ेंगे और हम सबका घर यह पृथ्वी इतनी बुरी तरह तहस-नहस हो जाएगी कि फिर उसे बचाया नहीं जा सकेगा। आगे इन वैज्ञानिकों ने कहा कि वायुमंडल, समुद्र, मिट्टी, वन और जीवन के विभिन्न रूपों सभी पर तबाह हो रहे पर्यावरण का बहुत दबाव पड़ रहा है और 2100 तक पृथ्वी के विभिन्न जीवन रूपों में से एक तिहाई लुप्त हो सकते हैं। मनुष्य की वर्तमान जीवन-पद्धति के अनेक तौर-तरीके भविष्य में सुरक्षित जीवन की संभावनाओं को नष्ट कर रहे हैं, और इस जीती-जागती दुनिया को इतना बदल सकते हैं कि जिस रूप में जीवन को हमने जाना है, उसका अस्तित्व ही कठिन हो जाए।

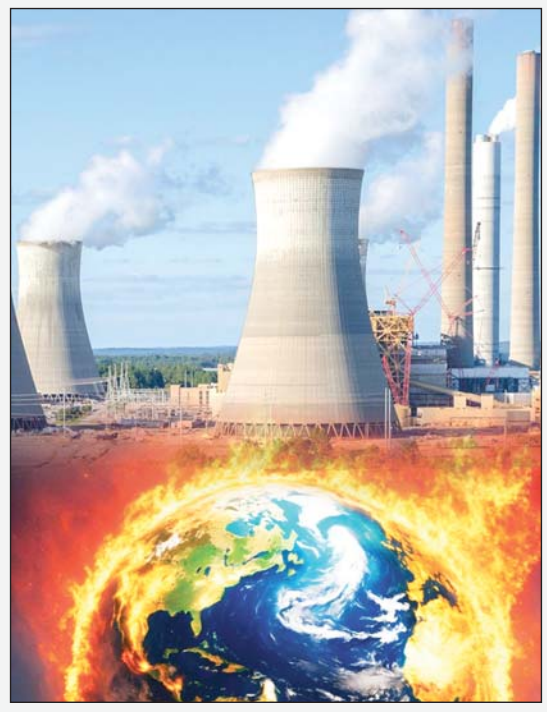

> अपने आसपास के जीवन को ध्यान से देखने पर स्पष्ट नजर आता है कि बहुत से दुख-दर्द का मूल कारण मनुष्य के लालच में और अपनी जरूरतों से कहीं अधिक साधन हड़पने की प्रवृत्ति में है। यही अन्याय, विषमता, दूसरों के लिए वैर-भाव की ओर ले जाती है। एक मनुष्य का लालच किसी गांव में जमीन हड़पने का जानलेवा झगड़ा करा सकता है, तो लाखों मनुष्यों का मिला-जुला लालच दो देशों में युद्ध क्यों नहीं करा सकता है? जब युद्ध की संभावना बढ़ती है, तभी हथियारों की होड़ भी बढ़ती है और यह अधिक से अधिक विनाशक हथियारों की ओर ही ले जाती है। मनुष्य यदि चाहे तो अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के बाद अपना शेष सारा सामर्थ्य दूसरों की (अभावग्रस्त मनुष्यों और अन्य सब जीवों की) सेवा में लगा सकता है या सब तरह के जीवन के आधार, जो प्रकृति है, के संरक्षण में लगा सकता है

इन प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने जोर देकर कहा कि प्रकृति की इस तबाही रोकने के लिए बुनियादी बदलाव जरूरी है। ऐसी महत्त्वपूर्ण चेतावनियों के बारे में यही कहा जा सकता है कि वे सच सिद्ध हो रही हैं और विश्व के सभी जीव तेजी से गंभीर खतरों की ओर धकेले जा रहे हैं। इसके बावजूद सबसे समृद्ध और सक्षम समाजों में लापरवाही, विलासिता, भोगवाद और शक्ति के दुरुपयोग को रोकने पर कोई व्यापक प्रयास नहीं हो रहा है।

अपने आसपास के जीवन को ध्यान से देखने पर स्पष्ट नजर आता है कि बहुत से दुख-दर्द का मूल कारण मनुष्य के लालच में और अपनी जरूरतों से कहीं अधिक साधन हड़पने की प्रवृत्ति में है। यही अन्याय, विषमता, दूसरों के लिए वैर-भाव की ओर ले जाती है। एक मनुष्य का लालच किसी गांव में जमीन हड़पने का जानलेवा झगड़ा करा सकता है, तो लाखों मनुष्यों का मिला-जुला लालच दो देशों में युद्ध क्यों नहीं करा सकता है? जब युद्ध की संभावना बढ़ती है, तभी हथियारों की होड़ भी बढ़ती है, और यह अधिक से अधिक विनाशक हथियारों की ओर ही ले जाती है। मनुष्य यदि चाहे तो अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के बाद अपना शेष सारा सामर्थ्य दूसरों की (अभावग्रस्त मनुष्यों और अन्य सब जीवों की) सेवा में लगा सकता है, या सब तरह के जीवन के आधार, जो प्रकृति है, के संरक्षण में लगा सकता है। पर लालच के कारण वह अधिक खाने-पीने, नशा करने, बड़े भवन बनाने, हर तरह के भोग-विलास करने की ओर बढ़ता है, और जब लाखों लोग यही भोग-विलास एक साथ करने का प्रयास करते हैं तो इससे उस क्षेत्र के वनों, भूमि, हवा, पानी पर अधिक दबाव पड़ता है, और पर्यावरण का विनाश होता है। अतः यदि लालच, दूसरों के संसाधन हड़पने और भोग-विलास की दौड़ पर हम रोक लगाए और उसके स्थान पर सादगी, सेवा, समता, स्नेह और संतोष के आदर्शों को प्रतिष्ठित करे तो इससे हमारे अपने और आसपास के जीवन में दुख-दर्द के मूल कारण दूर होंगे और साथ ही विश्व की सबसे बड़ी समस्याओं के समाधान की नींव भी तैयार होगी। इन सबसे महत्त्वपूर्ण मूल्यों का जैसे-जैसे हमारे जीवन में ह्रास हो रहा है वैसे-वैसे हमारे अपने जीवन का और आसपास का दुख-दर्द बढ़ रहा है, और दुनिया की सबसे गंभीर समस्याएं और विकट हो रही हैं। सवाल यह है कि इन सबसे महत्त्वपूर्ण और सार्थक जीवन मूल्यों को अपने जीवन में, अपने परिवार, मुहल्ले और स्कूल में कैसे प्रतिष्ठित करें। हम यह कर सके तो विश्व की सबसे गंभीर और बुनियादी समस्याओं को हल करने की नींव भी अपने आप तैयार होने लगेगी। इसमें कई वर्ष लगेंगे। पर एक दशक तक निरंतर प्रयास जारी रहा तो एक नई पीढ़ी तैयार होने लगेगी जो महाविनाशक हथियारों और जलवायु बदलाव जैसी सबसे खतरनाक समस्याओं के समाधान को अपनी पहली प्राथमिकता बना लेगी।

इन जीवन-मूल्यों को पहले हमें स्वयं अपनाना होगा, फिर आगे प्रयास परिवार स्तर पर हों। आदर्श परिवार की परिभाषा केवल यहां तक सीमित नहीं है कि सब सदस्य मिल-जुल कर रहें। इससे आगे परिवार को वह प्रशिक्षण केंद्र बनना चाहिए जहां सब सदस्य बेहतर समाज और दुनिया बनाने में अपनी भूमिका की तैयारी करें। यही स्थिति स्कूल की है। एक स्कूल का सबसे महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन यह नहीं है कि वहां से कितने डाक्टर, इंजीनियर, उच्च अधिकारी या नेता निकले। उसका सबसे बुनियादी मूल्यांकन तो यह है कि वहां शिक्षित कितने बच्चों ने सादगी, संतोष, सहयोग, समता, स्नेह, सेवा, करुणा के सबसे बुनियादी जीवन-मूल्य ग्रहण किए, कितनों ने आपसी सहयोग से सबकी भलाई के लिए कार्य करने को अपना उद्देश्य बनाया। जहां भी और जितना संभव हो, हम इन जीवन मूल्यों के प्रसार के लिए कार्य करते रहें। इसके लिए मुहल्ले और गांव स्तर के प्रयास आरंभ करें जो आगे चल कर ऐसे अन्य प्रयासों से जुड़ते जाएं, झरने नदियों में मिल कर सागर की ओर बढ़ते रहें।

बदमाशी की सेल

मीडिया

सुधीश पचौरी

> पिछले दिनों कई भीषण जानलेवा कार एक्सीडेंट जब हुए हैं तो उनके लिए अक्सर ऐसी कारों के ऐसे विज्ञापन हमें दोषी नजर आने लगते हैं। एक ओर बहुत से लोग तेज कारों को बेचते हैं। दूसरे बहुत से लोग, कुछ कारों को 'बैड आस' कह कर बेचते नजर आते हैं

काला सूट पहने, हेकड़ी से भरा एक हीरो एक नई कार की 'टेस्ट ड्राइव' करके आता है कि सेल्समैन पूछता है कि 'टेस्ट ड्राइव' कैसी रही? हीरो हिकारत से भर कर कहता है: 'बैड आस'। हीरो अपनी 'एपल वॉच' को टच करता है तो 'कार' तुरंत गुर्राती हुई स्टार्ट हो जाती है। सेल्समैन घबरा कर पीछे हट जाता है।

'बैड आस' अंग्रेजी का मुहावरा है, जिसका मतलब है बदमाश, रफ टफ, घमंडी, दुलत्तीमार, घटिया, हरामी...जाहिर है कि ये सारे विशेषण 'दुर्गुणात्मक' हैं, 'नकारात्मक' हैं जो किसी खलनायक के लिए ही इस्तेमाल हो सकते हैं। यही विशेषण एक कार के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं। 'बैड आस' इसीलिए 'नकारात्मक कैचलाइन' है जो कार के लिए इस्तेमाल की जा रही है। ऐसे ही ब्रांड की कार फिल्म 'एनिमल' में दिखती है जिसमें बैठ कर, 'बैड आस' कहने वाला हीरो बीच सड़क पर एंट्री मारता है जहां 'एनिमल' का 'असली हीरो' खड़ा है। 'बैड आस' कहने वाला हीरो फिल्म में गूंगा बना है। बोल नहीं सकता जबकि एनिमल का असली हीरो 'बैड आस' को अपने बाप पर जानलेवा हमला करने का अपराधी मानता है। इसलिए उसे खत्म करने आया है। यों ये दोनों चचेरे या ममेरे भाई हैं।

दोनों के बीच जम के फाइट होती है। तभी मालूम होता है कि 'बैड आस' कहने वाला ही दरअसल, गूंगा है। बोल नहीं सकता। फाइट के अंत में 'एनीमल' का असली हीरो, 'बैड आस' कहने वाले हीरो को जान से मार देता है...इस प्रसंग से अब तक साफ हो गया होगा कि 'बैड आस' का मतलब क्या है और कार को 'बैड आस' क्यों कहा जा रहा है। इसका कारण 'मारकेटिंग रणनीति' है। अब तक महंगी कारों को उनकी गुणवत्ता को बता कर बेचा जाता था कि यह कम तेल में ज्यादा माइलेज देती है, सीटें आरामदेह हैं, 'सुरक्षा बैलून' युक्त हैं और बॉडी मजबूत है। कोई कहता कि ये कार ले ले लो। इसमें इतनी जगह है कि पूरा परिवार पिकनिक मनाने जा सकता है। इसके 'शॉक एब्जॉर्बर' इतने बढ़िया हैं कि धचके महसूस ही नहीं होते। इतने गियर हैं, कुछ ही देर में टॉप स्पीड ले लेती है, और ब्रेक बेहद 'भरोसेमंद' हैं। और चूंकि हर कार ऐसी ही पॉजिटिव सूचनाओं और उपयोगिता बताते हुए बेची जाती है और इस तरह कुछ पहले तक एक कार से दूसरी कार में फर्क करना मुश्किल दिखने लगा था, लेकिन अब मारकेटिंग वालों ने एक कार को दुर्गुणात्मक विशेषण से नवाजा है ताकि लोगों का इस कार की ओर ध्यान जाए। उसे उसकी 'बदमाशी' के लिए खरीदा जाए। कई कारें इन दिनों 'थ्रिल' के लिए भी बेची-खरीदी जाती हैं। कुछ मजबूती के लिए, कुछ अपनी तेजी के लिए बेची जाती हैं जबकि आम शहर के भीतर कार की अधिकतम स्पीड चालीस से साठ किमी. प्रति घंटे की होती है, लेकिन जब कार का कोई 'मारकेटर' कहता है कि इसमें 'थ्रिल' है, कि जरा सी जगह में 'ब्रेक' लगा सकती है, कि पहाड़ों पर फर्राटे से दौड़ सकती है तो कोई क्या कर सकता है। एक ओर शहर के भीतर चालीस से साठ किमी. प्रति घंटे की स्पीड की सीमा, उधर 'हाईवे' पर अस्सी से सौ किमी. की सीमा और फिर कार को 'फर्राटे' से चलाने के लिए उकसाना...पूरा पैकेज है।

पिछले दिनों कई भीषण जानलेवा कार एक्सीडेंट जब हुए हैं तो उनके लिए अक्सर ऐसी कारों के ऐसे विज्ञापन हमें दोषी नजर आने लगते हैं। एक ओर बहुत से लोग तेज कारों को बेचते हैं। दूसरे बहुत से लोग, कुछ कारों को 'बैड आस' कह कर बेचते नजर आते हैं और जब वे किसी को कुचल कर, किसी से टकरा कर लोगों को आहत कर डालती हैं तो अफसोस करते हैं कि हाय ये क्या हुआ? ऐसी हर कार महंगी होती है जिसके लिए बहुत सा पैसा खर्च करने वाले ही 'स्पीड का थ्रिल' एंजाय कर सकते हैं। जितनी स्पीड उतना ही थ्रिल, जितनी 'बैड आस' उतनी ही आकर्षक और कार के बदमाश होने के कारण आपके बदमाशप्रिय होने का गर्व कि देखा कि इनकी कार कितनी दुष्ट भयावनी है। इस तरह आजकल की कार मारकेटिंग 'बैड आस' की 'बदमाश' तक को आदर्श की तरह पेश करती है और जब ऐसी कोई कार किसी को मारती-उड़ाती चली जाती है तो कोई भी कह सकता है कि सब 'बैड आस' की कारस्तानी है वही इसकी जिम्मेदार है। 'बैड आस' कार का स्टार्ट के साथ ही जोर से 'गुर्राना' उसकी 'गुणवत्ता' की निशानी बताई जा रही है। मानो किसी की दुष्टता, किसी का बुरापन, हरामीपन जैसे दुर्गुण ही उसके सद्गुण हों! कार बेचना न हुआ बदमाशी का आदर्शीकरण हुआ! क्या इसकी आलोचना नहीं की जानी चाहिए?

दोस्ती चाहती हैं आक्रामक प्रजातियां

जलवायु

डॉ. सत्यवान सौरभ

> लैंटाना के मामले में देखा गया है, जिसे ब्रिटिश दक्षिण अमेरिका से भारत लाए। लैंटाना का तेजी से प्रसार हुआ है, जो जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क आदि जैसे कई राष्ट्रीय उद्यानों में देसी वनस्पतियों को मात देकर और कृषि फसलों और स्थानीय जैव-विविधता को खतरा है

आक्रामक प्रजातियों को अक्सर पारिस्थितिक तंत्र के हानिकारक विघटनकारी के रूप में देखा जाता है। हालांकि, जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में कुछ आक्रामक प्रजातियां पर्यावरणीय लाभ प्रदान कर सकती हैं। हालांकि वे मूल जैव-विविधता के लिए जोखिम उत्पन्न करती हैं, लेकिन नई परिस्थितियों में जल्दी से अनुकूलन करने की उनकी क्षमता कभी-कभी पारिस्थितिक तंत्र को स्थिर करने या कार्बन पृथक्करण को बढ़ाने में मदद कर सकती है। विश्व प्राणी समुदाय में आक्रामक प्रजातियों को अक्सर संदेह की दृष्टि से देखा जाता है, जिससे देशी पारिस्थितिकी तंत्र पर उनके प्रभाव के बारे में व्यापक स्तर पर गलत धारणा बन जाती है।

इस श्रेणी में गैर-देशी 'खरपतवार' से लेकर कीड़ों और जलीय आक्रमणकारियों तक की कई प्रजातियों को गलत समझा जाता है। अक्सर उनका गलत प्रबंधन किया जाता है। पहचानना महत्त्वपूर्ण है कि जानबूझकर या अनजाने में पेश की गईं अधिकांश प्रजातियां देशी पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरा पैदा नहीं करती हैं। आक्रामक प्रजातियां वे पौधे, कीड़े और जलीय जीव हैं, जो अपने वर्तमान आवासों के मूल निवासी नहीं हैं। अक्सर नये पारिस्थितिकी तंत्रों में फैल जाते हैं, जिससे स्थानीय जैव-विविधता बाधित होती है। इन प्रजातियों को गैर-देशी या पेश की गईं प्रजातियां भी कहा जाता है। आक्रामक प्रजातियों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पहली आकस्मिक आगमन प्रजातियां अक्सर अचानक और अनजान तरीके से आती हैं, जैसे कि जेबरा मसल, जिसे ब्लैक सी से दूसरे क्षेत्रों में जहाजों में बैलस्ट पानी के माध्यम से पहुंचाया गया था, जहां यह तब से स्थानीय बुनियादी ढांचे के लिए बड़ा खतरा बन गया है। दूसरी आक्रामक प्रजातियां जानबूझकर पेश की जाती हैं, जैसा कि लैंटाना के मामले में देखा गया है, जिसे ब्रिटिश दक्षिण अमेरिका से भारत लाए। लैंटाना का तेजी से प्रसार हुआ है, जो जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क आदि जैसे कई राष्ट्रीय उद्यानों में देसी वनस्पतियों को मात देकर और कृषि फसलों और स्थानीय जैव-विविधता को खतरा है। जलवायु परिवर्तन की घटनाओं में वृद्धि के साथ ही आक्रामक प्रजातियों के साथ हमारे संबंध भी विकसित हो रहे हैं। जलवायु परिवर्तन को रोकने में आक्रामक प्रजातियों के कार्बन पृथक्करण में इनकी भूमिका है।

कुछ आक्रामक पौधों की प्रजातियों में महत्त्वपूर्ण मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने की क्षमता होती है, जिससे जलवायु परिवर्तन को कम करने में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए: प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा भारत में आक्रामक प्रजाति, कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करती है, जो निम्नीकृत भूमि में कार्बन भंडारण में योगदान करती है। स्पार्टिना अल्टरनिफ्लोरा जैसी आक्रामक प्रजाति तटीय मिट्टी को स्थिर कर सकती हैं, कटाव रोक सकती हैं और समुद्र के बढ़ते स्तर के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों की रक्षा कर सकती हैं। कुछ आक्रामक प्रजातियां जैसे साइबेरियाई एल्म, अधिक सूखा-प्रतिरोधी हैं एवं जहां देशी प्रजातियां विफल हो जाती हैं, वहां वनस्पति आवरण प्रदान करती हैं, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखा जाता है। जलवायु परिवर्तन के कारण देसी पौधों की कमी होने पर आक्रामक पौधों की प्रजातियां परागणकों के लिए खाद्य संसाधन प्रदान कर सकती है। उदाहरण के लिए: पूर्वी अमेरिका में लोनीसेरा जैपोनिका (जापानी हनीसकल) कुछ मौसमों के दौरान मधुमक्खियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण सोत बन गया है। उन क्षेत्रों में जहां मूल जैव-विविधता पहले ही नष्ट हो चुकी है, आक्रामक प्रजातियाँ पारिस्थितिक अंतराल को भर सकती हैं। उदाहरण के लिए: दक्षिण अफ्रीका में आक्रामक नीलगिरी के पेड़ ने स्थानीय प्रजातियों के लिए आवास की मुहैया करते हुए, वनों की कटाई वाले क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने में मदद की है।

राष्ट्रीय हरित भारत मिशन बंजर क्षेत्रों में पुनर्वनीकरण पहल का समर्थन करता है। समय पर हस्तक्षेप सुनिश्चित करते हुए आक्रामक प्रजातियों के प्रसार एवं प्रभाव को ट्रैक करने के लिए निरंतर निगरानी प्रणाली स्थापित करना। आक्रामक प्रजातियां महत्त्वपूर्ण चुनौतियां पेश करती हैं, कुछ जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में लाभ प्रदान कर सकती हैं, जैसे पारिस्थितिक तंत्र को स्थिर करना एवं कार्बन पृथक्करण को बढ़ाना।

क्या नौकरी की कीमत जिंदगी है

वर्क प्लेस

सोनम लववंशी

पुणे की 26 वर्षीय एना, अर्नस्ट एंड यंग (ईवाई) जैसी प्रतिष्ठित कंपनी में काम करती थीं। अपने स्कूल और कॉलेज की टॉपर थीं और कम उम्र में सीए क्वालीफाई करके इस बड़ी कंपनी का हिस्सा बनीं। उनके माता-पिता का सपना था कि उनकी बेटी एक अच्छे संस्थान में काम करे और भविष्य को उज्ज्वल बनाए। लेकिन किसी ने भी नहीं सोचा था कि वह कंपनी उनके लिए अवसरों का द्वार नहीं, बल्कि उनकी जान लेने का कारण बनेगी। अत्यधिक कार्यभार और मानसिक दबाव के चलते एना की हार्ट अटैक से मौत हो गई। सवाल उठाता है, क्या काम के दबाव से किसी की मौत हो सकती है?

एना की मां ने ईवाई के अध्यक्ष को पत्र लिख कर अपनी बेटी की मौत के लिए न्याय की मांग की है। उन्होंने बताया कि एना को इतना काम सौंपा जाता था कि वह चैन से सो भी नहीं पाती थी। देर रात तक मैनेजर कॉल करके रिपोर्ट तैयार करने का दबाव डालते थे। सवाल उठता है, क्या कंपनियों को कर्मचारियों पर इतना दबाव डालने का अधिकार है कि वे मानसिक-शारीरिक रूप से टूट जाएं? आखिर, ऐसे में कहां गए संवैधानिक अधिकार और कहां गुम हो गया नैतिकतावादी दृष्टिकोण? जिस तरीके के सवाल या यूं कहें आरोप एना की मां कंपनी पर लगा रही हैं, तो यह वक्त है सचेत हो जाने का, क्योंकि कोई भी कंपनी या काम किसी के जीवन से बढ़कर तो नहीं?

वैसे अक्सर कंपनियां इस बात को अनदेखा कर देती हैं। कि कर्मचारियों पर अत्यधिक काम का दबाव न सिर्फ उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि उनकी शारीरिक सेहत के लिए भी हानिकारक होता है। वर्कप्लेस स्ट्रेस को नजरअंदाज करने का परिणाम कितना भयावह हो सकता है, यह एना की दुखद मौत से यह तो स्पष्ट हो ही गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2016 में लंबे समय तक काम के दबाव के चलते 7 लाख 45 हजार लोगों की मौत हो गई। 55 घंटे या उससे अधिक समय तक काम करने से स्ट्रोक का खतरा 35 प्रतिशत और कोरोनरी हार्ट डिजीज का खतरा 17 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। क्या कंपनियों का टॉक्सिक वर्क कल्चर कर्मचारियों की सेहत के लिए घातक हो सकता है?

आज खासकर कॉरपोरेट जगत में कर्मचारियों पर काम का दबाव इतना बढ़ गया है कि उनकी निजी जिंदगी और सेहत बुरी तरह प्रभावित हो रही है। भारत जैसे देश, जहां वर्किंग ऑवर्स का औसत अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है, में कर्मचारी मानसिक और शारीरिक तनाव से जूझ रहे हैं। एना की मौत ने इस टॉक्सिक कल्चर को उजागर किया है, जहां कर्मचारियों को आराम और मानसिक शांति से वंचित किया जा रहा है। अक्सर युवा कर्मचारी अपने बॉस या सीनियर्स को काम के दबाव के बारे में बताने से हिचकिचाते हैं। डरते हैं कि कहीं नौकरी न चली जाए। एना की मौत ने सवाल खड़ा किया है कि क्या वर्कप्लेस पर तनाव और टॉक्सिक वर्क कल्चर को खत्म करने के लिए किसी प्रकार का बदलाव जरूरी नहीं है? क्या कंपनियों को कर्मचारियों के मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य की देखभाल नहीं करनी चाहिए? क्या कंपनियों को वर्किंग ऑवर्स और काम के दबाव को नियंत्रित करने के लिए सख्त नीतियों की आवश्यकता नहीं है? जरूरी है कि टॉक्सिक वर्क कल्चर को समाप्त किया जाए।

बढ़ती गर्मी और दुश्वारियों का दौर

प्रकृति

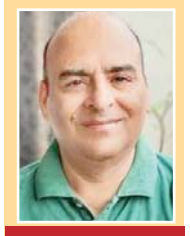

पंकज चतुर्वेदी

दुनिया में सबसे अधिक बरसात के लिए मशहूर मेघालय के चेरापूंजी और मौवसिनराम में अब छाते बारिश से बचने की जगह तीखी गर्मी से बचने को इस्तेमाल हो रहे हैं। यहां 33 डिग्री तापमान स्थानीय निवासियों के लिए असहनीय हो गया है। उत्तराखंड में देहरादून में अधिकतम तापमान 35 डिग्री और पंतनगर का अधिकतम तापमान 37.2 होना असामान्य है। कश्मीर में भी इस समय अकेले चुनावी तपिश नहीं, बल्कि मौसमी तपिश लोगों को बेहाल किए है। यहां इस मौसम के तापमान से कोई 6.6 डिग्री अधिक गर्मी दर्ज की गई है और हालात लू जैसे हैं। कुपवाड़ा में 33.3 , पहलगाम में 29.5 और गुलमार्ग में 23. 6 तापमान असहनीय सा है। हिमाचल प्रदेश में सितम्बर के महीने में जून सी गर्मी है। ऊना समेत प्रदेश के पांच जिलों में तापमान 35 डिग्री सेल्सियस को पार कर गया है। कांगड़ा, मंडी, चंबा और बिलासपुर में भी तापमान 35 डिग्री पर पहुंच रहा है। सामान्य तौर पर सितम्बर माह में हल्की सर्दी का दौर शुरू हो जाता है लेकिन इस बार गर्मी का असर देखने को मिल रहा है। शिमला में भी तापमान 28 डिग्री सेल्सियस बना हुआ है जो सामान्य से कहीं अधिक है।

यह संभलने का वक्त है क्योंकि जलवायु परिवर्तन का असर सबसे संवेदनशील नैसर्गिक स्थल-हिमाचल की गोद में गहरा होता जा रहा है। गर्मी से लोगों की सेहत पर तो बुरा असर हो ही रहा है, लगातार गर्मी ने पानी की मांग बढ़ाई है और संकट भी। गर्मी से शुद्ध पेयजल की उपलब्धता घटी है। प्लास्टिक बोतलों में बिकने वाला पानी हो या आम लोगों द्वारा सहेज कर रखा गया जल, तीखी गर्मी ने प्लास्टिक बोतल में उबले पानी को जहर बना दिया। पानी का तापमान बढ़ना तालाब-नदियों की सेहत खराब कर रहा है। एक तो वाष्पीकरण तेज हो रहा है, दूसरा पानी अधिक गरम होने से जल में विकसित होने वाले जीव-जंतु और वनस्पति मर रही हैं। तीखी गर्मी भोजन की पौष्टिकता की भी दुश्मन है। तीखी गर्मी में गेहूं के दाने छोटे हो रहे हैं, और उनके पौष्टिक गुण घट रहे हैं। तीखी गर्मी में पका हुआ खान जल्दी सड़-बुस रहा है। फल-सब्जियां जल्दी खराब हो रही हैं खासकर गर्मी में आने वाले वे फल जिन्हें केमिकल लगा कर पकाया जा रहा है, इतने उच्च तापमान में जहर बन रहे हैं, और उनका सेवन करने वालों के अस्पताल का बिल बढ़ रहा है।

इस बार की गर्मी की एक और त्रासदी है कि इसमें रात का तापमान कम नहीं हो रहा, चाहे पहाड़ हो या मैदानी महानगर, बीते दो महीनों से न्यूनतम तापमान सामान्य से पांच डिग्री तक अधिक रहा ही है। खासकर सुबह चार बजे भी लू का अहसास होता है और इसका कुप्रभाव यह है कि बड़ी आबादी की नींद पूरी नहीं हो पा रही। खासकर स्लम, नालों आदि के किनारे रहने वाले मेहनतकश लोग उनींदे से सारे दिन रहते हैं, और इससे उनकी कार्यक्षमता पर तो असर हो ही रहा है, शरीर में भी कई विकार या रहे हैं। जो लोग सोचते हैं कि वातानुकूलित संयत्र से वे इस गर्मी की मार से सुरक्षित हैं, तो यह बड़ा भ्रम है। लंबे समय तक एयर कंडीशनर वाले कमरों में रहने से शरीर की नस-नाड़ियों में संकुचन, मधुमेह और जोड़ों के दर्द का खमियाजा ताजिंदगी भोगना पड़ सकता है।

मार्च-24 में संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने भारत में एक लाख लोगों के बीच सर्वे कर एक रिपोर्ट में बताया है कि गर्मी/लू के कारण गरीब परिवारों को अमीरों की तुलना में पांच फीसद अधिक आर्थिक नुकसान होगा क्योंकि आर्थिक संपन्न लोग बढ़ते तापमान के अनुरूप अपने कार्य को ढाल लेते हैं, जबकि गरीब ऐसा नहीं कर पाते।

भारत के बड़े हिस्से में दूरस्थ अंचल तक लगातार बढ़ता तापमान सामाजिक-आर्थिक त्रासदी-असमानता और संकट का कारक भी बन रहा है। अकेले शरीर को नहीं प्रभावित कर रहा, बल्कि इंसानी कार्यक्षमता को भी प्रभावित कर रहा है। गर्मी में पानी-बिजली की मांग बढ़ती है, उत्पादन लागत भी बढ़ती है। सवाल यह है कि प्रकृति के इस बदलते रूप के सामने इंसान क्या करे? समझना होगा कि मौसम के बदलते मिजाज को जानलेवा हद तक ले जाने वाली हरकतें तो इंसान ने ही की हैं। यह भी जान लें कि प्रकृति की किसी भी समस्या का निदान हमारे अतीत के ज्ञान में ही है, आधुनिक विज्ञान हल नहीं खोज सकता। समय आ गया है कि इंसान बदलते मौसम के अनुकूल अपने कार्य का समय, हालात, भोजन, कपड़े आदि में बदलाव करे। खासकर पहाड़ों पर विकास और पर्यटन-इन दो मसलों पर नये सिरे से विचार करना होगा। शहर के बीच बहने वाली नदियां, तालाब, जोहड़ आदि निर्मल और अविरल रहेंगे तो बढ़ी गर्मी को सोखने में सक्षम होंगे खासकर बिसराए जा चुके कुएं और बावड़ियों को जीलाने से जलवायु परिवर्तन की त्रासदी से बेहतर तरीके से निबटा जा सकता है। आवास-कार्यालयों की निर्माण तकनीक और सामग्री में बदलाव, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा, बहुमंजिला भवनों का इको फ्रेंडली होना, ऊर्जा संचयन, शहरों की तरफ पलायन रोकना, ऑर्गेनिक खेती सहित कुछ ऐसे उपाय हैं, जो बहुत कम व्यय में देश को भट्ठी बनने से बचा सकते हैं।

> संभलने का वक्त है क्योंकि जलवायु परिवर्तन का असर सबसे संवेदनशील नैसर्गिक स्थल-हिमाचल की गोद में गहरा होता जा रहा है। गर्मी से लोगों की सेहत पर तो बुरा असर हो ही रहा है, लगातार गर्मी ने पानी की मांग बढ़ाई है और संकट भी। गर्मी से शुद्ध पेयजल की उपलब्धता घटी है। प्लास्टिक बोतलों में बिकने वाला पानी हो या आम लोगों द्वारा सहेज कर रखा गया जल, तीखी गर्मी ने प्लास्टिक बोतल में उबले पानी को जहर बना दिया है। पानी का तापमान बढ़ना तालाब-नदियों की सेहत खराब कर रहा है। एक तो वाष्पीकरण तेज हो रहा है, दूसरा पानी अधिक गरम होने से जल में विकसित होने वाले जीव-जंतु और वनस्पति मर रही हैं। तीखी गर्मी भोजन की पौष्टिकता की भी दुश्मन है

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
। समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750

वर्ष-34, अंक 53 आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

भंवर में फंसी सेबी चीफ

अपने मजबूत नेतृत्व और सुधारवादी रुख के लिए जानी जाने वाली भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की पहली महिला अध्यक्ष माधबी पुरी बुच आरोपों के भंवर में पहले ही बुरी तरह फंसी हुई हैं लेकिन अब उनका संकट और भी बढ़ गया है। क्योंकि सरकारी खर्च पर संसदीय निगरानी रखने वाली लोक सेवा समिति (पीएसी) ने उन्हें और वित्त मंत्रालय के अधिकारियों को 24 अक्तूबर को पेश होने के लिए कहा है। अब पीएसी अमेरिकी शार्टसेलर हिंडनबर्ग रिसर्च द्वारा बुच के खिलाफ लगाए गए आरोपों से सम्बन्धित सवाल पूछेगी। समिति के सदस्य अडाणी ग्रुप ऑफ कम्पनीज के खिलाफ आरोपों की जांच में सेबी की कार्यप्रणाली को लेकर भी सवाल खड़े करेंगे। लोक लेखा समिति के विपक्षी सदस्यों ने जहां माधबी पुरी को बुलाने की मांग की थी, वहीं भाजपा सदस्यों ने इस पर आपत्ति जताते हुए कहा था कि पीएसी सेबी या किसी अन्य नियामक संस्था के प्रदर्शन की समीक्षा तभी कर सकती है जब संसद द्वारा वित्त का दुरुपयोग किया गया हो लेकिन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता के.सी. वेणुगोपाल की अध्यक्षता वाली टीएसी ने पहली छमाही के लिए 24 अक्तूबर की बैठक का एजैंडा पेश कर दिया है, जिसमें सेबी के प्रदर्शन की समीक्षा भी शामिल है। सेबी की अध्यक्ष के खिलाफ एक के बाद एक लगे वित्तीय कदाचार और हितों के टकराव के आरोपों से उनकी और सेबी की विश्वसनीयता खतरे में पड़ चुकी है।

पीएसी ने संसदीय कानून द्वारा बनाए गए निकायों के प्रदर्शन की समीक्षा को एक विषय के रूप में शामिल किया है। आरोपों का सिलसिला तब शुरू हुआ जब हिंडनबर्ग ने माधबी पुरी बुच पर आरोप लगाए कि अडाणी ग्रुप के विदेशी फंड में माधबी पुरी और उनके पति की हिस्सेदारी है और यह भी कहा गया कि अडाणी ग्रुप और सेबी के बीच मिलीभगत है। इसके बाद एक और आरोप लगा कि माधबी पुरी ने अपने सात साल के कार्यकाल के दौरान एक कंसल्टेंसी फर्म से भारी-भरकम कमाई करना जारी रखा जो किसी नियामक अधिकारियों के लिए नियमों का उल्लंघन था। अगस्त 2024 में जारी हिंडनबर्ग रिपोर्ट ने संकेत दिया कि माधबी पुरी के पास अडाणी समूह के संस्थापक के भाई विनोद अडाणी द्वारा नियंत्रित फंडों में व्यक्तिगत हिस्सेदारी थी। माधबी पुरी का संबंध बरमुडा और मॉरिशस जैसे टैक्स हैवन देशों में स्थित फंडों से था जिससे अडाणी की जांच में सेबी की निष्पक्षता पर संदेह पैदा होता है। विपक्षी दल कांग्रेस ने भी सेबी चीफ पर 2017 से 2024 के बीच आईसीआईसीआई बैंक से 1680 करोड़ हासिल करने के आरोप लगाए थे।

कांग्रेस ने दावा किया था कि बुच ने सेबी चीफ रहते इतनी सैलरी नहीं पाई जितने उन्हें प्राइवेट बैंक से मिल रही थी। हालांकि बैंक ने इन सभी आरोपों का खंडन करते हुए कहा कि बैंक उन्हें रिटायरमैंट बेनिफिट दे रहा था। यद्यपि माधवी पुरी और उनके पति सब आरोपों को निराधार बताते रहे हैं लेकिन तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा ने माधवी पुरी के खिलाफ लोकपाल में शिकायत दर्ज कराई और आरोप लगाया कि उन्होंने अनुचित आचरण किया और भारत के राष्ट्रीय हितों को खतरे में डालते हुए भ्रष्टाचार में शामिल हुईं। महुआ ने जांच के लिए सीबीआई और ईडी को मामला भेजने की मांग की।

कांग्रेस ने दावा किया था कि बुच ने सेबी चीफ रहते इतनी सैलरी नहीं पाई जितने उन्हें प्राइवेट बैंक से मिल रही थी। हालांकि बैंक ने इन सभी आरोपों का खंडन करते हुए कहा कि बैंक उन्हें रिटायरमैंट बेनिफिट दे रहा था। यद्यपि माधबी पुरी और उनके पति सब आरोपों को निराधार बताते रहे हैं लेकिन तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा ने माधबी पुरी के खिलाफ लोकपाल में शिकायत दर्ज कराई और आरोप लगाया कि उन्होंने अनुचित आचरण किया और भारत के राष्ट्रीय हितों को खतरे में डालते हुए भ्रष्टाचार में शामिल हुईं। महुआ ने जांच के लिए सीबीआई और ईडी को मामला भेजने की मांग की। संसद की लोक लेखा समिति को वर्ष 1921 में भारत सरकार अधिनियम 1919 के माध्यम से गठित किया गया था, जिसे मोंटफोर्ड सुधार भी कहा जाता है। लोक लेखा समिति को काफी अधिकार प्राप्त हैं। संसदीय लोकतंत्र में जवाबदेही शासन की धुरी है। संसद के जनप्रतिनिधियों की समिति जो लोक लेखाओं की जांच करती है, महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोक लेखा समिति को अपना विवेक दिखाने की बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह संसाधनों को बढ़ाने के बेहतर तरीके खोजने में मदद करती है।

कई दशकों से पीएसी का रिकॉर्ड सराहनीय रहा है। पूर्व राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन और तीन भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों अटल बिहारी वाजपेयी, पी.वी. नरसिम्हा राव और इन्द्र कुमार गुजराल ने भी अपनी सेवाएं पीएसी में दी हैं। क्योंकि केन्द्र सरकार में पिछले 10 वर्षों से पूर्ण बहुमत की सरकार है। इसलिए संसदीय समितियों में भी सत्तारूढ़ दल का वर्चस्व रहा है। हालांकि अब दृश्य बदल गया है। विपक्ष पहले से कहीं ज्यादा अधिक मजबूत है। 2जी घोटाले में भी पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने पीएसी के सामने पेश होने की पेशकश की थी। इससे पीएसी का महत्व स्पष्ट हो जाता है। हर नियामक से उम्मीद की जाती है कि वह ईमानदार और निष्पक्षता से काम करेगा। अगर नियामक तंत्र ही भ्रष्टाचार का शिकार है तो निवेशकों के हितों की रक्षा कौन करेगा। भारत का पूंजी बाजार दुनिया के पांच शीर्ष बाजारों में से एक है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए संसाधन जुटाने का बड़ा माध्यम है। बाजार में आम लोगों के निवेश को देखते हुए यह जरूरी है कि सेबी की साख कायम हो। पीएसी को भी सेबी की कार्यप्रणाली को लेकर दूध का दूध और पानी का पानी करना होगा। सेबी की जांच निष्पक्ष रूप से होनी चाहिए ताकि नियामक तंत्र पर लोगों का भरोसा कायम हो।

आदित्य नारायण चोपड़ा
Adityachopra@punjabkesari.com

सच जेलों के अंदर घुटता है...

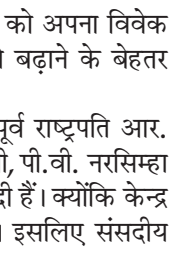

अब सच्चे लोगों का हाल कुछ यूं बेदर्द नजर आता है,
सच जेलों के अंदर घुटता है और झूठ बेखौफ पैरोल पाता है,
इस राजनीतिक उठा-पटक में अब कौन किसका वफादार बन पाता है,
क्यों मतदाता हर बार के चुनाव के बाद खुद को ठगा हुआ पाता है...!!

गीता पाढा

राकांपा नेता की चाकू घोंपकर हत्या

मुंबई, (भाषा) अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के एक नेता की दक्षिण मुंबई में अज्ञात लोगों ने चाकू घोंपकर हत्या कर दी। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। एक अधिकारी ने बताया कि शुक्रवार देर रात भायखला के म्हाडा कॉलोनी इलाके में सचिन कुर्मी (43) पर धारदार हथियारों से हमला किया गया। उन्होंने बताया कि कुर्मी को जेजे अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

अधिकारी ने बताया कि हमले में दो से तीन लोग शामिल थे। उन्होंने बताया कि भारतीय न्याय संहिता की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच के लिए टीम गठित कर दी गयी हैं।

5 सितारा होटल में रशियन बाला संग पकड़े गए मंत्री जी

मिर्च मसाला
त्रिदीब रमण
gossipguru.in

'उम्र ढल कर सफेद हुई है, पर न जाने बावरा मन क्यों अब भी अर्जियां लिखता है इश्क है, आग है, बदन है, तपन है इस पर भला कौन अपनी मर्जियां लिखता है'

यह कोई दो रोज पहले की ही तो बात है जब कांग्रेस की उत्साही प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने एक्स पर एक प्रतीकात्मक पोस्ट करते हुए इशारों-इशारों में बताया, भाजपा-राजस्थान-दिल्ली-ली मेरिडियन-रूस तो सियासी हलकों में सचमुच कोहराम मच गया। रही सही कसर आरजेडी के हेंडल से डाली गई एक पोस्ट ने पूरी कर दी जिसमें इस पूरे मामले का खुलासा ही था। आइए अब मामले की तह में लौटते हैं। इस प्रदेश के इस उत्साही मंत्री जी के कहे-अनकहे किस्सों से पूरा सोशल मीडिया अटा पड़ा है। हाल में ही एक 'इन्वेस्टमेंट' यात्रा का हवाला देते हुए मंत्री जी अपने कुछ मुंहलगे अधिकारियों के साथ कोरिया व जापान की यात्रा पर निकल गए, उस यात्रा में भी निवेश से कहीं ज्यादा इनके 75 हजार के जूतों व 35 हजार के चश्मे की चर्चा रही।

अभी पता नहीं चल पाया है कि मंत्री जी इन दोनों देशों से अपने संबंधित राज्य के लिए कितना विदेशी निवेश ला पाने में कामयाब रहे, पर मेहनत पूरी की उन्होंने। इतनी कि जब लौट कर स्वदेश आए तो थक कर चूर हो चुके थे, सो तन-मन में नई स्फूर्ति जगाने की चाह में नई दिल्ली के एक चर्चित पंचतारा होटल में एक कमरा बुक करा एक चर्चित रशियन बाला की सेवाएं प्राप्त कर लीं। संयोग से यह रशियन बाला कुछ कारणों से पहले से ही दिल्ली पुलिस के 'सर्विलांस' पर थी, सो बाला के पीछे-पीछे दिल्ली पुलिस भी मंत्री के कमरे तक पहुंच गयी और कहावतों के अनुसार उन्हें 'रंगे हाथों' पकड़ भी लिया गया, तब मजबूरन मंत्री जी को अपना परिचय उजागर करना पड़ा।

बात पुलिस कमिश्नर तक जा पहुंची, कमिश्नर साहब ने तुरंत सीएम ऑफिस में अपने एक परिचित अधिकारी को फोन कर पूछा-'क्या यह वाकई राज्य का कोई मंत्री है?' जवाब 'हां' में था। बात खुली तो दूर तक गई, राज्य के सीएम ने तुरंत फोन कर कमिश्नर साहब से मनुहार की-प्लीज, पहचान उजागर मत करना, राज्य की बदनामी होगी पुलिस फाईल में ऐसा ही हुआ, पर खबरों के तो पंख होते हैं जाने किस रोशनदान से बाहर निकल कर उसने खुले आसमां में परवाज भर ली। बात भाजपा शीर्ष तक पहुंच गई है, ऊपर से आदेश प्राप्त होने के बाद श्री नड्डा ने भी राज्य के सीएम को तलब कर मंत्री जी का काला चिट्ठा पेश करने को कहा है, मुमकिन है कि आने वाले कुछ दिनों में मंत्री जी की छुट्टी हो जाए। पर मंत्री जी जिस गरीब व उपेक्षित जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं पार्टी उस वोट बैंक को भी नाराज़ करने का जोखिम नहीं उठाना चाहती, सो जो भी होगा फूंक-फूंक कर कदम रखा जाएगा।

वैसे भी पार्टी हाईकमान को पता चला है कि मंत्री जी बहुत पहले से राज्य के सीएम के सिरदर्द बने हुए हैं। अपने कुछ पसंदीदा अधिकारियों का कॉकस बना कर वे मोटी मलाई काट रहे हैं, उनकी बार-बार की दुबई यात्रा को भी इसी संदर्भ से जोड़ कर देखा जा रहा है। जब सीएम को मंत्री जी के 'उगाही अभियान' का पता चला तो उन्होंने मंत्री जी के एक बेहद चहेते अधिकारी का उनके विभाग से बाहर ट्रांसफर कर दिया, पर मंत्री जी का जलवा देखिए अधिकारी की कुछ दिनों बाद ही उनके पुराने विभाग में वापसी हो गई। पर ताजा घटनाक्रमों में मंत्री जी की उद्दात भावनाओं की वापसी संभव नहीं लगती क्योंकि अबकि बार बात दिल्ली तक पहुंच चुकी है, जो दुनिया की सबसे बड़ी सियासी पार्टी में शुचिता व नैतिकता की भावना बनाए रखना चाहती है।

पवन कल्याण : ग्वेरा से गोलवलकर तक

आंध्र की राजनीति में हिंदुत्व के नए पुरोधा बन कर उभरे हैं एक्टर पवन कल्याण, जो इत्तफाक से आंध्र के उप मुख्यमंत्री और जन सेना पार्टी के अध्यक्ष भी हैं। अभी सोशल मीडिया पर तिरूपति बालाजी के लड्डू विवाद के बीचोंबीच उनका एक वीडियो सोशल मीडिया पर खासा वायरल हो रहा है जहां वे मंदिर की सीढ़ियां साफ करते नज़र आ रहे हैं और चहुंओर उद्घोष हो रहा है 'हिंदू खतरे में हैं।'

पवन पर ताजा-ताजा भगवा रंग चढ़ा है, पहले वे खालिस वामपंथी हुआ करते थे, यही चार-पांच साल पहले तक। वे तो वामपंथी के लाल रंग में बहिन जी के नीले रंग (दलित राजनीति) को भी समाहित करने की वकालत करते रहे थे क्योंकि पवन खुद कापू जाति से आते हैं जो गोदावरी डेल्टा में बसी एक शुद्र किसान जाति में शुमार होती है। सो, यह महज़ इत्तफाक नहीं कि पवन के फैंस की सबसे बड़ी तादाद दलित व मुसलमानों की थी। वे क्रांति की बात करते थे (तब) और उनकी विचारधारा क्यूबा के क्रांतिकारी नेता चे. ग्वेरा से प्रेरित थी, यहां तक कि उनकी पार्टी की गाड़ियों व पार्टी दफ्तरों में भी चे.ग्वेरा के पोस्टर नज़र आते थे। अपनी फिल्मों में भी उन्होंने 'यंग एंग्री मैन' के वैसे किरदारों को जीवंत बनाया जो समाज में व्याप्त अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है, अपना गुस्सा दिखाता है। मार्क्सवाद के विचारों से ओतप्रोत पवन ने तो अपनी कई फिल्मों में तर्कहीन हिंदू रीति-रिवाजों का मजाक भी उड़ाया है। पर राजनीति में जब वे आए तो अपना कोई खास कैडर नहीं बना पाए, पहले अपने बड़े भाई की सियासी पार्टी का सहारा लिया, फिर स्थापित क्षेत्रीय पार्टियों के साथ जुट गए। हालांकि कृष्णा-गोदावरी डेल्टा क्षेत्र में बसे लोग उच्च स्तरीय संस्कृत-तेलगु संस्कारों वाले हैं जो ज्यादातर कोनासीमा ब्राह्मणों की जाति है, पर इस क्षेत्र में कापू समुदाय का भी खासा दबदबा है। हालांकि यहां इस क्षेत्र में संघ भी काफी पहले से सक्रिय है, पर वह यहां स्थानीय तौर पर कोई बड़ा भगवा नेता उभार नहीं पाया है, कल्याण इस बहती गंगा में हाथ धोना चाहते हैं। इन्हीं मौजूदा समीकरणों को देखते हुए ही उन्होंने अपना गुरु ग्वेरा से गोलवलकर कर लिया है।

नया सेबी चीफ कौन ?

मौजूदा सेबी चीफ माधबी पुरी बुच पर कांग्रेस ने चौतरफा हमला जारी रखा हुआ है, इसकी तपिश इतनी ज्यादा है कि भगवा शीर्ष के गिरेबां पर भी पसीना है। संसद के शीतकालीन सत्र में विपक्ष ने इस मुद्दे पर मोदी सरकार को घेरने की तमाम तैयारियां कर रखी हैं। केंद्र चाहता है कि कांग्रेस के तमाम हमलों को धत्ता बताते हुए बुच अपना कार्यकाल पूरा करें। व्हिसलब्लोअर हिंडनबर्ग ने माधबी व उनके पति धवल बुच के एक उद्योगपति कनेक्शन पर सवाल उठाए थे।

कहते हैं एक उद्योग ग्रुप ने नए सेबी चीफ के लिए अपने एक बैंक के पूर्व अधिकारी का नाम चलाया है। सनद रहे कि देश के एक बैंक ने इस उद्योग समूह को भारी कर्ज दिया हुआ है। आस्ट्रेलिया में कोयला खदान संचालित करने में दुनियाभर के पर्यावरणविदों के विरोध को देखते हुए जब कोई भी वित्तीय संस्था इस ग्रुप को लोन देने को तैयार नहीं थी तो ऐसे में उक्त बैंक इस समूह के लिए तारणहार बनकर आया और कर्ज देने को राजी हो गया। अब यही उद्योग समूह अपनी पसंद के सेबी चीफ के लिए डट गया है।

...और अंत में

आंकड़ों के खेल में उलझाने में भाजपा का भी कोई सानी नहीं। अभी पिछले दिनों 'विश्व हाथी दिवस' पर एक पोस्ट सामने आया, जिसमें कहा है-भारत में हमारे लिए हाथी हमारी संस्कृति और इतिहास के अभिन्न अंग हैं, यह बड़ी खुशी की बात है कि पिछले कुछ वर्षों में उनकी संख्या में वृद्धि हुई है। दरअसल एक अंग्रेजी दैनिक में रिपोर्ट छपी कि फरवरी 2024 में हर 5 साल बाद होने वाली हाथियों की गणना की रिपोर्ट तैयार होकर प्रिंट भी हो गई, पर इसे यह कहते हुए रिलीज नहीं किया गया कि नार्थ-ईस्ट से डाटा आया ही नहीं। वैसे भी भारत में एक तिहाई हाथियों

की आबादी नार्थ-ईस्ट में ही बसर करती है। सूत्र बताते हैं कि इस रिपोर्ट को सार्वजनिक न किए जाने के पीछे वे आंकड़े हैं जो चुगली खाते हैं कि बीते कुछ वर्षों में हाथियों की आबादी 20 फीसदी तक घट गई है। अब उक्त दावे का क्या होगा?

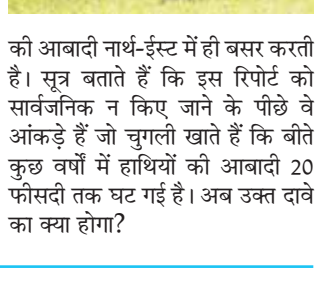

सूरत...एक अद्भुत अनुभव

श्रीमती किरण चोपड़ा
डायरेक्टर- पंजाब केसरी दैनिक समाचार लि.
चेयरपर्सन- वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब
मुख्य संरक्षिका- चौपाल
सदस्या-राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल, एकल
संरक्षिका- भारतीय लोक विकास परिषद
f/kiranchopra01
kiranchopra@punjabkesari.com
kiranchopradesk@gmail.com

आजकल हर तरफ जय माता दी हो रही है। पवित्र नवरात्रे चल रहे हैं और लोग बहुत मर्यादित एवं अनुशासित होकर माता की पूजा में लगे हुए हैं। जीवन में अनुशासन का महत्व बहुत ज्यादा है। मां दुर्गा की नौ दिन तक पूजा चलती है। इसी संदर्भ में एक और विषय नारी सुरक्षा से भी जुड़ा है। खुद मां दुर्गा ने अपनी शक्तियां दिखाते हुए नारी की सुरक्षा की थी। मेरा व्यक्तिगत तौर पर मानना है कि सामाजिक जीवन में नारी की सुरक्षा होनी ही चाहिए। नारी की सुरक्षा नारी ही करें ये जरूरी नहीं, बल्कि समाज में रहने वाले हर वर्ग का नारी सुरक्षा सुनिश्चित करने का परम कर्त्तव्य होना चाहिए। कहा भी गया है -

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते
रमन्ते तत्र देवता:

अर्थात जहां नारी की पूजा की जाती है वहां देवताओं का वास होता है। पिछले दिनों मैं एक जैन शिष्टमंडल के साथ तेरा पंथ के महान जैन संत आचार्य महाश्रमण जी के दर्शन के लिए गुजरात के शहर सूरत गई थी। जैन समाज का अनुरोध आचार्य महाश्रमण जी के दिल्ली चातुर्मास को लेकर था। दरअसल 2027 का चातुर्मास दिल्ली में हो यह अर्ज करने के लिए जैन समाज के वरिष्ठों और प्रतिष्ठित प्रतिनिधि मुझे भी विशेष रूप से अपने साथ लेकर गए थे। मैंने जैन प्रतिनिधियों के स्नेहपूर्ण व्यवहार को देखते हुए उनके साथ चलना स्वीकार किया था और स्लोगन दिया 'दिल्ली से आए हैं दिल्ली लेकर जाएंगे'। आचार्य महाश्रमण जी ने 2027 का

दिल्ली चातुर्मास स्वीकार कर लिया। मैंने इस बात का उल्लेख इसलिए किया है कि सूरत में जीवन बहुत ही अनुशासित, मर्यादित और उस संयम एवं धैर्यशीलता के साथ था जिसके लिए जैन समाज जाना जाता है। जिओ और जीने दो एवं अहिंसा परमो धर्म:। सही मायनों में जैन धर्म का एक सबसे बड़ा मंत्र है जिसे वह जीवन में निभाते हैं। सामाजिक सुरक्षा को लेकर मेरी जहां कई जैन हस्तियों से बातचीत हुई तो वहीं सब ने सूरत का उदाहरण दिया कि यहां रात के दो बजे भी महिलाएं सुरक्षित हैं। वे कहीं भी आ और जा सकती हैं। लोग भी बहुत मर्यादित हैं और महिलाओं की सबसे ज्यादा इज्जत करने वाले हैं। आज के जमाने में जब दिल्ली जैसे शहर में या देश के किसी भी हिस्से से महिलाओं के यौन शोषण या बलात्कार संबंधी खबरें सुनते हैं तो मन विचलित हो जाता है लेकिन हर किसी ने सूरत में नारी और सामाजिक सुरक्षा के मामले में दिल खोलकर नारी सुरक्षा और उसके सम्मान को प्राथमिकता की बात कही। लोगों ने बताया कि आजकल नवरात्रों में सूरत शहर में अनेकों स्थानों पर गरबा चल रहा है और ढाई-ढाई, तीन-तीन बजे तक डांडिया चलता है। लड़कियां और महिलाएं बेरोकटोक और बिना खौफ रात में आती-जाती हैं, इसे कहते हैं सुरक्षा। बिना किसी डर के वह कहीं भी आ-जा सकती हैं। नारी सुरक्षा के प्रति वहां लोगों के दिलों में सम्मान है। वहां पुलिस और अन्य सामाजिक संगठन हर कोई महिलाओं की बात सुनता है और उनकी सुरक्षा के लिए तत्पर रहता है। काश, यह सामाजिक सुरक्षा का मॉडल पूरे देश में सूरत जैसा हो जाए तो देश के सामाजिक रिश्तों और तानेबाने की सूरत भी बदल जायेगी। नारी अपराधों के मामलों में फास्ट ट्रैक व्यवस्था के बावजूद तारीख पर तारीख भी चलती है तथा इंसाफ सही वक्त पर नहीं मिल पाता और जल्दी न्याय दिलाने की व्यवस्था भी जरूरी है।

मूल रूप से हम आर्य समाजी लोग हैं लेकिन मैं विशेष रूप से जैन समाज के समारोहों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हूं। आचार्य महाश्रमण जी स्वयं में एक बहुत ही सम्मानित, परमश्रध्येय और सामाजिक सुरक्षा के साथ-साथ परोपकार की मूर्ति हैं। बहुत ही संवेदनशील हैं। कुछ वर्ष पहले दिल्ली में एक जैन साध्वी कनक जी अस्पताल में भर्ती थीं और जैन संत आचार्य महाश्रमण जी भ्रमण पर थे लेकिन उन्होंने अपनी पैदल यात्रा का रूप बदला और जैन साध्वी कनक जी से उनकी कुशलक्षेम पूछने के लिए अस्पताल पहुंच गए। महिलाओं के प्रति सम्मान की यह भावना हर संत में नहीं है और अन्य बाबाओं के बारे में किस्से लोग अवश्य जानते होंगे। सच्चा संत वही है जो नारी सम्मान और सुरक्षा की बात करे और जैन समाज के संत विशेष रूप से आचार्य महाश्रमण जी अनुशासन, विनम्रता का एक बड़ा उदाहरण हैं जो राष्ट्र के दर्पण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसे कहते हैं नारी का सम्मान लेकिन इस मामले में देश में नारी के प्रति पुरुषों की मानसिकता ही विकृत है जिसे बदलना होगा। सूरत से इस भावना को एक रोल मॉडल के रूप में परिभाषित करना होगा।

सामाजिक सुरक्षा का सूरत एक सचमुच उदाहरणीय मॉडल है जिसे पूरे देश को आत्मसात करना चाहिए। धर्म सभी अच्छे हैं और करोड़ों लोगों की अपने-अपने धर्म में आस्था है। सभी धर्म अनुसरणीय हैं लेकिन जैन धर्म तो अपने आप में उदाहरणीय है। जो जिओ और जीने दो के सिद्धांतों के साथ-साथ अहिंसा से दूर रहने और क्षमा की बात करते हुए इसे जीवन में उतारने का आह्वान करता है। इस दृष्टिकोण से नवरात्रे हों या अन्य धार्मिक पर्व सामाजिक सुरक्षा तो जीवन में होनी ही चाहिए और उसके लिए हर किसी को अपना योगदान ठीक ऐसे देना चाहिए जैसे आचार्य महाश्रमण जी दे रहे हैं।

भयंकर होगा युद्ध का परिणाम

खरी-खरी बात
-वीरेन्द्र कपूर

पिछले वर्ष 7 अक्तूबर को हमास द्वारा महिलाओं और बच्चों सहित 1200 से अधिक इजराइली नागरिकों की नृशंस हत्या तथा 200 से अधिक इजराइलियों के अपहरण से शुरू हुआ युद्ध समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। गाजा में हमास के आतंकियों पर और लेबनान में हमास के सहयोगी हिजबुल्लाह पर किए गए इजराइल के प्रतिशोधात्मक हमले से अब कहीं अधिक बड़ी आग भड़कने का खतरा पैदा हो गया है। ईरान को 1 अक्तूबर को इजराइल के विरुद्ध 180 बैलिस्टिक मिसाइलों के हमले के लिए दंडित किया जाएगा। कहने की जरूरत नहीं है कि जब हमास ने 7 अक्तूबर 2023 को इजराइली रक्षा बलों (आईडीएफ) को आश्चर्यचकित कर दिया था और एक संगीत समारोह में आनंद ले रहे निर्दोष पुरुषों और महिलाओं की बेरहमी से हत्या कर दी थी, तब से वह और उसका साथी आतंकवादी संगठन हिजबुल्लाह इजराइल की निरंतर गोलाबारी का शिकार बन रहे हैं।

अपनी शानदार खुफिया जानकारी के दम पर आईडीएफ ने अपने दुश्मनों पर बहुत बड़ी मार की है। लेबनान स्थित शिया आतंकवादी समूह हिजबुल्लाह के करिश्माई नेता हसन नसरल्लाह की हत्या से बड़ी कोई मार नहीं है, जिसने पिछले साल गाजा पर हमले के बाद से ही इजराइल को रॉकेट हमलों से परेशान कर रखा है। युद्ध में स्वयं उतरने के प्रति अनिच्छुक और लेबनान में हिजबुल्लाह और यमन में हूती विद्रोहियों जैसे अपने समर्थकों को हथियार प्रदान करके ही संतुष्ट रह रहे ईरान को आखिरकार अपने लोगों का मनोबल बढ़ाने के लिए हमला करने के लिए बाध्य होना पड़ा लेकिन इस हमले के बाद भी ईरान की कमजोरी नजर आई, क्योंकि सर्वोच्च नेता अली खामेनेई इजराइल को यह भरोसा दिलाने की कोशिश कर रहे थे कि इजराइल द्वारा हमास और हिजबुल्लाह नेताओं की हत्या के जवाब में उसके पास 180 मिसाइलें ही थीं।

ईरान इस्लामी राष्ट्रों के बीच एक बहिष्कृत देश है, जिसने लंबे समय से अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में अपनी जगह बनाई है, यमन में सऊदी अरब समर्थित गठबंधन के खिलाफ हूतियों का समर्थन किया है, सीरिया में बशीर अल असद

शासन का समर्थन किया है और व्यापक इस्लामी दुनिया में आमतौर पर अमेरिका समर्थित पश्चिम एशियाई शक्तियों को परेशान किया है। हाल ही में चीन और रूस इसके एकमात्र सहयोगी के रूप में उभरे हैं लेकिन सशस्त्र संघर्ष में दोनों देशों में से कोई भी देश इसमें शामिल नहीं होना चाहेगा ।

दरअसल, अगर दुनिया के मुस्लिमों में एकता होती तो अमेरिका के पूर्ण समर्थन के बावजूद भी इजराइल इतने लंबे समय तक जंग नहीं लड़ पाता। विश्व में इस्लाम का नेतृत्व करने के बावजूद भी ईरान और सऊदी अरब के बीच शिया-सुन्नी विभाजन अंतर्निहित है जो मुस्लिम उम्माह को अलग करता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि लेबनान में भी नसरल्लाह की मौत पर लोगों के एक बड़े वर्ग ने राहत महसूस की थी, जिनकी देश के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर हिंसक पकड़ ने एक तबके के लोगों को हमेशा के लिए डरपोक बना दिया था, क्योंकि लोग हिजबुल्लाह के सशस्त्र तूफानी सैनिकों के प्रकोप से भयभीत थे।

इस बीच, अब जब इजराइल का पलड़ा भारी हो गया है तो इसकी पूरी संभावना है कि वह अपने उत्तरी भाग में रहने वाले 60,000 से अधिक नागरिकों की सुरक्षा के लिए लेबनान के साथ अपनी सीमा पर एक बफर जोन स्थापित करेगा। वहीं अपनी ओर से इजराइल ज़मीन पर लड़ाई को न्यूनतम संभव रखते हुए अपनी हवाई श्रेष्ठता के साथ आगे बढ़ना चाहेगा। आने वाले दिनों में घटनाएं कैसे सामने आएंगी अभी यह तो स्पष्ट नहीं है। पर, इजराइल ने इस पहल को जब्त कर लिया है और लेबनान से आतंकवादी हमलों के खिलाफ अपनी उत्तरी आबादी को बचाने के लिए वह जो कर सकता है उसके द्वारा वह सब कुछ करने की पूरी संभावना है।

वहीं इस बीच, पश्चिम एशिया में युद्ध की आशंका के कारण कच्चे तेल की कीमत में वृद्धि कम होती दिख रही है, खासकर ईरान द्वारा युद्ध को और आगे बढ़ाने की अनिच्छा को देखते हुए। पर, यदि इजराइल ईरान के तेल बुनियादी ढांचे को नष्ट कर देता है तो वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों में भारी वृद्धि हो सकती है क्योंकि ईरान प्रतिदिन लगभग दो मिलियन बैरल या यूं कहे कि वैश्विक आपूर्ति का दो प्रतिशत हिस्सा देता है।

पंजाब भाजपा में विद्रोह के आसार

नई दिल्ली, (एनटीआई): पंजाब की भगवा सियासत में तूफान की आहटें हैं। अगर भाजपा शीर्ष ने जल्दी से सब कुछ अपने नियंत्रण में नहीं लिया तो यहां भाजपा में दोफाड़ हो सकती है। कैप्टन अमरिंदर सिंह के साथ कांग्रेस छोड़ भाजपा में आए नेताओं की बेचैन करवटें बता रही हैं कि वे कभी भी भाजपा छोड़ अपने पुराने घर की राह पकड़ सकते हैं। पर उनके समक्ष सबसे बड़ी दिक्कत बस यही है कि उनकी पुरानी पार्टी अब उनके लिए पहले की तरह बांहें फैलाए खड़ी नहीं है। कैप्टन साहब अपने खराब स्वास्थ्य की वजह से एक तरह से सक्रिय राजनीति से दूर हो गए हैं, उनकी पत्नी परणीत कौर को इस लोकसभा चुनाव में भारी अंतर से पराजय का स्वाद चखना पड़ा। भाजपा ने कैप्टन के खास लोगों से जो वायदा किया था उसे पूरा करने में वह उत्सुक नहीं दिखती।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रेस, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

दैनिक जागरण

सबको प्रसन्न करने की शक्ति सबमें नहीं होती

नक्सलियों का सफाया

छत्तीसगढ़ के अबूझमाड़ इलाके में तीस से अधिक नक्सलियों को मार गिराने में मिली सफलता इसका परिचायक है कि केंद्र और राज्य सरकार नक्सली संगठनों का सफाया करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रतिबद्धता का परिचय इससे मिलता है कि छत्तीसगढ़ में इस वर्ष अब तक 180 से अधिक नक्सली मारे जा चुके हैं। यह संख्या इसलिए उल्लेखनीय है कि पिछले पांच वर्षों में दो सौ के करीब ही नक्सली मारे जा सके। इससे पता चलता है कि छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार आने के बाद से नक्सलियों के खिलाफ कहीं अधिक सख्ती का परिचय दिया जा रहा है। वैसे तो पिछली कांग्रेस सरकार भी नक्सलियों के खिलाफ सक्रिय थी, लेकिन वह अक्सर ढुलमुल नजर आती थी और वह भी तब, जब नक्सलियों ने कांग्रेस के कई बड़े नेताओं को निशाना बनाया था। यदि नक्सलियों से निपटना है तो उनके प्रति सख्त रवैया अपनाना होगा और उन्हें यह संदेश भी देना होगा कि वे बंदूक के बल पर व्यवस्था परिवर्तन करने और संविधान एवं लोकतंत्र खत्म करने का मुगालता छोड़ दें। चूंकि नक्सली बार-बार के आग्रह के बाद भी हथियार छोड़कर मुख्यधारा में शामिल होने से इन्कार कर रहे हैं, इसलिए उनका दमन करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं। नक्सली नेता और उनके समर्थक भले ही यह झूठा प्रचार करें कि नक्सली संगठन गरीब आदिवासियों के हितों के लिए लड़ रहे हैं, लेकिन सच यह है कि वे आतंक के बल पर उगाही करने वाले गिरोह में तब्दील हो गए हैं। तथ्य यह भी है कि वे जिन आदिवासियों के हितैषी होने का दिखावा करते हैं, उन्हें ही विकास और जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित करने का कुचक्र रचते हैं। वास्तव में वे निर्धन आदिवासियों के सबसे बड़े शोषक हैं।

मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से नक्सली संगठनों के खिलाफ जो सख्ती दिखाई गई है, उसके चलते एक बड़ी हद तक उनकी कमर टूटी है। इतना ही नहीं, उनके दायरे को सीमित करने में भी सफलता मिली है। उन्हें पूरी तरह निष्प्रभावी करने का अभियान चलते रहना चाहिए, क्योंकि अतीत में यह देखने में आ चुका है कि सुरक्षा बलों के दबाव के चलते वे कुछ समय के लिए निष्क्रिय होकर फिर से अपनी ताकत जुटा लेते हैं। अब उन्हें फिर से संगठित और ताकतवर होने का मौका नहीं दिया जाना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि छत्तीसगढ़ की तरह उसके पड़ोसी राज्य भी नक्सलियों का खात्मा करने के लिए कमर कसें और केंद्र सरकार के साथ पूरा सहयोग करें। ऐसा करके ही मार्च 2026 तक नक्सलियों का सफाया करने के लक्ष्य को पाया जा सकता है। अब जब नक्सलियों की ताकत घटती जा रही है, तब यह देखने की भी जरूरत है कि उन्हें आधुनिक हथियार कहां से मिल रहे हैं? इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि गत दिवस मुठभेड़ में मारे गए नक्सलियों के पास से एके-47 जैसे हथियार मिले हैं।

पर्यावरण की चिंता

बढ़ता वैश्विक ताप और जलवायु परिवर्तन गंभीर समस्या बनता जा रहा है। लोगों की बढ़ती आवश्यकताएं, औद्योगिक विकास, बढ़ता प्रदूषण और प्रकृति से छेड़छाड़ प्रमुख कारण हैं। पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश में भी वैश्विक ताप का प्रभाव दिखने लगा है। प्राकृतिक आपदाएं बढ़ी हैं। मौसम चक्र में परिवर्तन हो रहा है। ऐसे क्षेत्र जहां पर वर्षा नहीं होती थी, वहां अतिवृष्टि हो रही है। हिमपात पहले के मुकाबले कम होने लगा है। पश्चिम हिमालय क्षेत्र में स्थित ग्लेशियर लगातार सिकुड़ रहे हैं। त्रिलोकीनाथ, ब्यास कुंड और ढाका ग्लेशियर प्रति वर्ष 11 से 18 मीटर तक सिकुड़ रहे हैं। चंद्रा बेसिन के 12 ग्लेशियरों की भी ऐसी स्थिति है। जहां साल में आठ से 10 मीटर तक बर्फ गिरती थी, वहां तीन-चार मीटर ही हिमपात हो रहा है। ग्लेशियरों में बर्फ की परत पतली होने का असर जलविद्युत परियोजनाओं पर भी पड़ा है। कई क्षेत्र वर्षभर बर्फ से ढके रहते थे, वहां पर लोग पहुंच नहीं पाते थे, वहां पर अब लोग आसानी से पहुंच रहे हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में तेजी से भवन निर्माण सहित अन्य गतिविधियां बढ़ने से हरित आवरण घटा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य में कुछ वर्ष में हरित आवरण बढ़ा है, लेकिन हरित घनत्व की दिशा में प्रयास किए जाने की भी आवश्यकता है। वन माफिया और खनन माफिया पर भी अंकुश लगाए जाने की दिशा में भी कदम उठाए जाने आवश्यक हैं। हर वर्ग को समझना होगा कि पर्यावरण संरक्षण सिर्फ सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। जन्मतिथि एवं जीवन के विशेष अवसरों पर पौधारोपण किया जाना चाहिए। जब पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी प्रयास करेंगे, तभी स्वच्छ हवा में सांस ले सकेंगे।

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए हर वर्ग को पर्यावरण संरक्षण में सहभागी बनना होगा

युद्ध के मुहाने पर पश्चिम एशिया

संजय गुप्त

यदि पश्चिम एशिया के हालात और खराब हुए तो इस क्षेत्र के विभिन्न देशों में रह रहे लाखों भारतीयों को निकालने की जरूरत पड़ सकती है

अवधेश राजपूत

इजरायल की ओर से हिजबुल्ला के सरगना नसरुल्ला को मार गिराए जाने और लेबनान में सक्रिय इस संगठन के खिलाफ सैन्य कार्रवाई शुरू करने के जवाब में ईरान ने उस पर मिसाइलें दागकर पश्चिम एशिया की हालत और अधिक बिगाड़ने का ही काम किया है। अब यह लगभग तय है कि इजरायल ईरान को निशाना बनाएगा। वह ईरान के परमाणु ठिकानों को भी नष्ट कर सकता है, क्योंकि ईरान की ओर से कहा जा रहा है कि वह इजरायल का नामोनिशान मिटा देगा। इसकी भी प्रबल आशंका है कि इजरायल ईरान के तेल ठिकानों को निशाना बनाएगा। यदि ऐसा होता है तो कच्चे तेल के दाम बढ़ना तय है। इससे विश्व अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ेगा, जो पहले से ही रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण संकट का सामना कर रही है। यदि यहां के हालात खराब हुए तो इस क्षेत्र के विभिन्न देशों में रह रहे लाखों भारतीयों को निकालने की जरूरत पड़ सकती है। स्पष्ट है कि इससे भी भारत की समस्याएं बढ़ेंगी।

पश्चिम एशिया तबसे तनाव और युद्ध की आशंका से घिरा है, जबसे पिछले साल सात अक्टूबर को फलस्तीन के गाजा इलाके में सक्रिय आतंकी संगठन हमास ने इजरायल में घुसकर भीषण हमला किया था। इस हमले में हमास के आतंकियों ने 1200 से अधिक इजरायली नागरिकों को मार दिया था और 200 से अधिक लोगों को बंधक बनाकर गाजा ले आए थे। इजरायल के लिए यह बहुत अधिक आघातकारी था। इजरायल ने हमास को सबक सिखाने के लिए गाजा में हमलों की झड़ी लगा दी। इन हमलों में हमास के तमाम आतंकियों के साथ आम नागरिक भी मारे जा रहे हैं। एक आंकड़े के अनुसार अब तक 40 हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। गाजा में इजरायल के हमलों के दौरान ही लेबनान के ईरान समर्थित संगठन हिजबुल्ला ने भी इजरायली ठिकानों पर हमले करने शुरू कर दिए। इसके चलते इजरायल ने हिजबुल्ला को भी निशाने पर ले लिया। इससे चिढ़कर ही ईरान ने इजरायल को अपना निशाना बनाया। ऐसा करके उसने इजरायल को खुद पर हमले का मौका दे दिया है। इजरायल के जवाबी हमले की आशंका से ग्रस्त ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई भले ही इस्लामी जगत को एकजुट होने की नसीहत दे रहे हों और मुसलमानों को इजरायल के खिलाफ भड़का रहे हों, लेकिन यह साफ है कि कतर को छोड़कर अन्य इस्लामी देश और विशेष रूप से अरब जगत के सुन्नी देश इस संघर्ष से दूर रहना चाहते हैं। इजरायल और इस्लामी देशों के बीच अविश्वास और तनाव का रिश्ता नया नहीं है। इजरायल और इस्लामी देशों में तभी ठन गई थी, जब संयुक्त राष्ट्र की पहल पर 1948 में फलस्तीन कहे जाने वाले क्षेत्र में एक नए राष्ट्र के रूप में दुनिया भर में बिखरे यहूदियों के लिए इजरायल की स्थापना की गई। इजरायल से तमाम संघर्ष के बाद अधिकांश अरब देश इस नतीजे पर पहुंच चुके हैं कि वे उसका मुकाबला नहीं कर सकते, लेकिन ईरान और कतर जैसे देश अभी भी हमास और हिजबुल्ला के जरिये इजरायल को निशाना बनाने की नीति पर चल रहे हैं।

इजरायल और इस्लामी देशों के बीच तनाव और युद्ध के लंबे इतिहास के बीच इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि अमेरिका और अन्य पश्चिमी देश हर हाल में इजरायल का साथ देना पसंद करते हैं। इन देशों ने पिछले एक साल में इजरायल और हमास के बीच संघर्ष विराम के लिए तमाम प्रयत्न किए, लेकिन वे नाकाम रहे, क्योंकि हमास बंधकों को रिहा करने के लिए तैयार नहीं हुआ। इजरायल की ओर से ईंट का जवाब पत्थर से देने की कठोर नीति अपनाने के बावजूद अमेरिका और उसके सहयोगी देश उस पर लगाम इसलिए नहीं लगाना चाहते, क्योंकि वह अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रहा है और ऐसा देश अपने शत्रुओं के प्रति नरम रवैया नहीं अपना सकता। इजरायल के आक्रामक रुख को देखते हुए विश्व के अनेक देशों की यह अपेक्षा उचित ही है कि वह संयम का परिचय दे, फलस्तीन को अलग देश के रूप में स्वीकारे और हमास एवं हिजबुल्ला जैसे संगठनों को हथियारों के बल पर खत्म करने का इरादा छोड़े, लेकिन यह तभी संभव हो सकता है, जब ईरान जैसे देश भी इस मुगालते से बाहर आएं कि वे इजरायल का अस्तित्व मिटाने में सफल हो जाएंगे। ईरान इजरायल के लिए खतरा बने हमास और हिजबुल्ला का ही साथ नहीं देता, बल्कि सऊदी अरब की नाक में दम किए यमन के हाउती लड़ाकों की भी सहायता करता है। यही काम कतर भी करता है। हालांकि पश्चिमी देशों का ईरान पर कोई जोर नहीं, लेकिन वे कतर पर तो दबाव बना ही सकते हैं। वे इसमें भी सफल नहीं हो पा रहे हैं।

ईरान के रवैये को देखते हुए अमेरिका ने पश्चिम एशिया में अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ा दी है। यदि इसके जवाब में रूस या चीन ईरान की मदद के लिए आगे आ जाते हैं तो पश्चिम एशिया विश्व की बड़ी शक्तियों का अखाड़ा बन जाएगा। चूंकि रूस और चीन विश्व के किसी भी क्षेत्र में अमेरिका का वर्चस्व कायम होता नहीं देखना चाहते, इसलिए ये दोनों देश हर उस देश के साथ खड़े हो जाते हैं, जो अमेरिका के खिलाफ होता है। पश्चिम एशिया में शांति के आसार इसलिए नहीं दिखते, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र दोनों पक्षों के बीच कोई समझौता करा पाने में नाकाम है। इस पर हैरानी नहीं कि संयुक्त राष्ट्र और उसकी सुरक्षा परिषद की प्रासंगिकता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लग गए हैं। इसे देखते हुए भारत को पश्चिम एशिया में शांति-समझौते के लिए सक्रिय होना चाहिए। एक तो भारत के संबंध इजरायल और ईरान, दोनों से हैं और दूसरे, दुनिया में भारत शांति और अहिंसा के गांधीवादी विचारों के लिए जाना जाता है। ये विचार पश्चिम एशिया में शांति ला सकते हैं। इसकी भी अनदेखी नहीं कर सकते कि अनेक देश यह मान रहे हैं कि भारत अपने बढ़ते कद के चलते पश्चिम एशिया में शांति की प्रभावी पहल कर सकता है। यह भारत के बढ़ते प्रभाव का ही प्रमाण है कि अनेक प्रमुख देश उसे सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाने की जरूरत जता रहे हैं।

response@jagran.com

एक अदद सम्मान के लिए

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

जब बड़े लेखक अपने सम्मान की रक्षा कर नहीं पा रहे हैं तो आम जन की क्या स्थिति होगी? इस पर एक श्वेतपत्र आना चाहिए

वह एक सामान्य दिन नहीं था। मैं देर से सोकर उठा था। अभी अलसाया ही था कि खास मित्र का फोन आ गया। कुछ असामान्य घटित होता है तो वह पहली सूचना मुझे ही देते हैं। इस आशंका से मैं एकबारगी सहम उठा। मैंने डरते-डरते काल रिसीव की। उधर से मित्र की भारी सी आवाज कानों में पड़ी, 'यार, इस बार भी मिश्रा बाजी मार ले गया। न जाने साहित्य को कौन-सा ग्रहण लग गया है! साहित्य को गिरने से अब तो मैं भी नहीं बचा सकता।' यह कहकर उन्होंने गहरी सांस ली। मिश्रा का नाम सुनते ही मेरी चेतना वापस आ गई। मिश्रा हम दोनों का कामन-शत्रु था। अच्छा लिखता था, पर वह हमें अच्छा नहीं लगता था। अब और भी बुरा लगने लगा। फिर भी स्वयं पर नियंत्रण करते हुए पूछा, 'क्या हुआ मित्र! जरा खुलकर बताओ। उसने तुम्हारा क्या अनर्थ कर दिया?' वह लगभग डपटते हुए बोले, 'भई, तुम स्थिति की गंभीरता नहीं समझ रहे हो। गाज मेरे ऊपर नहीं गिरी है। मैं तो तुम्हारे लिए हलकान हो रहा हूं। इस बार बड़े लेखक वाला सम्मान जो तुम्हें मिलना चाहिए था, वह ले गया। वह इतना भी बड़ा नहीं हुआ कि सबसे बड़े लेखक के नाम का सम्मान उसे मिले। अभी हम जीवित हैं।'

मैं गंभीर हो चुका था और गमगीन भी। आज आखिरी आस भी टूट गई। ऐरे-गैरे रोज सम्मान पा रहे हैं और मैं इस श्रेणी के भी लायक नहीं। मन को कहां तक सांत्वना दूं, पर बात तो करनी थी, सो बोल दिया, 'किंतु यह हुआ कैसे? इस बार तो हमने सही फील्डिंग जमाई थी। चयनकर्ताओं की नियमित खैर-खबर भी रखते थे। एक की तो हवाई-टिकट के पैसे हमीं ने दिए थे और दूसरे के मोबाइल को तीन बार रीचार्ज कराया था। फिर भी! मुझे तो शुक्ला पर संदेह है। वह मुझसे तबसे जलता है जबसे उसकी प्रेमिका से विवाह कर लिया। वह अभी तक मेरे गले पड़ी है। मुझे कभी सम्मान नहीं नसीब हुआ, न जीवन में, न लेखन में। इस शुक्ला ने ही मुझसे प्रतिशोध लिया है।'

'तुम कुछ नहीं जानते। ऐसे ही अनजान और भोले बने रहोगे तो जीवन भर 'सम्मानहीन' का खिताब तुम्हारे पास ही रहेगा। इस बार बड़ा खेला हुआ है। आखिरी क्षणों में रस्तोगी और खन्ना खेल गए। तुम्हारा नाम काटने के लिए दोनों मिश्रा के साथ चले गए, जबकि तुम्हीं लाए थे इन्हें साहित्य में। जब दोनों कहानी में नहीं घुस पाए तो कविता का दरवाजा खटखटाया। वहां भी दाल नहीं गल पाई तो समीक्षक बन गए। अब ये ही तुम्हें सिखा रहे हैं। रही बात चयनकर्ताओं को साधने की, वहां भी मिश्रा बाजी मार ले गया। एक के बेटे को आइपीएल में सेलेक्ट करा दिया और दूसरे की बेटी के विवाह में खान-पान का पूरा प्रबंध किया। इसे कहते हैं मैनेजमेंट। अब शायद तुम्हें अक्ल आए!' इतना कहकर उन्होंने आखिरी से बहुत पहले वाली सांस ली।

मुझे 'अटैक' आते-आते बचा, बिल्कुल 'सम्मान' की तरह। मेरी कहीं भी पूछ नहीं है। एक उसे देखो। कल का आया हुआ लड़का है। कभी संघर्ष नहीं किया। आते ही छा गया। साहित्य में अंधेरा उसी की वजह से है। एक हम हैं कि पहले दिन से ही संघर्षरत हैं। पहले छपने के लिए किया, अब सम्मान के लिए कर रहे हैं। मुझे समझ में आ गया कि लिखने से ज्यादा पैंतरे आने चाहिए। मेरे पास जितना बजट था, उसमें कोई ढंग का पैंतरा हो भी नहीं सकता था। यह लगातार तीसरी बार हुआ है जब मेरा सपना टूटा है। कवि पाश ने कहा भी है, 'सबसे खतरनाक होता है, हमारे सपनों का टूट जाना!' निश्चित ही उन्हें मेरी दशा का पूर्वानुमान हो गया होगा। यह भी कोई लोकतंत्र है? एक ही आदमी सारे सुख लिए जा रहा है। कोई कब तक संघर्ष करेगा भाई! हम जैसे बड़े लेखक अपने सम्मान की रक्षा कर नहीं पा रहे हैं तो आम आदमी की क्या स्थिति होगी? इस पर भी एक श्वेत-पत्र आना चाहिए।' मैंने मन ही मन में कहा। 'अब ज्यादा सोचो नहीं, दिल्ली का एक हवाई-टिकट बुक करा दो। इस मिश्रा का तोड़ तलाशता हूं।' इतना कहकर बिना मेरा जवाब सुने उन्होंने फोन काट दिया। मुझे इस बार भी अटैक नहीं आया।

response@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

तथ्य-कथ्य | भारत का विदेशी मुद्रा भंडार

ऊर्जा

शब्द संचेतना

शब्द इस जगत की सबसे बड़ी ताकत हैं, जो वाणी से निःसृत होकर अचेतन को भी सचेतन और सचेतन को भी अचेतन कर सकते हैं। इनसे बड़ा न कोई अस्त्र है, न कोई औषधि। अतः सकारात्मक एवं नकारात्मक ऊर्जा के भंडार होने से इनके प्रयोग में सावधानी आवश्यक है। जगत के समान शब्द के भी दो रूप हैं-स्थूल और सूक्ष्म। विचार शब्द के सूक्ष्म रूप हैं, जबकि नाद स्थूल रूप है, जिसे ध्वनि कहा जाता है। मन-मस्तिष्क में सबसे पहले विचार उत्पन्न होते हैं। फिर प्रतीक के माध्यम से साकार होकर ये लौकिक कार्य व्यवहारों के साधन बनते हैं। अतः लौकिक जगत के स्वरूप निर्धारण में शब्दों का महनीय योगदान है। शून्य से विराट की यात्रा में शब्द परमात्मा के प्रथम अवतरण हैं। यही ओंकार की प्रथम ध्वनि है। कण-कण से इसकी ही ध्वनि प्रतिध्वनित होकर जगत को शब्दायमान करती है। जगत के कल्याण के लिए शब्द का वाणी के रूप में अवतरण ही परमात्मा का साकार होना है। ब्रह्म को वही जान सकता है, जो शब्द की महिमा को जानता है। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं-वर्णों में मैं अकार हूं, जिसके बिना शब्द जीवंत नहीं हो सकते। इसलिए शब्द ईश्वरीय संचेतना के जीवंत रूप हैं, जो जीव और जगत को प्राणवंत करते हैं।

शब्द का मौन हो जाना ही मृत्यु है। इसी महत्ता के कारण शब्द को ब्रह्म कहा जाता है। व्यापक, अविनाशी, अव्यक्त, अगोचर आदि समान गुण धर्म भी शब्द को ब्रह्म की संज्ञा प्रदान करते हैं। जीव और ब्रह्म की एकता भारतीय अध्यात्म का मूल है, जिसकी सिद्धि साधना के बिना संभव नहीं। मुखरित अथवा मूक होकर ये शब्द ही साधना के आधार बनते हैं। लौकिक सिद्धि के समान आध्यात्मिक सिद्धि तब तक नहीं हो सकती, जब तक शब्दों का प्रयोग उपयुक्त न हो। दोनों क्षेत्रों में इनका अमांगलिक प्रयोग अनर्थकारी सिद्ध होता है। शब्द को ब्रह्म के रूप में स्वीकार करके ही इनकी अमांगलिकता से बचा जा सकता है।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

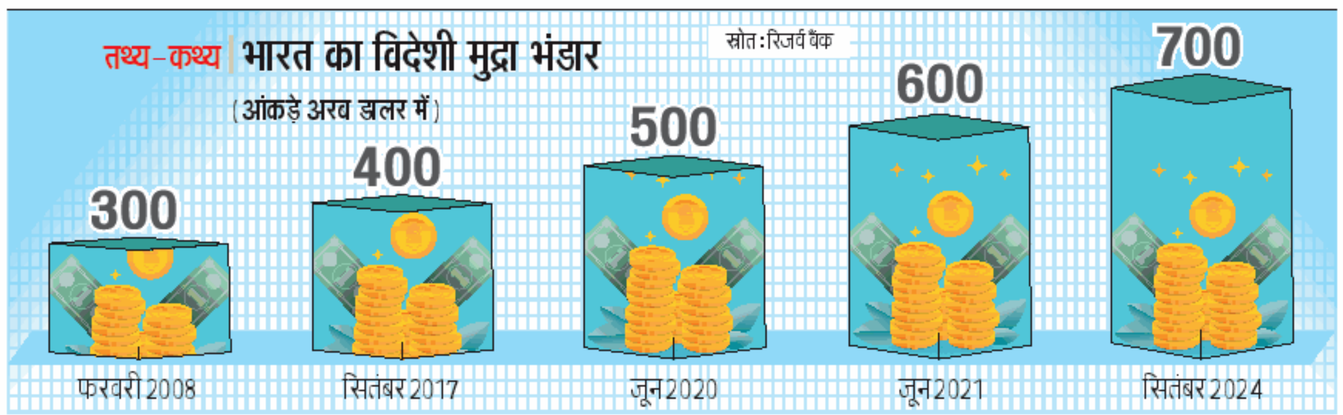

पुनर्जीवित हो सकेंगे विलुप्त जीव

मुकुल व्यास

मैमथ (विशालकाय हाथी), डोडो पक्षी और तस्मानियाई बाघ जैसी लंबे समय से लुप्त हो चुकी प्रजातियों को 2028 से पहले वापस लाने की संभावना है

पिछले कुछ समय से विलुप्त जीवों को पुनर्जीवित करने के प्रयास चल रहे हैं। इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है। इस शोध से जुड़े विज्ञानियों ने कहा है कि मैमथ (विशालकाय हाथी), डोडो पक्षी और तस्मानियाई बाघ जैसी लंबे समय से लुप्त हो चुकी प्रजातियों को 2028 से पहले वापस लाने की प्रबल संभावना है। आज जीन विज्ञान बहुत तरक्की कर चुका है। विज्ञानियों को लगता है कि वे जीन की नई तकनीकों के उपयोग से लुप्त जीवों को अस्तित्व में वापस ला सकते हैं, लेकिन क्या इतना आसान होगा? यह जटिल विज्ञान है। पहले चरण में विज्ञानी विलुप्त जानवर के विशिष्ट जीनों का पता लगाते हैं और दूसरे चरण में विलुप्त जीव के किसी करीबी मौजूदा रिश्तेदार के डीएनए का उपयोग करके विशिष्ट जीनों की प्रतिकृति बनाने की चेष्टा करते हैं।

अमेरिका की कोलोसल बायोसाइंसेज नामक कंपनी ने विलुप्त जीवों की वापसी का बीड़ा उठाया है। कंपनी के विज्ञानी इसके लिए जीन-संपादन तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। अगले तीन वर्षों के भीतर डोडो पक्षी और तस्मानियाई बाघ मैमथ हाथियों से पहले देखने को मिल सकते हैं, जो लगभग चार हजार साल पहले विलुप्त हो गए थे। मैमथ का गर्भकाल 22 महीने का होता है। यह देखते हुए शोधकर्ताओं ने मैमथ के लिए 2028 के अंत की तारीख तय की है और इस समय संतोषजनक ढंग से काम चल रहा है, लेकिन यह देखते हुए कि अन्य प्रजातियों का गर्भकाल बहुत कम है, यह बहुत संभव है कि मैमथ से पहले एक और विलुप्त प्रजाति प्रकट हो जाए।

तस्मानियाई बाघ 1982 में आस्ट्रेलिया में विलुप्त घोषित किया गया था। उसका गर्भकाल सिर्फ कुछ हफ्ते का होता है। उड़ने में असमर्थ डोडो पक्षी कभी मारीशस के द्वीपों पर रहते थे, लेकिन 17वीं शताब्दी में किसी समय वे विलुप्त हो गए। उनका सामान्य गर्भकाल लगभग एक महीने लंबा होता है। कंपनी ने अभी यह नहीं बताया कि दोनों में से किसके पहले प्रकट होने की संभावना अधिक है, लेकिन इस बात की बहुत संभावना है कि 2028 से पहले हमारे पास एक प्रजाति जरूर होगी। टेक उद्यमी लैम ने 2021 में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के आनुवंशिकीविद् जार्ज चर्च के साथ मिलकर कोलोसल बायोसाइंसेज का गठन किया था। ऊनी मैमथ का सबसे करीबी रिश्तेदार एशियाई हाथी है, जिसके साथ इसके 99.5 प्रतिशत जीन मिलते हैं। मैमथ आनुवंशिक रूप से अफ्रीकी हाथियों के बजाय एशियाई हाथियों के ज्यादा करीब हैं। यह बात लोगों को हैरान कर देती है। डोडो का सबसे करीबी जीवित रिश्तेदार निकोबार कबूतर है, जो भारत के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में पाया जाने वाला रंगीन विशेषताओं वाला पक्षी है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजरंग

मंत्री पद का प्रचार

हरियाणा में भाजपा लगातार तीसरी बार सत्ता की आस लगाए बैठी है और कांग्रेस इस बार अपनी बारी का दावा कर रही है। इस बीच दोनों दलों के कई ऐसे उम्मीदवार हैं, जो विधानसभा चुनाव लड़े तो अच्छा, लेकिन चाहते थे कि नेतृत्व से थोड़ा बल मिल जाए, तो उनकी जीत पक्की हो जाएगी। चुनाव प्रचार के दौरान ऐसे उम्मीदवारों ने अपने-अपने दल के बड़े नेताओं पर बार-बार यह दबाव बनाने की कोशिश की कि प्रचार मंच से वे इतना भर घोषित कर दें कि जीत गए तो मंत्री बनाए जाएंगे। उम्मीदवार उन्हें यह भरोसा देते थे कि इतना भर बोल देने से वे चुनाव जीत जाएंगे, पर बड़े नेताओं को इसका अहसास तो होता ही है कि कहां बोलना है और कहां नहीं।

राजनीति की उलटबांसी

कर्नाटक के नेताओं का तो जलवा ही अलग है। बोलने पर आ जाएं तो कुछ भी बोल सकते हैं। अनुशासनहीनता या बेवजह बयानबाजी पर सामान्यतया हाईकमान से नीचे के नेताओं को चेतावनी मिलती है, लेकिन कर्नाटक में उलटा भी हो रहा है। भाजपा के विधायक बसनगौड़ा पाटिल यतनाल ने हाल में हाईकमान को ही अल्टीमेटम दे दिया कि दिसंबर तक प्रदेश अध्यक्ष बदल दें, वरना वह कुछ निर्णय ले लेंगे। बताया जाता है कि उन्होंने अपने साथ कुछ और विधायकों के होने का भी जिक्र कर दिया है। इसमें शामिल अधिकतर लोग ऐसे हैं, जिनका कोई बड़ा प्रभाव नहीं है, फिर भी वह अल्टीमेटम देने की हिम्मत दिखा रहे हैं।

जलेबी का जलवा

यूं तो आज के दौर में राजनीति पर समाज में कड़वाहट घोलने का ही आरोप है, लेकिन मीठे का व्यापार करने वालों की शिकायत शायद कुछ कम हो गई होगी। जलेबी बनाने वाले तो जरूर नेताओं के शुक्रगुजार होंगे। बीते दिनों हरियाणा में राहुल गांधी ने जलेबी को एक्सपोर्ट करने का बिजनेस आइडिया दे डाला। भगवा खेमे वालों ने उलझी जलेबी का वह छोर पकड़कर सियासी तड़का लगा दिया कि गरम-गरम खाई जाने वाली जलेबी के एक्सपोर्ट का क्या तुक? जब आंच वरिष्ठ नेता के ज्ञान पर आई तो सियासी वार के लिए तथ्यों की तलाश में डूबे रहने वाले कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता जलेबी बनाने की विधि, फैक्ट्री में उसके निर्माण और कौन-कौन से ब्रांड किस तरह की जलेबी का एक्सपोर्ट कर रहे हैं, इसके शोध में डूब गए। फिलहाल इंटरनेट मीडिया पर जलेबी के ब्रांड छाए हुए हैं और नेता 'पाक कला विशेषज्ञ' बने दिख रहे हैं।

मंत्री जी की क्लास

अपनी जिम्मेदारियों को हल्के में लेने वाले मंत्रियों और नेताओं को फिलहाल जयंत चौधरी से सीखने की जरूरत है। जो मंत्रालय के लक्ष्य को हासिल करने के लिए अब खुद ही मैदान में उतर गए हैं। दरअसल उनके पास जिन दो मंत्रालयों की जिम्मेदारी है, उनमें कौशल विकास और शिक्षा है। इनमें शिक्षा मंत्रालय ने पिछले दिनों साक्षरता के शत प्रतिशत लक्ष्य को हासिल करने के लिए एक बड़ा अभियान शुरू किया, जिसके तहत 2030 तक देश को शत-प्रतिशत साक्षर बनाना है। इस अभियान में कोई भी जुड़कर निरक्षर लोगों को पढ़ाने में मदद दे सकता है। ऐसे में शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने युवाओं से इससे जुड़ने की अपील के साथ खुद आगे बढ़कर निरक्षर लोगों को पढ़ाने का फैसला लिया है। इसके लिए उन्होंने पोर्टल पर पूर्वी दिल्ली के साक्षरता केंद्र के लिए अपना रजिस्ट्रेशन भी करा लिया है। जल्द ही वह निरक्षर लोगों को पढ़ाते हुए दिखेंगे। देखना होगा कि मंत्री जी की क्लास में किस-किस को पढ़ने का मौका मिलता है।

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

सबको प्रसन्न करने की शक्ति सबमें नहीं होती

नक्सलियों का सफाया

छत्तीसगढ़ के अबूझमाड़ इलाके में तीस से अधिक नक्सलियों को मार गिराने में मिली सफलता इसका परिचायक है कि केंद्र और राज्य सरकार नक्सली संगठनों का सफाया करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रतिबद्धता का परिचय इससे मिलता है कि छत्तीसगढ़ में इस वर्ष अब तक 180 से अधिक नक्सली मारे जा चुके हैं। यह संख्या इसलिए उल्लेखनीय है कि पिछले पांच वर्षों में दो सौ के करीब ही नक्सली मारे जा सके। इससे पता चलता है कि छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार आने के बाद से नक्सलियों के खिलाफ कहीं अधिक सख्ती का परिचय दिया जा रहा है। वैसे तो पिछली कांग्रेस सरकार भी नक्सलियों के खिलाफ सक्रिय थी, लेकिन वह अक्सर ढुलमुल नजर आती थी और वह भी तब, जब नक्सलियों ने कांग्रेस के कई बड़े नेताओं को निशाना बनाया था। यदि नक्सलियों से निपटना है तो उनके प्रति सख्त रवैया अपनाना होगा और उन्हें यह संदेश भी देना होगा कि वे बंदूक के बल पर व्यवस्था परिवर्तन करने और संविधान एवं लोकतंत्र खत्म करने का मुगालता छोड़ दें। चूंकि नक्सली बार-बार के आग्रह के बाद भी हथियार छोड़कर मुख्यधारा में शामिल होने से इन्कार कर रहे हैं, इसलिए उनका दमन करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं। नक्सली नेता और उनके समर्थक भले ही यह झूठा प्रचार करें कि नक्सली संगठन गरीब आदिवासियों के हितों के लिए लड़ रहे हैं, लेकिन सच यह है कि वे आतंक के बल पर उगाही करने वाले गिरोह में तब्दील हो गए हैं। तथ्य यह भी है कि वे जिन आदिवासियों के हितैषी होने का दिखावा करते हैं, उन्हें ही विकास और जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित करने का कुचक्र रचते हैं। वास्तव में वे निर्धन आदिवासियों के सबसे बड़े शोषक हैं। मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से नक्सली संगठनों के खिलाफ जो सख्ती दिखाई गई है, उसके चलते एक बड़ी हद तक उनकी कमर टूटी है। इतना ही नहीं, उनके दायरे को सीमित करने में भी सफलता मिली है। उन्हें पूरी तरह निष्प्रभावी करने का अभियान चलते रहना चाहिए, क्योंकि अतीत में यह देखने में आ चुका है कि सुरक्षा बलों के दबाव के चलते वे कुछ समय के लिए निष्क्रिय होकर फिर से अपनी ताकत जुटा लेते हैं। अब उन्हें फिर से संगठित और ताकतवर होने का मौका नहीं दिया जाना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि छत्तीसगढ़ की तरह उसके पड़ोसी राज्य भी नक्सलियों का खात्मा करने के लिए कमर कसें और केंद्र सरकार के साथ पूरा सहयोग करें। ऐसा करके ही मार्च 2026 तक नक्सलियों का सफाया करने के लक्ष्य को पाया जा सकता है। अब जब नक्सलियों की ताकत घटती जा रही है, तब यह देखने की भी जरूरत है कि उन्हें आधुनिक हथियार कहां से मिल रहे हैं? इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि गत दिवस मुठभेड़ में मारे गए नक्सलियों के पास से एके-47 जैसे हथियार मिले हैं।

बाढ़ की त्रासदी

बाढ़ से लोग फिर प्रभावित हैं, जो हर वर्ष की नियति बन चुकी है। तटबंध भी टूटे, घर, बाग-बगीचे भी नदियों की भेंट चढ़े। इस प्राकृतिक आपदा से लोग पूरी तरह परिचित हैं, हालांकि पूर्व व्यवस्था के कारण बहुत जगहों पर प्रभाव थोड़ा कम कहा जा सकता है, लेकिन इसकी मार से इस वर्ष भी लाखों लोग प्रभावित हो चुके हैं। जलस्तर में हो रही कमी राहत की बात है, लेकिन कटाव का खतरा चिंता की बात है। दरभंगा के कुशेश्वर स्थान होकर गुजरने वाली कोसी और कमला बलान नदी की जद में हरिनाही गांव के दर्जन भर घर आ चुके हैं।

बाढ़ जैसी आपदा को कैसे कम किया जाए, इस पर निरंतर कार्य करने की आवश्यकता है।

ये कुछ उदाहरण भर हैं। पश्चिम चंपारण में भी फसल लगे खेत कटाव की भेंट चढ़ चुके हैं। इस समय पर्व-त्योहार का समय भी है, सो बाढ़ इसके उत्साह पर पानी फेर रही है। लोग सड़कों के किनारे शरण लिए हुए हैं। बच्चों के स्कूल छूट गए हैं। सरकार ने बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए व्यवस्था की है। उन्हें राहत सामग्री आदि पहुंचाई जा रही है। इसमें स्थानीय तंत्र को और सजगता व गति लाने की आवश्यकता है, ताकि बाढ़ पीड़ितों को किसी प्रकार की समस्या नहीं हो। बाढ़ के बाद स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं तेजी से बढ़ती हैं। इसलिए इन जगहों पर स्वास्थ्य व्यवस्था को और चुस्त करने की जरूरत है, ताकि किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति नहीं उत्पन्न नहीं हो पाए। इस प्राकृतिक आपदा से निपटने में आम जन और स्थानीय जनप्रतिनिधियों का सहयोग भी जरूरी है, ताकि पीड़ितों तक सहायता पहुंच सके। यह सराहनीय है कि कई जगहों पर वे मुस्तैदी से सहायता प्रदान भी कर रहे हैं। एक दूसरे की पीड़ा में सहायता के लिए दौड़ पड़ना ही बिहार का एक सकारात्मक भाव है, जिसमें समाज सहयोग के लिए खड़ा हो जाता है।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या वैवाहिक दुष्कर्म को अपराध की श्रेणी में रखने से विवाह संस्था को नुकसान होगा?

आज का सवाल

क्या विदेश मंत्री एस. जयशंकर का एससीओ की बैठक में शामिल होने के लिए पाकिस्तान जाने का फैसला सही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

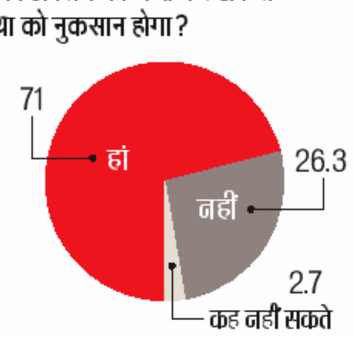

युद्ध के मुहाने पर पश्चिम एशिया

संजय गुप्त

यदि पश्चिम एशिया के हालात और खराब हुए तो इस क्षेत्र के विभिन्न देशों में रह रहे लाखों भारतीयों को निकालने की जरूरत पड़ सकती है

इजरायल की ओर से हिजबुल्ला के सरगना नसरुल्ला को मार गिराए जाने और लेबनान में सक्रिय इस संगठन के खिलाफ सैन्य कार्रवाई शुरू करने के जवाब में ईरान ने उस पर मिसाइलें दागकर पश्चिम एशिया की हालत और अधिक बिगाड़ने का ही काम किया है। अब यह लगभग तय है कि इजरायल ईरान को निशाना बनाएगा। वह ईरान के परमाणु ठिकानों को भी नष्ट कर सकता है, क्योंकि ईरान की ओर से कहा जा रहा है कि वह इजरायल का नामोनिशान मिटा देगा। इसकी भी प्रबल आशंका है कि इजरायल ईरान के तेल ठिकानों को निशाना बनाएगा। यदि ऐसा होता है तो कच्चे तेल के दाम बढ़ना तय है। इससे विश्व अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ेगा, जो पहले से ही रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण संकट का सामना कर रही है। यदि यहां के हालात खराब हुए तो इस क्षेत्र के विभिन्न देशों में रह रहे लाखों भारतीयों को निकालने की जरूरत पड़ सकती है। स्पष्ट है कि इससे भी भारत की समस्याएं बढ़ेंगी।

पश्चिम एशिया तबसे तनाव और युद्ध की आशंका से घिरा है, जबसे पिछले साल सात अक्टूबर को फलस्तीन के गाजा इलाके में सक्रिय आतंकी संगठन हमास ने इजरायल में घुसकर भीषण हमला किया था। इस हमले में हमास के आतंकियों ने 1200 से अधिक इजरायली नागरिकों को मार दिया था और 200 से अधिक लोगों को बंधक बनाकर गाजा ले आए थे। इजरायल के लिए यह बहुत अधिक आघातकारी था। इजरायल ने हमास को सबक सिखाने के लिए गाजा में हमलों की झड़ी लगा दी। इन हमलों में हमास के तमाम आतंकियों के साथ आम नागरिक भी मारे जा रहे हैं। एक आंकड़े के अनुसार अब तक 40 हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। गाजा में इजरायल के हमलों के दौरान ही लेबनान के ईरान समर्थित संगठन हिजबुल्ला ने भी इजरायली ठिकानों पर हमले करने शुरू कर दिए। इसके चलते इजरायल ने हिजबुल्ला को भी निशाने पर ले लिया। इससे चिढ़कर ही ईरान ने इजरायल को अपना निशाना बनाया। ऐसा करके उसने इजरायल को खुद पर हमले का मौका दे दिया है। इजरायल के जवाबी हमले की आशंका से ग्रस्त ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई भले ही इस्लामी जगत को एकजुट होने की नसीहत दे रहे हों और मुसलमानों को इजरायल के खिलाफ भड़का रहे हों, लेकिन यह साफ है कि कतर को छोड़कर अन्य इस्लामी देश और विशेष रूप से अरब जगत के सुन्नी देश इस संघर्ष से दूर रहना चाहते हैं। इजरायल और इस्लामी देशों के बीच अविश्वास और तनाव का रिश्ता नया नहीं है। इजरायल और इस्लामी देशों में तभी ठन गई थी, जब संयुक्त राष्ट्र की पहल पर 1948 में फलस्तीन कहे जाने वाले क्षेत्र में एक नए राष्ट्र के रूप में दुनिया भर में बिखरे यहूदियों के लिए इजरायल की स्थापना की गई। इजरायल से तमाम संघर्ष के बाद अधिकांश अरब देश इस नतीजे पर पहुंच चुके हैं कि वे उसका मुकाबला नहीं कर सकते, लेकिन ईरान और कतर जैसे देश अभी भी हमास और हिजबुल्ला के जरिये इजरायल को निशाना बनाने की नीति पर चल रहे हैं।

अवधेश राजपूत

इजरायल और इस्लामी देशों के बीच तनाव और युद्ध के लंबे इतिहास के बीच इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि अमेरिका और अन्य पश्चिमी देश हर हाल में इजरायल का साथ देना पसंद करते हैं। इन देशों ने पिछले एक साल में इजरायल और हमास के बीच संघर्ष विराम के लिए तमाम प्रयत्न किए, लेकिन वे नाकाम रहे, क्योंकि हमास बंधकों को रिहा करने के लिए तैयार नहीं हुआ। इजरायल की ओर से ईंट का जवाब पत्थर से देने की कठोर नीति अपनाने के बावजूद अमेरिका और उसके सहयोगी देश उस पर लगाम इसलिए नहीं लगाना चाहते, क्योंकि वह अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रहा है और ऐसा देश अपने शत्रुओं के प्रति नरम रवैया नहीं अपना सकता। इजरायल के आक्रामक रुख को देखते हुए विश्व के अनेक देशों की यह अपेक्षा उचित ही है कि वह संयम का परिचय दे, फलस्तीन को अलग देश के रूप में स्वीकारे और हमास एवं हिजबुल्ला जैसे संगठनों को हथियारों के बल पर खत्म करने का इरादा छोड़े, लेकिन यह तभी संभव हो सकता है, जब ईरान जैसे देश भी इस मुगालते से बाहर आएं कि वे इजरायल का अस्तित्व मिटाने में सफल हो जाएंगे। ईरान इजरायल के लिए खतरा बने हमास और हिजबुल्ला का ही साथ नहीं देता, बल्कि सऊदी अरब की नाक में दम किए यमन के हाउती लड़ाकों की भी सहायता करता है। यही काम कतर भी करता है। हालांकि पश्चिमी देशों का ईरान पर कोई जोर नहीं, लेकिन वे कतर पर तो दबाव बना ही सकते हैं। वे इसमें भी सफल नहीं हो पा रहे हैं।

ईरान के रवैये को देखते हुए अमेरिका ने पश्चिम एशिया में अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ा दी है। यदि इसके जवाब में रूस या चीन ईरान की मदद के लिए आगे आ जाते हैं तो पश्चिम एशिया विश्व की बड़ी शक्तियों का अखाड़ा बन जाएगा। चूंकि रूस और चीन विश्व के किसी भी क्षेत्र में अमेरिका का वर्चस्व कायम होता नहीं देखना चाहते, इसलिए ये दोनों देश हर उस देश के साथ खड़े हो जाते हैं, जो अमेरिका के खिलाफ होता है। पश्चिम एशिया में शांति के आसार इसलिए नहीं दिखते, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र दोनों पक्षों के बीच कोई समझौता करा पाने में नाकाम है। इस पर हैरानी नहीं कि संयुक्त राष्ट्र और उसकी सुरक्षा परिषद की प्रासंगिकता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लग गए हैं। सुरक्षा परिषद की नाकामी को देखते हुए भारत को पश्चिम एशिया में शांति-समझौते के लिए सक्रिय होना चाहिए। एक तो भारत के संबंध इजरायल और ईरान, दोनों से हैं और दूसरे, दुनिया में भारत शांति और अहिंसा के गांधीवादी विचारों के लिए जाना जाता है। ये विचार पश्चिम एशिया में शांति ला सकते हैं। इसकी भी अनदेखी नहीं कर सकते कि अनेक देश यह मान रहे हैं कि भारत अपने बढ़ते कद के चलते पश्चिम एशिया में शांति की प्रभावी पहल कर सकता है। यह भारत के बढ़ते प्रभाव का ही प्रमाण है कि अनेक प्रमुख देश उसे सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाने की जरूरत जता रहे हैं।

response@jagran.com

एक अदद सम्मान के लिए

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

जब बड़े लेखक अपने सम्मान की रक्षा कर नहीं पा रहे हैं तो आम जन की क्या स्थिति होगी? इस पर एक श्वेतपत्र आना चाहिए

वह एक सामान्य दिन नहीं था। मैं देर से सोकर उठा था। अभी अलसाया ही था कि खास मित्र का फोन आ गया। कुछ असामान्य घटित होता है तो वह पहली सूचना मुझे ही देते हैं। इस आशंका से मैं एकबारगी सहम उठा। मैंने डरते-डरते काल रिसीव की। उधर से मित्र की भारी सी आवाज कानों में पड़ी, 'यार, इस बार भी मिश्रा बाजी मार ले गया। न जाने साहित्य को कौन-सा ग्रहण लग गया है! साहित्य को गिरने से अब तो मैं भी नहीं बचा सकता।' यह कहकर उन्होंने गहरी सांस ली।

मिश्रा का नाम सुनते ही मेरी चेतना वापस आ गई। मेरा संवेदनशील हृदय जोर-जोर से पंप करने लगा। मिश्रा हम दोनों का कामन-शत्रु था। अच्छा लिखता था, पर वह हमें अच्छा नहीं लगता था। इस खबर के बाद और भी बुरा लगने लगा। फिर भी स्वयं पर नियंत्रण करते हुए पूछा, 'क्या हुआ मित्र! जरा खुलकर बताओ। उसने तुम्हारा क्या अनर्थ कर दिया?' वह लगभग डपटते हुए बोले, 'भई, तुम स्थिति की गंभीरता नहीं समझ रहे हो। गाज मेरे ऊपर नहीं गिरी है। मैं तो तुम्हारे लिए हलकान हो रहा हूं। इस बार बड़े लेखक वाला सम्मान जो तुम्हें मिलना चाहिए था, वह ले गया। वह इतना भी बड़ा नहीं हुआ कि सबसे बड़े लेखक के नाम का सम्मान उसे मिले। अभी हम जीवित हैं।'

मैं गंभीर हो चुका था और गमगीन भी। आज आखिरी आस भी टूट गई। ऐरे-गैरे रोज सम्मान पा रहे हैं और मैं इस श्रेणी के भी लायक नहीं। मन को कहां तक सांत्वना दूं, पर बात तो करनी थी, सो बोल दिया, 'किंतु यह हुआ कैसे? इस बार तो हमने सही फील्डिंग जमाई थी। चयनकर्ताओं की नियमित खैर-खबर भी रखते थे। एक की तो हवाई-टिकट के पैसे हमीं ने दिए थे और दूसरे के मोबाइल को तीन बार रीचार्ज कराया था। फिर भी! मुझे तो शुक्ला पर संदेह है। वह मुझसे तबसे जलता है जबसे उसकी प्रेमिका से विवाह कर लिया। वह अभी तक मेरे गले पड़ी है। मुझे कभी सम्मान नहीं नसीब हुआ, न जीवन में, न लेखन में। इस शुक्ला ने ही मुझसे प्रतिशोध लिया है।'

'तुम कुछ नहीं जानते। ऐसे ही अनजान और भोले बने रहोगे तो जीवन भर 'सम्मानहीन' का खिताब तुम्हारे पास ही रहेगा। इस बार बड़ा खेला हुआ है। आखिरी क्षणों में रस्तोगी और खन्ना खेल गए। तुम्हारा नाम काटने के लिए दोनों मिश्रा के साथ चले गए, जबकि तुम्हीं लाए थे इन्हें साहित्य में। जब दोनों कहानी में नहीं घुस पाए तो कविता का दरवाजा खटखटाया। वहां भी दाल नहीं गल पाई तो समीक्षक बन गए। अब ये ही तुम्हें सिखा रहे हैं। रही बात चयनकर्ताओं को साधने की, वहां भी मिश्रा तुमसे बाजी मार ले गया। एक के बेटे को आइपीएल में सेलेक्ट करा दिया और दूसरे की बेटी के विवाह में खान-पान का पूरा प्रबंध किया। इसे कहते हैं मैनेजमेंट। अब शायद तुम्हें अक्ल आए!' इतना कहकर उन्होंने आखिरी से बहुत पहले वाली सांस ली।

मुझे 'अटैक' आते-आते बचा, बिल्कुल 'सम्मान' की तरह। मेरी कहीं भी पूछ नहीं है। एक उसे देखो। कल का आया हुआ लड़का है। कभी संघर्ष नहीं किया। आते ही छा गया। साहित्य में अंधेरा उसी की वजह से है। एक हम हैं कि पहले दिन से ही संघर्षरत हैं। पहले छपने के लिए किया, अब सम्मान के लिए कर रहे हैं। मुझे समझ में आ गया कि लिखने से ज्यादा पैंतरे आने चाहिए। मेरे पास जितना बजट था, उसमें कोई ढंग का पैंतरा हो भी नहीं सकता था। यह लगातार तीसरी बार हुआ है जब मेरा सपना टूटा है। कवि पाश ने कहा भी है, 'सबसे खतरनाक होता है, हमारे सपनों का टूट जाना!' निश्चित ही उन्हें मेरी दशा का पूर्वानुमान हो गया होगा। यह भी कोई लोकतंत्र है? एक ही आदमी सारे सुख लिए जा रहा है। कोई कब तक संघर्ष करेगा भाई! हम जैसे बड़े लेखक अपने सम्मान की रक्षा कर नहीं पा रहे हैं तो आम आदमी की क्या स्थिति होगी? इस पर भी एक श्वेत-पत्र आना चाहिए।' मैंने मन ही मन में कहा। 'अब ज्यादा सोचो नहीं, दिल्ली का एक हवाई-टिकट बुक करा दो। इस मिश्रा का तोड़ तलाशता हूं।' इतना कहकर बिना मेरा जवाब सुने उन्होंने फोन काट दिया। मुझे इस बार भी अटैक नहीं आया।

response@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

ऊर्जा

शब्द संचेतना

शब्द इस जगत की सबसे बड़ी ताकत हैं, जो वाणी से निःसृत होकर अचेतन को भी सचेतन और सचेतन को भी अचेतन कर सकते हैं। इनसे बड़ा न कोई अस्त्र है, न कोई औषधि। अतः सकारात्मक एवं नकारात्मक ऊर्जा के भंडार होने से इनके प्रयोग में सावधानी आवश्यक है। जगत के समान शब्द के भी दो रूप हैं-स्थूल और सूक्ष्म। विचार शब्द के सूक्ष्म रूप हैं, जबकि नाद स्थूल रूप है, जिसे ध्वनि कहा जाता है। मन-मस्तिष्क में सबसे पहले विचार उत्पन्न होते हैं। फिर प्रतीक के माध्यम से साकार होकर ये लौकिक कार्य व्यवहारों के साधन बनते हैं। अतः लौकिक जगत के स्वरूप निर्धारण में शब्दों का महनीय योगदान है।

शून्य से विराट की यात्रा में शब्द परमात्मा के प्रथम अवतरण हैं। यही ओंकार की प्रथम ध्वनि है। कण-कण से इसकी ही ध्वनि प्रतिध्वनित होकर जगत को शब्दायमान करती है। जगत के कल्याण के लिए शब्द का वाणी के रूप में अवतरण ही परमात्मा का साकार होना है। इसलिए ब्रह्म को वही जान सकता है, जो शब्द की महिमा को जानता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं-वर्णों में मैं अकार हूं, जिसके बिना शब्द जीवंत नहीं हो सकते। इसलिए शब्द ईश्वरीय संचेतना के जीवंत रूप हैं, जो जीव और जगत, दोनों को प्राणवंत करते हैं।

शब्द का मौन हो जाना ही मृत्यु है। इसी महत्ता के कारण शब्द को ब्रह्म कहा जाता है। व्यापक, अविनाशी, अव्यक्त, अगोचर आदि समान गुण धर्म भी शब्द को ब्रह्म की संज्ञा प्रदान करते हैं। जीव और ब्रह्म की एकता भारतीय अध्यात्म का मूल है, जिसकी सिद्धि साधना के बिना संभव नहीं। मुखरित अथवा मूक होकर ये शब्द ही साधना के आधार बनते हैं। लौकिक सिद्धि के समान आध्यात्मिक सिद्धि तब तक नहीं हो सकती, जब तक शब्दों का प्रयोग उपयुक्त न हो। दोनों क्षेत्रों में इनका अमांगलिक प्रयोग अनर्थकारी सिद्ध होता है। शब्द को ब्रह्म के रूप में स्वीकार करके ही इनकी अमांगलिकता से बचा जा सकता है।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

राजरंग

मंत्री पद का प्रचार

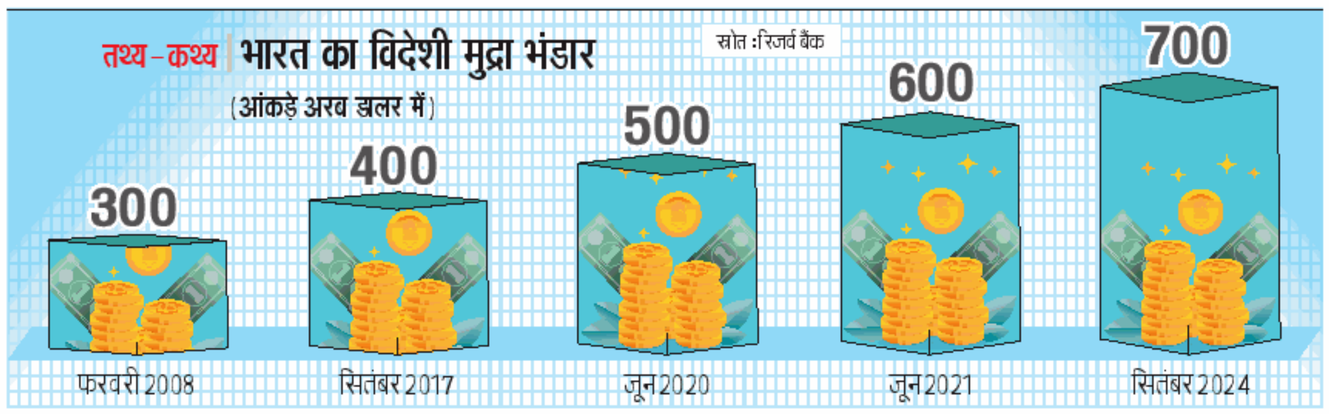

हरियाणा में भाजपा लगातार तीसरी बार सत्ता की आस लगाए बैठी है और कांग्रेस इस बार अपनी बारी का दावा कर रही है। इस बीच दोनों दलों के कई ऐसे उम्मीदवार हैं, जो विधानसभा चुनाव लड़े तो अच्छा, लेकिन चाहते थे कि नेतृत्व से थोड़ा बल मिल जाए, तो उनकी जीत पक्की हो जाएगी। चुनाव प्रचार के दौरान ऐसे उम्मीदवारों ने अपने-अपने दल के बड़े नेताओं पर बार-बार यह दबाव बनाने की कोशिश की कि प्रचार मंच से वे इतना भर घोषित कर दें कि जीत गए तो मंत्री बनाए जाएंगे। उम्मीदवार उन्हें यह भरोसा देते थे कि इतना भर बोल देने से वे चुनाव जीत जाएंगे। दरअसल कई चुनावों में इसका असर दिखा भी है, लेकिन बड़े नेताओं को इसका अहसास तो होता ही है कि कहां बोलना है और कहां नहीं।

राजनीति की उलटबांसी

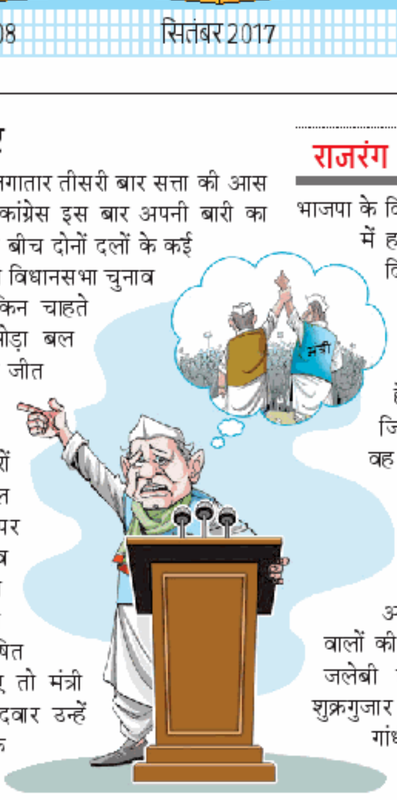

कर्नाटक के नेताओं का तो जलवा ही अलग है। बोलने पर आ जाएं तो कुछ भी बोल सकते हैं। अनुशासनहीनता या बेवजह बयानबाजी पर सामान्यतया हाईकमान से नीचे के नेताओं को चेतावनी मिलती है, लेकिन कर्नाटक में उलटा भी हो रहा है। भाजपा के विधायक बसनगौड़ा पाटिल यतनाल ने हाल में हाईकमान को ही अल्टीमेटम दे दिया कि दिसंबर तक प्रदेश अध्यक्ष बदल दें, वरना वह कुछ निर्णय ले लेंगे। बताया जाता है कि उन्होंने अपने साथ कुछ और विधायकों के होने का भी जिक्र कर दिया है। इसमें शामिल अधिकतर लोग ऐसे हैं, जिनका कोई बड़ा प्रभाव नहीं है, फिर भी वह अल्टीमेटम देने की हिम्मत दिखा रहे हैं।

जलेबी का जलवा

यूं तो आज के दौर में राजनीति पर समाज में कड़वाहट घोलने का ही आरोप है, लेकिन मीठे का व्यापार करने वालों की शिकायत शायद कुछ कम हो गई होगी। जलेबी बनाने वाले तो जरूर नेताओं के शुक्रगुजार होंगे। बीते दिनों हरियाणा में राहुल गांधी ने जलेबी को एक्सपोर्ट करने का बिजनेस आइडिया दे डाला। भगवा खेमे वालों ने उलझी जलेबी का वह छोर पकड़कर सियासी तड़का लगा दिया कि गरम-गरम खाई जाने वाली जलेबी के एक्सपोर्ट का क्या तुक? जब आंच वरिष्ठ नेता के ज्ञान पर आई तो सियासी बार के लिए तथ्यों की तलाश में डूबे रहने वाले कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता जलेबी बनाने की विधि, फैक्ट्री में उसके निर्माण और कौन-कौन से ब्रांड किस तरह की जलेबी का एक्सपोर्ट कर रहे हैं, इसके शोध में डूब गए। फिलहाल इंटरनेट मीडिया पर जलेबी के ब्रांड छाए हुए हैं और नेता 'पाक कला विशेषज्ञ' बने दिख रहे हैं।

मंत्री जी की क्लास

अपनी जिम्मेदारियों को हल्के में लेने वाले मंत्रियों और नेताओं को फिलहाल जयंत चौधरी से सीखने की जरूरत है। जो मंत्रालय के लक्ष्य को हासिल करने के लिए अब खुद ही मैदान में उतर गए हैं। दरअसल उनके पास जिन दो मंत्रालयों की जिम्मेदारी है, उनमें कौशल विकास और शिक्षा है। इनमें शिक्षा मंत्रालय ने पिछले दिनों साक्षरता के शत प्रतिशत लक्ष्य को हासिल करने के लिए एक बड़ा अभियान शुरू किया, जिसके तहत 2030 तक देश को शत-प्रतिशत साक्षर बनाना है। इस अभियान में कोई भी स्वैच्छिक रूप से जुड़कर निरक्षर लोगों को पढ़ाने में मदद दे सकता है। ऐसे में शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने युवाओं से इससे जुड़ने की अपील के साथ खुद आगे बढ़कर निरक्षर लोगों को पढ़ाने का फैसला लिया है। इसके लिए उन्होंने पोर्टल पर पूर्वी दिल्ली के साक्षरता केंद्र के लिए अपना रजिस्ट्रेशन भी करा लिया है। जल्द ही वह निरक्षर लोगों को पढ़ाते हुए दिखेंगे। देखना होगा कि मंत्री जी की क्लास में किस-किस को पढ़ने का मौका मिलता है।

पोस्ट

हरियाणा में कांग्रेस और भाजपा में ऐसे कई नेता हैं, जो खुल कर कहते हैं कि अगर उनकी पार्टी की सरकार बनी तो वे मुख्यमंत्री बनेंगे, लेकिन हाल का अनुभव बताता है कि मुख्यमंत्री वह नहीं बनता, जो जोर-शोर से इसका डंका पीटता है।

अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

बड़े शर्म की बात है कि हमारे देश की जेलों तक में जातिभेद के आधार पर काम का बंटवारा होता है। सुप्रीम कोर्ट ने ऐसी अमानवीय व्यवस्था के खिलाफ सख्त फैसला दिया है। बधाई।

कैलाश सत्यार्थी@k_satyarthi

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार ने इतिहास में पहली बार 700 अरब डालर का आंकड़ा पार किया है। जब दुनिया में खलबली मची हुई है, तब भारत सरपट विकास के पथ पर दौड़ रहा है।

बालियान@Baliyan_x

गृह मंत्रालय ने अखबारों में डिजिटल अरेस्ट पर जागरूकता के लिए फुल पेज विज्ञापन दिया है। यह नई टेक्नोलाजी की बदलती चुनौतियों का परिचायक है। सरकारों को साइबर अपराधियों से एक कदम आगे रहना होगा।

सुधीर चौधरी@sudhirchaudhary

जनपथ

इजरायल-ईरान या रूस और यूक्रेन,
क्यों खराब है आजकल इन देशों का ब्रेन?
इन देशों का ब्रेन विश्व को नर्क बनाएं,
चाह रहे ये गिद्ध सड़े शव पर मंडराएं!
छेड़ रहा ईरान थोक में दाग मिसाइल,
क्यों बैठेंगे शांत भला यूएस-इजरायल!!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त
जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प.बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर. बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि. नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 25 अंक 175

इन्सान पेड़ सिर्फ अपने लिए नहीं, आने वाली पीढ़ियों के लिए भी लगाता है।
- अलेक्जेंडर स्मिथ

ऐसा नहीं है कि सिर्फ मनुष्य और जानवर ही बातचीत करते हैं। शोध बताते हैं कि पेड़-पौधे न सिर्फ बातचीत करते हैं, बल्कि आसन्न खतरे की स्थिति में जड़ों, विद्युत संकेतों, भूमिगत कवक और मिट्टी के सूक्ष्मजीवों के नेटवर्क के माध्यम से अपने साथियों को कुशलता से संदेश भेज सकते हैं।

पेड़-पौधों का भी अपना इंटरनेट होता है

पेड़-पौधों के बीच ज्यादा संचार जमीन के नीचे होता है, जिसे 'वुड वाइड वेब' कवक नेटवर्क द्वारा सुगम बनाया जाता है। माना जाता है कि 80 फीसदी से अधिक पौधे आपस में जुड़े हुए हैं।

स्वेन बाटके
द कन्वर्सेशन

आज सुबह मेरी छह साल की बेटी हमारे शयन-कक्ष में आई और एक किताब से कहानी पढ़ने लगी। वह एक-एक शब्द पढ़ते हुए पूरा वाक्य बना रही थी। कभी-कभी वह अटक जाती थी और कुछ मजेदार शब्दों को समझने के लिए मदद मांगती थी, लेकिन किताब खत्म करने के बाद उसने हमें बर्फ में फंसे एक भालू की कहानी सुनाई। मुझे बातचीत करना अच्छा लगता है, चाहे वह किसी बच्चे के साथ हो, बुजुर्ग के साथ हो, किसी अपने के साथ हो या फिर अजनबी के साथ। मुझे लगता है कि मनुष्य एक प्रजाति के तौर पर इसलिए ही कामयाब हो सका, क्योंकि वह बातचीत कर सकता है। खतरा आने पर वह बोलकर चेतावनी दे सकता है और जटिल सूचनाओं का भी आदान-प्रदान कर सकता है। जानवर भी ये काम करते हैं। भले ही हम उनकी बोली न समझ पाएं, लेकिन उनके समूह के दूसरे जीव उस आवाज को समझ लेते हैं।

लेकिन क्या आपको पता है कि मनुष्यों और जानवरों की तरह पेड़-पौधे भी, जो भले ही निष्क्रिय लगते हों, बातचीत करते हैं!

यह विचार कोई नया नहीं है। कुछ वर्ष पहले आई हॉलीवुड की फिल्म *अवतार* के लिए भी पेड़-पौधों की यही शक्तियां प्रेरणा बनी थीं। लेकिन विज्ञान कहता है कि वनस्पतियों के बीच होने वाली यह बातचीत हमारी कल्पना से भी जटिल हो सकती है। दरअसल, ये पर्यावरणीय संवाद बेहद संवेदनशील और संतुलित होते हैं। कल्पना करें कि अगर वैश्विक नेटवर्क सिस्टम अचानक टूट जाए, तो हमारी दुनिया कितनी अस्त-व्यस्त हो जाएगी। यही बात पौधों के मामले में भी लागू होती है। यह समझने के लिए कि जो जीव बोल नहीं सकते, वे एक-दूसरे को सूचना कैसे देते हैं, यह समझना महत्वपूर्ण है कि मनुष्यों में एक मूक संचार प्रणाली भी होती है। इसमें हमारी दृष्टि, गंध, श्रवण, स्वाद और स्पर्श की भावना शामिल है। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक गैस कंपनियां गैस में मरकैप्टन नामक रसायन मिलाती हैं, जिससे उसमें से 'सड़े अंडे' जैसी गंध आती है, जो हमें रिसाव के बारे में चेतावनी देती है।

यह भी सोचें कि हमने सांकेतिक भाषा कैसे विकसित की, जबकि कई लोग होंठों की भाषा भी समझ लेते हैं। इन इंद्रियों के अलावा, हमारे पास संतुलन और शरीर की मुद्रा बनाए रखने की क्षमता, शरीर के अंगों की सापेक्ष स्थिति और ताकत का बोध, तापमान में बदलाव का बोध और दर्द को महसूस करने की क्षमता भी है। पौधे सूचना प्रसार के लिए अपनी इंद्रियों का उपयोग अपने तरीके से करते हैं।

हममें से ज्यादातर लोग ताजा कटी घास की गंध से परिचित हैं। घास के पौधों द्वारा छोड़े जाने वाले वाष्पशील या रासायनिक पदार्थ, जिन्हें हम उस गंध से जोड़ते हैं, एक तरीका है, जिससे वे आसपास के दूसरे पौधों को बताते हैं कि कोई शिकारी (लॉनमूवर) मौजूद है, जिससे पौधे अपनी सुरक्षा के लिए जरूरी बदलाव करते हैं। श्रवण संकेतों का उपयोग करने के बजाय पौधे रासायन-प्रेरित संचार का उपयोग करते हैं। हालांकि, पौधों का संचार वाष्पशील पदार्थों तक ही सीमित नहीं होता है। हाल ही में, वैज्ञानिकों ने पाया कि पौधे आपस में कितने बेहतर तरीके से जुड़े हुए हैं और वे अपनी जड़ों, विद्युत संकेतों, भूमिगत कवक और मिट्टी के सूक्ष्मजीवों के नेटवर्क के माध्यम से अपने साथियों को बेहद कुशलता से संदेश भेज सकते हैं।

पौधों के आसपास की निगरानी करने वाली गंध की खोज की गई। उदाहरण के लिए, इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी एक अपेक्षाकृत नया वैज्ञानिक अनुशासन है, जो अध्ययन करता है कि पौधों में और उनके साथियों के बीच विद्युत संकेतों का संचार कैसे किया जाता है। प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की प्रगति के साथ हमने पिछले कुछ वर्षों में अनुसंधान के इस क्षेत्र में त्वरित विकास का अनुभव किया है। वैज्ञानिक उल्लेखनीय खोजों के कगार पर हैं, क्योंकि हाल ही में हुई प्रगति के कारण आधुनिक ग्रीनहाउसों में पौधों के भीतर और उनके बीच विद्युत संकेत संचार को एकीकृत किया जा सका है, जिससे फसलों की सिंचाई पर निगरानी और नियंत्रण किया जा सकेगा या पोषण संबंधी कमियों का पता लगाया जा सकेगा। वैज्ञानिक एक्यूपंक्चर सुइयों के समान छोटे विद्युतीय जांच उपकरणों को डालकर यह जांच करते हैं कि विद्युतीय संकेतों में परिवर्तन, पौधों के प्रदर्शन से किस प्रकार जुड़े हैं, जैसे कि जल, पोषक तत्वों का परिवहन और प्रकाश को महत्वपूर्ण शर्कराओं में परिवर्तित करना। शोधकर्ताओं ने मोबाइल फोन से विद्युत संकेत भेजकर पौधों के व्यवहार को भी प्रभावित किया है, जिससे वे वीनस फ्लाईट्रैप में पत्तियों को खोलने या बंद करने जैसी बुनियादी प्रतिक्रियाएं करने लगते हैं। जल्द ही हम अपनी फसलों की भाषा को पूरी तरह समझने में सक्षम हो जाएंगे।

पौधों के बीच बहुत ज्यादा संचार जमीन के नीचे होता है, जिसे 'वुड वाइड वेब' नामक बड़े कवक नेटवर्क द्वारा सुगम बनाया जाता है। कवक का यह नेटवर्क पेड़-पौधों को जमीन के नीचे जोड़ता है, जिससे वे पानी, पोषक तत्व और सूचना जैसे संसाधन साझा करते हैं। इस प्रणाली के जरिये पुराने पेड़ छोटे पेड़ों को बढ़ने में मदद कर सकते हैं, और कीटों जैसे खतरों के बारे में एक-दूसरे को चेतावनी दे सकते हैं। यह पेड़-पौधों के लिए एक भूमिगत इंटरनेट की तरह है, जो उन्हें एक दूसरे का समर्थन करने और एक-दूसरे से संवाद करने में मदद करता है। यह नेटवर्क व्यापक है, माना जाता है कि 80 फीसदी से अधिक पौधे आपस में जुड़े हुए हैं, जो इसे दुनिया की सबसे पुरानी संचार प्रणालियों में से एक बनाता है। इंटरनेट की तरह ही कवक नेटवर्क पौधों को पर्यावरणीय परिवर्तनों के लिए तैयार होने की खातिर सहजीवी कवक का उपयोग करने की अनुमति देता है।

हालांकि, मिट्टी में रसायनों की मिलावट, वनों की कटाई या जलवायु परिवर्तन के चलते इन नेटवर्कों में पानी और पोषक तत्वों के चक्र प्रभावित होने के कारण संचार बाधित हो सकते हैं, जिससे पौधे कम जानकारी प्राप्त कर पाते हैं और आपस में कम जुड़े रहते हैं। इन नेटवर्क को बाधित करने के प्रभावों पर अभी तक बहुत अधिक शोध नहीं हुआ है। लेकिन संचार में बाधा उन्हें अधिक असुरक्षित बना सकती है, जिससे दुनिया भर में पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा और उसे बहाल करना ज्यादा कठिन हो सकता है। बच्चों की मदद करना महत्वपूर्ण है, ताकि वे अपने आसपास की दुनिया को समझ सकें। यह उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि यह सुनिश्चित करना कि हम पौधों के बीच संचार को बाधित न करें। आखिरकार, हम अपनी भलाई और अस्तित्व के लिए पौधों पर ही निर्भर हैं।

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

एक स्त्री ने किया दस पुरुषों से विवाह

पृथु के प्रपौत्र प्राचीनवर्हि का विवाह समुद्र की कन्या से हुआ था। उनके दस पुत्र हुए, जो सामूहिक रूप से 'प्रचेतस' कहलाते थे। वे सब विष्णु के भक्त थे। जल्द ही, प्राचीनवर्हि के सामने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने का समय आ गया। परंतु प्रचेतस में से कोई भी यह उत्तरदायित्व लेने को तैयार नहीं था। उन सबने यही कहा, 'नारायण का चिंतन करना ही हमारे जीवन का उद्देश्य है।' प्राचीनवर्हि निरंतर प्रचेतस से आग्रह करता रहा। आखिर प्रचेतस ने एक प्रस्ताव रखा। वे बोले, 'हम नारायण का आह्वान करेंगे। यदि उन्होंने हमें शासन करने की अनुमति दी, तो ठीक है अन्यथा हम अपनी आध्यात्मिक खोज जारी रखेंगे।' प्राचीनवर्हि ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

धूप आने दो

प्रचेतस भाई नारायण की साधना में लीन हो गए। उनकी तपस्या के दस हजार वर्ष बाद भगवान विष्णु प्रकट हुए। उन्होंने प्रचेतस को कहा, 'महान राजा पृथु के वंशज होने के नाते शासन करना आपका कर्तव्य है।' प्रचेतस भाइयों ने देखा कि उनके चारों ओर केवल घना जंगल था। कई दिनों तक घूमने के बाद भी उन्हें कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया। हर जगह फफूंद उग आई थी। तब सूर्य ने प्रचेतस भाइयों को बताया कि जिन दिनों वे तपस्या में लीन थे, पृथ्वी शासक विहीन हो गई और सभ्यता का अंत हो गया। भूलोक पर हर जगह वनस्पति उग आई है।

यह सुनकर प्रचेतस हाथ पकड़कर एक वृत्त बनाकर खड़े हो गए और उन्होंने अपने मुख खोल दिए। उनके मुख से प्रचंड ज्वाला निकली, जिसने सारे वृक्ष जला डाले। तभी उन्होंने सुना कि चंद्रमा उनसे रुकने की विनती कर रहा था। उसने कहा, 'मैं वनस्पति का पोषण करता हूं। आपकी अनुपस्थिति के कारण सब ओर जंगल उग आए हैं। परंतु इसमें वन का दोष नहीं है। उन्हें जलाना अनुचित है।'

किंतु प्रचेतस भाइयों ने चंद्रमा के आग्रह को नहीं माना। वे बोले, मानव जाति के विलुप्त होने के बाद, उनके लिए प्रजनन करना संभव नहीं है। उनकी मृत्यु के साथ मनुष्यता का अंत हो जाएगा। इसलिए वे सब नष्ट कर रहे हैं।

तब चंद्रमा ने कहा, 'तब भी आपका वंश समाप्त नहीं होगा, क्योंकि अब भी एक प्राणी जीवित है। वही आपके वंश को आगे बढ़ाएगा।' प्रचेतस भाइयों ने किसी की आहट सुनी। उन्होंने मुड़कर देखा, तो पाया कि पीछे एक स्त्री खड़ी थी।

'यह कौन है?' प्रचेतस ने चंद्रमा से पूछा। 'इसका नाम मारिशा है। यह महर्षि कंडू की पुत्री है। ऋषि कंडू और एक अप्सरा के संयोग से मारिशा का जन्म हुआ था। अप्सरा से उत्पन्न होने के कारण यह जीवित बच गई और वृक्षों ने ही इसका पालन-पोषण किया है। सृष्टि ने मारिशा को बचाकर आपके वंश की रक्षा की है। इसी के गर्भ से मनुष्य पुनः जन्म लेंगे। भूलोक ने अपनी भूमिका निभाई और अब आपको भी अपना दायित्व निभाना चाहिए। आपके कारण ही मानव जाति लुप्त हुई थी और अब आपको ही उस भूल का परिमार्जन करना होगा। इसके लिए आप दसों प्रचेतस भाइयों को मारिशा से विवाह करके पृथ्वी को पुनः आबाद करना होगा।'

तब मारिशा ने कहा, 'पूर्वजन्म में मेरा विवाह एक राजा से हुआ था। रोगग्रस्त होने के कारण राजा की युवावस्था में ही मृत्यु हो गई। फिर मैंने भगवान विष्णु से प्रार्थना करके उनसे दो वरदान मांगे। एक, मेरा पुत्र ब्रह्मदेव जैसा हो, और दूसरा यह कि मुझे अगले दस जन्मों में दस स्वस्थ पति मिलें। ईश्वर ने मुझे पहला वरदान प्रदान कर दिया, किंतु दूसरे में थोड़ा संशोधन कर दिया। उन्होंने आशीर्वाद दिया कि एक ही जीवन में मेरे दस पति होंगे। आपके माध्यम से वह दूसरा आशीर्वाद भी सत्य हो गया है।' चंद्रमा ने मारिशा से कहा, 'आपका पुत्र सचमुच ब्रह्मा के समान होगा, क्योंकि वह स्वयं सृष्टिकर्ता का पुत्र होगा। उसे दक्ष कहा जाएगा। प्रचेतस भाइयों से आपके संयोग के फलस्वरूप, प्रजापति दक्ष का जन्म होगा।' दावानल और तूफान भी रुक चुका था। इस तरह दसों प्रचेतस भाइयों ने मारिशा से विवाह कर लिया और सृष्टि के विस्तार का कार्य आगे बढ़ाया।

डॉल्फिन से सीखें सामाजिकता का पाठ

डॉल्फिन के समूह को तैरते देखना मोहित करता है, लेकिन इसके पीछे का मनोविज्ञान अचंभित भी करता है।

इसाबेला क्लेग

क्या आपने कभी डॉल्फिन के समूह को एक साथ तैरते हुए देखा है? उनके बीच का तालमेल सम्मोहित करने वाला होता है। इससे उनके मन की भीतरी व्यवस्था का भी पता चलता है। वे उदास हैं या दुखी, उत्साहित हैं या नीरस, ये सब उनकी सामूहिक तैराकी में झलकता है। जैसे मनुष्य आशावादी और निराशावादी होते हैं, जानवर भी हो सकते हैं। हाल के अध्ययनों से तो यही पता चलता है कि कुछ जानवर बाहरी और भावनात्मक स्थिति के आधार पर सकारात्मक या नकारात्मक फैसले ले सकते हैं। इस घटना को संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह कहा जाता है। इसका प्रशिक्षण भी दिया जा सकता है। इसमें सबसे पहले पशु को सिखाया जाता है कि कुछ संकेत प्रकट होने पर क्या होगा। मसलन, अगर हम कमरे के बाएं कोने में एक कटोरा रखते हैं, तो इसका मतलब है कि उन्हें एक बड़ा इनाम मिलेगा। जब कटोरा दाएं कोने में होता है, तो इसका मतलब है कि उसे कोई इनाम नहीं मिलेगा, या कुछ बुरा होगा। तार्किक रूप से, जानवर सकारात्मक संकेत की ओर तेजी से भागेगा और नकारात्मक संकेत की ओर बहुत धीमे। कटोरे को कमरे के बीच में रखने पर अगर कोई जानवर कटोरे की ओर तेजी से दौड़ता है, तो उसे ज्यादा 'आशावादी' माना जाता है, क्योंकि उसे अज्ञात घटना से कुछ सकारात्मक होने की उम्मीद होती है। हालांकि, इन परीक्षणों को पहले कभी डॉल्फिन पर नहीं आजमाया गया था। मैंने यह पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया कि क्या डॉल्फिनों में भी संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह होते हैं। हमने आठ डॉल्फिनों को लक्ष्य को छूकर वापस लौटना सिखाया। डॉल्फिनों ने सीखा कि अगर लक्ष्य को पूल के एक तरफ रखा जाए, तो उन्हें उनकी पसंदीदा मछली मिलेगी। अगर लक्ष्य पूल की दूसरी तरफ होगा, तो उन्हें सिर्फ प्रोत्साहन ही मिलेगा। परिणामों से पता चला कि वास्तव में, डॉल्फिनों में आशावाद और निराशावाद के स्तर अलग-अलग थे। लेकिन सबसे दिलचस्प जानकारी यह मिली कि डॉल्फिन हर परिस्थिति में सामाजिक व्यवहार में संलग्न होती हैं। हमने देखा कि जो डॉल्फिनें बार-बार एक साथ तैरती थीं, वे सबसे अधिक आशावादी निर्णय भी लेती थीं। चार महीनों तक रोजाना अध्ययन के बाद हमने पाया कि आशावाद के स्तर भावनात्मक स्थितियों से जुड़े हैं। भावनात्मक स्थितियां संभवतः समूह के भीतर होने वाले सकारात्मक सामाजिक व्यवहार से प्रेरित होती हैं। इस अध्ययन के अनुसार, तालमेल पूर्ण तैराकी के स्तर का उपयोग भावनात्मक स्थिति के संकेतक के रूप में किया जा सकता है, और इस प्रकार यह जानवरों की सामाजिक गतिशीलता की निगरानी और सुधार करने में मदद कर सकता है।

द कन्वर्सेशन से

कौन है जो सूर्य किरणों को देखकर प्रसन्न नहीं होता? *नैषधीयचरितम* में श्रीहर्ष सूर्य व उषा का मनोरम वर्णन करते हैं-

अरुणकिरणे वह्नौ लाजानुडूनि जुहोति या, परिणयति तां संध्यामेतामवैमि मणिर्दिवः।
इयमिव स एवाग्निभ्रान्तिं करोति पुरा यतः, करमपि न कस्तस्यैवोत्कः सकौतुकमीक्षितुम॥

सूर्य उषा से विवाह कर रहे हैं, जो तारों को भुने हुए चावल के रूप में अग्नि (सूर्य के तेज) में आहुति रूप से अर्पित कर रही है। जैसे वह सूर्य के फेरे लेगी, वैसे ही सूर्य भी अग्नि के चारों ओर फेरे लेंगे। ऐसा कौन है, जो उसके हाथ पर बंधे वैवाहिक धागे को देखने के लिए उत्सुक नहीं है?

प्रस्तुति : शास्त्री कोसलेंद्रदास

अध्ययन कक्ष

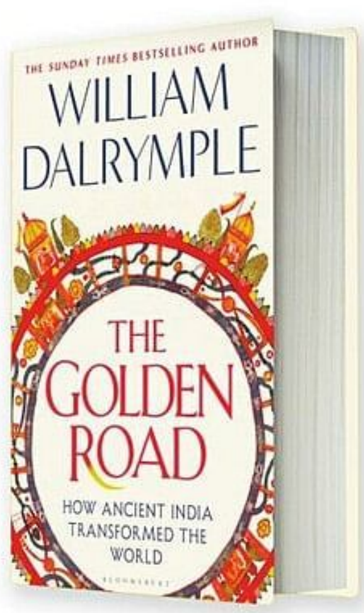

द गोल्डन रोड
हाउ एन्शिएन्ट इंडिया ट्रांसफॉर्म्ड द वर्ल्ड

लेखक : विलियम डेलरिंपल

प्रकाशक : ब्लूम्सबरी
मूल्य : 999 रुपये
हार्डकवर

गुलामी कैसे आई

इंडोनेशिया ने अपनी राष्ट्रीय एयरलाइंस का नाम भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ के नाम पर क्यों रखा? दुनिया को शून्य का पता कैसे चला? कंबोडिया के जंगलों में एक ही देवता का विशाल मंदिर क्यों है? सोने की चिड़िया कहा जाने वाला देश आखिर गुलाम कैसे हो गया?

ब्रिटेन के इतिहासकार, ऐतिहासिक ब्रॉडकास्टर और फोटोग्राफर विलियम डेलरिंपल अपनी नई पुस्तक *द गोल्डन रोड, हाउ एन्शन्ट इंडिया ट्रांसफॉर्म्ड द वर्ल्ड* में उन विचारों का जिक्र करते हैं, जिनसे भारत ने पूरी दुनिया को आकार दिया। दस अध्यायों में लिखी करीब 600 पृष्ठ की यह किताब वैश्विक इतिहास, कला और संस्कृति पर भारतीय सभ्यता के प्रभावों का बड़ी खूबसूरती के साथ बखान करती है। यह न केवल प्राचीन इतिहास, बल्कि मध्यकाल से लेकर आधुनिक भारत की संपूर्ण कहानी बताती है।

इसे लिखने के लिए विलियम डेलरिंपल ने भारत में पूरे पांच वर्ष बिताए। किताब बताती है कि दुनिया भर के लोगों के पास स्थानीय मान और शून्य आधारित संख्या प्रणाली का ज्ञान कैसे पहुंचा? इंडोनेशिया ने अपनी राष्ट्रीय एयरलाइंस का नाम भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ के नाम पर क्यों रखा? कंबोडिया के जंगलों में एक ही देवता का विशाल मंदिर क्यों है? जैसे-जैसे किताब के पन्ने पलटते चले जाएंगे, तो भारत को और गहराई से जानने की जिज्ञासा बढ़ती जाती है। डेलरिंपल बताते हैं कि एशिया के लिए भारत का स्थान वही था, जो स्थान रोम के लिए यूनान का हुआ करता था। भारत के विचार चीन समेत लगभग पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया और ज्यादातर अरब दुनिया में फैले हुए थे। यह वह हिस्सा था, जिसे इंडोस्फीयर कहा जाता है या काव्यात्मक रूप में कहें, तो 'गोल्डन रोड' हिंदू कुश से लेकर प्रशांत महासागर तक को जोड़ती थी।

इसमें ईस्ट इंडिया कंपनी का जिक्र है, तो प्रथम अफगान युद्ध की गाथाओं का रोमांचक चित्रण भी है। इसमें नालंदा विश्वविद्यालय और उसके महान पुस्तकालय का भी जिक्र है। 'गोल्डन रोड' भारत से समुद्र, पहाड़ों और रेगिस्तानों द्वारा अलग किए गए देशों तक सांस्कृतिक प्रसारण की जटिल व्यवस्था में गहरी दिलचस्पी जगाती है। किताब यह भी बताती है कि कैसे भारतीय नाविकों ने उच्च गति वाले मोटरवे के समुद्री समकक्ष तैयार करने के लिए मानसून के अपेक्षाकृत पूर्वानुमानित पैटर्न का उपयोग करना सीखा। यह वह दौर था, जब भारत और अफ्रीका के पूर्वी तट के बीच लोग इतनी तेजी से यात्रा कर सकते थे कि अफगानिस्तान में धैर्यपूर्वक चलने वाले ऊंटों के कारवां को भी शर्म आ जाए। 'गोल्डन रोड' में एक चीनी भिक्षु जुआनजांग का भी वर्णन है, जिसने 6,000 मील की यात्रा कर 17 वर्ष भारत में बिताकर बौद्ध धर्म की शिक्षा हासिल की। किताब का मुख्य विषय उत्तर मौर्य काल यानी 200 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी के इर्द-गिर्द घूमता है, जब हिप्पलस द्वारा मानसून की खोज की गई थी और जो लाल सागर और भूमध्यसागरीय क्षेत्र से व्यापार को गति प्रदान करता था। ऐतिहासिक घटनाओं को डेलरिंपल ने कहानी के रूप में पेश कर किताब को पठनीय बना दिया है।

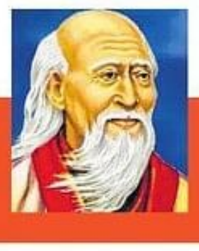

अभियान

जब लोग कुछ चीजों में सुंदरता देखते हैं, तो बाकी चीजें कुरूप हो जाती हैं।
- लाओत्से

amarujala.com
अमर उजाला

Hindi@mithelesh
▪ मिथिलेश बारिया

गोल चबूतरा

भूख रिश्तों को भी लगती है,
प्यार कभी-कभी परोस कर तो देखिए...

गजल
भरत तिवारी

घर में ही आज हम मेहमान हो गए

बम फैक्ट्री मालिक, भगवान हो गए,
उनके रहमो-करम पे इन्सान हो गए।

उसका जमीर तो पहले से था बिका,
तुमको ये क्या हुआ जो हैवान हो गए।

पहले न थी दिखी, कैसी है ये दरार,
घर में ही आज हम, मेहमान हो गए।

परदे में है अक्ल और दिल है लापता,
यारों के चेहरे हाय अनजान हो गए।

तन्हा जो रह गए, वो दीवाने हो गए,
सब कुछ गंवा के 'भरत', अनजान हो गए।

शूटिंग के दौरान मस्ती के पल

फिल्म 'आदमी और इन्सान' की शूटिंग के दौरान अभिनेत्री मुमताज, अभिनेता धर्मेंद्र और फिरोज खान मस्ती के पलों में। तस्वीर 1969 की है।

▪ भागलपुर से विवेक दास

ग्रामोफोन

आशा के लिए बनी धुन, गाया सलमा ने

साल 1982 में आई फिल्म 'निकाह' हिंदी सिनेमा की चर्चित फिल्मों में से एक है। इसमें मुख्य किरदार निभाया था- सलमा आगा, राज बब्बर और दीपक पाराशर ने। सलमा आगा को फिल्म 'निकाह' इत्तेफाक से मिली। दरअसल, एक दिन सलमा, नौशाद साहब के घर एक गाने के सिलसिले में पहुंची थीं। वहीं उनकी मुलाकात बी.आर. चोपड़ा से हुई। चोपड़ा साहब को सलमा की आवाज और अंदाज इस कदर भाया कि उन्हें वहीं 'निकाह' फिल्म का ऑफर दे दिया। सलमा आगा ने ही इस फिल्म का गीत 'दिल के अरमां आंसुओं में बह गए' गाया। हसन कमाल के लिखे इस गीत की धुन संगीतकार रवि ने आशा भोसले के लिए तैयार की थी, लेकिन सलमा आगा ने निर्माता-निर्देशक बी.आर. चोपड़ा से कहा कि वही इस गीत को गाएंगी। आखिरकार रवि को मानना पड़ा, लेकिन सलमा उस रेंज में नहीं गा पा रही थीं, इसलिए उसमें थोड़े बदलाव किए गए और अंत में यह गीत सलमा आगा ने ही गाया। यह गाना बहुत लोकप्रिय हुआ, जिसके लिए सलमा आगा को सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायिका का फिल्मफेयर अवॉर्ड भी मिला।

▪ निशा कश्यप, दिल्ली

रावण पर भगवान राम की विजय बताती है कि जब हम ईमानदारी से लक्ष्य पाना चाहते हैं तो परिस्थितियां खुद ब खुद अनुकूल हो जाती हैं। लेकिन क्या हम बिना दुर्भाव के अपनी कमियां दूर कर लक्ष्य पाना चाहते हैं?

पुतला दहन से आगे का सबक

अपने अंदर के 'रावण' का दहन

चिट्ठी 1

दशहरा बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। यह रावण पर भगवान राम की जीत की याद में मनाया जाता है और हम रावण का पुतला दहन करते हैं। लेकिन यह पर्व यहीं तक सीमित नहीं है। इसके गहरे निहितार्थ हैं, जिन पर हमको चिंतन-मनन करना चाहिए और सबक लेते हुए स्वस्थ समाज बनाने में योगदान करना चाहिए। पहली सीख है अहंकार नहीं करने का, जब इसने पुलस्त्य ऋषि के पौत्र और विश्वा ऋषि के पुत्र, परम शिव भक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, प्रखर विद्वान, महाबलशाली रावण को नहीं छोड़ा तो साधारण मनुष्य की क्या बिसात है? चाहे जीवन में कुछ भी हासिल कर लें, कहीं भी पहुंच जाएं, लेकिन कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। संगीत प्रेमी रावण की वीणा सुनने मृग तक आ जाते थे, लेकिन स्वयं रावण ने कभी किसी की नहीं सुनी और हमेशा सर्वज्ञ होने के अहंकार में रहा। शिव तांडव स्तोत्र, अरुण संहिता, अंक प्रकाश, इंद्रजाल, प्राकृत कामधेनु, प्राकृत लंकेश्वर, रावणीयम जैसी पुस्तकों का रचनाकार राणव स्वयं स्त्री अस्मिता को भूल गया। लालसाएं असीमित हैं। इनसे बचकर आत्मसंतुष्टि के साथ आगे बढ़ें।

दूसरी तरफ राम सबको साथ लेकर चलते हैं। अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए वानर, ऋक्ष, जटायु और यहां तक कि गिलहरी का भी सहयोग लेते हैं। साक्षात भगवान का अवतार होने के बाद भी साधारण और सर्व सुलभ रहे। हमेशा अहंकार शून्य रहे। यही जीवन का सत्य है कि कोई छोटा-बड़ा नहीं होत, सबकी अपनी अहमियत होती है। अयोध्या से लौटने पर सर्वप्रथम माता कैकेयी के पास जाते हैं, जिन्होंने उनके वनवास का प्रस्ताव दिया था। किसी से कोई दुर्भाव नहीं। सभी को जीवन में यही सकारात्मक सोच अपनाकर आगे बढ़ना चाहिए।

▪ डॉ. मनोज कुमार शर्मा, बुलंदशहर

स्वच्छ भारत का सपना

चिट्ठी 2

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बिल्कुल सही कहते हैं कि देश जितना साफ होगा, उतना ही चमकेगा, क्योंकि गंदगी ही ज्यादातर बीमारियों की जड़ है और अगर देश अस्वच्छ रहेगा तो अस्वस्थ भी रहेगा। यदि देश अस्वस्थ होगा तो सब अस्त-व्यस्त रहेगा। चाहे आम लोगों का जीवन हो या देश का विकास।

आज बीमारियों से निपटने के लिए सरकार को बड़ा बजट खर्च करना पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, भारत में प्रति व्यक्ति उपचार पर औसतन 65 हजार रुपये खर्च करता है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि कुछ समय पहले जिस वैश्विक महामारी कोरोना ने दुनिया को आफत में डाला था, उसके कारणों में लोगों का गलत खानपान और अस्वच्छ भोजन भी शामिल था। स्वच्छता हमारे मन में होनी चाहिए। जब तक हम शारीरिक और खानपान की स्वच्छता की तरफ ध्यान नहीं देंगे, तब तक हम अपने आसपास की सफाई पर भी ध्यान नहीं दे पाएंगे। खाने से पहले हाथ धोने जैसी छोटी-छोटी आदतें हमें स्वच्छता की ओर अग्रसर करती हैं। हमें दिखावा से बचना होगा। आज बहुत से नेता झाड़ू के साथ फोटो तो खिंचा लेते हैं, लेकिन हकीकत में वे कूड़े ढ़ेर के पास गाड़ी लगाकर उतर रहे होते हैं। इस खोखलेपन से बाहर आना होगा। जागरूकता से इतर आज भी बहुत से सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ादान और बाथरूम नहीं हैं। यह तो सरकारों की ही जिम्मेदारी है। नेताओं को फोटो से आगे बढ़ इन पर ध्यान देने की जरूरत है।

▪ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

आवारा कुत्तों का आतंक

चिट्ठी 3

उज्जैन में बीते दिनों अपने घर के बाहर साइकिल चला रही सात वर्षीय बच्ची आवारा कुत्ते से डरकर गंभीर रूप से घायल हो गई। पहले नोएडा में आवारा कुत्तों के हमले में एक बच्ची की जान भी जा चुकी है। चाहे कस्बे हों या शहर, आवारा कुत्ते एक बड़ी समस्या बन चुके हैं। खासकर महानगर में तो यह समस्या विकराल रूप लेने लगी है। रोज ही कुत्तों के काटने के मामले सामने आते हैं।

कुत्ता मनुष्य के सबसे पुराने पालूत पशुओं में से एक है, लेकिन हर पशु का अपने रहने का तरीका होता है। अगर उसको वह जरूरी माहौल नहीं मिलेगा तो स्वाभाविक है कि वह हिंसक हो जाएगा। कुत्ते अनायास ही हिंसक नहीं हो रहे हैं। पहले कुत्तों को रहने के लिए खुला वातावरण मिलता था। हर घर में उनके लिए अलग से रोटी बनाई जाती थी, लेकिन महानगरों में यह चलन खत्म हो गया है। कुत्तों के लिए पर्याप्त जगह नहीं रह गई है। ऐसे में भूख और स्वभावानुकूल माहौल नहीं मिलने से कुत्तों के स्वभाव में परिवर्तन होता जा रहा है। इसके अलावा लोग घरों में प्रतिबंधित नस्ल के कुत्ते पाल रहे हैं। चूंकि ये कुत्ते घरों में पालने के लिए नहीं हैं, इसलिए बहुत अच्छी तरह देखभाल करने के बाद भी अपने मूल स्वभाव में लौटने पर खतरनाक तरीके से हमलावर हो जाते हैं। यह एक लाइलाज समस्या बनती जा रही है। अभी तक जो नियम-कानून बनाए गए, उनका भी ठीक से क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है, लेकिन इसके समाधान के लिए हम सभी को व्यावहारिक रुख अपनाना होगा।

▪ हेमा हरि उपाध्याय, उज्जैन

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

दिल्ली से योगेश कुमार गोयल, मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, मिर्जापुर से सलिल सावित्री, अमरोहा से डॉ. महताब अमरोहवी, आजमगढ़ से अवनीश कुमार गुप्ता, गाजियाबाद से ललित शंकर, फिरोजाबाद से नितिन, इंदौर से महेंद्र जैन, पटना से सरिता प्रसाद, शाजापुर से एमएम राजावतराज, इंदौर से अमृतलाल मारू।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

सिनेमा को मिली आवाज...

1927 में आज के ही दिन अमेरिका में पहली बोलती फिल्म 'द जैज सिंगर' रिलीज हुई थी। इससे पहले फिल्मों में आवाज नहीं होती थी। केवल मूक सिनेमा चलता था। ज्यादा से ज्यादा परदे के पीछे से कलाकार संगीत और आवाज देते थे। 'द जैज सिंगर' ने सिनेमा और संचार जगत में एक नई क्रांति की नींव रखी। खास बात यह थी कि यह एक म्यूजिकल ड्रामा फिल्म थी, जिसमें साउंड पर कमाल का काम किया गया था। इसने सिनेमा को लेकर लोगों की धारणा ही बदल दी थी। फिल्म के निर्माता वार्नर ब्रदर्स और निर्देशक एलन क्रॉसलैंड थे।

झरोखा
06 अक्तूबर

फिल्म 1922 में छपी सैमसन राफेल्सन की लघुकथा पर आधारित थी, जो कि फिल्म के मुख्य किरदार अल जोलसन के असल जीवन पर ही आधारित थी। एक स्टेज प्ले में अल जोलसन के अभिनय से प्रभावित होकर राफेल्सन ने यह कहानी लिखी थी। फिल्म से पहले यह 1925 में एक नाटक के रूप में प्रदर्शित हुई थी। नाटक को खूब पसंद किया गया। इसके बाद ही वार्नर ब्रदर्स ने फिल्म बनाई। नाटक में मुख्य किरदार जेसेल ने अदा किया था, जो कुछ मतभेदों के चलते फिल्म से अलग हो गए थे। फिल्म की कहानी एक यहूदी युवा के इर्द-गिर्द थी, जो गायक बनने के लिए अपने घर से भाग जाता है और बाद में वह गायक के रूप में प्रसिद्धि पाता है। एक घंटे 19 मिनट की फिल्म के निर्माण में करीब पांच लाख डॉलर का खर्च आया था, लेकिन इसने आठ गुना कमाई करते हुए एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था।

सबसे पहले 1896 में फिल्म को आवाज देने की कोशिश हुई थी, लेकिन सफलता नहीं मिल पाई थी। इसके बाद भी लगातार प्रयोग जारी रहे। करीब तीन दशक बाद 'द जैज सिंगर' के रूप में पहली बोलती फिल्म बनी। भारतीय सिनेमा की बात करें तो पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' थी। अर्देशिर ईरानी के निर्देशन में बनी यह फिल्म 14 मार्च, 1931 को मुंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में रिलीज हुई थी।

▪ पौड़ी गढ़वाल से सौरभ भंडारी

अपराधी कौन और सहयोगी कौन?

अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय ने इस्राइल और हमास, दोनों को युद्ध अपराधों का दोषी माना है। अक्सर अपराधों के मामले में अपराधी के पास सहयोगी होते हैं। तो फिर वे कौन लोग हैं, जिन्होंने एक तरफ हमास और दूसरी तरफ इस्राइल की मदद की है?

हमास ने 7 अक्तूबर, 2023 को इस्राइल के नागरिकों पर क्रूर हमला किया। इसमें 1,100 से अधिक लोग मारे गए, जिनमें से तीन-चौथाई आम लोग थे। जवाबी कार्रवाई करते हुए इस्राइल ने गाजा से लगे हमास के नियंत्रण वाले फलीस्तीनी क्षेत्र पर बमबारी की। तब लगा था कि इस्राइल कुछ समय बाद बमबारी बंद कर देगा, लेकिन यह बर्बर अभियान पूरे एक साल से जारी है। इस्राइली सेना के हमलों में 50,000 से अधिक फलीस्तीनी मारे जा चुके हैं। गाजा के दस लाख से अधिक निवासी अपने घरों से विस्थापित हो गए हैं। गाजा में तबाही मचाने के बाद अब इस्राइल ने लेबनान पर हमला बोल दिया है। वहां भी उसने इस बात की कोई परवाह नहीं की है कि हमले में आतंकवादी मारे जा रहे हैं या निर्दोष नागरिक। खास लोगों को खत्म करने की कोशिश में उसने सैकड़ों लेबनानी नागरिकों को मार डाला है और हजारों को बेघर कर दिया है।

अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (आईसीसी) ने इस्राइयल और हमास, दोनों को युद्ध अपराधों का दोषी माना है और यह बिल्कुल उचित भी है। पिछले अक्तूबर में हमास द्वारा किए गए नरसंहार को किसी भी ऐतिहासिक संदर्भ में न तो माफ किया जा सकता है और न ही इसकी व्याख्या की जा सकती है। बदला लेने की कोशिश में उसने अंधाधुंध कार्रवाई और बमबारी की है। स्कूलों और अस्पतालों को नष्ट किया है। हजारों फलीस्तीनियों को मारने के अलावा भोजन, पानी और बिजली की आपूर्ति को रोककर या प्रतिबंधित कर अनगिनत लोगों को भुखमरी के कगार पर पहुंचा दिया है।

गाजा में संघर्ष की कवरेज में मुख्य रूप से दो प्रतिस्पर्धी पक्षों पर ध्यान केंद्रित किया गया है- इस्राइल और हमास। यह कॉलम उन समूहों या राष्ट्रों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिन्होंने संघर्ष पैदा करने और उसे कायम रखने में भूमिका निभाई है। अक्सर अपराधों के मामले में अपराधी के पास सहयोगी होते हैं। तो फिर वे कौन लोग हैं, जिन्होंने एक तरफ हमास और दूसरी तरफ इस्राइल की मदद की है?

हमास का प्रमुख सहयोगी ईरान और लेबनान स्थित आतंकवादी समूह हिजबुल्लाह है। प्रमुख पश्चिमी मीडिया नियमित रूप से इसका नाम लेकर उसे शर्मिंदा भी करता है। इसके बावजूद वह इस्राइल के सहयोगियों की पहचान करने से कतराता है। निस्संदेह इस्राइली सरकार के इन कृत्यों के पीछे अमेरिका का बड़ा हाथ है। उसने इस्राइल को लगातार सैन्य मदद दी है, उसे गाजा (और अब लेबनान) पर हमला जारी रखने के लिए जरूरी हथियार भेजे हैं। अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र में प्रस्तावों के खिलाफ वीटो या मतदान करके इस्राइल को राजनयिक संरक्षण की भी पेशकश की है।

अमेरिका की मिलीभगत के इन्कार का उदाहरण पिछले सप्ताह मैंने पूर्व विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन के साक्षात्कार में सुना। उनसे कोलंबिया विश्वविद्यालय में पढ़ाने के अनुभव के बारे में पूछा गया, जहां वह विजिटिंग प्रोफेसर हैं। पिछले साल उन्होंने जब पढ़ाना शुरू किया तो कुछ समय बाद ही कोलंबिया (और अन्य परिसरों) में छात्रों के श्रृंखलाबद्ध विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए, जिनमें मांग की गई कि इस्राइल गाजा पर बमबारी बंद करे और युद्ध विराम पर सहमत हो। सुश्री क्लिंटन ने इन विरोध प्रदर्शनों को इस आधार पर सिरे से खारिज कर दिया कि उन्हें 'बाहर' से समर्थन और वित्त पोषण प्राप्त था। इनमें से कुछ प्रदर्शनकारियों को 'यहूदी-विरोध' द्वारा सक्रिय किया गया था। इस प्रदर्शन में बाहर के बिना बुलाए कुछ एजेंट जरूर थे, लेकिन प्रदर्शनकारियों में से अधिकांश इसी विश्वविद्यालय के छात्र और संकाय सदस्य थे। इसके अलावा गाजा में महिलाओं और बच्चों की निर्मम हत्या के विरोध में होने वाले प्रदर्शन में अपने पूर्वजों की पक्षपातपूर्ण प्रतिबद्धता के खिलाफ कई यहूदी छात्र भी शामिल हुए। हिलेरी क्लिंटन का इंटरव्यू लेने वाले फरीद जकारिया भी उनके सामने अपने तथ्यों को नहीं रख पाए। हिलेरी क्लिंटन को सुनकर मुझे ऐसा लगा कि न्यूयॉर्क से दूर भी एक दूसरी एजेंसी है, जिसे समर्थन मिलता है और फंडिंग प्राप्त होती है। यह इस्राइल है, जिसे अमेरिका का वरदहस्त प्राप्त है। मुझे ऐसा लगा कि अगर हिलेरी क्लिंटन ने अपनी ही टिप्पणियों को ध्यान से सुना होता तो शायद उनमें आत्मचिंतन की क्षमता अधिक होती। मुझे इस बात पर संदेह है कि वाशिंगटन में एक लंबा समय गुजारने के बाद वह अपनी सरकार को किसी भी चीज के लिए दोषी ठहराएंगी।

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

वर्तमान विवाद से पहले अमेरिकी राष्ट्रपतियों और सरकारों ने अंतरराष्ट्रीय कानूनों के उल्लंघन में इस्राइल को अपनी मौन सहमति दी है। पूरे पश्चिमी तट पर के आस-पास हो रहे यहूदियों के विस्तार की वजह से वाशिंगटन को कभी हल्की फटकार तो लगती है, लेकिन कभी ठोस कार्रवाई नहीं हुई। चाहे वह डेमोक्रेटिक प्रशासन हो या फिर रिपब्लिक, दुनिया के सबसे ताकतवर देश ने इस्राइली सेना के समर्थन से फलीस्तीन की जमीन पर बसने वाले यहूदियों को रोकने की कोई कोशिश नहीं की। दशकों से बस रहे इन यहूदियों ने फलीस्तीन राज्य के निर्माण को असंभव बना दिया। इसमें अमेरिका और इस्राइल, दोनों बराबर के दोषी हैं। अमेरिका अंतरराष्ट्रीय कानून के आपराधिक उल्लंघनों में इस्राइल का प्रमुख भागीदार रहा है। हालांकि इसमें अन्य देश भी सहयोगी हैं, जिनमें ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी शामिल हैं और सही मायनों में देखा जाए तो हम भी कम दोषी नहीं हैं। हम हमास द्वारा इस्राइल पर किए गए हमलों की पहली बरसी तो मनाते हैं, पर जब हम इस्राइल के हाथों मारे जा रहे निर्दोष फलीस्तीनियों को लेकर विचार करते हैं तो हमें अमेरिकियों की तुलना में कुछ हद तक अधिक आत्मजागरूक और आत्मआलोचनात्मक होना चाहिए। हमें अपनी सरकार को भी इस बात के लिए जिम्मेदार ठहराना चाहिए कि उसने कम से कम दो तरीकों से इस्राइली अभियान को सहायता प्रदान की। पहला, संयुक्त राष्ट्र महासभा में गाजा में संघर्ष विराम और इस्राइल से अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन करने के आह्वान वाले प्रस्तावों का समर्थन न करना और दूसरा, युद्ध की वजह से खस्ताहाल हुई इस्राइल की अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए भारतीय प्रवासी मजदूरों को भेजना।

वर्तमान भारतीय सरकार द्वारा इस्राइल को समर्थन देने की दो प्रमुख वजहें हैं। इनमें से एक व्यक्तिगत है, नरेंद्र मोदी और बेंजामिन नेतन्याहू के बीच दशकों पुरानी दोस्ती। दूसरा यह है कि मुसलमानों को संदेह की दृष्टि से देखना है। पिछले महीने जब संयुक्त राष्ट्र महासभा में मध्य-पूर्व संकट पर चर्चा हो रही थी, तब भारत की ओर से कुछ खोखले वादे ही पेश किए गए। दूसरी ओर, स्लोवेनिया के प्रधानमंत्री ने टिप्पणी करते हुए कहा, "मैं इस्राइली सरकार को स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि रक्तपात बंद करो, पीड़ा बंद करो, बंधकों को घर लाओ और कब्जा खत्म करो। नेतन्याहू अब इस युद्ध को रोकें।" ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री ने कहा, "अब लगभग 300 दिन हो गए हैं, जब ऑस्ट्रेलिया के अलावा 152 अन्य देशों ने युद्ध विराम के लिए मतदान किया था और आज मैं उस बात को फिर से दोहराता हूं। लेबनान अगला गाजा नहीं बन सकता।" गौर करने वाली बात है कि स्लोवेनिया और ऑस्ट्रेलिया न केवल लोकतांत्रिक देश हैं, बल्कि इस्राइल के मुखिया अमेरिका से उनके घनिष्ठ संबंध भी हैं। इसके बावजूद उनके नेताओं में वह दूरदर्शी साहस है, जिसका हमारे प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री, दोनों में स्पष्ट रूप से अभाव है।

मध्य-पूर्व में इस्राइल को एकमात्र लोकतांत्रिक देश माना जाता है। अमेरिका दुनिया का सबसे अमीर और शक्तिशाली लोकतंत्र है, जबकि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का दावा करता है। गाजा में मानवता के खिलाफ अपराधों को जारी रखने के लिए इन देशों ने जो किया है, उसे देखते हुए ये सभी दावे खोखले लगते हैं। जैसा कि प्रताप भानु मेहता ने संक्षेप में कहा है, "यहां तीन लोकतंत्र हैं, जो अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को बर्बाद कर रहे हैं- इस्राइल अपने संघर्ष की क्रूरता से, अमेरिका उसे सहायता देकर और मिलीभगत से तथा भारत अपनी टालमटोल से, जो मिलीभगत के दायरे में ही आता है।"

शहीदों की शान में एक माह का मेला

जोधपुर के खेजड़ली, मैनपुरी के बेवर और 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में फिरंगी हुकूमत की चूलें हिला देने वालों की याद में देशभर में कई स्थानों पर विशाल मेले लगते हैं। इन अनूठे मेलों में हापुड़ का शहीद मेला सबसे लंबी अवधि का माना जाता है, जो पूरे एक माह देशभक्ति की अलख जगाता है। हर साल 10 मई से 10 जून तक लगने वाला यह मेला आजादी के लिए हंसते-हंसते फांसी का फंदा चूमने वाले वीर सपूत जबरदस्त खां और उनके छोटे भाई उल्फत खां की शहादत को समर्पित है, जिन्हें 14 सितंबर, 1857 को रामलीला मैदान के बाहर पीपल के पेड़ पर फांसी दी गई थी।

चंद्रमोहन शर्मा

खुला आकाश

चौधरी जबरदस्त खां और उल्फत खां की शहादत की याद में मेले की शुरुआत 1975 में हुई। कुछ लोगों ने हापुड़ में उसी जगह शहीद दिवस मनाया, जहां दोनों भाइयों को फांसी दी गई थी।

भंडा पट्टी निवासी दोनों भाइयों के बलिदान का गवाह वह पीपल का पेड़ आज भी मौजूद है। पेड़ के नीचे ही शहीद स्मारक बना है। चौधरी जबरदस्त खां उन 85 सिपाहियों में शामिल थे, जिन्होंने मेरठ में 1857 की क्रांति का बिगुल फूंका था। बगावत से तिलमिलाई फिरंगी हुकूमत ने कोर्ट मार्शल का हुक्म जारी कर सभी बागी सिपाहियों को कैद कर लिया। जब उल्फत खां को इसकी खबर मिली तो उन्होंने मेरठ से आगरा जाने वाली टेलीग्राम लाइन को काट दिया। बगावत के लिए फिरंगी अफसरों ने दोनों क्रांतिकारी भाइयों को सजा-ए-मौत दे दी। इस शहादत की याद में मेले की शुरुआत 1975 में हुई। पत्रकार कैलाश आजाद ने अपने साथियों के साथ रामलीला मैदान के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे 10 मई को शहीद दिवस मनाया। अगले साल 10 मई, 1976 को शहीद मेला लगा। तब से यह सिलसिला चला आ रहा है। मेले में शहीदों के चित्रों की प्रदर्शनी लगाई जाती है, शहादत की दास्तां का नाट्य मंचन किया जाता है। विडंबना है कि इस मेले को सरकार से कोई अनुदान नहीं मिलता है। हापुड़ के लोगों में देश की खातिर मर-मिटने का यह जज्बा 1942 की अगस्त क्रांति में भी दिखा, जब जुलूस निकाल रहे क्रांतिकारी राम स्वरूप, आंगनलाल शर्मा, गिरधारी लाल और मांगेलाल अंग्रेजी सिपाहियों की गोलीबारी में शहीद हो गए। जुलूस में शामिल लाला सेवाराम ने गोली लगने से घायल होने के बावजूद डाकघर पर तिरंगा फहराया था। चारों शहीदों की याद में अतरपुरा चौपला पर शहीद स्मारक बनाया गया है। इसके पीछे पुलिस चौकी है, जिस पर गोलियों के निशान आज भी देखे जा सकते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

हर सुधार का कुछ न कुछ विरोध अनिवार्य है। परंतु विरोध और आंदोलन, एक सीमा तक समाज में स्वास्थ्य के लक्षण होते हैं।

- गांधी

बिखरती उम्मीदें, टूटते दिल

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

पिछले दस वर्षों में बैंक धोखाधड़ी और कार्पोरेट पतन में बढ़ोतरी हुई है। दिवाला और दिवालियापन संहिता बैंक कर्जमाफी को वैध बनाने और तथाकथित विफल कंपनियों पर नियंत्रण हासिल करने का एक साधन बन गई है।

यह ताजा खबर है, लेकिन कुछ अलग तरह की। यह कानून तोड़ने, सिर फोड़ने या घर ढहाने से जुड़ी खबर नहीं है। यह वह 'ब्रेकिंग न्यूज' भी नहीं है, जो पहले कई बार दुहराई जा चुकी है।

जब राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरो यानी एनसीआरबी, हिंसक अपराधों के बढ़ते ग्राफ को दर्ज करता है, तो वह कानून तोड़ने से संबंधित खबर होती है। जब उन्मादी समूह किसी युवा जोड़े को पीटते या किसी व्यक्ति की हत्या कर देते हैं, तो वह सिर और हड्डियां तोड़ने की खबर होती है। जब अधिकारी कथित अतिक्रमण को गिराने के लिए बुलडोजर का इस्तेमाल करते हैं, तो वह घर तोड़ने की खबर होती है। जब माननीय प्रधानमंत्री विपक्ष- खासकर कांग्रेस- को टुकड़े-टुकड़े गैंग या शहरी नक्सली कहते हैं, तो इस 'ब्रेकिंग न्यूज' को सुन कर लंबी उबासी आती है।

हवा हवाई

जो सबसे महत्त्वपूर्ण 'ब्रेकिंग न्यूज' मैं आपसे साझा करने जा रहा हूं, उसे सुन कर आपका दिल और उम्मीदें टूट जाएंगी। केवी कामथ महोदय प्रतिष्ठित बैंक व्यवसायी हैं। उन्होंने आइसीआइसीआइ को भारत के अग्रणी निजी बैंक के रूप में स्थापित किया; न्यू डेवलपमेंट बैंक (ब्रिक्स बैंक) के पहले अध्यक्ष थे; वे वर्तमान में नेशनल बैंक फार फाइनेंसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर ऐंड डेवलपमेंट (एनएबीएफआइडी) के अध्यक्ष हैं। हाल ही में एक पुस्तक समीक्षा में, उन्होंने उस मार्ग का पता लगाया है, जिसे भारत को 2047 तक विकसित भारत का दर्जा प्राप्त करने के लिए अपना लेना चाहिए।

एक प्रमुख अखबार में लिखे अपने एक लेख में, कामथ महोदय ने लेखक कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यम की खूब बढ़चढ़ कर सराहना की है। उन्होंने लिखा है, 'अपने अंतर्निहित विषय को दृढ़तापूर्वक रखने के लिए... कि भारत को अतीत की निराशावादी बेड़ियों से मुक्त होने और ठोस सोच के आधार पर साहसिक लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता है।' कामथ महोदय ने लेखक से सहमति जताते हुए कहा है कि अगर 12.5 फीसद प्रति वर्ष (अमेरिकी डालर में) की नाममात्र जीडीपी वृद्धि दर बनी रहती है, तो 'हर छह वर्ष में दोगुना होती हुई 2023 की 3.28 लाख करोड़ डालर जीडीपी 2047 में बढ़ कर वह 55 लाख करोड़ डालर, यानी लगभग सोलह गुना तक हो जाएगी। यह पूरी तरह से संभव है।' मैं इस बात से पूरी तरह से सहमत हूं, और इस तरह का सतत विकास लक्ष्य बनाए रखने के लिए मैंने तर्क दिया है।

पूंछ में डंक

कामथ महोदय की समीक्षा में 'डंक' अंतिम छठवें पैराग्राफ में है। वे 'चार स्तंभों' की सूची बना कर अपनी बात शुरू करते हैं, जो शताब्दी वर्ष में भारत को आकार देंगे। वे हैं: विकास पर वृहद-आर्थिक ध्यान, सामाजिक और आर्थिक समावेशन, निजी क्षेत्र द्वारा नैतिक धन सृजन और निजी निवेश द्वारा प्रज्वलित एक पवित्र चक्र। आइए, वर्तमान सरकार के संदर्भ में इन 'स्तंभों' का परीक्षण करें।

विकास पर वृहद-आर्थिक ध्यानः वृहद-आर्थिक विकास पर निरंतर ध्यान के संकेतक राजकोषीय घाटा, मुद्रास्फीति और ब्याज दर, चालू खाता घाटा और ऋण/ जीडीपी अनुपात के आंकड़े हैं। सरकार को जीडीपी के तीन फीसद (वर्तमान में 5.6 फीसद) के एफडी लक्ष्य तक पहुंचने के लिए लंबा रास्ता तय करना है। मुद्रास्फीति अब भी 4 फीसद से ऊपर है और मई 2022 से आरबीआइ की रेपो दर 6.5 फीसद पर स्थिर है। 2023-24 के अंत में सीएडी बहुत बड़ा (23.2 अरब अमेरिकी डालर) था, मगर विदेशों से भेजे गए पैसे ने इज्जत बचा ली। 18.7 फीसद पर ऋण/ जीडीपी अनुपात एक प्रबंधनीय स्तर पर है। रिकार्ड मिश्रित है।

सामाजिक और आर्थिक समावेशनः मोदी सरकार के कार्यकाल का सबसे बड़ा नुकसान असमानताओं को कम करने का विफल प्रयास है। मित्रतावादी पूंजीवाद, पूंजी गहन उद्योगों में सार्वजनिक निवेश, कार्पोरेट कर में कमी, बड़े पैमाने पर उपभोग की वस्तुओं पर कर, उच्च ईंधन की कीमतें, अपर्याप्त न्यूनतम मजदूरी, किराएदार किसानों की उपेक्षा, गरीबों द्वारा उपभोग की जाने वाली सेवाओं के प्रति पूर्वाग्रह (उदाहरण के लिए, वंदे भारत ट्रेन बनाम रेलवे में द्वितीय श्रेणी और अनारक्षित कोच) और अन्य नीतियों ने आबादी के शीर्ष एक फीसद और निचले 20 फीसद के बीच आर्थिक असमानताओं को बढ़ा दिया है। कामथ महोदय द्वारा पहचाना गया दूसरा स्तंभ डगमगाता हुआ और कमजोर है।

निजी क्षेत्र द्वारा नैतिक धन सृजनः पिछले दस वर्षों में बैंक धोखाधड़ी और कार्पोरेट पतन में बढ़ोतरी हुई है। दिवाला और दिवालियापन संहिता बैंक कर्जमाफी को वैध बनाने और तथाकथित विफल कंपनियों पर नियंत्रण हासिल करने का एक साधन बन गई है। आइबीसी के तहत वसूली दर सिर्फ 32 फीसद है। सफल समाधान आवेदकों ने अप्रत्याशित लाभ कमाया है। दखल देने वाले नियम, धीरे-धीरे नियंत्रण और दमनकारी कर प्रशासन ने नैतिक व्यवसायियों का मनोबल गिराया है; युवा उद्यमी विदेश में व्यापार करना या पलायन करना ज्यादा पसंद करते हैं। 4300 भारतीय करोड़पति भारत छोड़ चुके हैं (रुचिर शर्मा, टाइम्स आफ इंडिया)। प्रतिस्पर्धा आयोग ने वास्तव में एकाधिकार और अल्पाधिकार को बढ़ावा दिया है। एअरलाइंस, बंदरगाह, हवाई अड्डे, दूरसंचार, तेल रिफाइनरी और सौर ऊर्जा जैसे उद्योगों में बहुत कम प्रतिस्पर्धा है। सीमेंट, स्टील, बिजली और खुदरा क्षेत्र में तेजी से एकीकरण हो रहा है, और यह एक विवादास्पद मुद्दा है कि प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी या घटेगी। ये रुझान प्रतिस्पर्धी बाजार अर्थव्यवस्था के लिए अच्छे नहीं हैं, जो निजी क्षेत्र द्वारा नैतिक धन सृजन सुनिश्चित करने का समय-परीक्षणित तरीका है।

निजी निवेश द्वारा प्रज्वलित पुण्य चक्रः सरकार की अपील, रियायतें, चापलूसी और धमकियों के बावजूद निजी निवेश सरकारी निवेश से पीछे है। चूंकि सरकार को व्यवसाय पर भरोसा नहीं है, इसलिए व्यवसाय को सरकार पर भरोसा नहीं है। 'शाटगन' सहमेल- संदिग्ध तरीकों से व्यवसायों का अधिग्रहण- ने माहौल को खराब कर दिया है। सन 2000 से सिंगापुर में 8000 से अधिक भारतीय कंपनियां पंजीकृत हैं (एचसीआइ, सिंगापुर)। जांच एजंसियों के अतिक्रमण ने व्यापारियों में भय फैला दिया है। सितंबर 2022 में, वित्तमंत्री ने भारतीय व्यवसायों से पूछा कि ऐसी क्या चीज है, जो उन्हें भारतीय अर्थव्यवस्था में निवेश करने से रोक रही है?

कामथ महोदय इन मुद्दों पर हमें निर्देश देने के लिए पूरी तरह से समर्थ हैं।

संकल्प और स्वच्छता

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

गंदगी और गरीबी का कोई रिश्ता नहीं है। मैंने पहले भी यहां लिखा है और बार-बार लिखूंगी कि श्रीलंका हमसे गरीब है, लेकिन वहां गंदगी नहीं दिखती है। कम्पूचिया हमसे गरीब है, लेकिन उस देश में भी गंदगी नहीं दिखती है। दूसरे देशों की बातें छोड़ें, हमारे अपने देश में इंदौर शहर साफ है इतना कि मैं जब भी जाती हूं, हैरान रह जाती हूं साफ-सुथरे बाजार, साफ-सुथरी गलियां देखकर।

गांधी जयंती के दिन प्रधानमंत्री दिखे हाथ में झाड़ू लिए आम जनता को स्वच्छ भारत आंदोलन के लिए नए सिरे से प्रोत्साहित करते हुए। पत्रकारों से उन्होंने कहा कि देश को स्वच्छ बनाने के लिए हर दिन सफाई पर ध्यान देना होगा, साल में केवल एक दिन के लिए नहीं। मतलब सिर्फ स्वच्छ भारत दिवस पर झाड़ू उठाना काफी नहीं है। मैंने जब उनको देखा टीवी पर और उनकी बातें सुनीं तो कुछ देर के लिए हैरान रह गई। काश, प्रधानमंत्रीजी आप मेरे साथ दिल्ली से हरियाणा गए होते पिछले सप्ताह और आपको दिखते वे कचरे के पहाड़, जो रास्ते में पड़ते हैं और जो इतने ऊंचे हैं कि दूर से असली पहाड़ों की तरह दिखते हैं। उनको देखते, तो शायद आप भी जान गए होते कि स्वच्छ भारत अभियान कई सालों से खोखला नारा बन कर रह गया है। इन कचरे के पहाड़ों से रोज निकलते हैं जहरीले रसायन, जो दिल्ली की हवाओं में उतना ही प्रदूषण फैलाते हैं जो इस मौसम में किसानों के पराली जलाने से फैलता है। कुछ दिन पहले अखबारों में तस्वीरें छपीं पराली के जलने की और कुछ क्षण के लिए हममें से कुछ मीडियावालों ने तकलीफ जताई अपने लेखों में। कहा हमने कि शुरू हो गया है फिर से देश की राजधानी की वायु में इतना जहर फैलना कि बच्चे बीमार रहते हैं सर्दियों के मौसम में और दमा के मरीजों का तो हाल न पूछो क्या हो जाता है। बिल्कुल इस तरह की बातें, बिल्कुल इन्हीं शब्दों में हम कहते हैं हर साल यही बातें, जब दिवाली करीब आने लगती है और उत्तर भारत के लोगों के लिए संदेश लाती है कि गरम कपड़ों को संदूकों में से निकालने का समय आ गया है।

सवाल यह है कि हम क्यों नहीं साथ में यह भी पूछते हैं हर साल कि क्यों ऐसा होता है हर साल? क्यों नहीं हमारे शासक जान गए हैं कि उपाय है पराली जलाने को रोकने का। कई बार किसान कह चुके हैं कि मशीनें हैं जो पराली उठा सकती हैं उनके खेतों से, ताकि उसको जलाना न पड़े, लेकिन उनके पास इतने पैसे नहीं हैं इन मशीनों को खरीदने के लिए, इसलिए यह काम सरकारों को ही करना होगा। क्यों नहीं कुछ करती हैं सरकारें? क्या वजह यह है कि दबाव नहीं डालते हैं हम इतना कि चुनावों में वायु प्रदूषण अहम मुद्दा बन जाए?

प्रधानमंत्री ने बिल्कुल ठीक कहा कि भारत को स्वच्छ रखने का काम सिर्फ एक दिन के लिए नहीं हो सकता, लेकिन दस साल से देश की गाड़ी को चला रहे हैं नरेंद्र मोदी खुद और रहते भी हैं दिल्ली में, जहां सर्दियों के मौसम में प्रदूषण की चादर छा जाती है सारे शहर के ऊपर और तभी उठती है जब मौसम बदल जाता है होली के बाद। प्रधानमंत्रीजी आपने क्यों नहीं अभी तक देश की राजधानी में वायु प्रदूषण बंद करने के लिए कोई ठोस उपाय ढूंढ़ा है? क्यों नहीं आपको दिखे हैं कचरे के वे ऊंचे पहाड़? क्यों नहीं आपको दिखा है कि यमुना का पानी आज भी उतना ही गंदा है जैसे पहले होता था, बावजूद इसके कि आपके शासनकाल में करोड़ों रुपए इस नदी के पानी को साफ करने में खर्च किए गए हैं?

माना कि काफी हद तक गलती आम लोगों की है, लेकिन इससे कहीं ज्यादा गलती आप जैसे राजनेताओं की है, जिन्होंने इन चीजों पर उतना ध्यान नहीं दिया है जितना आप देते हैं चुनावों में जीत हासिल करने पर। स्वच्छ भारत अभियान के शुरुआती सालों में तो इसने इतना परिवर्तन लाया देहातों में कि खुले में शौच करनेवालों की संख्या अस्सी फीसद से ज्यादा कम हो गई है। राजनेता जब नेतृत्व दिखाते हैं किसी काम को करवाने पर, अक्सर देखा जाता है कि जनता इस नेतृत्व को स्वीकार करती है दिल लगाकर। समस्या यह है कि स्वच्छ भारत पर ध्यान जबसे प्रधानमंत्री का कम हुआ है, तबसे जनता ने भी ध्यान नहीं दिया है। नतीजा यह है कि हम विकसित भारत का सपना देखते तो हैं, लेकिन ये सोचे बिना कि विकसित होना असंभव है जब तक हमारे शहर, हमारी नदियां, हमारा वायु इतना गंदा रहता हो कि जीना मुश्किल हो जाए।

सच यह भी है कि गंदगी और गरीबी का कोई रिश्ता नहीं है। मैंने पहले भी यहां लिखा है और बार-बार लिखूंगी कि श्रीलंका हमसे गरीब है, लेकिन वहां गंदगी नहीं दिखती है। कम्पूचिया हमसे गरीब है, लेकिन उस देश में भी गंदगी नहीं दिखती है। दूसरे देशों की बातें छोड़ें, हमारे अपने देश में इंदौर शहर साफ है इतना कि मैं जब भी जाती हूं, हैरान रह जाती हूं साफ-सुथरे बाजार, साफ-सुथरी गलियां देखकर। इंदौर साफ किया जा सकता है तो देश के बाकी शहर भी साफ हो सकते हैं। इंदौर साफ हुआ तब, जब वहां की नगरपालिका ने कचरा फेंकने वालों को दंडित करना शुरू किया। ऐसा होना चाहिए हर शहर में, लेकिन यह भी याद रखना चाहिए हमें कि उन अधिकारियों को भी दंडित करना होगा, जिनकी लापरवाही के कारण बने हैं देश की राजधानी में कचरे के वे ऊंचे पहाड़।

दंडित होते हैं सरकारी अधिकारी जब भ्रष्टाचार करते हुए पकड़े जाते हैं, लेकिन आज तक किसी सरकारी अफसर को लापरवाही करने के लिए दंडित नहीं किया गया है। जब देश की राजधानी को ही हम साफ वायु-पानी नहीं दे सकते हैं तो कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि भारत के बाकी शहर साफ हो जाएं? सबसे कड़वा सच यह है कि स्वच्छता और विकास का गहरा रिश्ता है कई तरह से। इसलिए जब तक स्वच्छता पर हमारे शासक गंभीरता से काम नहीं करने लगते हैं, हमको भूल जाना चाहिए विकसित भारत का सपना। सपना है आज, और कल भी सपना ही रहेगा।

वैचारिक विपन्नता का विस्तार

संदर्भ

राकेश सिन्हा

विचार का केंद्र वैभव से दूर होता है, क्योंकि वैभव भी उसी विचार के तहत विमर्श का हिस्सा होता है। ऐसे केंद्र मूल प्रश्नों पर अनौपचारिक-औपचारिक निरंतर विमर्श करते हैं। इस प्रक्रिया का लक्ष्य चेतना सृजन है। नवउदारवाद इससे भयभीत रहता है। उसे 'कार्य संस्कृति' वाला मनुष्य चाहिए जो पुस्तकालय से लेकर माल तक लाभ हानि की चौहद्दी में रहे।

खुले आसमान के नीचे जमीन पर चाय पीने की एक जगह दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कालेज में थी। यह अत्यंत ही आकर्षक स्थान जय सिंह का ढाबा था। यह एक 'लघु सभागार' की तरह था। छात्र समूहों में राजनीति से लेकर सिनेमा, स्थानीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय मसलों पर तर्क-वितर्क होते रहते थे। यह अकेला उदाहरण नहीं है। देश के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों और शहरों/ महानगरों में ऐसे कुछ चिह्नित स्थान होते थे। अभी भी कुछ बचे हुए हैं। छोटे बजट में बड़ी बातें होती थीं। कोलकता, पुणे, चेन्नई, बंगलुरु जैसे बड़े शहरों में 'लघु सभागार' आपको मिल जाता था। पर अब वे समाप्ति की ओर हैं। जय सिंह के ढाबे का जो हश्र हुआ, वही सबके साथ हो रहा है।

ये सभी भौतिकता की बलि चढ़ रहे हैं। उनके स्थान पर चाय-काफी की महंगी दुकानें खुल रही हैं, जहां अच्छी आरामदेह कुर्सियां, वातानुकूलित कमरे, अंग्रेजी बोलने वाले चाय परोसक होते हैं। बजट बड़ा है, तो बात भी स्वकेंद्रित ही होगी। हंसने-बोलने, समय बिताने की जगह अच्छी है, लेकिन दोनों में बड़ा अंतर है। पहली स्थिति में सब कुछ अनौपचारिक है। मन-मस्तिष्क भौतिकता में कैद नहीं है। पर दूसरी स्थिति में हम मात्र उपभोक्ता हैं। हमारा व्यवहार हमारी वाणी और वार्तालाप भी औपचारिकता के करीब रहता है।

चकाचौंध की संस्कृति जब पैर पसारती है, तब हम उसके गुलाम हो जाते हैं। वह हमारी मौलिकता छीन लेती है। उसे हम अपने ही जीवन के अनुभवों से कुछ हद तक समझ सकते हैं। हम सामूहिकता से दूर होकर व्यक्तिवादी बनते जाते हैं। जीवन में जीने के साधनों में साझीदारी घटती जाती है। अपनी संतुष्टि के लिए नए-नए उपक्रमों की तलाश में लगे रहते हैं।

यह संकट सिर्फ भारत का नहीं है। पूरी दुनिया में नई आर्थिक संस्कृति ने अपना दुष्प्रभाव डाला है। इसका अर्थ यह नहीं है कि भौतिक प्रगति गलत है। पर सवाल सीधा है। यह प्रगति हमारी मानसिक उन्नति, सामाजिक सरोकार और साझापन को बढ़ाता या हमें अपने आचरण को उसके अनुकूल ढालने के लिए बाध्य करता है। हमारा समाज अनौपचारिक प्रकृति, प्रवृत्ति और प्रवाह वाला है। इसे जितना औपचारिकता के सांचे में ढालेंगे, व्याकुलता बढ़ेगी, परंपरागत संस्थाएं चरमराएंगी और सामाजिक प्राणी की जगह हम उपभोक्ताओं की भीड़ बनते चले जाएंगे।

विश्वविद्यालय माल की तरह, पुस्तकालय क्लब की तरह और परिसर बाजार की तरह बन जाए तो चेतना का सृजन बाजार की संस्कृति के अधीन हो जाता है। यह सब नियोजन वे करते हैं, जो बड़े माल, पुल, सड़क, 'आडिटोरियम' या सभागार बनाते हैं। उस प्रक्रिया से छात्रों-शिक्षकों को नहीं जोड़ा जाता है। ठीक उसी प्रकार शहर के नियोजन में लोगों की मूल प्रकृति पर विचार नहीं किया जाता है। नवउदारवाद इसी का नाम है। सवाल उठता है कि हम चूक कहां रहे हैं? इसी का निदान हमारी मौलिकता बचा सकती है। मनुष्य स्वभाव से विकेंद्रीकरण के साये में रहना चाहता है। यह छोटे-छोटे समूह, लघु परंपराओं और उत्सवों में प्रकट होता है। भारत का स्वभाव रहा है। इसी को भारत के विमर्श में विविधता कहा जाता है। केंद्रीकरण इस स्वभाव पर सीधा हमला होता है। सुकरात और चाणक्य, दोनों के सामने भौतिकता का विकल्प था, पर वे सादगी पसंद थे। महलों की जगह कुटिया में रहते थे। वे याद किए जाते हैं, पर उस काल के धन्नासेठों, भौतिकवादियों का नाम खोजने पर भी नहीं मिल पाता है।

विचार का केंद्र वैभव से दूर होता है, क्योंकि वैभव भी उसी विचार के तहत विमर्श का हिस्सा होता है। ऐसे केंद्र मूल प्रश्नों पर अनौपचारिक-औपचारिक निरंतर विमर्श करते हैं। इस प्रक्रिया का लक्ष्य चेतना सृजन है। नवउदारवाद इससे भयभीत रहता है। उसे 'कार्य संस्कृति' वाला मनुष्य चाहिए जो पुस्तकालय से लेकर माल तक लाभ हानि की चौहद्दी में रहे। जबसे हमने केंद्रीकृत बातों के प्रति समर्पण किया है, तबसे समाज की आंतरिक ऊर्जा का क्षरण शुरू हो गया है। बहुत पीछे याज्ञवल्क्य या शंकराचार्य के युग में जाने की जरूरत नहीं है। साठ-सत्तर के दशक में छोटी-छोटी पत्र-पत्रिकाएं निकलती थीं। सीमित लेखकों और सीमित पाठकों के ये बौद्धिक औजार व्यापक परिणाम देते थे। लोकवाणी, क्रांतिनाद, मुक्ति संग्राम, तरुण क्रांति खूब पढ़ा जाता था। लोग स्वयं या समूह के योगदान से कुछ प्रकाशन करते थे, जो मन को आंदोलित करता रहता था। जयप्रकाश नारायण का 'एवरीमैन', शंकर पिल्लै का 'शंकर वीकली', राजमोहन गांधी का 'हिम्मत', पीलू मोदी का 'मार्च आफ द नेशन', मीनू मसानी का 'फ्रीडम फर्स्ट', एडी गोरवाला का 'ओपिनियन', रमेश थापर का 'सेमिनार', जार्ज फर्नांडिज का 'प्रतिपक्ष', ये कुछ प्रकाशन थे। सैकड़ों में प्रसारण था। लाभ-हानि के उद्देश्य से वे नहीं चलते थे। आर्थिक प्रगति के दौर में लोग प्रशिक्षित होते रहते थे। ये सभी जय सिंह के ढाबे की तरह ही अपने-अपने तरीके से खुला मंच थे।

जब पेट भरने को पैसा नहीं था, तब लोग विचार सृजन करते थे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जमीन पर विचार के सिपाहियों ने राष्ट्रवाद की उर्वरा भूमि सृजित की थी। चंदा कर पत्रिकाएं निकलती थीं। 'हिंदी प्रदीप' के संपादक बालकृष्ण भट्ट ने लिखा था- 'ग्राहकगण, आपलोग भी इस पत्र का आयुष्य चाहते हों तो द्रव्य से सहायता कीजिए- अगर आपलोगों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया तो इतिश्री हो गई है।' सुंदरलाल का कर्मयोगी नौ महीने अस्तित्व में रहा, तीन संपादकों को जेल जाना पड़ा। इलाहाबाद का 'स्वराज्य', गोरखपुर का 'स्वदेश', तिलक का 'केसरी', विचार प्रवाह के माध्यम थे। इनकी संख्या सैकड़ों में थी। विपन्नता में वैचारिक संपन्नता थी। आज संपन्नता में वैचारिक विपन्नता है। इसी वैचारिक विपन्नता की लपट और न फैले, दिल्ली स्कूल आफ इकोनामिक्स के छात्र चिंतित हैं। चाय के खोखे की जगह कहीं चकाचौंध वाली कैंटीन न खुल जाए। अगर चेतना सृजन की प्रक्रिया राजनीतिक अखाड़ेबाजी तक सीमित हो जाएगी, तब गंभीर प्रश्न और गंभीर विचार का लुप्त होना स्वाभाविक ही है। वही प्रश्नः हम क्या कर रहे हैं? हम विचार सृजन और विचार प्रवाह में पूर्व के विकेंद्रीकृत स्वभाव को फिर से जगाएं। यही रास्ता नव बौद्धिकता का मार्ग प्रशस्त करेगा।

ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया

बाखबर

सुधीश पचौरी

कई एंकर अक्सर पूछते रहते हैं कि हर चुनावी मौसम के आसपास बाबा राम रहीम को 'पैरोल' कैसे मिल जाता है? अरे भाई! बाबा जी की 'भूमिका' को देखकर 'पैरोल' दिया जाता है। इसलिए पहले उनकी 'भूमिका' देखो, फिर 'भूमिका' के आगे लिखे 'पै' शब्द पर ध्यान दो। सब समझ में आ जाएगा!

एक शाम एक विपक्षी नेता के वचनः वहां नाच-गाना हो रहा था। जवाब में एक योगी-वचनः इनका तो परिवार ही नाचने-गाने वाला रहा है। इसे कहते हैं जैसे को तैसा मिला, कर कर लंबे हाथ! फिर तमिलनाडु से एक दिन एलान आया कि उदयनिधि उपमुख्यमंत्री बनाए जाएंगे और अगले दिन जो कहा, वह कर दिखाया। जलने वाले कहने लगे कि यह वंशवाद है, तो जवाब आया कि वंशवाद कहां नहीं है। फिर एक दिन विनेश फोगाटः हर चैनल पर वही वही सवाल और जवाब, फिर भी तय कि इस चुनाव ने एक नया 'आइकन' दिया!

उसके बाद आई इजराइल के हमले में हिजबुल्लाह के हीरो नसरल्लाह के मारे जाने और उसकी 'शहादत' का बदला लेने की ईरानी धमकियों की खबरें! इजराइल का गोला गिरा बेरूत में, लेकिन दो दलों के नेताओं के आंसू बरसे कश्मीर में और शोक प्रदर्शन लखनऊ में। पाक का समर्थक 'दुनिया का यह सबसे कुख्यात आतंकवादी' नसरल्लाह कुछ के लिए 'किंग' और कुछ के लिए आतंकवादी। फिर भी वह देर तक चर्चा में छाया रहा। कुछ कहे कि वह 'शहीद' था, कुछ कहे, यह इनका 'पैन इस्लामिज्म है'।

इन दिनों कुछ एंकरों को 'तीसरे विश्वयुद्ध' की आहटें कुछ ज्यादा ही आने लगी हैं। इनको लगता है कि विश्वयुद्ध न हो, 'गली क्रिकेट' हो! इसके बाद आई एक प्रवक्ता और एक एंकर के बीच एकदम 'तू तू मैं मैं'! चर्चा में जैसे ही एक एंकर ने कहा कि 'एक राष्ट्र, एक चुनाव और एक नेता', वैसे ही पक्ष प्रवक्ता ने धर पटका कि आप इस तरह से हमारे नेता का अपमान नहीं कर सकते।

फिर देर तक होता रहा कि 'तुम असभ्य' कि 'तुम असभ्य'! प्रवक्ता कहे कि आप प्रधानमंत्री पर निजी टिप्पणी करेंगे तो प्रवक्ता होने के नाते मैं स्वीकार नहीं करूंगा। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई', विपक्षी कहिन कि मैंने नाम कब लिया, तो जवाब आया कि 'वन लीडर', क्या ये प्रधानमंत्री के लिए नहीं था? दूसरा एंकर येन केन 'शांति जाप' जैसा करता रहा, लेकिन सुने कौन? बहरहाल, अंत में प्रवक्ता जी 'शेरो शायरी' पर उतर आए। फिर उधर से भी 'शेर' आए और इस तरह दोनों शेर 'रदीफ काफिया' वाले शेरों के आगे चुप हुए।

फिर एक दिन मालूम हुआ कि इन दिनों अपनी राजनीति में 'सामान्य शिष्टाचार' की भी जगह नहीं बची। जब एक बड़े विपक्षी दल के अध्यक्ष जी की तबीयत अचानक बिगड़ने की खबर आई तो प्रधानमंत्री ने सामान्य शिष्टाचारवश उनका हाल-चाल पूछ लिया, तो तुरंत करारा जवाब मिला कि मैं तब तक नहीं मरूंगा, जब तक मोदी सत्ता से बाहर नहीं हो जाते। काश, इस 'तू तू मैं मैं' के बीच कोई कहता कि 'रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिए आ' तो ये तुर्शी शायद कुछ कम होती।

इन दिनों अक्सर पक्ष-विपक्ष के नेताओं के मुंह में दही जमता रहता है। अरे भाई, यह मुहावरा हुआ पुराना, अब लाओ कोई नया मुहावरा। लेकिन ये कैसे दिन आ गए हैं कि जो कल तक 'अंखियों से गोली मारे' गाते थे, एक सुबह गाने लगे कि 'पिस्तौल गोली मारे पैर में दनाक रे...', लेकिन मैं ठीक हूं सर... और पुलिस तहकीकात में बिजी कि गोली कैसे चली! और ये मुई पिस्तौल भी उस सुबह चली, जिसके एक दिन पहले अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती को 'दादा साहब फालके' घोषित हुआ और क्या गजब कि किसी चैनल के पास मिथुन के 'आयम ए डिस्को डांसर' का कोई कामचलाऊ वीडियो तक न दिखा।

एक दक्षिणात्य राज्य के एक बड़े नेता ने सिद्ध किया कि पहले कुछ ले लो। जब फंसने लगो तो लौटा दो और संन्यासी भाव से गाने लगो कि 'ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया..!' कई एंकर अक्सर पूछते रहते हैं कि हर चुनावी मौसम के आसपास बाबा राम रहीम को 'पैरोल' कैसे मिल जाता है? अरे भाई! बाबा जी की 'भूमिका' को देखकर 'पैरोल' दिया जाता है। इसलिए पहले उनकी 'भूमिका' देखो, फिर 'भूमिका' के आगे लिखे 'पै' शब्द पर ध्यान दो। सब समझ में आ जाएगा!

फिर एक दिन यह खबर भी चैनलों में छाई रही कि ईरान ने इजराइल पर एक सौ अस्सी मिसाइलें दागीं, जिनमें से अधिकांश को इजराइल के 'आयरन डोम' (लौह कवच) ने बेकार कर दिया। कुछ गिरीं, लेकिन बहुत नुकसान न कर सकीं। इसके बाद इजराइल की धमकी चैनलों में टंगी रही कि हम इसका बदला लेंगे, कब और कहां, यह हम तय करेंगे। अमेरिका एक बार फिर इजराइल के पक्ष में आया। कई यूरोपीय देश भी इजराइल के साथ दिखे और इस तरह तीसरे विश्व युद्ध की चर्चा चैनलों में गरम होती दिखी।

फिर खबर आई तमिलनाडु स्थित सद्गुरु के ईशा फाउंडेशन पर पुलिस छापे की और फिर सुप्रीम कोर्ट का उस पर 'स्थगन', चर्चा में यह स्पष्ट हुआ कि इसके पीछे भी बाबा के सनातनत्व के विरोधियों का हाथ रहा। और अंत में कांग्रेस के एक बड़े कार्यकर्ता के ठिकाने से छह हजार करोड़ रुपए के प्रतिबंधित खतरनाक मादक पदार्थ पकड़े जाने की खबर, भाजपा का हमला और जवाबदेह पक्ष की बला टालने की कोशिशें।

www.readwhere.com

फिलिस्तीन के एक हिस्से गाजा पट्टी में सक्रिय आतंकी गुट हमास के इजराइल में उत्सव मना रहे बेकसूरों पर हमले के प्रतिशोध में सबक सिखाने के लिए इजराइल द्वारा शुरू जंग जब लेबनान स्थित चरमपंथी गुट हिज्बुल्ला के कमांडरों व गुट को खत्म करने व यमन के हूती विद्रोहियों के खिलाफ लड़ाई में तब्दील हुई, तो ईरान ने अपने प्यादे के समर्थन में इजराइल पर 181 बैलेस्टिक मिसाइलें दाग कर सीधी जंग का आगाज कर दिया। इसके बाद से मध्य पूर्व में तनाव बढ़ता दिख रहा है। अभी प्रतिक्रिया स्वरूप इजराइल ने ईरान पर जबावी एक्शन नहीं लिया है, लेकिन वह चुप बैठने वाला देश नहीं है, प्रतिक्रिया जरूर करेगा, पर कब व कैसे इस पर विचार जरूर है। इजराइल अगर ईरान पर हमला करता है और अमेरिका इजराइल के पक्ष में कूदता है तो चीन, रूस के ईरान के पक्ष में आने की आशंका है, ऐसे में विश्व युद्ध छिड़ने की संभावना बढ़ जाएगी। ईरान के सर्वोच्च लीडर खामनेई जैसे इजराइल के खिलाफ मुस्लिम देशों को एकजुट होने का आह्वान किया है, उससे इजराइल के आतंकी गुटों के खिलाफ जंग को इस्लाम बनाम यहूदी जंग में बदलने की कोशिश प्रतीत होती है। पश्चिम एशिया में अस्तित्व के लिए संघर्षरत इजराइल की ईरान से युद्ध की आशंका पर आजकल का यह अंक...

जंग की ओर ईरान-इजराइल की दुश्मनी

पश्चिम एशिया

प्रभात कुमार रॉय
विदेश मामलों के जानकार

अयातुल्ला खामेनेई की तक़रीर स्पष्ट तौर पर इंगित कर रही है कि इजराइल और ईरान के मध्य सैन्य संघर्ष और अधिक तेजी के साथ आगे बढ़ेगा। अयातुल्ला ने कहा है कि दुनिया के तमाम मुल्कों के मुसलमानों को अपने समस्त मतभेदों को विस्मृत करके अब अमेरिका और इजराइल के विरुद्ध एकजुट हो जाना चाहिए। अपनी तक़रीर में अयातुल्ला ने आगे कहा कि इजराइल एक शैतानी सत्ता है, जिसकी कोई बुनियाद नहीं है। अमेरिका की मदद से ही इजराइल कायम है और वह ज्यादा वक्त तक टिक नहीं पाएगा। इजराइल पर किसी भी वक्त आक्रमण अंजाम देने के समस्त अधिकार उन्होंने ईरान की सेना को सौंप दिए हैं।

ईरान के सर्वोच्च लीडर अयातुल्ला सैयद अली खामनेई ने तेहरान की मस्जिद में शुक्रवार की नमाज के पश्चात तक़रीर करते हुए अमेरिका और इजराइल को ललकारा है। अयातुल्ला खामनेई की तक़रीर स्पष्ट तौर पर इंगित कर रही है कि इजराइल और ईरान के मध्य सैन्य संघर्ष और अधिक तेजी के साथ आगे बढ़ेगा। अयातुल्ला ने कहा है कि दुनिया के तमाम मुल्कों के मुसलमानों को अपने समस्त मतभेदों को विस्मृत करके अब अमेरिका और इजराइल के विरुद्ध एकजुट हो जाना चाहिए। अपनी तक़रीर में अयातुल्ला ने आगे कहा कि इजराइल एक शैतानी सत्ता है, जिसकी कोई बुनियाद नहीं है। अमेरिका की मदद से ही इजराइल कायम है और वह ज्यादा वक्त तक टिक नहीं पाएगा। इजराइल पर किसी भी वक्त आक्रमण अंजाम देने के समस्त अधिकार उन्होंने ईरान की सेना को सौंप दिए हैं। तेहरान की मस्जिद में एकत्र हुए लाखों ईरानियों के समक्ष तक़रीर करते हुए पश्चिमी मीडिया द्वारा फैलाई जा रही इस अफवाह पर भी अयातुल्ला खामनेई ने लगाम लगा दी, जिसके तहत बताया गया था कि वह अपनी सुरक्षा के लिए किसी बंकर में जाकर छुप गए हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति को खत लिखा

7 अक्टूबर 2023 को हमास और इजराइल के मध्य संघर्ष प्रारंभ हुआ था। हमास तंजीम द्वारा सीधे हमला करके लगभग 1200 इजराइली नागरिकों का कत्ल कर दिया गया था और तकरीबन 300 इजराइलियों को अगवा कर लिया गया था। हमास के इस आक्रमण का प्रतिशोध लेने के लिए प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की हुकूमत ने हमास के गढ़ ग़ाज़ा में अनेक हमले अंजाम दिए हैं। इजराइली सैन्य हमले में ग़ाज़ा पट्टी में तकरीबन 40 हजार से अधिक लोग मारे गए हैं। ग़ाजा में हमले के बारे में ग़ाजा में कार्यरत रहे सौ से अधिक अमेरिकन डॉक्टरों ने अमेरिका के राष्ट्रपति को एक खत लिखा है। इस ख़त में लिखा है कि गाजा में अमेरिका के हथियारों से बेगुनाह महिलाओं और बच्चों का निर्मम कत्ल अंजाम दिया जा रहा है। लोकतंत्र और मानवाधिकारों की दुहाई देने वाले अमेरिका के लिए इजराइल की हिमायत करना एक बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण कार्य है। सैन्य संघर्ष प्रारंभ होने के तकरीबन एक साल पश्चात ईरान द्वारा इजराइल की सरजमीं पर एक अक्टूबर 2024 को 181 सुपरसोनिक मिसाइल दाग दी गईं। अयातुल्ला ख़ामेनेई ने इस जंग को एक खतरनाक मोड़ तक पहुंचा दिया है।

ईरान के शिया नेता अयातुल्लाह खामनेई अब हमास बनाम इजराइल जंग को मुसलमान बनाम यहूदी जंग का खतरनाक आयाम प्रदान करने की कोशिश कर रहे हैं, इसलिए मुस्लिम वर्ल्ड के देशों से इजराइल के खिलाफ एकजुट होने की अपील कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि अप्रैल 2024 को भी ईरान द्वारा इजराइल पर 110 मिसाइलें दागी गई थीं। लेकिन अप्रैल के आक्रमण से पहले सारी दुनिया को ईरान द्वारा बाकायदा चेता दिया गया था कि सीरिया में ईरानी दूतावास पर हुए इजराइली हमले का जवाब देने के लिए ईरान द्वारा हमला अंजाम दिया जाएगा। दागी गईं ईरानी मिसाइलों के प्रतिशोध में इजराइल ने ईरान के विरुद्ध तो कोई सैन्य कदम नहीं उठाया था, लेकिन लेबनान में हिजबुल्ला तंजीम के ठिकानों पर अपने आक्रमणों को तेज कर दिया। ईरान समर्थित हिजबुल्ला तंजीम लेबनान में तकरीबन अपने एक लाख जिहादियों के साथ विद्यमान है। ग़ाज़ा में हमास के विरुद्ध इजराइली आक्रमण शुरू होने के साथ ही साथ हिजबुल्ला ने उत्तरी इजराइल पर हमले अंजाम देना शुरू कर दिया था। हाल ही में इजराइल के लड़ाकू विमानों द्वारा हिजबुल्लाह के कमांडर इन चीफ नसरल्लाह को हलाक़ कर दिया गया। यक्ष प्रश्न है कि एक अक्टूबर को ईरान द्वारा इजराइल पर दागी गईं सुपरसोनिक मिसाइलों का प्रति उत्तर देने के लिए अब इजराइल की हुकूमत क्या कदम उठाएगी। अमेरिका कदापि नहीं चाहता है कि इजराइल और ईरान में कोई सीधा और बड़ा युद्ध प्रारंभ हो जाए और जिसमें इजराइल की हिमायत में अमेरिका को भी उतरना पड़ जाए।

ईरान के शिया नेता अयातुल्लाह खामनेई अब हमास बनाम इजराइल जंग को मुसलमान बनाम यहूदी जंग का खतरनाक आयाम प्रदान करने की कोशिश कर रहे हैं, इसलिए मुस्लिम वर्ल्ड के देशों से इजराइल के खिलाफ एकजुट होने की अपील कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि अप्रैल 2024 को भी ईरान द्वारा इजराइल पर 110 मिसाइलें दागी गई थीं। लेकिन अप्रैल के आक्रमण से पहले सारी दुनिया को ईरान द्वारा बाकायदा चेता दिया गया था कि सीरिया में ईरानी दूतावास पर हुए इजराइली हमले का जवाब देने के लिए ईरान द्वारा हमला अंजाम दिया जाएगा। दागी गईं ईरानी मिसाइलों के प्रतिशोध में इजराइल ने ईरान के विरुद्ध तो कोई सैन्य कदम नहीं उठाया था, लेकिन लेबनान में हिजबुल्ला तंजीम के ठिकानों पर अपने आक्रमणों को तेज कर दिया। ईरान समर्थित हिजबुल्ला तंजीम लेबनान में तकरीबन अपने एक लाख जिहादियों के साथ विद्यमान है। ग़ाज़ा में हमास के विरुद्ध इजराइली आक्रमण शुरू होने के साथ ही साथ हिजबुल्ला ने उत्तरी इजराइल पर हमले अंजाम देना शुरू कर दिया था। हाल ही में इजराइल के लड़ाकू विमानों द्वारा हिजबुल्लाह के कमांडर इन चीफ नसरल्लाह को हलाक़ कर दिया गया। यक्ष प्रश्न है कि एक अक्टूबर को ईरान द्वारा इजराइल पर दागी गईं मिसाइलों का प्रति उत्तर देने के लिए अब इजराइल की हुकूमत क्या कदम उठाएगी। अमेरिका कदापि नहीं चाहता है कि इजराइल और ईरान में कोई सीधा और बड़ा युद्ध प्रारंभ हो जाए और जिसमें इजराइल की हिमायत में अमेरिका को भी उतरना पड़ जाए।

इजराइल की सैन्य शक्ति के पीछे कौन

सभी जानते हैं कि इजराइल वस्तुतः अमेरिका की रणनीतिक सहमति के बिना ईरान के विरुद्ध कोई बड़ा सैन्य कदम नहीं उठा सकता। रूस-यूक्रेन युद्ध में संलग्न अमेरिका नहीं चाहता कि मध्य पूर्व में उसके लिए कोई नया सैन्य मोर्चा खुल जाए।

जंग की चपेट में आएंगे मध्य पूर्व के देश

मध्य पूर्व में अनेक अरब देश हैं, जिसमें सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, ओमान, कुवैत, कतर आदि हैं, जोकि अमेरिका के निकट सहयोगी देश रहे हैं। इन देशों के शासक भले ही अमेरिका के साथ रहे हैं, लेकिन इन देशों का जनमानस इजराइल के विरुद्ध फिलिस्तीनियों के पक्ष में खड़ा है। अमेरिकन कूटनीतिज्ञ बखूबी जानते हैं कि इजराइल और ईरान के बीच बड़ी जंग अंजाम दी गई तो फिर ये जंग पूरे मध्य पूर्व के देशों को अपनी चपेट में ले सकती है और फिर उसके सहयोगी अरब राष्ट्रों में शासक अमीर शेखों का तख्ता पलट भी संभव हो सकता है। इजराइल की आंतरिक राजनीति के अंदर अपने प्रबल विरोध के चलते प्रधानमंत्री नेतन्याहू चाहते हैं कि यह जंग और अधिक विस्तार ले ले। नेतन्याहू पहले ग़ाज़ा में हमास तंजीम को खत्म करने पर आमादा रहे। फिलीस्तीन मुक्ति मोर्चा अर्थात पीएलओ के विरुद्ध हमास तंजीम का निर्माण करने में नेतन्याहू की विशिष्ट भूमिका रही थी। इसके बाद वेस्ट बैंक में पीएलओ को और फिर लेबनान में हिज्बुल्लाह तंजीम को खत्म करने के लिए इजराइल ने धावा बोल दिया। युद्ध उन्माद से त्रस्त रहे नेतन्याहू ने अमेरिका द्वारा पेश की गई युद्ध विराम की सलाह को कदाचित स्वीकार नहीं किया है। अमेरिका जानता था कि अपनी साख बचाने के लिए ईरान यकीनन इजराइल पर हमला अंजाम देगा।

अमेरिका की इजराइल को सैन्य मदद जारी

अमेरिका ने इस बीच इजराइल को प्रदान की जाने वाली सैन्य सहायता रोक देने की भी बात रखी थी, किंतु इस पर अमेरिका ने ही अमल नहीं किया। आने वाले भविष्य में यदि ईरान और इजराइल के मध्य एक बड़ी जंग अंजाम दी जाती है तो फिर इस जंग का मध्य पूर्व में विस्तार होने से कोई शक्ति रोक नहीं सकेगी। यदि इजराइल को महाशक्ति अमेरिका की सरपरस्ती हासिल रही तो फिर ईरान को भी रूस और चीन दोनों महाशक्तियों की सरपरस्ती हासिल होगी। ईरान की इजराइल पर मिसाइल हमले को अत्यधिक गंभीरता से लिया जाना चाहिए। क्योंकि इजराइल के विरुद्ध ईरान की जंग भारत के लिए भी एक विकट चुनौती सिद्ध हो सकती है। भारत के कूटनीतिक ताल्लुकात दोनों देशों ईरान और इजराइल के साथ बहुत ही अच्छे रहे हैं। ईरान भारत को तेल के आपूर्ति करने वाले शीर्ष देशों में एक देश रहा है। ईरान के परमाणु कार्यक्रम के कारणवश आयद किए गए अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के बावजूद भारत ने ईरान के साथ अपने संबंधों को कूटनीतिक तौर पर अत्यंत संतुलित बनाए रखा है।

हाल ही में जब ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की हेलीकॉप्टर हादसे में अचानक मौत हो गई, तब भी भारत सरकार ने देश में एक दिवसीय राष्ट्रीय शोक का ऐलान किया था। वर्ष 1992 में भारत के कूटनीतिक संबंध इजराइल के साथ स्थापित हो गए थे। विगत दो दशकों में दोनों देशों के मध्य परस्पर ताल्लुकात बेहद मजबूत हो गए हैं। इजराइल वस्तुतः भारत को आधुनिकतम हथियार और तकनीकी सहायता प्रदान करने वाले देशों में शीर्ष देश रहा है।

भारत के लिए कूटनीतिक संतुलन बनाना जरूरी

दोनों देशों ईरान और इजराइल के मध्य कूटनीतिक संतुलन बनाए रखना भारत के लिए बहुत बड़ी चुनौती सिद्ध हो रहा है। ईरान और इजराइल के मध्य यदि जंग छिड़ जाती है तो फिर दुनिया में तेल का विकट संकट उपस्थित हो जाएगा और भारत भी यकीनन इसका शिकार हो जाएगा। ईरान का चाबहार बंदरगाह सामरिक दृष्टि से भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस बंदरगाह की मदद से भारत को अफगानिस्तान और मध्य एशिया के साथ व्यापार करने में पाकिस्तान के मार्ग से होकर नहीं गुजरना पड़ेगा। सन् 2015 में भारत और ईरान ने चाबहार बंदरगाह के विकास के लिए हाथ मिलाए थे। ईरान और इजराइल के मध्य यदि युद्ध शुरू हो जाता है तो ईरान की प्राथमिकता चाबहार जैसे प्रोजेक्ट से हटकर युद्ध पर केंद्रित हो जाएगी। दुर्भाग्य से ईरान बनाम इजराइल युद्ध का विस्तार अगर मध्य पूर्व में हो जाएगा तो वहां पर कार्यरत 90 लाख भारतीयों पर इसका नकारात्मक असर होगा। उनको मध्य पूर्व के देशों से निकालकर भारत में पुनर्वास करना होगा।

परवान चढ़ सकता है इस्लामिक जिहाद

हाल ही में अयातुल्ला खामनेई ने दुनिया के तमाम मुसलमानों से इजराइल और अमेरिका के विरुद्ध एकजुट होने का आह्वान किया है। अयातुल्ला खामनेई का यह आह्वान यदि वास्तव में असरदार सिद्ध हो गया तो फिर से इस्लामिक जिहाद के नाम पर ओसामा बिन लादेन, अल जवाहिरी और अल बगदादी सरीखे अनेक आतंकवादी सरगना उठ खड़े होंगे। इतिहास फिर से एक बार अमेरिका को इस ऐतिहासिक ख़ता के लिए तोहमत देगा कि अमेरिका ने इजराइल को मर्यादा में न रखकर फिर से विश्व पटल पर इस्लामिक जिहाद को परवान चढ़ा दिया। उल्लेखनीय है कि अफगानिस्तान में सोवियत संघ के विरुद्ध जंग करते हुए अमेरिका द्वारा ओसामा बिन लादेन की क़यादत में लाखों जिहादियों की तरबीयत और परवरिश अंजाम दी गई थी। जिसका नतीजा वस्तुतः वैश्विक जिहाद के रूप में सारी दुनिया को भुगतना पड़ा। जिहाद के हाथों अमेरिका ने भी बहुत गहरे जख्म खाए थे। इस्लामी जिहाद के विरुद्ध भारत भी सन् 1989 से कश्मीर में निरंतर जूझ रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध की तरह से ही भारत को संभावित इजराइल-ईरान जंग को प्रारंभ नहीं होने देने की कोशिश करते रहना चाहिए। दोनों देश ही भारत के निकट मित्र देश रहे हैं। भारत की वाणी अवश्य समझी और सुनी जाएगी। भारत का संदेश है युद्ध समस्या का हल नहीं है, आतंकवाद सबके दुश्मन हैं।

विश्वयुद्ध की ओर सरकता मध्य-पूर्व

इजराइल-ईरान

रहीस सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

इजराइल सीधे ईरान द्वारा 181 बैलेस्टिक मिसाइलें दागनने के बाद 4 अक्टूबर को जब ईरान के धार्मिक नेता अयातुल्लाह अली खामनेई करीब चार वर्ष बाद जब सार्वजनिक मंच पर आए तो उन्होंने इस्लामी देशों को संदेश देने के उद्देश्य से दो बातें कहीं, पहली यह कि ईरान के दुश्मन वही हैं जो फलस्तीनी प्रशासन और लेबनान समेत दूसरे मुस्लिम देशों के भी दुश्मन हैं। यानि अब वे शिया और सुन्नी के बीच स्पष्ट हो चुकी विभाजक रेखा को मिटाना चाहते हैं। हालांकि विभाजक रेखा अब खाईं का रूप ले चुकी है इसलिए इसे पाट पाना नामुमकिन सा है। उन्होंने जो दूसरी बात कही वह यह कि हमारे सशस्त्र बलों ने जो किया वह 'डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स' की नीति रखने वाले जायनिस्ट शासन के चौंका देने वाले अपराधों के लिए कम से कम सजा थी। इस तरह से उन्होंने इजराइल के खिलाफ अपनी प्रतिक्रिया को वैध और उचित ठहराया। उधर हिजबुल्ला ने इजराइल के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखने की प्रतिज्ञा लेते हुए स्पष्ट किया है कि गज़ा, फिलिस्तीन और लेबनान तथा उसके लोगों की रक्षा के लिए वो लगातार समर्थन करता रहेगा। जबकि इजराइली डिफ़ेंस फ़ोर्सेस (आईडीएफ़) की तरफ से कहा गया है कि ''हमारी जंग लेबनान के लोगों से नहीं बल्कि हिज़्बुल्लाह से है।' इससे यह नहीं दिखता कि अभी भी प्रॉक्सी युद्ध की संभावनाएं अधिक हैं क्योंकि ईरान और इजराइल सधा हुआ युद्ध लड़ना चाहते हैं अथवा वे युद्ध के साथ बचने के रास्ते भी तलाश रहे हैं? तब क्या इस निष्कर्ष पर पहुंचना थोड़ी जल्दबाजी होगी कि मध्य-पूर्व का टकराव तीसरे विश्वयुद्ध में बदल सकता है ? पिछले दिनों इजराइली प्रधानमंत्री ने यूएन जनरल असेंबली में कहा था कि लक्ष्य पूरा होने तक हमले जारी रहेंगे। दूसरी तरफ ईरान के विषय में अभी यह पूरी तरह से तय नहीं है कि वह सीधे लड़ेगा अथवा प्रॉक्सी युद्ध को ताकत देगा। हालांकि उसका सीधे लड़ना मुश्किल होगा क्योंकि सैन्य इनवेजन के जरिए वह लड़ नहीं सकता और हवाई युद्ध में वह इस्राइल के सामने टिक नहीं पाएगा। ऐसी स्थिति में अभी किन्हीं परिणामों तक पहुंचना जल्दबाजी होगी। दूसरी तरफ इजराइल को लें, तो सवाल यह उठता है कि उसका असली दुश्मन कौन है? असली दुश्मन हिजबुल्ला और हमास नहीं हैं बल्कि ईरान है। जैसा कि कभी इजराइली प्रधानमंत्री बेनेट कह चुके हैं कि तेहरान ऑक्टोपस का सिर है, तो लेबनान में हिजबुल्ला, गाजा में हमास और यमन में हूती उसके हाथ हैं। तो ऐसा तो नहीं है कि ईरान के प्रॉक्सी से निरंतर युद्ध करके इजराइल खुद को थका डालने का रिस्क ले रहा है? वैसे इजराइल ने दक्षिणी लेबनान में सैन्य इनवेजन शुरू कर दिया है, यह संभवतः उसे हित में नहीं होगा। ठीक वैसे ही जैसे कि वियतनाम युद्ध अमेरिका के हित में नहीं रहा था। हालांकि इजराइल एयर स्ट्राइक्स को हिजबुल्ला के रॉकेट और मिलिट्री स्टैब्लिशमेंट को ध्वस्त करना जरूरी मानता है, जो है भी क्योंकि हिजबुल्ला लेबनानी नागरिकों को 'ह्यूमन शील्ड' की तरह इस्तेमाल कर रहा है। वह अपने मिसाइल और रॉकेट्स को इनके यहां छुपा कर अटैक करता है। लेकिन ईरान इसे इजराइल द्वारा किया गया 'मास मर्डर' मानता है जिसका बदला लेने के लिए वह प्रतिबद्ध है। वह इजराइल को कई

बार चेतावनी दे चुका है कि वह रेड लाइन क्रॉस कर चुका है। अब देखना यह है कि वह इजराइल के खिलाफ 'ऑल आउट वार' का चुनाव करता है या फिर प्रॉक्सी वॉर के जरिए ही आगे बढ़ेगा? यह सवाल बार-बार आता है कि युद्ध के नतीजे किसके पक्ष में जाएंगे ? प्रथमदृष्टया तो इजराइल उत्तर आता है। पिछले नतीजे देखें तो इजराइल ने डिफेंस स्ट्रैटेजी, रियल टाइम इंटेलिजेंस और रियल टाइम टारगेट, रणनीति के जरिए हमास और हिज्बुल्ला पर बड़ी विजय प्राप्त करने में सफलता पायी है। ध्यान रहे कि 1992 से 2006 के बीच नसरल्ला और हिजबुल्ला की प्रगति को देखते हुए इजराइल ने यह समझ लिया था कि हिज्बुल्ला को खत्म करना आसान नहीं है। इसलिए उसने हिज्बुल्ला को कमजोर करने के लिए उसके कमांडरों को मारने की रणनीति अपनाई। यह एक लंबी रणनीति थी जिसे आप 'मोइंग द ग्रास स्ट्रैटेजी' नाम दे सकते हैं। इजराइल सतत रूप से इस पर कार्य करता रहा जिसमें रियल टाइम इंटेलिजेंस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण पेजर बम है, जिसमें लगभग 3000 के आसपास हिजबुल्ला लड़ाके घायल हुए। इसी की वजह से इजराइल 'रियल टाइम टारगेट' रणनीति में सफल हुआ और 27 सितम्बर को बेरूत में बम गिराकर नसरल्ला को मारने में सफल रहा। दरअसल वर्ष 2006 में जब इजराइल-हिज्बुल्ला संघर्ष 34 दिन में संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता कारण समाप्त हो गया। यद्यपि यह हिज्बुल्ला की जीत नहीं थी लेकिन हसन नसरल्ला एक मिलिट्री स्ट्रैटेजिस्ट के रूप में स्थापित कर ले गया। यहीं से इजराइल ने रणनीति बदली और हिज्बुल्ला के कमांडरों को मारने की रणनीति अपनायी। इसमें प्रमुख भूमिका निभायी सिग्नल इंटेलिजेंस यूनिट 8200 ने जिसने हिज्बुल्ला के मोबाइल फोन और अन्य संचार साधनों को पकड़ने के लिए साइबर टूल्स बनाए।

अब देखना होगा कि ईरान की फॉरवर्ड डिफेंस डॉक्ट्रिन और इजराइल की बेगन डॉक्ट्रिन में कौन सी ज्यादा बेहतर परिणाम लाएगी। 1979 की इस्लामी रिवोल्यूशन के बाद ईरान में स्थापित इस्लामी स्टैब्लिशमेंट ने इजराइल को 'इललेजिटीमेट जाइनिस्ट रेजीम' माना और उसके खिलाफ एक प्रॉक्सी युद्ध आरम्भ करने के लिए हिज्बुल्ला और हमास जैसे लड़का समूहों को स्थापित किया जो उसकी 'फारवर्ड डिफेंस डॉक्ट्रिन' का परिणाम थे। यह डॉक्ट्रिन कहती है कि आप अपनी पॉवर को बॉर्डर्स के बाहर कैसे इस्तेमाल करें, वह भी बिना प्रत्यक्ष युद्ध अथवा टकराव के। इसी दौर में ईरान ने न्यूक्लियर प्रोग्राम शुरू कर मध्य-पूर्व में न्यूक्लियर ताकत बनने की कोशिश की। इजराइल यह अच्छी तरह से जानता था ईरान यदि अपने इस मिशन में सफल हो गया तो वह इजराइल को बहुत नुकसान पहुंचाएगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि सुन्नी दुनिया के देश भी यह नहीं चाहते थे कि ईरान एक न्यूक्लियर पॉवर बने। इसलिए इजराइल ने 'बेगन डॉक्ट्रिन' की शुरूआत की जिसका उद्देश्य था अपने आसपास के देशों में 'मॉस डिस्ट्रक्शन' यानि न्यूक्लियर हथियारों के निर्माण सम्बंधी गतिविधियों को रोकना। इस दृष्टि से ईरान और इजराइल दोनों ही अपने मकसद में कामयाब रहे। इसके बावजूद, इजराइल एक तरफ हिजबुल्ला, दूसरी तरफ हमास, और तीसरी तरफ हूती और ईरान से घिरा हुआ है। पहली तीनों शक्तियां इजराइल को लगातार टक्कर दे रही हैं। यह कुछ तालिबानियों जैसा ही है जिनके गुरु ने कभी कहा था कि हम अमेरिका को हरा नहीं सकते लेकिन थका सकते हैं। कमोबेश तालिबान जैसा स्ट्रक्चर हिजबुल्ला का भी है। यह बिखरा हुआ है लेकिन इसकी अपनी मिलिट्री स्ट्रेंथ है जो इजराइल से लम्बे समय तक लड़ सकती है। हम कह सकते हैं कि यह दुनिया का सबसे बड़ा नान स्टेट एक्टर है। इजराइल के लिए भी यह लड़ाई आसान नहीं होगी। अमेरिका कूदता है तो फिर संभव है कि लड़ाई विश्व युद्ध में बदल जाए।

अस्तित्व की जंग लड़ रहा इजराइल

विश्लेषण

सुनील अमर
वरिष्ठ पत्रकार

लगभग एक साल पूर्व फिलिस्तीनी संगठन तथा गाजा पट्टी के शासक दल हमास द्वारा इजराइल पर किए गए जिस हमले को अंग्रेजी में 'कॉन्फ्लिक्ट' यानी झड़प बताया गया था आज वह एक ऐसे युद्ध की शक्ल ले चुका है जिसमें इजराइल अब कम से कम सात मोर्चों पर एक साथ लड़ रहा है। इस लड़ाई ने ऐसा राजनीतिक रुख अख्तियार कर लिया है जिसमें मध्यपूर्व और एशिया के कई देश यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि वे किसकी तरफ रहें! यह लड़ाई नई नहीं है और ये दोनों देश अपने जन्म यानी सन् 1947 से ही लड़ रहे हैं।

मुस्लिम देशों से घिरा है इजराइल

यह जानना दिलचस्प होगा कि युद्ध की हालत में भी अपने राजनीतिक और आर्थिक फायदों को ध्यान में रखते हुए तमाम देश किस तरह की भूमिका निभाते हैं। सीमाओं की बात करें तो इजराइल चारों तरफ से मुस्लिम देशों से घिरा हुआ है। पूर्व में जार्डन, उत्तर में लेबनान, उत्तर पूर्व में सीरिया, दक्षिण पश्चिम में मिस्र और झगड़े की जड़ कहे जाने वाले फिलिस्तीन के दो इलाके- दक्षिण पश्चिम में गाजा पट्टी तथा पूर्व में पश्चिमी तट नाम का क्षेत्र है। इन सभी सीमावर्ती देशों में सैन्य संगठनों के अलावा इस्लामिक मिलिशिया का भी जाल फैला हुआ है। गत वर्ष सात अक्टूबर को जब हमास ने हमला किया तो कारण यह बताया कि इजरायल ने उनके आदमियों को बन्धक बनाया हुआ है, सीमाओं को बन्द करके तमाम तरह की आपूर्ति बाधित कर रखी है, विवादों के निस्तारण को तय अन्तरराष्ट्रीय कानूनों को नहीं मान रहा है तथा गाजा पट्टी निवासियों के तमाम कष्टों का जिम्मेदार है। ध्यान रहे कि फिलिस्तीन गाजा पट्टी और पश्चिमी तट नामक दो हिस्सों में बंटा हुआ है जिसमें गाजा पट्टी में वर्ष 2007 से हमास का शासन है। इजरायल और हमास की अगर तुलना करें तो हमास की स्थिति मच्छर सरीखी है। अपने दुःखों और हालात से आजिज आकर दुनिया का ध्यान आकर्षित करने के लिए हमास ने इजराइल पर हमला तो कर दिया लेकिन इसकी बहुत बड़ी कीमत उसे चुकानी पड़ी है।

वैश्विक संस्थाएं बनाएं दबाव

इस्लामिक बन्धुत्व के नाम पर जो देश उसकी तरफ से लड़ाई में शामिल हो गए हैं वे भी उसके मौजूदा कष्टों को दूर नहीं कर पाएंगे। इजराइल पर अन्तरराष्ट्रीय संस्थाएं ही दबाव बना सकती है लेकिन इन संस्थाओं में अमेरिका का दबदबा है और अमेरिका खुलकर इजराइल के साथ खड़ा है। गत दिनों उसने इजराइल को लगभग 2000 करोड़ रुपयों की सैन्य सहायता देने की घोषणा की है तथा ब्रिटेन और फ्रांस भी इजराइल के साथ हैं। सऊदी अरब के सुरक्षा सम्बन्धी समझौते इजरायल के साथ हैं, लेकिन मन से वह फिलिस्तीन के साथ है इसलिए कूटनीतिक तौर पर वह बहुत फूंक-फूंक कर कदम रख रहा है। क़तर यद्यपि बहुत छोटा सा देश है लेकिन वहां अमेरिका का बड़ा सैन्य अड्डा है, क़तर का भाईचारा ईरान के साथ है और इसने हमास के मारे गये नेता इस्माइल हेनियाह को अपने यहां शरण भी दे रखी थी। जार्डन की दशा भी कतर जैसी ही है। अमेरिका ने वहां अपना सैन्य अड्डा बना रखा

है जिस पर इसी साल जनवरी में ईरान समर्थित गुटों ने हमला कर तीन अमेरिकियों को मार दिया था। जार्डन भी किसी तरह अपना राजनीतिक तालमेल इजराइल से बनाए हुए है।

हमास की तरफदारी

इजराइल का एक और पड़ोसी मिस्र है जिसने वर्ष 1979 से इजराइल के साथ मशहूर कैम्प डेविड शान्ति समझौते की सन्धि कर रखी है, लेकिन इधर फिलिस्तीन की वजह से सम्बन्ध निम्न स्तर पर आ गये हैं और मिस्र में जनता तथा विपक्ष ने हमास की तरफदारी की आवाज उठा रखी है। सीरिया और इराक एक समय में क्षेत्रीय शक्तियां रही हैं लेकिन वहां स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डों पर भी ईरान समर्थित समूहों ने दर्जनों बार हमला किया हुआ है। इजराइल का एक ताकतवर पड़ोसी तुर्की है लेकिन उससे भी सम्बन्ध ठीक नहीं हैं क्योंकि इसी साल जनवरी में तुर्की पुलिस ने 33 ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया जिन पर इजराइली जासूसी संस्था मोसाद के लिए जासूसी करने का आरोप था। तुर्की ने कहा कि मोसाद के ये जासूस उसके देश में हमास के लोगों की तलाश कर रहे थे। दूसरी तरफ ईरान है। क्षेत्र में अपनी संप्रभुता तथा इस्लामिक बन्धुत्व का झंडा बुलन्द रखने के लिहाज से वह इस लड़ाई में शामिल होना अपना फ़र्ज समझता है। वैसे तो ईरान के साथ रूस, तुर्की, लेबनान, चीन और यमन हैं।

ईरान को इन देशों का सहारा

जहां तक रूस की बात है तो पश्चिमी देशों खासकर अमेरिका के खिलाफ समान सोच रखने के कारण रूस और ईरान में दशकों से अच्छे सम्बन्ध हैं। इस संयोग में राजनीतिक दृष्टिकोण तलाशे जा सकते हैं कि रूसी प्रधानमन्त्री मिखाइल मिशुस्टिन के गत दिनों ईरान दौरे के बाद ही ईरान ने इजराइल पर मिसाइल हमला किया था। लेकिन दूसरी तरफ रूस इजरायल को भी साधे रखना चाहता है। रूस नहीं चाहता कि यूक्रेन से चल रही जंग में इजराइल यूक्रेन की मदद करने लगे। उधर, इजराइल भी रूस में रह रहे अपने यहूदी समुदाय की सुरक्षा के लिए रूस को नाराज नहीं करना चाहता। इजराइल से मौजूदा लड़ाई को लेकर लेबनान भी ईरान के साथ खड़ा है। वैसे भी लेबनान के सम्बन्ध इजरायल से हमेशा ही लड़ाई और तनातनी के रहे हैं। रूस जैसा ही मामला चीन का भी है। वैसे तो चीन के इजराइल के साथ व्यापारिक सम्बन्ध हैं लेकिन अमेरिका की वजह से चीन भी ईरान को अपने पाले में रखना चाहता है। ईरान के साथ यमन भी है जिसके हूती लड़ाकों ने इजराइल पर मिसाइली हमला जारी रखा है। इसी प्रकार वर्ष 1948 से ही इजराइल से अपनी लड़ाई को लेकर सीरिया स्वाभाविक ही ईरान के साथ है। संक्षेप में कहें तो एक ग्रुप है जिसका नाम है-एक्सिस ऑफ रेजिस्टेन्स जिसमें हमास, हिजबुल्लाह, सीरिया की सरकार, यमन के हूती विद्रोही तथा सीरिया और इराक के अन्य लड़ाकू समूह शामिल हैं जो ईरान पोषित हैं व वे इसकी मदद कर रहे हैं।

भारत गुट निरपेक्ष की स्थिति में

भारत सरकार का अब तक का रवैया गुट निरपेक्ष वाला ही रहा है। भारत ने शुरू से ही दो राष्ट्र के सिद्धान्त पर फिलिस्तीन को मान्यता दे रखी है। इजराइल से भारत के सामरिक सम्बन्ध भी हैं तथा बहुत सारे भारतीय इजराइल में रहते भी हैं। ताजा हालात में भारत ने फिलिस्तीन को 70 टन राहत सामग्री और दवा आदि की सहायता भी दी है। इस युद्ध का एक और पहलू व्यवसाय का भी है जिसका लाभ हमेशा की तरह अमेरिका ले रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध में रूस पर लगे प्रतिबन्धों के बाद पश्चिम के देश गैस आदि के लिए अमेरिका पर आश्रित हुए हैं तो यूक्रेन व इजराइल को हथियार तथा राहत सामग्री पहुंचाने के नाम पर अमेरिका का धन्धा फल-फूल रहा है। विश्व में कहीं भी लड़ाई हो, अमेरिका उसमें अपना धन्धा तलाश ही लेता है। नासमझ देश तो बस लड़ने में व्यस्त हैं।

एक छोटे मुल्क की बड़ी सीख

चीन ने एक हजार साल उन पर हुकूमत की थी। शताब्दियां बीत गईं, पर वियतनाम के खुद्दार लोग चीनियों की दमन-गाथा को बिसरा नहीं पाते। पराधीनता के विरुद्ध भावनाओं का ऐसा सामूहिक ज्वार मैंने कभी कहीं और नहीं देखा। वे महज अपनी आजादी से संतुष्ट नहीं हैं। उनमें जबरदस्त प्रगति कामना भी है।

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

शशि शेखर

आजकल

उस वक्त हम हो ची मिन्ह सिटी के युद्ध संग्रहालय में थे। वे लम्हे चकित कर देने वाले रोमांच के थे। वहां सिर्फ युद्ध का साजो-सामान न था, बल्कि कदम-दर-कदम मानवीय जिजीविषा और सामरिक रचनात्मकता का संगम पसरा हुआ था। वियतनामियों ने फ्रांस, अमेरिका और अपने गृहयुद्ध की यादों को काफी करीने से संजो रखा है। इन अजर-अमर गाथाओं को वे सिर्फ दूसरों को नहीं दिखाते, अपने दिल में भी हरदम बसाए रखते हैं।

गुलामी से स्थायी मुक्ति का अकेला रास्ता यही है।

इस भवन तक पहुंचने से पहले ही हमें उन अमेरिकी तोपों और टैंकों के दर्शन होने लगते हैं, जिन्हें अमेरिकी सैनिक छोड़ भागे थे। मैंने बड़ी संख्या में स्थानीय लोग वहां देखे। युवा अपने बच्चों को और बुजुर्ग अपने नाती-पोतों को अनूठी समरगाथा से रू-ब-रू कराने वहां आए थे। संगृहीत तोप, गोले, हेलीकॉप्टर और अन्य आयुधों के आगे चस्पां विवरणों को वे बेहद ध्यान से देखते और इत्मीनान से बच्चों को बताते। मैं इतने मुल्कों में घूमा किया, पर ऐसा अंदाज इससे पहले कहीं नहीं दिखाई दिया।

वियतनाम में गुजरे वे चार दिन रह-रहकर हॉवर्ड फास्ट की *माई ग्लोरियस ब्रदर्स* का वह संवाद याद दिलाते, जो ईसा से पूर्व स्थापित हुए यहूदी मुल्क के हर बाशिंदे की जुबान पर था- हम एक हजार साल पहले मिस्र में गुलाम थे। आज तक इजरायल उसी राह पर चल रहा है। वियतनाम ने उसे सुथरे तरीके से अपना लिया है। वह इजरायल की तरह पड़ोसियों से जंग नहीं लड़ रहा। इधर, चीन से भी उसके रिश्ते सुधरे हैं। हालांकि, वहां का आम आदमी चीन के नाम पर मुंह बिचकाता है। चीन ने एक हजार साल उन पर हुकूमत की थी। शताब्दियां बीत गईं, पर वियतनाम के खुद्दार लोग चीनियों की दमन-गाथा को बिसरा नहीं पाते। पराधीनता के विरुद्ध भावनाओं का ऐसा सामूहिक ज्वार मैंने कभी कहीं और नहीं देखा।

वे महज अपनी आजादी से संतुष्ट नहीं हैं। उनमें जबरदस्त प्रगति-कामना भी है।

यही वजह है कि भूगोल में हमारे राजस्थान से छोटा होने के बावजूद उनकी तरक्की आंखें खोलने वाली है। युद्ध और गृहयुद्ध के दशकों लंबे दौर से गुजरकर वह 1976 में अपने पैरों पर खड़ा हो पाया, मगर अगले पच्चीस वर्ष घावों से उबरने के थे। उसने गति पकड़ी इस सदी के आरंभ से और अभी चौबीस साल भी नहीं पूरे हुए, पर 99 फीसदी से ज्यादा घरों में बिजली है। वियतनाम में बिजली आंख-मिचौली भी नहीं खेलती और 50 प्रतिशत से अधिक आबादी के पास साफ पीने का पानी है। यही नहीं, 87 प्रतिशत से भी अधिक वियतनामी राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा का लाभ उठा रहे हैं। विश्व बैंक की रपट बताती है कि साल 2022 में महज 4.2 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा से नीचे रह बचे थे।

यात्रा के दौरान हम 70 किलोमीटर दूर मेकांग डेल्टा देखने के लिए राजमार्ग से गए। 'एक्सप्रेस वेज' का ऐसा रूप मैंने अमेरिका में भी नहीं देखा। कहीं कोई गड्ढा नहीं, गति अवरोधक नहीं और आगे निकलने की जानलेवा होड़ भी नहीं। इससे पहले राजधानी की सड़कों को भी परखा था, कहीं कोई ट्रैफिक सिपाही नहीं, लेकिन जाम का नामोनिशान तक नहीं। मैंने एक बार भी वहां हॉर्न की ध्वनि नहीं सुनी। इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल में जगह-जगह लिखवाया नारा याद आ गया - अनुशासन ही देश को महान बनाता है। हम उस थोपे गए अनुशासन से कितना महान देश बना पाए? वियतनाम में स्व-अनुशासन जीवनशैली का मुकम्मल हिस्सा लगा।

कोई आश्चर्य नहीं कि दस करोड़ की आबादी वाले इस मुल्क की अर्थव्यवस्था क्रय शक्ति क्षमता यानी पीपीपी के हिसाब से 1.350 ट्रिलियन डॉलर पार कर चुकी है। विश्व बैंक ने चालू वित्तीय वर्ष में यहां की विकास दर छह फीसदी से अधिक आंकी है। अगले वर्ष इसमें बढ़ोतरी का अनुमान है। यही वजह है कि इस वर्ष के पहले आठ माह में ही उसे 14.15 बिलियन डॉलर का विदेशी निवेश हासिल हुआ है। भारत आकार, आबादी और अर्थव्यवस्था में उससे कहीं बड़ा है, पर इस वर्ष हमें 2023 के मुकाबले कम विदेशी निवेश प्राप्त हो सका है।

यह हमारे लिए खतरे की घंटी भले न हो, पर चेतने की बात जरूर है। वियतनाम आसियान का सदस्य है। इसके देशों की कुशल आबादी दुनिया के सामने असीम संभावनाएं पेश करती है। वियतनाम में शिक्षा को कितनी तरजीह दी जाती है, इसका अंदाज सिर्फ इस तथ्य से लग जाता है कि अकेले हो ची मिन्ह सिटी में 55 विश्वविद्यालय हैं। इसी चलन के चलते इन देशों ने पिछले 30 वर्षों में काबिल-ए-गौर तरक्की हासिल की है।

लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता का दंभ भरने वाले पश्चिमी देशों का नकाब यहां भी हवा का झोंका बन जाता है। उन्हें ऐसे मुल्कों का राजनीतिक वातावरण रास आता है। इनमें से अधिकांश देशों में आर्थिक प्रगति को लोकतांत्रिक मूल्यों पर तरजीह दी जाती है। वियतनाम में एकदलीय व्यवस्था है। चीन की तरह वहां भी कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत है। वहां बोलने की आजादी है, पर सरेआम अपने देश के बारे में बात करने में लोग हिचकते हैं। मॉस्को और बीजिंग की भांति वहां के बाशिंदों को भी लगता है कि उन पर नजर रखी जा रही है।

मुझे इसका इल्म न होता, अगर फैन्सी सैगॉन मॉल में मैंने एक नौजवान से पूछ न लिया होता कि क्या आप खुद को कॉमरेड मानते हैं? उसने इधर-उधर देख फुसफुसाकर बोला था- हम 'रेड कैपिटलिस्ट' हैं। मतलब? उसका उत्तर था- ऊपर से हमारे नेता सोशलिस्ट हैं, पर अंदर से कैपिटलिस्ट। कहीं हर ओर पसरे अनुशासन की असली वजह यही तो नहीं? चाहे जो हो, पर विलासिता की वस्तुओं से दमकते स्टोर्स भरे पड़े थे। दिल्ली और एनसीआर के कम ही मॉल ऐसे होंगे, जहां एक साथ इतने लग्जरी स्टोर हों।

कहते हैं, हर चमक-दमक के पीछे गहरी कालिमा छिपी होती है। वियतनाम में भी इसका असर दिखाई पड़ रहा है। वहां के युवा विवाह संस्था से मुंह मोड़ रहे हैं। एक 28 साल के नौजवान ने बताया कि हमारी शादी करने की हिम्मत नहीं पड़ती। महंगाई इतनी है कि बच्चे कैसे पलेंगे? मैंने उससे पूछा कि आपके यहां तो शिक्षा 'फ्री' है, फिर कैसी दिक्कत? उसका उत्तर था, यह ठीक है कि बच्चे के लिए फीस की व्यवस्था नहीं करनी होगी, पर उसे पालने के लिए कई अन्य खर्चे करने पड़ेंगे। वे कहां से आएंगे? वह गलत न था। मेरे लिए यह पहला मुल्क था, जहां मैंने पांच लाख का नोट देखा। भारतीय मुद्रा में उसकी कीमत अमूमन दो हजार रुपये होती है।

हालांकि, वियतनाम अकेला इस बला का शिकार नहीं है। लगभग सभी देश इस सामाजिक संक्रमण की चपेट में हैं। मैं इससे चिंतित होने के बजाय अपने हमवतनों से इस छोटे मुल्क की बड़ी छलांग से सीखने की आकांक्षा रखता हूं।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

सुबोनेन्बा लोंगकुमेर
सामाजिक कार्यकर्ता

खुद रहे अनाथ, पर सैकड़ों बच्चों के बन गए नाथ

यतीम बच्चों से परिजनों की हमदर्दी तो थी, मगर चार-चार किशोरों की जिम्मेदारी उठाना किसी एक परिवार के लिए मुमकिन न था। लिहाजा चारों भाई-बहन को उन्होंने तकसीम करने का रास्ता चुना। दुख इंसान को जोड़ता है, मगर यहां एक ही दर्द के सभी साझेदार बंट गए।

कहते हैं, धरती के हर इंसान का जीवन अपने आप में एक उपन्यास होता है, मगर इनमें से कुछ की ही कहानियां सलीके से दर्ज हो पाती हैं। कुछ के संघर्ष, उनकी उपलब्धियां किसी रोशनदान से कम नहीं होतीं। वे अनगिनत लोगों को सद्कर्मों के लिए प्रेरित करती हैं और जमाना भी उन्हें झुककर सलाम करता है। आज ऐसी ही एक कहानी के नायक हैं सुबोनेन्बा लोंगकुमेर। नगालैंड के मोकोकचुंग जिले में एक गांव है कांग्त्सुंग, सुबोनेन्बा इसी गांव में पैदा हुए। नगालैंड समेत पूर्वोत्तर के सूबों में साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से बेहतर इसलिए है कि वहां के सुदूर ग्रामीण इलाकों के लोगों ने भी बहुत पहले शिक्षा की अहमियत जान ली थी। कांग्त्सुंग गांव के लोग तो सुबोनेन्बा के पिता ओ यंगर लोंगकुमेर की मिसालें दिया करते थे, जिन्होंने सन् 1977 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में प्रथम श्रेणी में एमए की डिग्री हासिल की थी और एक श्रम अधिकारी बन गए थे। सुबोनेन्बा की मां भी छठी तक पढ़ने वाली चंद महिलाओं में एक थीं।

लोंगकुमेर परिवार खुशहाल था। चार भाई-बहन में सुबोनेन्बा दूसरे हैं। जब वह नौ साल के थे, तभी पिता की कैंसर से मौत हो गई। मां को पिता की कंपनी के अस्पताल में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी मिल गई थी, मगर तीन हजार रुपये की तनख्वाह में पांच सदस्यों के परिवार का गुजारा मुश्किल से हो पाता। बच्चों को स्कूल भेजना मुश्किल हो गया। मां तनाव में रहने लगी थीं। पिता को गए बमुश्किल तीन साल हुए होंगे कि एक दिन अचानक मां ने भी दुनिया को अलविदा कह दिया। 12 साल की उम्र में ही सुबोनेन्बा अनाथ हो गए। बहन और एक भाई तो उनसे भी छोटे थे।

चारों भाई-बहन को समझ में नहीं आ रहा था कि उनके साथ यह क्या हुआ है? सुबोनेन्बा और उनके भाई-बहन पर पिता के बीमार पड़ने से जो गम की बरसात शुरू हुई, वह बरसती चली जा रही थी। उनका परिवार जिस नगा जनजाति का हिस्सा है, उसमें तीन दिन तक शोक मनाया जाता है। परंपरा के मुताबिक मां की मौत के चौथे दिन सभी रिश्तेदार जुटे, ताकि परिवार की संपत्ति की विरासत और बच्चों के भविष्य के बारे में कोई फैसला किया जा सके। यतीम बच्चों के साथ परिजनों की हमदर्दी तो थी, मगर चार-चार किशोरों की जिम्मेदारी उठाना किसी एक परिवार के लिए मुमकिन न था। लिहाजा चारों भाई-बहन को उन्होंने आपस में तकसीम करने का व्यावहारिक रास्ता चुना। दुख तो इंसान को जोड़ता है, मगर यहां एक ही दर्द के सभी साझेदार बंट गए। सुबोनेन्बा उस समय सातवीं कक्षा में थे। जिस चाचा के यहां उन्हें पनाह मिली, वहां उन्हें भोजन और कपड़े तो मिल जाते, मगर पढ़ाई का खर्च उठाने को चाचा राजी न थे। बल्कि जल्द ही सुबोनेन्बा से यह अपेक्षा की गई कि चाचा के ढाबे में काम करके वह अपने गुजारे का खर्च जुटाएं। सुबोनेन्बा पढ़ना चाहते थे, मगर कोई रिश्तेदार हाथ नहीं बढ़ा रहा था।

कई बार रक्त संबंधियों से ज्यादा बाहर के लोग अपने साबित होते हैं। पिता के एक पुराने दोस्त को जब यह बात पता चली, तो वह बहुत दुखी हुए। उन्होंने सुबोनेन्बा और उनके बड़े भाई की मैट्रिक तक पढ़ाई का खर्च उठाने का फैसला किया। अगले चार वर्षों तक उन्होंने न सिर्फ उन दोनों की स्कूल फीस भरी, बल्कि उनके लिए कॉपी-किताबें और स्कूली पोशाकें भी खरीदीं। मगर चाचा के यहां रहने के बदले में सुबोनेन्बा को काफी श्रम करना पड़ता। वह ढाबे पर पानी भरते, लकड़ियां लेकर आते, मेहमानों के लिए खाना पकाते और भी कई दूसरे काम निपटाते। इसके बाद स्कूल जाने का नंबर आता। मैट्रिक के बाद बड़े भाई की नगालैंड पुलिस में नौकरी लग गई, तो बड़ा सहारा मिला। उनकी आर्थिक मदद से सुबोनेन्बा ने साल 2000 में ग्रेजुएशन की अपनी पढ़ाई मुकम्मल की। उन्हीं दिनों उन्हें दीमापुर के एक गैर-सरकारी संगठन 'वर्ल्ड विजन इंडिया' के बारे में पता चला। यह संगठन शिक्षा के जरिये बाल श्रमिकों के पुनर्वास में जुटा था। सुबोनेन्बा खुद यह दंश भोग चुके थे। उन्होंने उस संगठन में नौकरी के लिए आवेदन कर दिया।

सुबोनेन्बा बाल श्रमिकों को पढ़ाना चाहते थे, मगर वर्ल्ड विजन इंडिया ने दो बार उनका आवेदन यह कहकर खारिज कर दिया कि वे इसकी योग्यता नहीं रखते। अलबत्ता, उसने 2,000 रुपये मासिक तनख्वाह पर ड्राइवर की नौकरी का प्रस्ताव जरूर दिया। सुबोनेन्बा चाचा के यहां लौटकर नहीं जाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और अगले पांच वर्षों तक वह बतौर स्वयंसेवक इसमें सक्रिय रहे। इस दौरान वह सड़क के लावारिस बच्चों से बातें करते, उनमें अच्छी जिंदगी जीने के सपने जगाते और संगठन के स्कूल में आने को प्रेरित करते। आखिरकार संगठन ने सुबोनेन्बा को शिक्षक बना दिया। सुबोनेन्बा स्कूल से जुड़े अन्य प्रबंधकीय काम भी सीखते गए।

मगर जब एनजीओ की फंडिंग बंद हो गई और 2005 में उसने वहां से किसी अन्य जिले में जाने का फैसला कर लिया, तो सुबोनेन्बा बेचैन हो उठे। उन्हें उन 300 बच्चों के भविष्य की चिंता सोने नहीं देती, जो इस स्कूल में पढ़ रहे थे। बहुत अनुरोध-मनुहार के बाद वह स्कूल उन्हें चलाने की इजाजत दी गई। अपनी पुरानी कार बेचकर सुबोनेन्बा ने शिक्षकों की कुछ तनख्वाह अदा की। इस तरह 'कम्युनिटी एजुकेशनल सेंटर सोसायटी' की शुरुआत हुई। साल 2008 में नगालैंड सरकार ने इसे एक गैर-सरकारी संगठन की मान्यता दी।

आज सुबोनेन्बा दो स्कूलों के चेयरमैन हैं। उनकी देख-रेख में आठ अन्य परियोजनाएं चल रही हैं। सुबोनेन्बा अब तक करीब 2,000 बाल श्रमिकों और यतीम बच्चों की जिंदगी शिक्षा के जरिये रोशन कर चुके हैं। उनके स्कूल से निकले सैकड़ों गरीब बच्चे आज सरकारी, निजी नौकरियों में हैं।

आज सुबोनेन्बा दो स्कूलों के चेयरमैन हैं। उनकी देख-रेख में आठ अन्य परियोजनाएं चल रही हैं। सुबोनेन्बा अब तक 2,000 बाल श्रमिकों व यतीम बच्चों की जिंदगी शिक्षा के जरिये रोशन कर चुके हैं। उनके स्कूल से निकले सैकड़ों बच्चे आज सरकारी, निजी नौकरियों में हैं, कई विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा हासिल कर रहे हैं।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

बेगम अख्तर
संगीतज्ञ गायिका

संगीत की शक्ति से संवर गई जिंदगी

अनेक बेटियों- गणिकाओं या तवायफों ने भी संगीत को सहेजा। गुलामी के दिनों में देश के राजा-रजवाड़े जब कमजोर हुए, तो इन बेटियों का भी स्तर घटा। उनकी जिंदगी में चकाचौंध के चंद द्वीप तो थे, पर सागर जैसे अथाह बदनाम अंधेरों से घिरे हुए।

अपने देश में ऋषियों ने संगीत को अपनी तपस्या की आंच पर तपाया और पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिखाते चले गए। ईश्वर आराधना के लिए बना संगीत मनोरंजन का भी साधन बनकर अलग-अलग हाथों-कानों-गलों तक पहुंचा। इतिहास के अनेक पड़ावों पर इसी देश की अनगिनत बेटियों- गणिकाओं या तवायफों ने भी संगीत को सहेजा। गुलामी के दिनों में देश के राजा-रजवाड़े जब कमजोर हुए, तो इन बेटियों का भी स्तर घटा। उनकी जिंदगी में चकाचौंध के चंद द्वीप तो थे, पर सागर जैसे अथाह बदनाम अंधेरों से घिरे हुए। ऐसे ही माहौल में एक थीं मुश्तरीबाई अपनी बेटी के लिए हमेशा बेचैन। *कभी तकदीर का मातम कभी दुनिया का गिला /... ऐ मोहब्बत तिरे अंजाम पे रोना आया।*

मां चाहती थीं कि बेटी संगीत से कहीं दूर चली जाए, तो कोई उम्दा हमसफर मिल जाए, इस जंजाल से निकल जाए। किस्मत देखिए, बेटी ने संगीत से ही दिल लगा लिया। खैर, मजबूर मां ने संगीत सीखने के लिए एक उस्ताद का इंतजाम किया। बेटी सीख रही है, तो कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा सीख ले। फैजाबाद, लखनऊ, गया भटकते जिंदगी बीतने लगी। बेटी भी थोड़ा-बहुत गाने-बजाने लगी। बेचैन मां दुआ करती थीं कि बेटी को कोई दरबार नहीं, कोई अच्छा मंच मिल जाए।

संयोग की बात है, उन्हीं दिनों बिहार के भूकंप पीड़ितों के राहत कोष के लिए कोलकाता में बड़ा संगीत आयोजन हुआ। कई दिग्गज कलाकार वादे के बावजूद नहीं पहुंचे। महफिल जम न रही थी। श्रोताओं की बढ़ती नाराजगी के बीच आयोजकों ने एलान कर दिया कि अब आपके सामने आ रही हैं युवा गायिका अख्तरीबाई फैजाबादी। सामने हजारों की भीड़ देख बेटी अर्थात अख्तरीबाई घबरा गईं, तब उस्ताद ने हौसला बढ़ाया, मां ने गर्व भरी आंखों से बल दिया, तब बेटी ने गाया- *तूने बुत-ए हरजाई कुछ ऐसी अदा पाई, ताकता है तेरी सूरत हर एक तमाशाई...।* लोग झूमने लगे। गजल, दादरा, ठुमरी की फरमाइश शुरू हो गई। करीब ढाई घंटे चला गायन, मतलब बेटी ने अपना पहला ही सार्वजनिक मंच जीत लिया। आयोजकों की खुशी का ठिकाना न था। संयोग देखिए, वहां स्वतंत्रता सेनानी सरोजनी नायडू मुख्य अतिथि थीं। वह इतनी खुश हुईं कि देश की उभरती गायिका बेटी को एक सुंदर साड़ी ओढ़ाकर सम्मानित किया।

जब सब बेटी का सम्मान करने को लालायित थे, तब मां की आंखों में खुशी के आंसू थे। मां समझ गईं, हुनरमंद बेटी ने मुख्यधारा की दुनिया का दरवाजा खोल लिया है और अब कभी उसे पीछे नहीं लौटने देना है। बेटी ने वाकई दमदार दस्तक दी थी। किस्मत चमक उठी थी। उस जमाने में एक पारसी थियेटर कंपनी ने 700 रुपये महीना देने का अनुबंध कर लिया, तब सोने का भाव 16 रुपये तोला हुआ करता था। उस्ताद ने मना किया कि नाटक में अभिनय न करना, फिर संगीत में न लौट पाओगी, पर मां ने उत्साह बढ़ाया और बेटी के गायन-अभिनय से सुसज्जित नाटक *नई दुल्हन* कोलकाता में पूरे साल चला। डंका बज गया। नाटक और सम्मान के साथ लखनऊ वापसी हुई। ग्रामोफोन रिकॉर्ड और फिल्मों में भी नाम चल पड़ा। बेटी की आवाज में जादू था- *कोयलिया मत कर पुकार, लगत करेजवा कटार...।* मधुर-मदमस्त आवाज ने हर रसिक को भिगो दिया, *हमरी अटरिया पर आओ संवरिया, देखा देखी बलम होइ जाए।*

बेटी का समाज बहुत ऊंचा और बड़ा होता गया, वह शोहरत की सीढ़ियां चढ़ती गईं और थोड़ी दूरी रखते हुए मां हमेशा बेटी के पीछे साये की तरह डटी रहीं। खैर, एक दिन बेटी को नवाबी खानदान का शानदार बैरिस्टर शौहर भी नसीब हुआ, नाम हो गया बेगम अख्तर, पर संगीत, फिल्म से नाता तोड़ना पड़ा। रस्मो-रिवाज के ऐसे ताले लगे कि एक नामी कोयल महलनुमा घर में कैद हो गई। यह कैद तब खत्म हुई, जब मां दुनिया छोड़ गईं। मां की कब्र थामकर बेगम अख्तर घंटों रोती थीं और याद करती थीं- *मेरे दाग-ए-दिल से है रौशनी इसी रौशनी से है जिंदगी, मुझे डर है ऐ मिरे चारागर ये चराग तू ही बुझा न दे।*

बहरहाल, बेगम को मां के गम में तबाह होते देख शौहर साहब भी पिघल गए। संगीत के तूफान को भला कौन रोक पाया है? करीब सात साल बाद रेडियो स्टेशन पर गाने से वापसी हुई थी- *अब के सावन घर आ जा... उर उर कगवा ले जइयो संदेशवा ...अब के सावन घर आ जा...।* बताते हैं कि उस दिन रिकॉर्डिंग सुनते हुए वह खूब रोई थीं। यह दुनिया 7 अक्तूबर को मल्लिका-ए-गजल बेगम अख्तर (1914-1974) का जन्मदिन मनाती है। इस देश में उन्हें सुन-सुनकर न जाने कितने लोग शायर, गायक हुए जा रहे हैं और वह सुनाए जा रही हैं- *वो जो हम में तुम में करार था, तुम्हें याद हो कि न याद हो...।*

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

रचना से बड़ी रचनाकार की लीलाएं

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

गए वे दिन, जब अरसे तक कविता, कहानी लिखने के बाद ही कोई चर्चा में आता। लेखक रचना पर बरसों काम करते। प्रकाशित होती, तो बड़े-बड़े 'रिव्यू' होते। आलोचक मूल्यांकन करते और रचना 'क्लासिक' हो जाती। जितनी मेहनत होती, लेखक का उतना ही बड़ा प्रभा-मंडल होता। रचना, रचना होती।

कोई देर रात तक पीता, फिर आधी रात में फोन करके अपनी उपेक्षा के लिए रोता रहता, उसके बाद भैरवी सुनाने लगता। कोई रात को ज्यादा पीकर किसी नाली नाले में गिरकर चोट खाता, लेकिन अगली शाम कॉफी हाउस में अपने गिरने की वीरता का गायन-वादन करता मिलता। बहुत से रचनाकार इसी तरह आधी रात के रचनाकार कहलाने लगते।

लेकिन जब से सोशल मीडिया आया, तब से साहित्य की सूरत और सीरत, दोनों ही बदल गई। रचना का मंगलाचरण दंगलाचरण में बदल गया। साहित्य में 'बिचिंग, डिचिंग और लिंचिग' की नई विधाएं आ बैठीं। अभी निंदा और अभी स्तुति; अभी मेरा सबसे दुलारा दोस्त और अगले ही पल सबसे बड़ा हरामी, समझौतापरस्त, बिका हुआ, चाटुकार, गिरहकट, उठाईगीर, चोर, डकैत; कि मेरा मुंह न खुलवा, नहीं तो तेरी सात पुश्तों को नंगा कर दूंगा जैसे आप्त वचनों में जितना चर्चा रस बरसने लगा, उतना रचना में न बरसता। लोग 'गॉसिप' सुनते और मजे लेते।

इसने मेरा 'आइडिया' मारा, उसने उसकी कविता-कहानी मारी, उसने उसका पत्ता काटा, उसका नाम अमुक लिस्ट से कटवाया, उसने धमकाया कि तू दिल्ली आया, तो साले टांगें तुड़वाकर हाथ में दे देंगे। उसने उसका मकान मार लिया, उसने पहली को छोड़ दूसरी कर ली, उसने उसको जातिवादी कहा, उसने उसे 'कम्यूनल, संघी और हिंदुत्ववादी' कहा...इन दिनों ऐसे ही चर्चा रस बरसते दिखते हैं।

रचना पीछे हो गई। रचना से बड़ी रचनाकार की लीलाएं हो गईं। सब सोशल मीडिया का जादू। उसने एक ऐसा सोशल साइबर रचनाकार गढ़ा, जो एकदम फ्री स्टाइल कुश्तीबाज है और बिंदास है। सोशल मीडिया के अंध जनतंत्र में असली चुनौती करोड़ों रचनाकारों की भीड़ का ध्यान खींचने की है। ध्यान तभी खिंचता है, जब जुबान में तुर्शी हो, वह तीखी-कड़वी हो।

इस तरह पोल खोल और टोपी उछाल की भाषा ही सबसे बड़ी साहित्यिक भाषा हो गई। जितनी गाली, उतनी ताली! साहित्य की जगह साहित्यकार के ईगो, ईर्ष्या, द्वेष, मान मत्सर ने ले ली। अब न कहीं कविता है, न कहानी है और न आलोचना है। वह लेखक की ईर्ष्या-द्वेष से युक्त कोई कटूक्ति है, जो दो दिन अमर रहनी है। फिर उसकी जगह जवाबी कटूक्ति आ जानी है। पढ़ने वाले मजे लेते हैं। यही असली साहित्य है। कोई कोशिश करे, तो *साहित्य कोश* की तरह एक नया 'गाली कोश' तैयार कर सकता है।

उसने उसे ठोक दिया, उसने उसके साथ मंच पर बैठने से मना कर दिया, उसने शुक्लजी को ब्राह्मणवादी कह दिया, उसने प्रेमचंद को कायस्थ कह दिया, उसने उसकी खटिया खड़ी कर दी, उसने उसकी बोलती बंद कर दी, इनकी चर्चा ही साहित्य है। यही नए मानक हैं। लिखो न लिखो, चर्चा में दिखो। चर्चा ही रचना है। चर्चा रस साहित्य का नया रस है। कीचड़ है, तो चर्चा है। लीचड़ है, तो चर्चा है। वरना आप लाख लिखते रहें कविता, कहानी, आलोचना, आप दो कौड़ी के भी नहीं।

कभी कहा गया था- *काव्यशास्त्र विनोदेन कालोगच्छति धीमताम्।/ व्यसनेन च मूर्खाणाम् निद्रया कलहेन वा।* अर्थात् ज्ञानी काव्यशास्त्र का विनोद करते हुए अपना समय काटते हैं, जबकि मूर्ख या तो सोने में या कलह करने में या व्यसन में व्यस्त रहते हैं। इन दिनों तो यह कलह रस ही कला रस है। इस कलह रस को देख अकबर इलाहाबादी का शेर याद आता है :

बूट डासन ने बनाया, मैंने इक मजमूं लिखा!
मुल्क में मजमूं न फैला, और जूता चल गया!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

https://t.me/AllNewsPaperPaid